# अनुयोगद्वार सूत्र की प्रस्तावना.

नमोस्तु सर्वज्ञदेवान्, शास्त्रविज्ञान दातार॥ अनुयोगद्वार सूत्रस्ये, करोमि भाषानुवादक: ॥१॥
चत्वारिमुख्य अनुयोगा, करण चरण गणितानय:॥ धर्मकथास्य स्वरूप: अनुयोगद्वार प्रकाशक: २

जो सर्वज्ञ देवाधिदेव शास्त्र विज्ञान के दातार हैं जिन को नमोस्तव करके जिस में १ करणानुयोग जो कारण मे किया कि नाम जैसे पांच समिती आदि, २ चरणानुयोग जो सदैव पालन किये जाय जैसे पंचमहाव्रतादि, ३ गणितानुयोग सो संख्य असंख्य अनन्तादि और ४ धर्मकथानुयोग सम्वेगनी आदि धर्मकथा. इन चार अनुयोग का सम्यक प्रकार से स्वरूप का प्रकाशक जो यह अनुयोगद्वार शास्त्र श्री जिनेश्वर प्रकाशित और गणधर रचित है. इस का हिन्दी भाषामय अनुवाद करता हूं.

अन्य शास्त्रों से यह शास्त्र बहुत गहन कहा जाता है और है भी तैसा, इस में आवश्यक निक्षेप प्रमाण अनुपूर्वी वगैरा का बहुत सूक्ष्मता के साथ किया है. इस तरह पंजाब देश पावन कर्ता उपाध्यायजी श्री आत्मारामजी कृत हिन्दी भाषानुवाद का पुर्वार्ध पर से और एक प्रत मेरे पास जो तीनों की दीक्ष में लीगई था उस पर से किया है. इस में जो जो अशुद्धियों रहगइ है उसे विशेषज्ञों शुद्ध कर पढेंगे

☞ परम पूज्य श्री कहानजीऋषि महाराज के सम्प्रदाय के बालब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलक ऋषिजी ने सीर्फ तीन वर्ष में ३२ ही शास्त्रों का हिंदी भाषानुवाद किया. उन ३२ ही शास्त्रों की १०००-१००० प्रतों को सीर्फ पांच ही वर्ष में छपवाकर दक्षिण हैद्राबाद निवासी राजा बहादुर लाला सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी ने सब को उन का अमूल्य लाभ दिया है?

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुवादक बालब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलक ऋषिजी



# अनुयोगद्वार सूत्र की अनुक्रमणिका.


| | | | |
|---|---|---|---|
| १ श्रुत ज्ञान का वर्णन | १ | १७ सातस्वरों का कथन ... | १४५ |
| २ द्रव्य आवश्यक का वर्णन | ४ | १८ आठ बिभक्ति का कथन ... | १५४ |
| ३ भाव आवश्यक का वर्णन ... | १५ | १९ नवरस का कथन ... | १५६ |
| ४ श्रुत पर चार निक्षेप ... | १८ | २० दश नाम का कथन ... | १६२ |
| ५ स्कंध पर चार निक्षेप ... | २५ | २१ प्रमाण का कथन ... | १७४ |
| ६ आवश्यक के अध्ययन ... | ३१ | २२ अंगुल का कथन ... | १९२ |
| ७ उपक्रम का अधिकार ... | ३२ | २३ पल्योपम सागरोपम ... | २२८ |
| ८ आनुपूर्वी का अधिकार ... | ३७ | २४ पांच शरीर का कथन ... | २६५ |
| ९ समावतार का अधिकार ... | ४८ | २५ गर्भज मनुष्य की संख्या ... | २७९ |
| १० अनुगम का अधिकार ... | ४९ | २६ चार प्रमाण का कथन ... | २८९ |
| ११ द्रव्यानुपूर्वी का कथन ... | ५० | २७ सात नय का कथन ... | ३०५ |
| १२ क्षेत्रानुपूर्वी ,, ,, ... | ६८ | २८ संख्यात असंख्यात अनंत ... | ३२३ |
| १३ कालानुपूर्वी ,, ,, ... | ८७ | २९ उपक्रम के पांच भेद ... | ३३८ |
| १४ भावानुपूर्वी ,, ,, ... | १०२ | ३० साधु की ८४ औपमा ... | ३६५ |
| १५ नाम के विषय में ... | १०३ | ३१ सामायिक के प्रश्नोत्तर ... | ३७२ |
| १६ छ भावों का कथन ... | १२३ | ३२ नय का संक्षिप्त कथन ... | ३७६ |


प्रकाशक राजा बहादुर लाला सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



# एकत्रिंशत्तम-अनुयोगद्वार सूत्र-चतुर्थ मूल.

सत्र

नाणं पंचविहं पण्णत्तं तंजहा-आभिणिबोहिय नाणं, सुय नाणं, ओहि नाणं, मणपज्जव नाणं, केवल णाणं ॥१॥ तत्थ चत्तारिनाणाइं ठप्पाइं, ठवणिज्जाइं, णोउद्दिसिज्जंति, णोसमुद्दि-

अर्थ

जिस के द्वारा वस्तुओं का स्वरूप जाना जावे अथवा तो जो निज स्वरूप का प्रकाशक है वह ज्ञान है उस के पांच भेद अर्हन्त देवने कहे हैं जिन के नाम—१ जो सन्मुख आये हुए पदार्थों को मर्यादा पूर्वक जानता है वह आभिनिबोधिक ज्ञान है. इस ज्ञान का अपर नाम मतिज्ञान है. २ जो सुनकर पदार्थों के स्वरूप को जानता है उसे श्रुत ज्ञान कहते हैं, ३ जो मर्यादा पूर्वक रूपी पदार्थों को जानता है वह अवधि ज्ञान है. ४ जो मन के पदार्थों को जानता है वह मनःपर्यव ज्ञान है और ५ संपूर्ण लोकालोक के स्वरूप के जाननेवाला केवल ज्ञान कहलाता है ॥ १ ॥ इन पांचों ज्ञान में से श्रुत ज्ञान को छोड कर शेष चार

For Private and Personal Use Only

सूत्र

सिज्जंति, णो अणुण्णविज्जंति, ॥१॥ सुयनाणस्स-उद्देसो, समुद्देसो, अणुण्णा अणुओगो य, पवत्तइ ॥२॥ जइ सुयनाणस्स-उद्देसो, समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो य पवत्तइ; किं अंगपविट्ठस्स-उद्देसो, समुद्देसो, अणुण्णा, अणुओगो य पवत्तइ ? किं अंगबाहिरस्स उद्देसो, समुद्देसो, अणुण्णा, अणुओगो य पवत्तइ ? अंगपविट्ठस्सवि उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगोय पवत्तइ, अंगबाहिरस्सवि उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओ-

अर्थ

ज्ञान लोक में व्यवहार के उपयोगी नहीं होने से पृथक किये गये हैं अर्थात् उन का वर्णन यहां नहीं करते हैं क्यों कि मति ज्ञान, अवधि ज्ञान, मनः पर्यव ज्ञान, और केवल ज्ञान ये चारों ज्ञान. उद्देश, समुदेश. अनुज्ञा व अनुयोग नहीं करते हैं. और श्रुतज्ञान उद्देश, समुदेश, अनुज्ञा व अनुयोग करता है. इस का कथन प्रश्नोत्तर द्वारा विस्तार पूर्वक आगे किया गया है. ॥ २ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! यदि श्रुत ज्ञान ही उद्देश. समुद्देश, अनज्ञा व अनुयोग करता है तो वह क्या अंग प्रविष्ठ जो आचारंगादि में श्रुतज्ञान है उसके+उद्देशादि करता है अथवा अंग वाहिर जो उत्तराध्ययनादिमें श्रुतज्ञान है उसके उद्देश समुद्देशादि करता है? उत्तर—अहो शिष्य—अंग प्रविष्ट सूत्रों व अंग बाहिर सूत्रों यों दोनो सूत्र में श्रुत ज्ञान के उद्देश समुद्देशादि विद्यमान है. परंतु वर्तमान में जो अनुयोग का आरंभ किया है. इस अपेक्षा अंग

+ १ उद्देश-पढने की आज्ञा, २ समुदेश-पढा हुवा ज्ञान में स्थिर करना, ३ अनुज्ञा-अन्यको पढाने की आज्ञा करना, और ४ अनयोग विस्तार से व्याख्या करना.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

गो य पवत्तइ ॥ इमं पुण पट्ठवणं पडुच्च अंगबाहिरस्स उद्देसो जाव अणुओगो य ॥ ३ ॥ जइ अंगबाहिरस्स उद्देसो जाव अणुओगो य किं कालियस्स उद्देसो जाव अणुओगो उक्कालियस्स उद्देसो जाव अणुओगो ? कालियस्सवि उद्देसो जाव अणुओगो उक्कालियस्सवि उद्देसो जाव अणुओगो । इमं पुण पट्ठवणं पडुच्च उक्कालिअस्स उद्देसो जाव अणुओगो ॥ ४ ॥ जइ उक्कालियस्स उद्देसो जाव अणुओगो किं आवस्सगस्स उद्देसो जाव अणुओगो, आवस्सगवितिरित्तस्स उद्देसो जाव अणुओगो? आवस्सगस्साबि उद्देसो जाव अणुओगो आवस्सय वइरित्तस्सवि उद्देसो जाव अणुओगो । इमं

अर्थ

बाहिर सूत्र-श्रुत ज्ञान के उद्देशादि विद्यमान है, ॥ ३ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! यदि अंग बाहिर के सूत्रों में श्रुत ज्ञान के उद्देश समुद्देशादि विद्यमान है तो क्या कालिक सूत्र कि जो दिन रात्रि के प्रथम व अंतिम प्रहर में पठन किये जाते हैं उन के उद्देशादि है अथवा उत्कालिक सूत्र कि जो अनध्याय काल छोड कर शेष सर्व काल में पठन पठान किये जाते हैं. उस के उद्देशादि है? उत्तर-अहो शिष्य? कालिक उत्कालिक दोनों सूत्र के उद्देशादि हैं और वर्तमान अनुयोग प्रारंभ की अपेक्षा उत्कालिक सूत्र के उद्देशादि भी हैं ॥४॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! यदि उत्कालिक सूत्र के उद्देशादि हैं तो क्या आवश्यक सूत्र के उद्देशादि है या आवश्यक से व्यतिरिक्त (बाहिर) सूत्र के उद्देशादि हैं? उत्तर—अहो शिष्य ! आवश्य क के उद्देशादि हैं और आवश्य से व्यतिरिक्त के भी उद्देशादि हैं और यहां अनुयोग का वर्णन करते हुए आमश्यक सूत्र के अनुयोग

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

पुण पट्ठवणं पडुच्च आवस्सगस्स अणुओगो ॥ ५ ॥ जइ आवस्सगस्स अणुओगो, आवस्सयणं किं अंगं अंगाइं, सुयखंधो, सुयखंधा, अज्झयणं, अज्झयणाइं, उद्देसो, उद्देसा? आवस्सयस्सणं-नो अंग, नो अंगाइं, सुयखधो, नो सुयखंधा, नो अज्झयणं, अज्झयणाइं, नो उद्देसो, नो उद्देसा, ! तम्हा आवस्सयं निक्खिविस्सामि, सुअं निक्खिविस्सामि, खंधं निक्खिविस्सामि, अज्भयणं निक्खिविस्सामि, जत्थय २ जं जाणेज्जा निक्खेवं निक्खेवे निरवसेसं।

अर्थ

का वर्णन करते हैं ॥ ५ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! यदि वर्तमान में आवश्यक की व्याख्या की जाती है तो क्या आवश्यक एक अंग है कि आवश्यक बहुत अंग है, तथा एक श्रुत स्कंध है या बहुत श्रुत स्कंध है एक अध्ययन है या बहुत अध्ययन है, एक उद्देशा है या बहुत उद्देशा है ? उत्तर—अहो शिष्य ! आवश्यक का एक श्रुत स्कंध है, बहुत श्रुत स्कंध नहीं है, अर्थात् आवश्यक अंग नहीं है परंतु श्रुत स्कंध है आवश्यक का एक अध्ययन नहीं है परंतु बहुत से अध्ययन हैं अर्थात् छे अध्ययन हैं. आवश्यक का एक उद्देश भी नहीं है और बहुत उद्देश भी नहीं है इस लिये इस का स्पष्ट स्वरूप समजाने के लिये १ आवश्यक २ श्रुत, ३ स्कंध, और ४ अध्ययन, इन चारों के पृथक २ चार निक्षेप करूंगा, क्यों कि जिन पदार्थों के जितने निक्षेप जाने उन के उतने निक्षेप निर्विशेषता से करे और जो जिन पदार्थों को

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







जत्थविय न जाणेज्जा चउक्कगं२ निक्खिवे तत्थ ॥ १ ॥ ६ ॥ से कि तं आवस्सयं? आवस्सयं चउव्विहं पण्णत्तं तंजहा- नामावस्सयं, ठवणावस्सयं, दव्वावस्सयं, भावावस्सयं ॥ ७ ॥ से किं तं नामावस्सयं ? नामावस्सयं जस्सण जीवस्स वा, अजीवस्स वा, जीवाणं वा, अजीवाणं वा, तदुभयस्स वा, तदुभयाणं वा, आवस्सएत्ति नामं कज्जइ, सेत्तं नामावस्सयं ॥ ८ ॥ से किं तं ठवणावस्सयं ? ठवणावस्सयं जण्णं कट्ठकम्मेवा, चित्तकम्मेवा, पोत्थकम्मे वा, लेप्पकम्मे वा, गंथिमे वा, वेढिमे वा,

अर्थ

पूर्ण स्वरूप से न जाने तो उन में भी चार निक्षेप करे, इस लिये यहां आवश्यक का वर्णन करते हैं ॥६॥ प्रश्न—अहो भगवन्! आवश्यक किसे कहते हैं ? उत्तर—अहो शिष्य ! आवश्यक के चार भेद कहे हैं। उन के नाम—१ नाम आवश्यक, २ स्थापना आवश्यक, ३ द्रव्य आवश्यक और ४ भाव आवश्यक ॥ ७ ॥ प्रश्न—अहो भगवन्! नाम आवश्यक किसे कहते हैं ? उत्तर—अहो शिष्य ! किसीने एक जीव का, एक अजीव का, बहुतसे जीव का, बहुतसे अजीव का, एक जीव अजीव दोनों का, बहुतसे जीव अजीव दोनों का, 'आवश्यक' ऐसा नाम रख दिया, उसे नाम आवश्यक कहते हैं ॥८॥ प्रश्न—अहो भगवन्! स्थापना आवश्यक किसे कहते हैं? उत्तर-अहो शिष्य! स्थापना आवश्यक के ४० भेद कहे हैं यथा-१ काष्ट को कोर कर बनाया हुआ रूप (पुरुषादि का आकर) २ चित्र कर बनाया हुआ रूप ३ वस्त्र का बनाया हुआ रूप

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

पुरिमेवा, संघाइमेवा, अक्खे वा, वराडएवा, एगो वा, अणेगो वा, सब्भावठवणाए वा, असब्भावठवणाए वा, आवस्सएति ठवणा ठविज्जइ, से तं ठवणावस्सय ॥ नाम ठवणाणं को पइविसेसो ? णामं आवकहियं, ठवणा इत्तरिया वा होज्जा, आवकाहियावा होज्जा ॥ ९ ॥ से किं तं दव्वावस्सयं ? दव्वावस्सयं दुविहं पण्णत्तं तंजहा-आगमओय

अर्थ

४ लेप कर्म अर्थात् चूना वगैरह के लेप से बनाय हुआ रूप ५ सूत्रादि गूंथ कर बनाया हुवा रूप, ६ शृंखलादि के वेष्टन से बनाया हुवा रूप, ७ पूरिम-धातु आदि को पिगलाकर संचे में पूरकर बनाया बनाया हुवा रूप, ८ संघातिम-वस्त्रादि खण्ड को एकत्रित कर जोडकर बनाया हुवा रूप, ९ अक्षप रूप पासा वगैरह, डालकर बनाया रूप और १० वराढ-कौडी प्रमुख स्थापन कर बनाया हुवा रूप. यह उक्त प्रकार के दश के एक रूप व अनेक रूप यों २० हुए. उस में सद्भाव स्थापना व असद्भाव स्थापना करे, यों ४० भेद हुए इस प्रकार से उक्त वस्तु को आवश्यक के अभिप्राय से स्थापना करना वहीं स्थापना आवश्यक है. अर्थात् इस प्रकार स्थापना आवश्यक माना जाता है. प्रश्न-अहो भगवन् ! नाम आवश्यक व स्थापना आवश्यक में क्या भेद है ? उत्तर-अहो शिष्य ! नाम जीवन पर्यय रहता हैं और स्थापना तो थोडे काल की भी होती है अर्थात् उस के आकार में पलटा हो जाता है और विशेष काल की भी होती है. यह स्थापना आवश्यक हुवा ॥ ९ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! द्रव्य आवश्यक किसे कहते ?

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

नो आगमओय ॥ १० ॥ से किं तं आगमओ दव्वावस्सयं ? आगमओ दव्वावस्सयं-जस्सणं आवस्सएतिपदं सिक्खितं, ठितं, जितं, मितं, परिजितं नामसमं, घोससम, अहीणक्खरं, अणच्चकरं, अव्वाइद्धक्खरं, अक्खलियं, अमिलियं, अवच्चामेलियं, पडिपुण्णं, पडिपुण्णघोसं, कंट्ठोट्ठविप्पमुक्कं, गुरुवायणोवगयं, । से णं तत्थ—वायणाए,

अर्थ

उत्तर—अहो शिष्य ! द्रव्य आवश्यक के दो भेद कहे हैं. तद्यथा-आगम से और नो आगम से. ॥ १० ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! आगम से द्रव्य आवश्यक किसे कहते हैं ? उत्तर—अहो शिष्य! किसीने "आवश्यक" ऐसे पद को सीखलिया है, हृदय में स्थित किया है, अनुक्रम पूर्वक पठन किया है, अक्षरादिक की मर्यादा युक्त जाना है, अपने नामकी तरह अच्छी तरह स्मरण किया है, उदत्तादि दोष रहित बराबर किया है, अक्षरोंकी-न्युनता रहित, अक्षरों की विरलता रहित, अक्षरोंकी अस्वच्छता रहित, अक्षरादि का गडबडाट रहित, मनः कल्पना से नहीं पलटाया हुवा, ह्रस्वदीर्घ से प्रति पूर्ण, कंठादि स्थान के दोष रहित, गुरु की प्रसन्नता पूर्वक धारण किया है और वह आवश्यक पद वाचना पृच्छना, परिवर्तना और धर्मकथा से व्यवहृत किया है परंतु एक अनुप्रेक्षा उस में नहीं है, उस पदको द्रव्य आवश्यक कहते हैं. अर्थात् यह उस के अर्थ में परमार्थ से उपयोग लगावे नहीं. क्योंकि उपयोग लगाने से भाव आवश्यक होता है. प्रश्न उसे

For Private and Personal Use Only

सूत्र

पुच्छणाए, परियट्टणाए, धम्मकहाए, नो अणुप्पेहाए। कम्हा? अणुवओगो दव्वमितिकट्टु ॥ १५ ॥ नेगमस्सणं—एगो अणुवउत्तो आगमओ एगदव्वावस्सयं, दोण्णि अणुवउत्ता आगमओ दोण्णि दव्वावस्सयाइं, तिण्णि अणुवउत्ता आगमओ तिण्णि दव्वावस्सयाइं, एवं जावइया अणुवउत्ता आगमओ तावइयाइं दव्वावस्सयाइं। एव मेव ववहारस्सवि। संगहस्सणं-एगो वा अणेगो वा, अणुवउत्तो वा अणुवउत्ता वा, आगमओ दव्वावस्सयं वा दव्वावस्सयाणि वा, से एगे दव्वावस्सयं। उज्जुसुयस्स-एगो

अर्थ

द्रव्य आवश्यक क्यों कहना? उत्तर—अहो शिष्य! मात्र उपयोग रहित सब क्रिया होने से उसे द्रव्य आवश्यक कहना ॥ १५ ॥ अब इस का विशेष खुलासा के लिये सात नय से द्रव्य आवश्यक का [illegible] हैं—१ नैगम नय में एक मनुष्य उपयोग रहित आवश्यक करता है उसे आगम से एक द्रव्य आवश्यक [illegible] यदि दो व्यक्ति उपयोग रहित आवश्यक करते हैं तो उसे दो द्रव्य आवश्यक कहना. यों इस प्रकार जितनी व्यक्ति उपयोग रहित आवश्यक करते हैं उसे उतने ही द्रव्य आवश्यक कहना. जैसा यह नैगम नय का मत कहा वैसा ही २ व्यवहार नय का मत जानना. ३ संग्रह नय से एक मनुष्य अथवा बहुत मनुष्य उपयोग रहित आवश्यक करते हैं उसे एक ही द्रव्य आवश्यक कहना. क्यों कि संग्रह नयवाला सामान्य विशेषको एक रूपही मानता हैं. चौथा ऋजू सूत्र नयवाला भी एक व्यक्ति उपयोग

सूत्र अणुवउत्तो आगमतो एग दव्वावस्सयं, पुहुत्तं नेच्छइ । तिण्हं सद्दनयाणं—जाणए अणुवउत्ते अवत्थु । कम्हा ? जइ जाणए अणुवउत्ते न भवइ, जइ अणुवउत्ते जाणए भवति, तम्हा णत्थि आगमओ दव्वावस्सयं ॥ से तं आगमओ दव्वावस्सयं ॥ १२ ॥ से किं तं नोआगमओ दव्वावस्सयं ? नोआगमओ दव्वावस्सयं तिविहं पण्णत्तं तंजहा-जाणयसरीर दव्वावस्सयं, भवियसरीर दव्वावस्सयं। जाणयसरीर भवियसरीर वइरित्तं दव्वावस्सयं॥ १३॥ से किं तं जाणय सरीर दव्वावस्सयं ? जाणय सरीर दव्वावस्सयं आवस्सएत्ति

अर्थ रहित आगम से आवश्यक करता है वह एक ही द्रव्य आवश्यक है परंतु यह नय पृथक २ आवश्यक की इच्छा नहीं करता है क्यों कि यह नय वर्तमान काल के पदार्थों को ही स्वीकार करता है. शेष ५ शब्द ६समभिरूढ व ७एवंभूत नय, यों तीनों शब्द नयवाले उपयोग रहित जानते हुए को अवस्तु रूप से मानते हैं. प्रश्न—अहो भगवन् ! किस कारन से ? उत्तर—अहो शिष्य ! यदि जानता होवे तो अनुपयुक्त न होवे और यदि अनुपयुक्त होवे तो जानता नहीं होवे. इस लिये इस नय में आगम से द्रव्य आवश्यक नहीं है. यह आगम से द्रव्य आवश्यक का कथन हुवा ॥ १२ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! नो आगम से द्रव्य आवश्यक किसे कहते हैं ? उत्तर—अहो शिष्य ! जो आगम द्रव्य आवश्यक के तीन भेद कहे हैं तद्यथा-१ ज्ञ शरीर द्रव्य आवश्यक, भव्य शरीर द्रव्य आवश्यक और ज्ञ शरीर भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य आवश्यक ॥ १३ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! ज्ञ शरीर द्रव्यावश्यक किसे कहते हैं ? उत्तर-

सूत्र

पयत्थाहिगार जाणयस्स जं सरीरयं ववगय चुतचावित चतदेहं जीवविप्पजढं सिज्जागयं वा संथारगयं वा, निसीहियागयं वा, सिद्धसिलातलगयं वा, पासित्ताणं कोइ भणेज्जा—अहो ! णं इमेणं सरीर समुस्सएणं जिणोवइट्ठुणं भावेण आवस्सए त्तिपयं-आघवियं पण्णवियं परूवियं दंसियं उवदंसिमं, जहा को दिट्ठंतो ? अयं महुकुंभे आसी, अयं घयकुंभे आसी, से तं जाणय सरीर दव्वावस्सयं ॥ १४ ॥

अर्थ

अहो शिष्य ! आवश्यक ऐसा पद व अर्थ के अधिकार जाननेवाले का चेतना से रहित प्राणों के बल को जिसने त्याग किया है वैसा, जीव रहित, शैय्या पर पडा संथारे पर पडा हुवा, जिस ध्यान में काल कर गया होवे उस प्रकार के ध्यान के आकार में रहा हुवा और शिला पर अनशन किया हुवा शरीर को देख कर कोई कहे कि अहो ! इस शरीर के पुद्गल समुहने तीर्थंकर के उपादिष्ट भाव से आवश्यक ऐसा पद कहा था, समुच्चय प्ररूपाया था, विशेष प्ररूपा था, क्रिया कर देखाया था, अलग २ अर्थ दर्शाया था, अहो भगवन् ! किस दृष्टांत से ! अहो शिष्य ! जैसे यह मधु का घट था, अथवा यह घृत का घट था क्यों कि वर्तमान काल में घट विद्यमान रूप तो है परंतु मधु व घृत से रहित है इस प्रकार घट तुल्य शरीर है परंतु मधु व घृत समान आवश्यक करनेवाला वर्तमान में विद्यमान नहीं हैं इस लिये ही उस का नाम ज्ञ शरीर द्रव्यावश्यक रखा गया है ॥ १४ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! भविय शरीर द्रव्यावश्यक

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

से किं तं भविय सरीर दव्वस्सयं ? भविय सरीर दव्वावस्सयं जे जीवे जोणि जम्मण निक्खंते इमेणं चेव आत्ताएणं सरीर समुस्सएणं जिणोवदिट्ठेणं भावेणं आवस्सएतिपयं, सेयकाले सिक्खिस्सइ, न ताव सिक्खइ, जहा को दिट्ठंतो ? अयं महु कुंभे भविस्सइ, अयं घयकुंभे भविस्सइ, से तं भवियसरीर दव्वावसयं ॥ १५ ॥ से किं तं जाणय सरीर भविय सरीर वतिरित्तं दव्वावस्सयं ? जाणय सरीर भविय सरीर वतिरित्तं दव्वावस्सयं तिविहं पण्णत्तं तंजहा-लोइयं, कुप्पावयणियं,

अर्थ

किसे कहते हैं ? प्रश्न—अहो शिष्य ! जो जीव योनि द्वारा जन्म को प्राप्त हो गया है और आगामी कालमें अपने शरीर समुदाय कर जिनेन्द्र उपदिष्ट भाव से 'आवश्यक' ऐसे पद सीखेगा परंतु वर्तमान काल में उसने आवश्यक के पद को धारन नहीं किया है. इस का दृष्टांत देते हैं जैसे नये घट को देख कर कोई कहे कि यह घृत के लिये घट होगा, यह मधु के लिये घट होगा. ऐसे ही यह भी आवश्यक का ज्ञाता होगा. यह भव्य शरीर द्रव्य आवश्यक हुवा ॥ १५ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! ज्ञ शरीर और भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य आवश्यक किसे कहते हैं ? उत्तर—ज्ञ शरीर व भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य आवश्यक के तीन भेद कहे हैं. तद्यथा—१ लौकिक, २ कुप्रावचनिक और ३ लोको-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

लोउत्तरियं ॥ १६ ॥ से किं तं लोइयं दव्वावस्सयं ? लोइयं दव्वावस्सयं जे इमे राईसर, तलवर, मांडविय, कोडुंविय इब्भसेट्ठि सेणावइ, सत्थवाह, प्पभितिओ-कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए सुविमलाए पुल्लुप्पलकमल कोमलुम्मिलियंमि अहपुंडरे पभाए रत्तासोगपगासे, किंसुय, सुयमुह, गुंजद्धरागसरिसे कमलागर नलिणीसड-बोहए, उट्ठियंमिसूरे सहस्सरस्सिंमि दिणयरे तेअसा जलंते—मुहधोयणं दंतपक्खालणं, तेल्लफाणिह सिद्धत्थयं हरिआलिया अद्दाग धुव पुप्फ मल्ल गंध तंबोल वत्थमाइआई

अर्थ

चर ॥ १६ ॥ प्रश्न—अहो [भ]गवन् ! लौकिक द्रव्य आवश्यक किसे कहते हैं ? उत्तर—अहो शिष्य ! जो यह राजा, युवराजा, कोतवाल, मंडवाधिपति, कुटुम्बाधिपति, गजांत लक्ष्मी धारका इभ शेठ, नगरशेठ, सेनापति, सार्थवाह इत्यादि लोग प्रातः काल में किंचिन्मात्र प्रकाश होते और रात्रि के व्यतिक्रम होने पर, अति निर्मल आकाश होने पर, विकासित कमल व नेत्र समान पंडुर वर्ण के प्रभात में रक्त अशोक किंशुक वृक्ष के पुष्प, गुंजार्द्ध-आधी रति के रंग समान कमलों के जलाशय व नलिनी आदि कमलों को प्रतिबोधित ( विकशित ) करता हुवा सहस्र किरणवाला सूर्य जब प्रकाशमान होता है तब मुख धोते हैं, दंत प्रक्षालन करते हैं, केश मुख व शरीर में तैल लगाते हैं, कांगी से बाल स्वच्छ करते हैं, हरताल व द्रौवा को मस्तक में धारन करते हैं, सुगंधि धूप करते हैं, पुष्प माला चंदनादि गंध व

For Private and Personal Use Only

सूत्र

दव्वावस्सयाइं करेंति,ततो पच्छा रायकुलं वा, देवकुलं वा, आरामं वा, उज्जाणं वा, सभं वा, पव्वं वा, निगच्छंति ।से तं लोइयं दव्वावस्सयं ॥१७॥ से किं तं कुप्परावय-णियं दव्वावस्सयं ? कुप्परावयणियं दव्वावस्सयं जे इमे चरग, चीरिय, चम्मखंडिय, भिक्खोडग, पडुरंग, गोयम, गोव्वतिय, गिहधम्म, धम्मचिंत्तग, अविरूद्ध विरुद्ध, वुड्डसावग,प्पभितओ, पासंडत्था, कल्लं पाउप्पभाए रयणीए जाव तेयसा जलंते-इंदस्स वा.

अर्थ

तंबोल का सेवन करते हैं, प्रधान वस्त्राभूषणादि से शरीर को अलंकृत करते हैं. पूर्वोक्त कर्तव्य को अपने नित्य के नियम जैसे करते हैं. इतना करके वे राज सभा में, देवादिक के स्थान में जैन सभा में, प्रपास्थान में, बाग बगीचे में क्रीडा करने के लिये जाते हैं, उसे लौकिक द्रव्य आवश्यक कहते हैं. यह लौकिक द्रव्य आवश्यक हुवा. ॥ १७ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! कुप्रावचनिक द्रव्य आवश्यक किसे कहते हैं ? उत्तर—अहो शिष्य ! जो यह चरक—वस्त्रखंड रखने वाले, चर्म खंड रखने वाले, मृग छाला धारन करने वाले, भिक्षा करने वाले, भस्म शरीर के लगाने वाले, वृषभादि निमित्त से आजीविका करने वाले,गौ वृत्ति से थोडा २ ग्रहण कर उपजीविका करनेवाले, गृहस्थावास में रहकर धर्म पालनेवाले अथवा गृहस्थ धर्म के उपाधिक यज्ञादि धर्म की चिंतवना करनेवाले,सब लोगों से अविरुद्ध धर्म का आ-

 १३

मूत्र

खंधस्स वा, रुद्दस्स वा, सिवस्स वा, वेसमणस्स वा, देवस्स वा, नागस्स वा, जक्खस्स वा, भूयस्स वा, मुगुंदस्स वा, अज्जाए वा; दुग्गाए वा, कोट्टकिरियाए वा, उवलेवण, समज्जण, आवरिसण, धूव पुप्फ गंध मल्लाइयाइं दव्वावस्सयाइं करेंति, से तं कुप्पावयणियं दव्वावस्सयं ॥ १८ ॥ से किं तं लोगुत्तरियं दव्वावस्सयं ? लोगुत्तरियं दव्वावस्सयं जे इमे-समणगुणमुक्कजोगी, छक्कायनिरणुकंपा, हयाइव उद्दामा, गयाइव निरंकुसा, घट्ठा, मट्ठा, कुप्पोट्ठा, पंडुरपभं पाउरणा, जिणाणं अणाणाए, सच्छंद

अर्थ

चरन करनेवाले, विनयवादी अथवा नास्तिकवादी, वृद्ध श्रावक * (ब्राह्मण) प्रमुख पाखंडी प्रातःकाल होते ही यावत् जाज्वल्यमान सूर्य प्रकाशित होते ही इन्द्र की. स्कंध-कार्तिक स्वामी की, रुद्र की, शिव की, वैश्रमण की. देवता की. नाग देव की. यक्ष देव की. भूत की. मुकुंद-बलदेव की, अज्जा देवी की, दुर्गा देवी की, कोट क्रिया—जिस के आगे बहुत प्राणियों का वध होवे वैसे देवता देवियों की प्रतिमा के स्थान गोमयादि से लीपन कर पांडु आदि से पोत कर, उन के आगे धूप क्षेपे, पुष्पादिक की माला पहिनावे. इत्यादिक द्रव्य आवश्यक करे. यह कुप्रावचानिक द्रव्य आवश्यक हुवा ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! लोकोत्तर द्रव्य आवश्यक किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! लोकोत्तर द्रव्य आवश्यक उसे कहते हैं कि जो

---

* श्री ऋषभदेव स्वामी के समयमें जो भरत जीने माहण-ब्राह्मण श्रावक स्थापन किये थे उनकी जातियें से कितनेक परंपरा से श्रावक वृत्ति से च्युत होगये और ब्राह्मण की क्रिया करने लगे उन को वृद्ध श्रावक के नाम से बोलाये गये हैं.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

बिहरिऊणं उभओकालं आवस्सयस्स उवट्ठंति, से तं लोगुत्तरियं दव्वावस्सयं ॥ से तं जाणय सरीर भविय सरीर वइरितं दव्वावस्सयं ॥ से तं नो आगमतो दव्वावस्सयं ॥ से तं दव्वावस्सयं ॥१९॥ से किं तं भावावस्सयं ? भावावस्सयं दुविहं पण्णत्तं तंजहा-आगमोय, नो आगमोय॥२०॥से किं तं आगमतो भावावस्सयं ? आगमतो भावावस्सयं जाणए उवउत्ते, से तं आगमतो भाववस्सयं ॥२१॥ से किं तं नो आनमतो भावावस्सयं ?

अर्थ

क्षमादि साधु के गुणों से रहित हैं, षट्कायाकी अनुकंपा रहित हैं, घोडे जैसे उन्मत्त हैं, गज जैसे निरंकुश हैं, घटारे, मठारे, भृंगारित ओष्टवाले, शुभ्र स्वच्छ वस्त्र पहिननेवाले. अर्हतों की आज्ञाका उल्लंघनकर स्वच्छंद-पने विचरनेवाले. वे आवश्यक के लिये दोनों काल में सावधान होते हैं. यह लोकोत्तर द्रव्य आवश्यक कहा जाता है. यह जानग शरीर भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य आवश्यक हुवा. यह जो आगम से द्रव्य आवश्यक हुवा. यह द्रव्य आवश्यक का कथन हुवा. ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! भाव आवश्यक किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! भाव आवश्यक दो प्रकार से प्रतिपादन किया गया हैं तद्यथा—१. आगम से और २ नो आगम से अहो भगवन् ! आगम से भाव आवश्यक किसे कहते हैं ? अहो शिष्य! जो आवश्यक के स्वरूप को उपयोग पूर्वक जानता है उसीका नाम भाव आवश्यक है ॥२१॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

नो आगमतो भावावस्सयं तिविहं पण्णत्तं तंजहा-लोइयं, कुप्पावयणियं, लोगुत्तरियं ॥ २२ ॥ से किं तं लोइयं भावावस्सयं ? लोइयं भावावस्सयं-पुव्वण्हे भारहं, अवरण्हे रामायणं, से तं लोइयं भावावस्सयं ॥ २३ ॥ से किं तं कुप्पावयणियं भावावस्सयं? कुप्पावयणियं भावावस्सयं जे इमे-चरग चीरिग जाव पासंडत्थासयं, इज्जं-जलि होम जपोंदुरुक्क नमोक्कारमाइआइं भावावस्सयाइं करेंति, से तं कुप्पावयणियं भावावस्सयं ॥ २४ ॥ से किं तं लोगुत्तरियं भावावस्सय ? लोगुत्तरियं भावावस्स-

अर्थ

नो आगम से भाव आवश्यक किसे कहते हैं ? जो आगम से भाव आवश्यकके तीन भेद कहे हैं तद्यथा-१ लौकिक, २ कुप्रावचनिक, और ३ लोकोत्तर. ॥ २२ ॥ अहो भगवन् ! लौकिक भाव आवश्यक किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! पूर्वोक्त प्रकार प्रातः काल में भारत और संध्या काल में रामायण का भाव सहित पठन पाठन करते हैं वह लौकिक भाव आवश्यक ॥ २३ ॥ अहो भगवन् ! कुप्रावचनिक भाव आवश्यक किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! उक्त प्रकार के चरक, वस्त्र खंड धारन करनेवाले यावत् पाखंडी इष्ट देवको अंजली जोडकर नमस्कार करे. यज्ञ हवन. पूजा. जप. और मुख से बैल जैसे शब्दोच्चार करके नमस्कार करे इत्यादि भाव आदर करते हैं वह कुप्रावचनिक भाव आवश्यक है ॥ २४ ॥ अहो भगवन् ! लोको-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

यं जण्णं इमे समणे वा, समणी वा, सावओ वा, सावियावा, तच्चित्ते, तम्मणे, तल्लेसे तब्भवसिए, तदज्झवसाणे, तदट्ठोवउत्ते, तदप्पियकरणे, तब्भावणा भाविए, अण्णत्थ कत्थ इमेणं अकुव्वमाणे उवउत्ते, जिणवयण धम्माणुरागरत्तमणे उभओकालं आवस्सयं करेति, से तं लोगुत्तरियं भावावस्सयं ॥ से तं नो आगमतो भावावस्सयं ॥से तं भावावस्सयं ॥२५॥ तस्सणं इमे एगट्ठिया णाणाघोसा णाणावंजणा णामधेज्जा भवंति, तंजहा-(गाहा) आवस्सयं,आवस्सं,करणिज्जं,धुवनिग्ग-हो विसोहिय॥अज्झयण छक्कवग्गो, नाओ आराहणामग्गो ॥१॥ समणेणं सावएणय

अर्थ

त्तर भाव आवश्यक किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! आवश्यक में चित्तस्थापनेवाले, आवश्यक से ही मन· अध्यवसाय व तीव्र अध्यवसाय रखनेवाले, उस के अर्थ में उपयोग लगानेवाले, उस में भावना करनेवाले उस के योग्य मुखवस्त्रिका प्रमुख उपकरण रखनेवाले और अन्य किसी वस्तु में अपना मन नहीं रखने-वाले शुद्ध उपयोगयुक्त जिन प्रणित बचन में व धर्म में प्रेमाणुराग रक्त बने हुवे ऐसे साधु. साध्वी.श्रावक और श्राविका जो प्रातःकाल व संध्याकालयों दोनों काल भाव आवश्यक (प्रतिक्रमण) करे वह लोकोत्तर भाव आवश्यक. यह लोकोत्तर भाव आवश्यक हुवा. यह नो आगम से भाव आवश्यक हुआ यह भाव आवश्यक हुवा ॥ २५ ॥ अब इस आवश्यक के आठ नाम कहते हैं—१ अ परमार्थ से यह आवश्यक एकार्थ रूप है, परंतु उच्चारन से अनेक घोष और अनेक व्यंजन हैं. इस के नाम कहते हैं—१ आवश्यक





For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

अवस्सं कायव्वं हवइ, जम्हा अंतो अहोनिसस्स य, तम्हा आवस्सयं नाम ॥ २ ॥ स तं आवस्सयं ॥ २६ ॥ * ॥ सेकिंतं सुतं ?सुतं चउव्विहं पण्णतं तंजहा-नामसुयं ठवणासुयं, दव्वसुयं, भावसुयं ॥ २७ ॥ से किं तं नायसुयं ? नायसुयं जस्सणं जीवस्स वा जाव सुएत्ति नाम कज्जइ, सेतं नामसुयं ॥२८॥ से किं तं ठवणासुयं ?

अर्थ

सब प्रकार के गुणों का आवास रूप, २ आवस्य करणिज्जं-सदैव आवश्य करने योग्य. ३ धृवविग्रह-सदैव इन्द्रियों के निग्रह करने का स्थान.४विशुद्ध-आत्मा को विशुद्ध निर्मल करने का स्थान,५अध्ययन षड्वर्ग-छ अध्ययन के वर्ग रूप, ६ न्याय-न्याय करनेवाला, ७ आराधन-ज्ञानादिक की आराधना करनेवाला और ८ मार्ग-मोक्ष का यही मार्ग ॥ १ ॥ साधु साध्वी, श्रावक और श्राविका को दोनों वक्त आवश्य करने योग्य होने से इस का आवश्यक ऐसा नाम है. यह आवश्यक का अधिकार हुवा ॥ * ॥

अब श्रुत के निक्षेप कहते हैं—अहो भगवन् ! श्रुत किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! श्रुत के चार प्रकार कहे हैं. तद्यथा:—१ नाम श्रुत, २ स्थापना श्रुत, ३ द्रव्य श्रुत और भाव श्रुत ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! नाम श्रुत किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! किसी एक जीव का, तथा अजीव का, बहुत जीव का बहुत अजीव का, एक जीवाजीव का तथा बहुत जीवाजीव का श्रुत ऐसा नाम रखा वह नाम श्रुत. यह नाम श्रुत हुवा ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! स्थापना श्रुत किसे कहते हैं ? अहो शिष्य !





For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

ठवणा सुयं जं णं कट्ठकम्मे वा जाव ठवणा ठविज्जइ, से तं ठवणा सुयं॥ २९॥ नाम ठवणाणं कोपइ विसेसो ? नाम अवकाहियं, ठवणा इत्तरिया वा होज्जा, अवकाहिया वा होज्जा॥ ३०॥से किं तं दव्वसुयं? दव्व सुयं दुविहं पराणत्तं तंजहा—आगमतोय,नो आगमतो य ॥ ३१ ॥ से किं तं आगमतो दव्वसुयं ? आगमतो दव्वसुयं जस्सणं सुएत्तिपयं सिक्खियं, ठियं, जियं, जाव णो अणुप्पेहाए, कम्हा ? अणुवओगो दव्व-

अर्थ

स्थापना श्रुत जो पूर्वोक्त प्रकार काष्टादि दश प्रकार से वस्तु की एक तथा अनेक, सद्भाव तथा असद्भाव स्थापना करे वह स्थापना श्रुत. यह स्थापना श्रुत हुवा ॥ २९ ॥ अहो भगवन् ! नाम व स्थापना में क्या विशेषता है ? अहो शिष्य ! नाम जावजीव तक रहता है और स्थापना थोडे काल की भी होती है और जावजीव की भी होती है ॥ ३० ॥ अहो भगवन् ! द्रव्य श्रुत किसे कहते हैं ! अहो शिष्य ! द्रव्य श्रुत के दो भेद कहे हैं. तद्यथा—आगम से और नो आगम से ॥ ३१ ॥ अहो भगवन् ! आगम से द्रव्य श्रुत किसे कहते हैं ! अहो शिष्य ! आगम से द्रव्य श्रुत उसे कहते हैं कि जिस किसीने गुरु के पास से "श्रुत" ऐसा पद पठन किया होवे हृदय में स्थित किया होवे यावत् उसमें उपयोग नहीं रखा होवे. उपयोग रहित होने से द्रव्य श्रुत कहा जाता है. नैगम नय की अपेक्षा एक व्यक्ति श्रुत पठन करता है उसे एक द्रव्य श्रुत कहना. यों जिस प्रकार सात नय आवश्यक पर कहे उस ही प्रकार यहां पर भी

सूत्र

मितिकट्टु नेगमस्सणं एगो अणुवउत्तो आगमतो एगं दव्वसुयं जाव कम्हा ? जइ जाणए अनुवउत्ते न भवइ, से तं आगमतो दव्वसुयं ॥ ३२ ॥ से किं तं नो आगमतो दव्वसुयं ? नो आगमतो दव्वसुयं तिविहं पण्णत्तं तंजहा-जाणय सरीर दव्वसुयं, भविय सरीर दव्वसुयं, जाणय सरीर भाविय सरीर वइरित्तं दव्वसुयं ॥ ३३ ॥ से किं तं जाणय सरीर दव्वसुयं ? जाणयसरीर दव्वसुयं सुयाति पयत्थाहिगार जाणयस्स जं सरीरयं ववगयचुयं चाविय चत्तदेह तं चेव पुव्व भणियं भाणियव्वं जाव से तं जाणय सरीर दव्वसुयं ॥ ३४ ॥ से किं तं

अर्थ

कहना. यावत् जिस लिये वह उपयोग रहित होता है इस लिये वह द्रव्य श्रुत कहाता है. यह आगम से द्रव्य श्रुत हुवा ॥ ३२ ॥ अहो भगवन् ! नो आगम से द्रव्य श्रुत किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! नो आगम से द्रव्य श्रुत के तीन भेद कहे हैं जिन के नाम—१ ज्ञ शरीर द्रव्य श्रुत, २ भव्य शरीर द्रव्य श्रुत और ३ ज्ञ शरीर भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य श्रुत ॥ ३३ ॥ अहो भगवन् ! ज्ञ शरीर द्रव्य श्रुत किसे कहते हैं? अहो शिष्य ! 'श्रुत' ऐसे पद व उस के अर्थ के अधिकार का ज्ञाता शरीर जीव रहित, प्राण रहित जीव की चेष्टा रहित पूर्वोक्त प्रकार हुवा उसे देख कर कोई कहे कि यह श्रुत का ज्ञाता था. जैसे यह मधु का घट, यह घृत का घट था. इसे ज्ञ शरीर द्रव्य श्रुत कहना ॥ ३४ ॥ अहो भगवन् ! भव्य शरीर

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

भविय सरीर दव्वसुयं ? भविय सरीर दव्वसुयं-जे जीवे जोणी जम्मणं निक्खंते जहा दव्वावस्सए तहा भाणियव्वं, जाव सेतं भविय सरीर दव्वसुयं ॥ ३५ ॥ से किं तं जाणय सरीर भविय सरीर वइरित्तं दव्वसुयं ? जाणय सरीर भविय सरीर वइरित्तं दव्वसुयं–जंपत्तयपोत्थयलिहियं ॥ अहवा जाणय सरीर भविय सरीर वइरित्तं दव्वसुयं पंचविहं पण्णत्तं तंजहा–अंडयं, बोडयं, कीडयं, वालयं, वक्कयं,

अर्थ

द्रव्य श्रुत किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! जिस किसीने माता की योनि से जन्म लिया वह आगमिक काल में श्रुत का अभ्यास करेगा. जैसे यह मधु का या घृत का घट होगा उसे भव्यशरीरद्रव्यश्रुत कहना ॥ ३५ ॥ अहो भगवन् ! ज्ञशरीरद्रव्यशरीरव्यतिरिक्त द्रव्य श्रुत किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! ताड पत्र अथवा पुस्तक पर जो लिखा हुवा श्रुत है उसी का नाम ज्ञ शरीर भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य श्रुत है. प्राकृत में श्रुत शब्द व सूत्र शब्द इन दोनों के लिये सुय शब्द का प्रयोग किया है इस से अब यहां सूत्र का अधिकार कहते हैं. यहां सूत्र के पांच भेद कहे हैं—१ अंडज—अण्डे से उत्पन्न होनेवाला, बोडज सूत्र-फल से उत्पन्न होनेवाला. ३ कीडज—कृमि से उत्पन्न होने वाला, ४ वालज बाल से उत्पन्न होनेवाला और ५ वल्कलज—वल्कल से उत्पन्न होनेवाला. प्रश्न—इस में अंडज किसे

सूत्र

अंडयं—हंसगब्भादि, बोडयं—कप्पासमाइ, कीडयं पंचविहं पण्णत्तं तंजहा—पट्टे, मलए, अंसुए, चीणंसुए, किमिरागे ॥ बालयं पंचविहं पण्णत्तं तंजहा—उण्णिए उट्टिए, मियलोमिए, कोत्तवे, किट्टिसे ॥ वागयं सणमाइ ॥ सेतं जाणय सरीरं भविय सरीर वइरित्तं दव्वसुयं॥सेतं नो आगमतो दव्वसुयं॥सेतं दव्वसुयं॥ ३६॥से किं तं भावसुयं? भावसुयं दुविहं पण्णत्तं तंजहा—आगमतो य, नो आगमतो य ॥ ३७ ॥ से किं

अर्थ

कहते हैं ? उत्तर—अण्डज सो हंस गर्भ प्रमुख जान लेना, बोडज सो कर्पास का सूत्र वगैरह जानना. कीडे से होनेवाले सूत्र के पांच भेद—पट्ट सूत्र-कीडे की लाल से बना, २ मलय सूत्र मलय देश के कीडे से बना, ३ अंशुक सूत्र-चिन देश सिवाय अन्य देश के कीडे से बना, ४ चिनांशुक-चीन देश के कीडे से बना. और ५ कृमिराग-रक्त वर्ण के कीडे से बना. बाल के पांच भेद कहे हैं. तद्यथा—१ मेंढे के बाल से २ऊंट के बाल से, ३ मृग के बाल से, ४ उंदर के बाल से और ५ किसी कीटक के रोम से. और वल्कल से शन वगैरह जानना. यह ज्ञ शरीर भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य श्रुत हुवा. यह नो आगम से द्रव्य श्रुत का कथन हुवा. यह द्रव्य श्रुत का कथन संपूर्ण हुवा ॥ ३६ ॥ अहो भगवन् ! भाव श्रुत किसे कहते हैं? अहो शिष्य! भाव श्रुत के दो भेद—आगम से व नो आगम से ॥३७॥अहो भगवन्! आगम से भाव

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

तं आगमतो भावसुयं ? आगमतो भावसुयं-जाणए उवउत्ते सेत्तं आगमतो भावसुय ॥३८॥ से किं तं नो आगमतो भावसुयं?नो आगमतो भावसुयं-दुविहं पण्णत्तं तंजहा-लोइयं, लोगुत्तरियं च ॥ ३९ ॥ से किं तं लोइयं नो आगमतो भावसुयं ? लोइयं नो आगमतो भावसुयं, जं इमे अण्णाणिएहिं मिच्छादिट्ठीएहिं सच्छंदबुद्धिमइ विगप्पियं तंजहा—भारहं, रामायणं, भीमासुरुक्ख, कोडिल्लयं, घोडयमुहं, सगड भद्दियाओ, कप्पासियं, णागसुहुमं कणगसत्तरीवेसियं, वइसेसियं, बुद्धसासणं,

अर्थ

श्रुत किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! उपयोग सहित अर्थ परमार्थ का ज्ञाता हो श्रुत का पठन करे वह भाव श्रुत कहा जाता है. यह आगम से भाव श्रुत का कथन हुवा ॥ ३८ ॥ अहो भगवन् ! नो आगम से भाव श्रुत किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! नो आगम से भाव श्रुत के दो भेद कहे हैं. लौकिक व लोकोत्तर ॥ ३९ ॥ अहो भगवन् ! लौकिक नो आगम से भाव श्रुत किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! अज्ञानी मिथ्यादृष्टियोंने अपनी स्वच्छंदता से व मति कल्पना से जो १ भारत, २ रामायण, ३ भीमसुयुक्त, ४ कौटिल्य, ५ घोटज सूत्र, ६ सगड भद्र, ७ कल्पाकल्प, ८ नाग सूक्ष्म, ९ कनक सत्तरी, १० वैशेसिका, ११ बुद्ध वचन, १२ कापिल, १३ वैशिक, १४ लोकायत, १५ साठ तंत्र, १६ माढर,

सूत्र

काविलं, लोगायतं, सट्ठियंत्तं, माढरपुराणं, वागरणं नाडगाइ. अहवा बावत्तरिकलाओ चत्तारियवेया, संगोवगाणं, से तं लोइयं नो आगमतो भाव सुयं ॥४०॥ से किं तं लोउत्तरियं नो आगमतो भावसुयं? लोउत्तरियं नो आगमतो भावसुयं-जं इमं अरिहंतेहिं भगवंतेहिं उप्पण्णणाण दंसणधरेहिं तीय पडुप्पण्ण मणागय जाणएहिं सव्वण्णूहिं सव्वदरिसिहिं तिल्लुक्कवहित महितपूइएहिं, अप्पडिहय वरणाण दंसण धरेहिं पणीयं दुवालसंगं गाणिपिडगं तंजहा-आयारो, सुयगडो, ठाणं, समवाओ, विवाहपण्णत्ती, नाया धम्म कहाओ. उवासगदसाओ, अंतगडदसाओ,

अर्थ

१७ पुरान, १८ व्याकरण, १९ नाटक; २० बहुत्तर कला के शास्त्र, २१ चारों वेद. २२ सांगोपांग षट् शास्त्र वैगरह जो बनाये हैं उसे नो आगम भाव श्रुत कहना ॥ ४० ॥ अहो भगवन् ! लोकोत्तर नो आगम से भाव श्रुत किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! लोकोत्तर नो आगम से भाव श्रुत उसे कहते हैं कि जो केवल ज्ञान केवल दर्शन के धारक भूत काल, भविष्य काल व वर्तमान काल यों तीनों काल भाव के सर्वज्ञ सर्वदर्शी, तीन लोक के जीवों को वंदनीय पूज्यनीय, अप्रतिहत प्रधान ज्ञान दर्शनवाले श्री अरिहंत वीतराग देवने आचार्य के रत्न करंड समान जो द्वादशांग प्ररूपे हैं. इन द्वादशांग के नाम कहते हैं. १ आचारांग, २ सूत्रकृतांग, ३ स्थानांग, ४ समवायांग, ५ विवाह प्रज्ञप्ति, ६ ज्ञाता धर्म कथांग,

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir
For Private and Personal Use Only

सूत्र

अणुत्तरोववाइयदसाओ, पण्हावागरणाइं, विवागसुयं, दिट्ठिवाओय, सेतं लोउत्तरियं नो आगमतो भाव सुयं ॥ सेतं नो आगमतो भावसुयं ॥ सेतं भावसुयं ॥ ४१ ॥ तस्सणं इमे एगट्ठिया णाणाघोसा णाणावंजणा नामधेज्जा भवंति तंजहा (गाहा) सुयं सुत्तं गंथं सिद्धंति सासणं आणत्ति. वयण उवएसो ॥ पण्णवणे आगमेऽवियएगट्ठा पज्जवासुत्ते ॥ १ ॥ सेतं सुयं ॥ ४२ ॥ * ॥ से किं तं खंधे ? खंधे चउव्विहे पण्णत्ते

अर्थ

७ उपासक दशांग, ८ अंतकृत दशांग, ९ अनुत्तरोपपातिक दशांग, १० प्रश्न व्याकरण, ११ विपाक और १२ दृष्टिवाद. यह लोकोत्तर नो आगम भाव श्रुत हुवा. श्रुत शब्द पर यह चार निक्षेप हुए ॥४१॥ श्रुत के दश नाम कहते हैं—यह श्रुत पद एकार्थ वाची, अनेक घोष व अनेक व्यंजनवाला है. इन के नाम कहते हैं—१ श्रुत गुरु आदि के मुख से श्रवण कर धारन किया जावे, २ सूत्र-अर्थ परमार्थ की सुचना रूप, ३ ग्रंथ-अनेक भाव भेदना का ग्रंथन, ४ सिद्धांत-स्वतः के गुन से सिद्ध बना हुवा या निश्चय ज्ञान का दर्शक. ५ शासन—हितशिक्षा या कर्म दंड का दाता, ६ आज्ञक—जिनाज्ञा या मोक्ष पथ का दर्शक, ७ वचन—सद्बोध या सत्य कथन करनेवाला, ८ उपदेश—हिताहित दर्शक अथवा न्याय पथ में स्थापक, ९ प्रज्ञप—प्रवचन सद्बुद्धि द्वारा प्रकाशक अथवा अन्य नहीं कह सके वैसा उत्कृष्ट प्रधान बचन कहनेवाला और १० आगम—जिन प्रणित परंपरा से चला आता. यह एकार्थवाची भाव श्रुत के नाम कहे यह श्रुत का अधिकार संपूर्ण हुवा ॥ २ ॥ ४२ ॥ * ॥ अब स्कंध शब्द पर चार निक्षेप कहते हैं—

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

तंजहा-नाम खंधे, ठवणा खंधे, दव्व खंधे, भाव खंधे ॥ १ ॥ णाम ठवणाओ पुव्वभाणि आओ आणुक्कमेण भाणियव्वाओ॥ २॥ से किं तं दव्वखंधे ? दव्व खंधे दुविहे पण्णत्ते तंजहा—आगमतोय नो आगमतोय ॥ ३ ॥ से किं तं आगमओ दव्वखंधे ? आगमओ दव्वखंधे—जस्सणं खंधेति पयं सिक्खियं सेसं जहा दव्वावस्सए तहा भाणियव्वं, णवरं खंधाभिलावो जाव से किं तं जाणय सरीर भविय सरीर वइरित्ते दव्वखंधे ? जाणय सरीर भविय सरीर वइरित्ते दव्वखंधे तिविहे पण्णत्ते तंजहा—

अर्थ

अहो भगवन् ! स्कंध किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! स्कंध के चार प्रकार कहे हैं. तद्यथा—१ नाम स्कंध, २ स्थापना स्कंध, ३ द्रव्य स्कंध, और ४ भाव स्कंध ॥ १ ॥ इन चारों में नाम स्कंध व स्थापना स्कंध का कथन पूर्वोक्त आवश्यक के कथन जैसे कहना ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! द्रव्य स्कंध किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! द्रव्य स्कंध के दो भेद कहे हैं. तद्यथा—आगम से व नो आगम से ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! आगम से द्रव्य स्कंध किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! आगम से द्रव्य स्कंध उसे कहते हैं कि जो "स्कंध" ऐसा पद पढा. हृदय में स्थित किया यावत् सब द्रव्य आवश्यक जैसे कथन करना. विशेष यहां सब स्थान स्कंध लेना. यावत् अहो भगवन् ! ज्ञ शरीर भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य स्कंध किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! ज्ञ शरीर भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य स्कंध के तीन भेद कहे हैं.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

साचिते अचिते मीसए ॥ ४॥ से किं तं सचित्ते दव्वखंधे? सचित्ते दव्वखंधे-अणेगविहे पण्णत्ते तंजहा—हयखंधे, गयखंधे, नरखंधे, किन्नरखंधे, किंपुरिसखंधे, महोरग खंधे, गंधव्वखंधे, उसभखंधे, से तं सचिते दव्वखंधे ॥ ५ ॥ से किं तं अचित्ते दव्वखंधे ? अचित्ते दव्वखंधे अणेगविहे पण्णत्ते तंजहा—दुपएसिए तिपएसिए जाव दसपएसिए संखिज्जपएसिए असंखिज्जपएसिए अणंतपएसिए, से तं अचित्ते दव्वखंधे ॥ ६ ॥ से किं तं मीसए दव्वखंधे ? मीसए दव्वखंधे अणेगविहे पण्णत्ते तंजहा-

अर्थ

सचित्त, अचित्त व मीश्र ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! अचित्त स्कंध किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! सचित्त स्कंध के अनेक भेद कहे हैं. तद्यथा—अश्व का स्कंध, गज का स्कंध, मनुष्य का स्कंध, किन्नर का स्कंध, किंपुरुष का स्कंध, महोरग का स्कंध, गंधर्व का स्कंध, व वृषभ का स्कंध इत्यादि स्कंध को सचित्त द्रव्य स्कंध कहना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! अचित्त द्रव्य स्कंध किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! अचित्त द्रव्य स्कंध के अनेक भेद कहे हैं. तद्यथा—द्विप्रदेशिक त्रि प्रदेशिक यावत् दश प्रदेशिक स्कंध, संख्यात प्रदेशिक, असंख्यात प्रदेशीक व अनंत प्रदेशिक स्कंध. यह अचित्त द्रव्य स्कंध हुवा ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! मीश्र द्रव्य स्कंध किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! मीश्र द्रव्य स्कंध अनेक प्रकार से

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

सेणाए अग्गिमे खंधे, सेणाए मज्झिमे खंधे, सेणाए पच्छिमे खंधे, से तं मीसए दव्वखंधे ॥ ७ ॥ अहवा-जाणय सरीर भविय सरीर वइरित्ते दव्वखंधे तिविहे पण्णत्ते तंजहा—कसिणखंधे, अकसिणखंधे अणेग दवियखंधे ॥ ८ ॥ से किं तं कसिणखंधे? कसिण खंधे सो चेव हयखंधे गयखंधे जाव उसभखंधे से तं कसिण खंधे ॥ से किं तं अकसिणखंधे ? अकसिणखंधे सोचेव दुपएसिया खंधे जाव अणंतपएसिए खंधे सेतं अकसिण खंधे॥ से किं तं अणेग दवियखंधे? अणेगदविय खंधे तस्सचेव देसे

अर्थ

कहा है. हस्ती अश्व शस्त्रादि संयुक्त सेना का अग्रिम स्कंध, सेना का मध्य स्कंध और सेना का पीछे का स्कंध. यह मीश्र द्रव्य स्कंध हुवा ॥ ७ ॥ अथवा ज्ञ शरीर भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य स्कंध के तीन भेद कहे हैं जिन के नाम—१ कृत्स्न ( प्रतिपूर्ण ) द्रव्य स्कंध, २ अकृत्स्न अप्रतिपूर्ण द्रव्य स्कंध, और ३ अनेक द्रव्यवाला स्कंध ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! कृत्स्न द्रव्य स्कंध किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! पूर्वोक्त अश्व स्कंध गज स्कंध वगैरह कृत्स्न स्कंध है. द्विप्रदेशिक त्रिप्रदेशिक यावत् अनंत प्रदेशिक वगैरह अकृत्स्न द्रव्य स्कंध है. और अहो भगवन् ! अनेक द्रव्य स्कंध किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! सचित्त मनुष्य पशु आदि के शरीर का नख वगैरह जीव के प्रदेश रहित होवे तथा जीव प्रदेश सहित होवे उसे

For Private and Personal Use Only

**सूत्र**

अशचिए तस्स चेव देसे उवचिए, से तं अणेगदव्विय खंधे. से तं जाणय सरीर भविय सरीर वइरित्ते दव्वेखंधे, से तं नो आगमओ दव्वखंधे. से तं दव्व खंधे॥९॥ से किं तं भावखंधे ? भाव खंधे दुविहे पण्णत्ते तंजहा—आगमओय, नो आगमओय ॥ १० ॥ से किं तं आगमओ भावखंधे ? आगमओ भावखंधे जाणए उवउत्ते, से तं आगमओ भावखंधे ॥ से किं तं नो आगमओ भावखंधे ? नो आगमओ भावखंधे एएसिं चेव सामाइय माइयाणं छण्हं अज्झयणाणं समुदय समिइ

**अर्थ**

अनेक द्रव्य स्कंध कहते हैं, यह ज्ञ शरीर भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य स्कंध हुवा. यह नो आगम से द्रव्य स्कंध हुवा. यह द्रव्य स्कंध का कथन पूरा हुवा ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! भाव स्कंध किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! भाव स्कंध के दो भेद कहे हैं. तद्यथा—१ आगम से और २ नो आगम से ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! आगम से भाव स्कंध किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! उपयोग पूर्वक स्कंध का अर्थ परमार्थ को जाने सो. यह आगम से भाव स्कंध हुवा. अहो भगवन् ! नो आगम से भाव स्कंध किसे कहते हैं ! अहो शिष्य ! सामायिकादि छ ही अध्ययन एकत्रित करने से सूत्र का जो स्कंध होता है वह नो आगम से भाव स्कंध है. यह भाव स्कंध का अधिकार हुवा. यह स्कंध पर चारों निक्षेप हुए ॥ ११ ॥ अब

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private and Personal Use Only

सूत्र

समागमेणं निपिण्णे आवस्सयसुय खंधे भावखंधेत्ति लब्भइ, से तं नो आगमओ भावखंधे, से तं भावखंधे ॥ ११ ॥ तस्सणं इमे एगट्ठिया णाणा घोसा, णाणा वंजणा, नामधेज्जा भवंति, तंजहा—(गाहा) गणकाए निकाएचिए, खंधे, वग्गे, तहेव रासीय॥ पुंजय पिंडे निगरे, संघाए आउल समूहे ॥१॥ से तं खंधे ॥ * ॥ आवस्सगस्सणं इमे अत्थाहिगारा भवंति, तजहा—(गाहा) सावज्जजोगविरई उक्कित्तण गुणवओय पडिवत्ती,॥ खलिच- स्स निंदणा, वणतिगिच्छ गुण धारणा चेव ॥ १ ॥ आवस्सयस्सणं एसो पिंडत्थो

अर्थ

स्कंध के बारह नाम कहते हैं—यह भाव स्कंध एकार्थ वाची, अनेक घोष, अनेक व्यंजनवाला है. इस के नाम—१ गण—बहुतों का मीलना, २ काय—षट्काय समान, ३ निकाय—शरीर तुल्य, ४ स्कंध- वृक्ष के स्कंध जैसा, ५ वर्ग—गौवर्ग समान, ६ राशि—ढग समान, ७ पुंज—धान्यादि के पुंज समान, ८ पिंड— मृत्तिका के पिण्ड समान, ९ निकर—उपाचित हुवा, १० संघात—संघातन, ११ आकुल—कुल के समान और १२ समुह. यह स्कंध का तीसरा अधिकार हुवा ॥ ३ ॥ * ॥ अब इन आवश्यक श्रुत, व स्कंध इन तीनों के चार २ निक्षेप करके चौथा आवश्यक के अध्ययन का कथन करते हैं. आवश्यक के निम्नोक्त अर्थाधिकार होते हैं. जैसे कि सावद्य योग की विरति रूप प्रथम अध्ययन, २ गुण कीर्तन रूप

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

वण्णिओ समासेणं ॥ एत्तो एकेक्कं पुण अज्झयणं कित्तइस्सामि ॥ १ ॥ तंजहा– सामाइयं, चउवीसत्थओ, वंदणयं, पडिक्कमणं, काउस्सग्गो, पच्चक्खाणं ॥ १ ॥ तत्थ पढमं अज्झयणं सामाइयं तस्सणं इमे चत्तारि अणुओगदारा भवंति तंजहा–

अर्थ

द्वितीय अध्याय, ३ गुणयुक्त को वंदना रूप तृतीय अध्याय, ४ अतिचारों की निवृत्ति रूप चतुर्थ अध्याय ५ दोष रूप व्रण की औषधि रूप पंचम अध्याय और ६ उत्तर गुण की धारणा रूप षष्ठ अध्याय. यह छ आवश्यक रूप छ अध्ययन जानना. यह आवश्यक के स्कंध का संक्षेप से अर्थ वर्णन किया परंतु स्कंध के एकेक अध्ययन का विस्तार पुर्वक व्याख्या करूंगा. जैसे—१ सामायिक-समता रूप लाभ. २ चतुर्विंशस्तव—चउवीस तीर्थंकर के गुणानुवाद. ३ वंदना–गुणाधिक की वंदना करना, ४ प्रतिक्रमण–अतिचार रूप पाप से निवर्तना, ५ कायोत्सर्ग—पाप की विशुद्धि के लिये काया को उत्सर्ग सन्मुख रखना और ६ प्रत्याख्यान–अनागत काल में पाप के आगमन का द्वार रोकना. यह आवश्यक के छ अध्ययन के नाम अर्थाचिन जानना ॥ १ ॥ अहो शिष्य ! उक्त छ अध्ययन में से प्रथम अध्ययन का नाम सामायिक है उस के यह चार अनुयोग द्वार होते हैं. जैसे—१ उपक्रम-दूर की वस्तु को नजीक करने का उद्यम करना, २ निक्षेप–फिर उसे दृढता पूर्वक करना, ३ अनुगम व्याख्या करना और ४ नय—अनेक धर्ममय वस्तु को मुख्यता में एक ही धर्ममय मानना. इस का विस्तार पूर्वक कथन आगे कहते हैं. जिस

For Private and Personal Use Only

सूत्र

उवक्कमे, निक्खेवे, अणुगमे, नए ॥ २ ॥ से किं तं उवक्कमे ? उवक्कमे छव्विहे पण्णत्ते तंजहा-णामोवक्कमे, ठवणोवक्कमे, दव्वोवक्कमे, खेत्तोवक्कमे, कालोवक्कमे, भावोवक्कमे ॥ णाम ठवणाओ गयाओ ॥ ३ ॥ से किं तं दव्वोवक्कमे ? दव्वोवक्कमे दुविहे पण्णत्ते तंजहा—आगमओय, नो आगमोओय जाव जाणग सरीर भविय सरीर वइरित्ते, दव्वोवक्कमे तिविहे पण्णत्ते तंजहा—सचित्ते अचित्ते मीसए ॥ ४ ॥ से किं तं सचित्ते दव्वोवक्कमे ? सचित्ते दव्वोवक्कमे तिविहे पण्णत्ते तंजहा—

अर्थ

प्रकार किसी वस्तु की प्राप्ति के लिये नगर में द्वारों से प्रवेश कर सकते हैं वैसे ही आवश्यक रूप नगर में प्रवेश करने के लिये अनुयोग—अध्ययनादि की व्याख्या रूप मुख्य चार द्वारों का कथन वैसे ही प्रत्येक के उत्तर द्वारों का कथन कहते हैं ॥ २ ॥ अब प्रथम उपक्रम का अधिकार कहते हैं. अहो भगवन् ! उपक्रम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! उपक्रम के छ भेद कहे हैं जिन के नाम—१ नाम उपक्रम २ स्थापना उपक्रम, ३ द्रव्य उपक्रम, ४ क्षेत्र उपक्रम, ५ काल उपक्रम और ६ भाव उपक्रम. इन में नाम व स्थापना उपक्रम का कथन पूर्वोक्त नाम व स्थापना आवश्यक जैसे कहना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! द्रव्य उपक्रम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! द्रव्य उपक्रम के दो भेद हैं—१ आगम से और २ नो आगम से यावत् ज्ञ शरीर भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य उपक्रम के तीन भेद कहे हैं—१ सचित्त, २ अचित्त और ३ मीश्र ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! सचित्त द्रव्य उपक्रम किसे कहते हैं ?

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

दुप्पए, चउप्पए, अप्पए, एक्किके पुण दुविहे पण्णत्ते तंजहा—परिक्कमेय वत्थुविणासेय॥ ५॥ से किं तं दुप्पए उवक्कमे? दुपए उवक्कमे-दुप्पयाणं, नडाणं, नट्टाणं जल्लाणं मल्लाणं, मुट्ठियाणं वेलंबगाणं, कहगाणं, पवगाणं, लासगाणं, आइक्खगाणं, लंखाणं, मंखाणं, तूणइल्लाणं, तुंबवीणियाणं, कावोयाणं, मागहाणं, से तं दुप्पए उवक्कमे ॥ ६ ॥ से किं तं चउप्पए

अर्थ

अहो शिष्य ! सचित्त द्रव्य उपक्रम के तीन भेद कहे हैं. तद्यथा—१ द्विपद, २ चतुष्पद और ३ अपद. इन में एकेक के दो २ भेद कहे हैं तद्यथा—१ परिक्रम और २ वस्तु विनाशक * ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! द्विपद उपक्रम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! नृत्य करनेवाले, नाटक करनेवाले, रस्सीपर खेलनेवाले, मल्लयुद्ध करनेवाले, मुष्टियुद्ध करनेवाले, वेष बनानेवाले, ऐतिहासिकादि कथा करनेवाले, पवाडा गानेवाले, विरुदावाली बोलनेवाले, ज्योतिष निमित्त प्रकाशनेवाले, वंशाग्र खेलनेवाले, काष्ट पर या वस्त्र पर चित्र लेखन कर बतानेवाले, वीणा बजानेवाले, तुम्बादिक की वीणा बजानेवाले, कावड धारन करनेवाले, मागधिक-जय २ शब्द बोलनेवाले, ये उपक्रम से अनेक काल का अभ्यास कर वस्तु उत्पन्न करते हैं उसे उपक्रम कहना और बिनाश करते होवे उसे वस्तु विनाशक कहना. यह द्विपद उपक्रम के भेद हुए.

---

* दीर्घ काल में जो कार्य सिद्ध होने का होवे वह स्थापनादि प्रयोग से थोडे काल में सिद्ध करे यह परिक्रम. ऐसे ही दीर्घ काल में वस्तु का विनाश होने का होवे उस का शस्त्रादि प्रयोग से अल्प काल में विनाश करे वह वस्तु विनाशक.

सूत्र

उवक्कमे ? चउप्पए उवक्कमे-चउप्पयाणं आसाणं हत्थीणं इच्चाइ से तं चउप्पए उवक्कमे ॥७॥ से किं तं अप्पए उवक्कमे? अप्पए उवक्क-अप्पयाणं अंबाणं अंबाडगाणं इच्चाइ से तं अप्पएउवक्कमे, से तं सचित्त दव्वोवक्कमे ॥ ८ ॥ से किं तं अचित्त दव्वोवक्कमे ? अचित्त दव्वोवक्कमे-खंडाईणं गुडाईणं मच्छंडीणं, से तं अचित्त दव्वोवक्कमे ॥ ९ ॥ से किं तं मीसए दव्वोवक्कमे ? मीसए दव्वोवक्कमे-सोचेव थालगआयंसगाइमंडिए आसाइ, से तं मीसए दव्वोवक्कमे. ॥ से तं जाणय सरीर

अर्थ

॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! चतुष्पद उपक्रम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! हाथी घोडे इत्यादि उपक्रम से अनेक कला का अभ्यास करे सो उपक्रम और वस्तु का नाश करे वह वस्तु विनाशक ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! अपद उपक्रम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! आम्र अम्बाडे इत्यादि फल रसादि गुन की वृद्धि करे तथा घटादि घृतादि धारन करे वह उपक्रम और इन से वस्तु का नाश करे सो विनाशक. यह अपद उपक्रम का और सचित्त द्रव्य उपक्रम के भेद हुए ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! अचित्त द्रव्य उपक्रम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! अचित्त द्रव्य उपक्रम शक्कर, गुड, मीश्री आदि दुग्धादि में मीलाने से मिष्ट गुन वगैरह की वृद्धि करे सो अचित्त द्रव्य उपक्रम और विनाश करे सो वस्तु विनाशक. यह अचित्त द्रव्य उपक्रम का कथन हुवा ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! मीश्र द्रव्य उपक्रम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! आभूषणों से अलंकृत बने हुए उक्त अश्वादि को उपक्रम या वस्तु विनाश द्वारा शिक्षित बनावे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir





सूत्र

भविय सरीर वइरित्ते दव्योवक्कमे ॥ से तं नो आगमओ दव्वोवक्कमे ॥ से तं दव्वो-वक्कमे ॥ १० ॥ से किं तं खेत्तोवक्कमे ? खेत्तोवक्कमे-जण्णं हलकुलियाईहिं खेत्ताइं उवक्कमिज्जंति. से तं खेत्तोवक्कमे ॥ ११ ॥ से किं तं कालोवक्कमे ? कालोवक्कमे ! जं णं नालियाईहिं कालस्सोवक्कमणं कीरइ, से तं कालोवक्कमे ॥ १२ ॥ से किं तं भावोवक्कमे ? भावोवक्कमे ! दुविहे पण्णत्ते तंजहा—आगमओय नो आगमोओय, आगमओ जाणए उवउत्ते। नो आगमओ दुविहे पण्णत्ते तंजहा—पसत्थेय अपसत्थेय,

अर्थ

या नाश करे यह वीश्र द्रव्य उपक्रम हुवा. यह ज्ञ शरीर भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य उपक्रम का कथन हुवा. यह नो आगम द्रव्य उपक्रम व द्रव्य उपक्रम का कथन हुवा ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! क्षेत्रोपक्रम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! हल और कुलि करके क्षेत्रादि का उपक्रम वा वस्तु विनाश किया जाता है उसे क्षेत्रोपक्रम कहते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! कालोपक्रम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! घटिकादि से काल का जो प्रमाण किया जाता है अथवा पांवसे पौरुषी आदि का प्रमाण होता है उसे कालोपक्रम कहते हैं. ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! भावउपक्रम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! भावउपक्रम के दो भेद कहे हैं तद्यथा—आगम से और नो आगम से. उस में शास्त्रादिक का उपयोग सहित अभ्यास करे सो आगम से भावोपक्रम और नो आगम से भावोपक्रम के दो भेद

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

तत्थ अपसत्थे डोडिणि गणियाय मच्चाईणं, पसत्थे गुरुमाईणं. से तं नो आगमओ

अर्थ

तद्यथा-प्रशस्त और अप्रशस्त. इस में अप्रशस्त उपक्रम से ब्राह्मणी की गणिका की और प्रधान की बुद्धि. इन तीनों की संक्षेप से कथा कहते हैं—१ एक ब्राह्मणीने अपनी तीनों पुत्रियों को पाणिग्रहण कराकर कहा कि तुम अपने पति को किसी प्रकार के अपराध में लाकर उस के पाद प्रहार करना और जो होवे सो सब वृत्तात मुझे कहना. तीनों ने उसही प्रकार किया. उस में एक के पति ने प्रसन्न हो कहा कि मेरे कठिन मस्तक में तेरे पांव से प्रहार करने से तेरे कोमल पांव को इजा हुई होगी सो माफ कर. दुसरी के पति ने उत्तम स्त्री को ऐसा करना योग्य नहीं है यों कहकर क्रोधित होकर शांत होगया. और तीसरी के पति ने उसे घर से बाहिर नीक दी. तीनोंने अपने माता को वीतक वार्ता कही. माताने प्रथप पुत्री से कहा तू निश्चित रहे. तेरा पति तेरी आज्ञा में रहेगा. दूसरी से भी कहा तू भी निश्चित रहे. कदापि तेरा पति कुपित होगा तो शांत हो जायगा. और तीसरी से कहा यदि तू सुख की अभिलाषा करती हो तेरे पति की आज्ञा में सदैव रहना यों पुत्री और उन के पति का अभिप्राय जाना सो ब्राह्मणी की बुद्धि जानना. किसी वेश्याने जगत के प्रतिष्ठित २ पुरुषोंके चित्रों की चित्रशाला बनवाइ. वहां राजपुत्रादि जो आवे वे अपना चित्र देख कर संतुष्ट होवे और वेश्या को संतुष्ट करे. इस वेश्याने अपनी बुद्धि से द्रव्योपार्जन किया सो वेश्या की बुद्धि. ३ एकदा राजा अपने मंत्री सहित अश्व पर आरूढ होकर वन क्रीडा करने गया था. वहां एक स्थान पर घोडेने लघुनीत की जिस से खड्डा पड कर वहां ही मुत्र स्थिर रहा. यह देख राजाने विचार किया कि यहां तलाव होवे सो अच्छा. परंतु





For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



भावोवक्कमे, से तं भावोवक्कमे ॥ से तं उवक्कमे ॥ १३ ॥ * ॥ अहवा उवक्कमे छव्विहे पण्णत्ते तंजहा—आणुपुव्वी, नामं, पमाणं, वत्तव्वया, अत्थाहिगारे, समोयारे ॥ १४ ॥ से किं तं आणुपुव्वी ? आणुपुव्वी दसविहा पण्णत्ता, तंजहा—नामाणुपुव्वी, ठवणाणुपुव्वी, दव्वाणुपुव्वी, खेत्ताणुपुव्वी, कालाणुपुव्वी उक्कित्ताणुपुव्वी, गणणाणुपुव्वी, संठाणाणुपुव्वी, सामायारीयाणुपुव्वी, भावाणुपुव्वी ॥ नामठवणाओ



अर्थ

वह बात राजाने किसी से कही नहीं. प्रधानने उस के मनोभाव जानकर वहां एक अच्छा तलाव बनवाया. यह देख राजा प्रधान की बुद्धि से संतुष्ट हुवा. यों राजा के मनोगत भाव जाना. वह प्रधान की बुद्धि. इनोंने आरंभ के कार्य में अपनी बुद्धि लगाइ इस से अप्रशस्त उपक्रम कहा गया. और प्रशस्त उपक्रम सो गुरु आदि ज्येष्ठ श्रेष्ठ जनों के इंगित आकार से अभिप्राय को जानकर कार्य करे सो. यह नो आगम से भाव उपक्रम हुवा. यह भाव उपक्रम का कथन हुवा. यह उपक्रम का वर्णन हुवा ॥ १३ ॥ और भी विशेष प्रकार शास्त्रों के भाव जानने को उपक्रम का कथन विस्तार से कहते हैं. उपक्रम के और भी छ भेद कहे हैं जिन के नाम—१ अनुपूर्वी, २ नाम, ३ प्रमाण, ४ वक्तव्यता, ५ अर्थाधिकार, और ६ समोयार ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! आनुपुर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! आनुपूर्वी के दश भेद कहे हैं. तद्यथा—नामानुपूर्वी, २ स्थापनानुपूर्वी, ३ द्रव्यानुपूर्वी, ४ क्षेत्रानुपूर्वी, ५ कालानुपूर्वी, ६ उत्कांतानुपूर्वी, ७ गणणानुपूर्वी, ८ संस्थानानुपूर्वी. ९ समाचारानुपूर्वी और १० भावानुपूर्वी. इन दश में से नामानुपूर्वी व



For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

नो अणाणुपुव्वी दव्वेहिं समोयरंति, नो अवत्तव्वय दव्वेहिं समोयरंति. ॥ नेगमववहाराणं अणाणुपुव्वी दव्वाइं कहिं समोयरंति किं आणुपुव्वी दव्वेहिं समोयरंति, अणाणुपुव्वी दव्वेहिं समोयरंति. अवत्तव्वय दव्वेहिं समोयरंति? नो आणुपुव्वी दव्वेहिं समोयरंति. अणाणुपुव्वी दव्वेहिं समोयरंति. नो अवत्तव्व दव्वेहिं समोयरंति नेगमववहाराणं अवत्तव्व दव्वाइं कहिं समोयरंति-किं आणुपुव्वी दव्वेहिं समोयरंति, अणाणुपुव्वी दव्वेहिं समोयरंति, अवत्तव्व दव्वेहिं समोयरंति ? नो आणुपुव्वी दव्वेहिं समोयरंति, नो अणाणुपुव्वी दव्वेहिं समोयरंति, अवत्तव्वय दव्वेहिं समोयरंति ॥ सेतं समोयारे ॥ २८ ॥ से

अर्थ

व्यवहार नयके मत से समवतार कैसे होता है ? क्या आनुपूर्वी द्रव्य का समवतार होता है, अनानुपूर्वी द्रव्य का समवतार होता है या अवक्तव्य द्रव्य का समवतार होता है ? अहो शिष्य ! नैगम व्यवहार नय के मत से आनुपूर्वी द्रव्य में समवतार होता है परंतु अनानुपूर्वी व अवक्तव्य द्रव्य में समवतार नहीं होता है. ऐसे ही अनानुपूर्वी द्रव्य का अनानुपूर्वी द्रव्य में समवतार होता है परंतु आनुपूर्वी व अवक्तव्य व द्रव्य में समवतार नहीं होता है और अवक्तव्य द्रव्य का अवक्तव्य द्रव्य में समवतार होता है परंतु अनापूर्वी व आननुपूर्वी द्रव्य में समवतार नहीं होता है ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! अनुगम किसे

For Private and Personal Use Only

सूत्र

किं तं अणुगमे? अणुगमे नव विहे पण्णत्ते तंजहा-(गाहा) १ संतपय परूवणया, २ दव्वपमाण, ३ खित्तं, ४ फुसणाय ५ कालोय ६ अंतरं, ७ भाग, ८ भाव, ९ अप्पाबहुं चेव ॥ १ ॥ २९ ॥ नेगमववहाराणं आणुपुव्वी दव्वाइं किं अत्थि नत्थि? णियमा आत्थि, ॥ नेगम ववहाराणं आणाणुपुव्वी दव्वाइं किं अत्थि णत्थि? णियमा अत्थि ॥ नेगम ववहाराणं अवत्तव्वग दव्वाइं किं अत्थि णत्थि? नियमा



अर्थ

कहते हैं? अहो शिष्य! सूत्र के अनकूल रूप का दर्शानेवाला अथवा माननीय रूप की व्याख्या करनेवाले अनुगम के नव भेद कहे हैं. तद्यथा—१ सत्पदप्ररूपना द्वार—विद्यमान सत्पद की प्ररूपना करे परंतु आकाश कुसुमवत् अविद्यमान पद की प्ररूपना नहीं करे. २ द्रव्य प्रमाण द्वार—इस में द्रव्यों के संख्या का कथन, ३ क्षेत्र द्वार—जितने क्षेत्र में रहे उस का कथन, ४ स्पर्शन द्वार में कितना क्षेत्र स्पर्शना जिस का कथन. ५ काल द्वार में कितने काल की स्थिति है उस का कथन है, ६ अंतर द्वार में बिछडे हुअे पीछे कितने काल में मील जाय उस का कथन है, ७ भाग द्वार में परस्पर कितना भाग है जिस का कथन है. ८ भाव द्वार में कितने भाव है उस का कथन है, और ९ अल्पाबहुत्व द्वार में अल्पबहुत्व व विशेषाधिक कौन २ है जिस का वर्णन है ॥ २९ ॥ प्रथम सत्पद प्ररूपना द्वार—अहो भगवन्! नैगम व्यवहार नय के मत से अनुपूर्वी द्रव्य, अनानुपूर्वी द्रव्य व अवक्तव्य द्रव्य की अस्ति है कि नास्ति है? अहो शिष्य! तीनों काल में तीनों प्रकार के द्रव्य की नियमा से सदैव अस्ति है परंतु नास्ति नहीं है ॥ ३० ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

अत्थि ॥ ३० ॥ नेगम बवहाराणं आणुपुव्वी दव्वाइं किं संखिज्जाइं असंखिज्जाइं अणंताइं ? नो संखिज्जाइं नो असंखिज्जाइं, अणंताइं, एवं अणाणुपुव्वी दव्वाइं अवत्तव्वग दव्वाइं च अणंताइ भाणियव्वाइं ॥ ३१ ॥ नेगम ववहाराणं आणुपुवी दव्वाइं लोगस्स किं संखिज्जइ भागे होज्जा, असंखिज्जइ भागे होज्जा, संखेज्जेसु भागेसु होज्जा, असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा, सव्वलोए होज्जा ? एगं दव्वं पडुच्च संखेज्जइ भागे वा होज्जा, असंखेज्जइ भागे वा होज्जा, संखेज्जेसु भागेसु वा होज्जा, असंखिज्जेसु भागे सु वा होज्जा, सव्वलोए वा होज्जा । णाणा

अर्थ

दूसरा संख्या द्वार—अहो भगवन् ! नैगम व्यवहार नय के मत से तीनों प्रकार के द्रव्य क्या संख्याते हैं. असंख्याते हैं या अनंत हैं ? अहो शिष्य ! तीनों प्रकार के द्रव्य संख्याते असंख्याते नहीं है परंतु अनंत हैं ॥ ३१ ॥ तीसरा क्षेत्र द्वार—नैगम व्यवहार नय के मत से आनुपूर्वी द्रव्य लोक के कितने भाग में हैं क्या संख्यात भाग में हैं कि असंख्यात भाग में हैं? क्या संख्यातवे भाग में है या असंख्यातवे भाग में हैं, या सब लोक में है ? अहो शिष्य ! एक द्रव्य आश्री आनुपूर्वी द्रव्य लोक के संख्यात भाग में हैं, असंख्यात भाग में है, संख्यातवे भाग में है, असंख्यातवे भाग में हैं और संपूर्ण लोक में हैं. और बहुत द्रव्य आश्री संपूर्ण लोक में होवे. क्यों कि तीन प्रदेशिक स्कंध से अनंत प्रदेशिक स्कंध

For Private and Personal Use Only

सूत्र

दव्वाइं पडुच्च नियमा सव्वलोए होज्जा ॥ नेगम ववहाराणं अणाणुपुव्वी दव्वाइं किं लोयस्स संखिज्जइ भागे होज्जा जाव सव्वलोए वा होज्जा ? एगं दव्वं पडुच्च नो संखेज्जइ भागे होज्जा, असंखेज्जति भागे होज्जा. नो संखेज्जेसु भागेसु होज्जा, नो असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा, नो सव्वलोए होज्जा णाणा दव्वाइं पडुच्च नियमा सव्वलोए होज्जा, एवं अवत्तव्वग दव्वाइं भाणियव्वाइं ॥ ३२ ॥ नेगम ववहाराणं आणुपुव्वी दव्वाइं लोगस्स किं संखेज्जइ भागं फुसंति, असंखेज्जइ भागं फुसंति, संखेज्जेसु भागे फुसंति, असंखेज्जेसु भागे फुसंति, सव्वलोगं फुसंति ? एगं दव्वं पडुच्च लोगस्स संखेज्जइ

अर्थ

पर्यंत यह है. अहो भगवन् ! नैगम व्यवहार नय आश्रीय अनानुपूर्वी द्रव्य क्या लोक के संख्यात भाग में हैं, असंख्यात भाग में हैं, संख्यातवे भाग में हैं या असंख्यातवे भाग में है, या सब लोक में हैं ? अहो शिष्य ! एक द्रव्य आश्रीय लोक के असंख्यात भाग में ही होता है और बहुत द्रव्य आश्रीय नियमा से सब लोक में होता है. ऐसे ही अवक्तव्य का कहना ॥ ३२ ॥ चौथा स्पर्शना द्वार कहते हैं—अहो भगवन् ! नैगम व्यवहार नय के मत से आनुपूर्वी द्रव्य क्या लोक के संख्यात भाग में स्पर्श करते हैं, असंख्यात भाग में स्पर्श करते हैं, संख्यातवे भाग में स्पर्श करते हैं, असंख्यातवे भाग में स्पर्श करते हैं या सब लोक में स्पर्श करते हैं ? अहो शिष्य ! आनुपूर्वी द्रव्य लोक के संख्यात भाग में यावत् सब

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

भागं वा फुसंति जाव सव्वलोगं वा फुसंति । णाणा दव्वाइं पडुच्च नियमा सव्वलोगं फुसंति ॥ णेगम ववहाराणं अणाणुपुव्वी दव्वाइं लोयस्स किं संखेज्जइ भागं फुसंति जाव सव्वलोगं फुसंति ? एगं दव्वं पडुच्च नो संखिज्जइ भागं फुसंति. असंखिज्जइ भागं फुसंति, नो सखिज्जे भागे फुसंति नो असंखिज्जे भागे फुसंति, नो सव्वलोयं फुसंति । नाणा दव्वाइं पडुच्च नियमा सव्वलोयं फुसंति, एवं अवत्तव्वग दव्वाइं भाणियव्वाइं ॥ ३३ ॥ णेगम ववहाराणं आणुपुव्वी दव्वाइं कालओ केवच्चिरं

अर्थ

लोक में स्पर्श करते हैं और बहुत द्रव्य आश्री नियमा सब लोक को स्पर्शते हैं. अहो भगवन् ! अनानुपूर्वी द्रव्य लोक का संख्यात भाग यावत् क्या सब लोक स्पर्शता है ? अहो शिष्य ! एक द्रव्य की अपेक्षा से लोक का असंख्यातवा भाग ही स्पर्शता है परंतु संख्यात भाग, संख्यातवा भाग या सब लोक को नहीं स्पर्शता है और अनेक द्रव्य की अपेक्षा से सब लोक को स्पर्शता है. जैसे अनानुपूर्वी का कहा वैसे ही अवक्तव्य का कहना × ॥ ३३ ॥ पांचवा काल द्वार—अहो भगवन् ! नैगम व्यवहार नय की अपेक्षा से आनुपूर्वी द्रव्य की कितनी स्थिति कही है ? अहो शिष्य ! एक द्रव्य की

× क्षेत्र द्वार व स्पर्शना द्वार में विशेषता यह है कि एक प्रदेश में अवगाह कर रहा हुवा द्रव्य छ दिशि के छ व मध्य का एक यों सात को स्पर्शन कर सकता है-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

होइ ? एगं दव्वं पडुच्च-जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं । णाणा दव्वाइं पडुच्च णियमा सव्वद्धा । अणाणुपुव्वी दव्वाइं अवत्तव्वग दव्वाइं च एवं चेव भाणियव्वाइं ॥ ३४ ॥ णेगम ववहाराणं आणुपुव्वी दव्वाणं अंतरं कालओ केवचिरं होइ ? एगं दव्व पडुच्च—जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं अणंतं कालं । णाणा दव्वाइं पडुच्च-णत्थि अंतरं ॥ णेगम ववहाराणं अणाणुपुव्वी दव्वाणं अंतरं कालओ केवचिरं होई ? एगं दव्वं पडुच्च जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं । णाणादव्वाइं पडुच्च णत्थि अंतरं ॥ णेगम ववहाराणं अवत्तव्वग दव्वाणं

अर्थ

अपेक्षा जघन्य एक समय की उत्कृष्ट असंख्यात काल की और बहुत द्रव्य की अपेक्षा से नियमा से सदैव पाते हैं. इसी तरह अनानुपूर्वी व अवक्तव्य का कहना ॥ ३४ ॥ छट्ठा अंतर द्वार कहते हैं—अहो भगवन् ! आनुपूर्वी द्रव्य विखरे पीछे पीछा आनुपूर्वी द्रव्य बने उस में कितने काल का अंतर होता है ? अहो शिष्य ! एक द्रव्य की अपेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अनंत काल का अंतर पडे और बहुत द्रव्य की अपेक्षा कदापि अंतर पडे नहीं. अहो भगवन् ! अनानुपूर्वी द्रव्य का कितना अंतर पडे ? अहो शिष्य ! एक द्रव्य आश्रीय जघन्य एक समय उत्कृष्ट असंख्यात काल और बहुत द्रव्य की अपेक्षा से

For Private and Personal Use Only

सूत्र

अंतरं कालओ केवच्चिरं होई ? एगं दव्वं पडुच्च जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं अणंतंकालं, णाणा दव्वाइं पडुच्च णत्थि अंतरं ॥३५॥ णेगमववहाराणं आणुपुव्वी दव्वाइं सेसदव्वाणं कइभागे होज्जा—किं संखिज्जइ भागे होज्जा, असंखिज्जइ भागे होज्जा, संखेज्जेसु भागेसु होज्जा, असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा ? नो संखिज्जइ भागे होज्जा, नो असंखिज्जइ भागे होज्जा, नो संखेज्जेसु भागेसु होज्जा, नियमा असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा ॥ णेगमववहाराणं अणाणुपुव्वी दव्वाइं सेस दव्वाणं कइ भागे होज्जा-किं संखिज्जइ भागे होज्जा, असंखिज्जइ भागे होज्जा, संखेज्जेसु भागेसु होज्जा,

अर्थ

अंतर पडे नहीं. अहो भगवन् ! अवक्तव्य द्रव्य का कितना अंतर होवे ? अहो शिष्य ! एक द्रव्य आश्री जघन्य एक समय उत्कृष्ट अनंत काल और बहुत द्रव्य आश्री अंतर नहीं होवे ॥ ३५ ॥ सातवा भाग द्वार—अहो भगवन् ! नैगम व्यवहार नय के मत से आनुपूर्वी द्रव्य अन्य अनानुपूर्वी व अवक्तव्य द्रव्य में क्या संख्यात भाग में, असंख्यात भाग में, संख्यातवे भाग में व असंख्यातवे भाग में है ? अहो शिष्य ! संख्यात भाग, असंख्यात भाग व संख्यातवे भाग में नहीं होवे परंतु नियमा से असंख्यातवे भाग में होवे. नैगम व्यवहार नय के मत से अनानुपूर्वी अन्य आनुपूर्वी व अवक्तव्य से क्या संख्यात

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा ? नो संखेज्जइ भ.गे होज्जा. असंखेज्जइ भागेसु होज्जा नो संखेज्जेसु नो असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा । एवं अवत्तव्वग दव्वाणिवि भाणियव्वाणि ॥ ३६ ॥ णेगम ववहाराणं आणुपुव्वी दव्वाइं कतरमि भावे होज्जा ? किं उदइए भावे होज्जा, उवसमिए भावे होज्जा, खइए भावे होज्जा, खओवसमिए भावे होज्जा, पारिणामिए भावे होज्जा, सन्निवाइय भावे होज्जा ? नियमा साइपारिणामिए भावे होज्जा, अणाणुपुव्वी दव्वाणि अवत्तव्वग दव्वाणिय एवं चेव भाणियव्वाणि ॥ ३७ ॥ एएसिणं भंते! णेगम ववहाराणं आणुपुव्वी दव्वाणं अणाणुपुव्वी दव्वाणं अवत्तव्वग दव्वाणय दव्वट्ठ

अर्थ

भाग में, असंख्यात भाग में, संख्यातवे भाग में व असंख्यातवे भाग में होवे ? अहो शिष्य ! मात्र असंख्यात भाग में होवे शेष भागों में होवे नहीं. ऐसे ही अवक्तव्य पद का कहना ॥ ३६ ॥ आठवा भाव द्वार—नैगम व्यवहार नय के मत से आनुपूर्वी द्रव्य कितने भाव में होवे ? क्या उदयिक भाव में, औपशमिक भाव में, क्षायिक भाव में. क्षयोपशमिक भाव में, पारिणामिक भाव में या सन्निपातिक भाव में होवे ? अहो शिष्य ! मात्र नियमा से सादि पारिणामिक भाव में होवे. शेष भाव में होवे नहीं. ऐसे ही अनानुपूर्वी व अवक्तव्य का कहना ॥ ३७ ॥ नववा अल्पाबहुत्व द्वार—अहो भगवन् ! नैगम व्यवहार नय के मत से आनुपूर्वी, अनानुपूर्वी व अवक्तव्य द्रव्य में द्रव्य से प्रदेश से व द्रव्यप्रदेश से कौन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

याए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा ! सव्वत्थोवाइं णेगम ववहाराणं अवत्तव्वग दव्वाणं दव्वट्ठयाए अणाणुपुव्वी दव्वाइं दव्वट्ठयाए विसेसाहियाई आणुपुव्वी दव्वाइं दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणाइ पएसट्ठयाए—णेगम ववहाराणं—सव्वत्थोवाइं अणाणुपुव्वी दव्वाइं, अप्पएसट्ठयाए अवत्तव्वग दव्वाइं, पएसट्ठयाए विसेसाहियाइं, आणुपुव्वी दव्वाइं पएसट्ठयाए अणंत गुणाइं दव्वट्ठपएसट्ठयाए—सव्वत्थोवाइं णेगम ववहाराणं अवत्तव्वग दव्वाइ दव्वट्ठयाए, अणाणुपुव्वी दव्वाइं दव्वट्ठयाए अपएसट्ठयाए विसेसाहियाइं, अवत्तव्वग दव्वाइं पएसट्ठयाए विसेसाहियाइं, आणुपुव्वी दव्वाइं दव्वट्ठयाए

अर्थ

किस से अल्प, बहुत, तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे अवक्तव्य द्रव्य द्रव्य आश्री, इस से अनानुपूर्वी द्रव्य द्रव्य आश्री विशेषाधिक और इस से आनुपूर्वी द्रव्य. द्रव्य आश्री असंख्यातगुने अब प्रदेश आश्री कहते हैं. नैगम व्यवहार नय के मत से सब से थोडे अनानुपूर्वी द्रव्य प्रदेश आश्री क्यों होवे कि एक प्रदेश है इस से अवक्तव्य द्रव्य प्रदेश आश्री विशेषाधिक क्यों कि द्विप्रदेशिक है इस से आनुपूर्वी द्रव्य प्रदेश आश्री अनंतगुने क्यों कि तीन से अनंत पर्यंत प्रदेश रहे है. अब द्रव्य प्रदेश की साथ अल्पाबहुत्व कहते है-नैगम व्यवहार नय के मत से सब से थोडे अवक्तव्य द्रव्य द्रव्य आश्री. इस से अनानुपूर्वी द्रव्य द्रव्य व प्रदेश आश्री विशेषाधिक, इस से अवक्तव्य द्रव्य द्रव्य प्रदेश आश्री विशेषाधिक, इस से आनुपूर्वी द्रव्य





For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

असंखेज्जगुणाइं ताइं चेव पएसट्टयाए अणंतगुणाइं, सेतं अणुगमे से तं नेगम ववहाराणं अणोवणिहिया दव्वाणुपुव्वी ॥ ३८ ॥ से किं तं संगहस्स अणोवणिहिया दव्वाणुपुव्वी ? संगहस्स अणोवणिहिया दव्वाणुपुव्वी पंचविहा पण्णत्ता तंजहा—

अर्थ

द्रव्य आश्री असंख्यात गुना, उस से आनुपूर्वी द्रव्य प्रदेश आश्री अनंत गुना* यह नव द्वार अनुगमका हुवा. यह अनोपनिधि का द्रव्यानुपूर्वी का कथन हुवा. ॥ ३८ ॥ अहो भगवन् ! संग्रह नय के मत से अनुपनिधिक द्रव्यानुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! संग्रह नय के मत से अनुपनिधिक द्रव्यानु-

* भगवती शतक २५ उद्देशा ४ तथा पन्नवणाजी में प्रदेश से अनंत प्रदेशिक स्कंध के प्रदेश कमी कहे. परमाणु प्रदेश से अनंत गुने कहे, संख्यात प्रदेशिक स्कंध के प्रदेश संख्यात गुने असंख्यात प्रदेशिक स्कंध. के असंख्यात गुने, और यहां द्विप्रेशिक स्कंध से अनंत प्रदेशिक स्कंध के प्रदेश एक अनंत गुने कहे, आनुपूर्वी द्रव्य स्कंध के प्रदेश अनंत गुने कहे. यह कैसे मिले ? उत्तर भगवती मे तो संख्यात प्रदेशी स्कंध, असंख्यात प्रदेशी स्कंध व अनंत प्रदेशिक इन तीन तीन स्कंध के प्रदेश अलग २ कहे हैं. इस से अनंत गुने नहीं हैं, और यहां तो संख्यात प्रदेशिक स्कंध असंख्यात प्रदेशिक स्कंध व अनंत प्रदेशिक स्कंध इन तीनों को एकत्रित मीलाकर आनुपूर्वी कही है इस से तीनों के प्रदेश एकत्र होने से अनंत होते हैं. जैसे देवी से तीर्यंचनी असंख्यात गुनी कही और ९८ बोल की अल्पाबहुत्व में अलग २ गिनती के स्थान संख्यात गुनी कही.

For Private and Personal Use Only

सूत्र

१ अट्ठपयपरूवणया, २ भंगुसमुक्कित्तणया, ३ भंगोवदंसणया ४ समोयारे ५ अणुगमे ॥ ३९ ॥ से किं तं संगहस्स अट्ठपय परूवणया ? संगहस्स अट्ठपय परूवणया तिपएसिए आणुपुव्वीए चउप्पएसिए आणुपुव्वी जाव दस पएसिए आणुपुव्वी संखिज्ज पएसिए आणुपुव्वी असंखिज्ज पएसिए, आणुपुव्वी अणंतपएसिए, आणुपुव्वी परमाणु पोग्गले अणाणुपुव्वी दुपएसिए अवत्तव्वए, से तं संगहस्स अट्ठपय परूवणया ॥ ४० ॥ एयाएणं संगहस्स अट्ठपय परूवणयाए किं पओयणं ? एयाएणं संगहस्स अट्ठपय परूवणयाए संगहस्स भंग समुक्कित्तणया कज्जइ ॥ ४१ ॥ से किं तं संगहस्स भंग समुक्कि-

अर्थ

पूर्वी के पांच भेद कहे हैं. तद्यथा—१ अर्थपद प्ररूपना, २ भंग समुत्कीर्तन, ३ भंगोपदर्शनता, ४ समवतार और ५ अनुगम. ॥ ३९ ॥ अहो भगवन् ! संग्रह नय के मत से अर्थपद प्ररूपना किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! संग्रह नय के मत से अर्थपद प्ररूपना तीन प्रदेशिक आनुपूर्वी, चार प्रदेशिक आनुपूर्वी, यावत् दश प्रदेशिक आनुपूर्वी, संख्यात प्रदेशिक आनपूर्वी, असंख्यात प्रदेशिक आनुपूर्वी व अनंत प्रदेशिक आनूपूर्वी. परमाणु पुद्गल अनानुपूर्वी और द्विप्रदेशिक स्कंध अवक्तव्य. यह संग्रह नय की अर्थपद प्ररूपना हुई. ॥ ४० ॥ अहो भगवन् ! संग्रह नय की अर्थपद प्ररूपना करने का क्या प्रयोजन है ? अहो शिष्य ! संग्रह नय की अर्थपद प्ररूपना से संग्रह नय का भंग समुत्कीर्तन किया जाता है. ॥ ४१ ॥ अहो भगवन् ! संग्रह नय से भंग समुत्कीर्तन कि कहते हैं ? अहो

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

त्तणया ? संग्रहस्स भंग समुक्कित्तणया—१ अत्थि आणुपुव्वी २ अत्थि अणाणुपुव्वी ३ अत्थि अवत्तव्वए, अहवा ४ अत्थि आणुपुव्वीय, अणाणुपुव्वीय. ५ अहवा आणुपुव्वीएय अवत्तव्वएय, ६ अहवा अत्थि अणाणुपुव्वीय अवत्तव्वएय, ७ अहवा अत्थि आणुपुव्वीय, अणाणुपुव्वीय, अवत्तव्वएय. एवं सत्तभंगा, से तं संगहस्स भंगसमुक्कित्तणया ॥ ४२ ॥ एयाएणं संगहस्स भंग समुक्कित्तणयाए किं पयोयणं ? एयाणं संगहस्स भंग समुक्कित्तणयाए संगहस्स भंगोवदंसणया कीरइ ॥ ४३ ॥ से किं तं संगहस्स भंगोवदंसणया ? संगहस्स भंगोवदंसणया तिपएसिया आणुपुव्वी

अर्थ

शिष्य ! संग्रह नय से भंग समुत्कीर्तन के सात भंग होते हैं. एक संयोगी भांगे तीन १ आनुपूर्वी २ अणाणुपूर्वी व ३ अवक्तव्य द्विसंयोगी तीन भंग—अनुपूर्वी अनानुपूर्वी, आनुपूर्वी अवक्तव्य, और ३ अनानपूर्वी अवक्तव्य. तीन संयोगी भांगा एक आनुपूर्वी अनानुपूर्वी अवक्तव्य. यों सात भांगे हुवे. यह संग्रह नय एकार्थवाची होने से इस का अनेक वचन नहीं ग्रहण किया है ॥ ४२ ॥ अहो भगवन् ! संग्रह नय के मत से भंग समुत्कीर्तन करने का क्या प्रयोजन है ? अहो शिष्य ! संग्रह नय की भंग समुत्कीर्तन से भंगोपदर्शन किया जाता है ॥ ४३ ॥ अहो भगवन् ! संग्रह नय से भंगोपदर्शन किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! संग्रह नय से भंगोपदर्शन निम्नोक्त प्रकार किये जाते हैं.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir





सूत्र

परमाणुपोग्गला अणाणुपुव्वी दुपएसिया अवत्तव्वए, अहवा तिपएसिया परमाणु पोग्गला आणुपुव्वीय अणाणुपुव्वीय. अहवा तिपएसियाय दुपएसियाय आणुपुव्वीए अवत्तव्वएय, अहवा परमाणु पोग्गलाय दुपएसियाय आणुपुव्वीय अवत्तव्वय, अहवा तिपदेसिए परमाणु पोग्गलेय दुपदेसिए य आणुपुव्वीय अणाणुपुव्वीय अवत्तव्वएय. से तं संगहस्स भंगोवदंसणया ॥ ४३ ॥ से किं तं संगहस्स समोयारे ? संगहस्स समोयारे संगहस्स आणुपुव्वी दव्वाइं कहिं समोयरंति ? किं आणुपुव्वी दव्वेहिं समोयरंति, अणाणुपुव्वी दव्वेहिं समोयरंति, अवत्तव्व दव्वेहिं समोयरंति ? संगहस्स आणुपुव्वी दव्वाइं आणुपुव्वी दव्वेहिं समोयरंति नो अणाणु-

अर्थ

१० त्रिप्रदेशिक आनुपूर्वी परमाणु पुद्गल अनानुपूर्वी, द्विप्रदेशिक अवक्तव्य, अथवा त्रिप्रदेशिक परमाणु पुद्गल को आनुपूर्वी अनानुपूर्वी, त्रिप्रदेशिक द्विप्रदेशिक को आनुपूर्वी अवक्तव्य, परमाणु पुद्गल द्विप्रदेशिक को अनानुपूर्वी अवक्तव्य और त्रिप्रदेशिक, द्विप्रदेशिक व परमाणु पुद्गल को आनुपूर्वी अनानुपूर्वी व अवक्तव्य. यह संग्रह नय की अपेक्षा से भंगोपदर्शन हुवा ॥ ४३ ॥ अहो भगवन् ! संग्रह नय के मत से समवतार किसे कहते हैं ? संग्रह नय के मत से आनुपूर्वी द्रव्य कहां समवतरते हैं ? क्या आनुपूर्वी द्रव्य से, क्या अनानुपूर्वी द्रव्य से या क्या अवक्तव्य से समवतरते हैं ? अहो शिष्य ! संग्रह नय के

For Private and Personal Use Only

सूत्र

पुव्वीदव्वेहिं समोयरंति नो अवत्तव्वग दव्वेहिं समोयरंति, एवं तिण्णिविसट्ठाणे समोयरंति से तं समोयारे ॥ ४४ ॥ से किं तं अणुगमे? अणुगमे अट्ठविहे पण्णत्ते तंजहा-संतपय परुवणया, दव्वपमाणंच खित्त फुसणाय, कालोय अंतरं,भाग भावे, अप्पाबहुं नत्थि ॥ १ ॥ ४५ ॥ संगहस्स आणुपुव्वी दव्वाइं किं अत्थि नत्थि ? नियमा अत्थि, एवं दोन्नि वि ॥४६॥संगहस्स आणुपुव्वी दव्वाइं किं संखिज्जाइं,असंखिज्जाइं अणंताइं?नो संखेज्जाइं नो असंखेज्जाइं नो अणंताइं. नियमा

अर्थ

मत से आनुपूर्वी द्रव्य आनुपूर्वी में समवतरते हैं यों शेष दो द्रव्य अपने २ स्थान में समवतरते हैं. यह समवतार हुवा ॥ ४४ ॥ अहो भगवन् ! अनुगम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! अनुगम के आठ प्रकार कहे हैं. तद्यथा-१ सत्पद प्ररूपना, २ द्रव्य प्रमाण, ३ क्षेत्र, ४ स्पर्शन. ५ काल, ६ अंतर, ७ भांगा और ८ भाव. इस में अल्पाबहुत्व द्वार नहीं है क्यों कि संग्रह नय में अनेक का अभाव है ॥ ४५ ॥ प्रथम सत्पद प्ररूपना द्वार—अहो भगवन् ! संग्रह नय के मत से आनुपूर्वी द्रव्य की क्या अस्ति है या नास्ति है ? अहो शिष्य ! नियमा से सदैव अस्ति है परंतु नास्ति नहीं है ऐसे ही अनानुपूर्वी व अवक्तव्य का कहना ॥ ४६ ॥ संख्या प्रमाण द्वार—संग्रह नय के मत से आनुपूर्वी द्रव्य क्या संख्यात है. असंख्यात है या अनंत है ? अहो शिष्य ! संख्यात, असंख्यात व अनंत नहीं है परंतु नियमा एक

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir





अथ

एगोरासी, एवं दोन्निवि, ॥ ४७ ॥ संगहस्स आणुपुव्वी दव्वाइं लोगस्स कइभाग होज्जा ? किं संखेज्जइ भागे होज्जा, असंखेज्जइ भागे होज्जा, संखेज्जेसु भागे होज्जा, असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा, सव्वलोए होज्जा ? नो संखेज्जइ भागे होज्जा नो असंखेज्जइ भागे होज्जा, नो संखेज्जेसु भागेसु होज्जा, नो असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा, नियमा सव्वलोए होज्जा, एवं दोन्निवि ॥ ४८ ॥ संगहस्स आणुपुव्वी दव्वाइं लोगस्स किं संखेज्जइ भागं फुसंति असंखेज्जइ भागं फुसंति, संखिज्जेसु भागे फुसंति, असंखिज्जेसु भागे फुसंति, सव्वलोगे फुसंति ? नो संखेज्जइ भागं फुसंति,

अर्थ

राशि है क्यों कि संग्रह नयवाला द्रव्य को अभेद मानता है. ऐसे ही अनानुपूर्वी व अवक्तव्य का कहना ॥ ४७ ॥ तीसरा भाग द्वार—अहो भगवन् ! आनुपूर्वी द्रव्य लोक के कितने भाग में हैं ? क्या संख्यात भाग में, असंख्यात भाग में, संख्यातवे भाग में, असंख्यातवे भाग में या सब लोक में है ? अहो शिष्य ! संख्यात, असंख्यात, संख्यातवे, असंख्यातवे भाग में नहीं है परंतु सब लोक में है. ऐसे ही अनानुपूर्वी व अवक्तव्य का कहना ॥ ४८ ॥ स्पर्शना द्वार—अहो भगवन् ! आनुपूर्वी द्रव्य लोक के संख्यात भाग को क्या स्पर्शता है. असंख्यात भाग को स्पर्शता है, संख्यातवे भाग को स्पर्शता असंख्यातवे भाग को स्पर्शता है या सब लोक को स्पर्शता है? अहो शिष्य! लोक के संख्यात, असंख्यात, संख्यातवे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

जाव नियमा सव्वलोगं फुसंति, एवं दोन्निवि ॥ ४९ ॥ संगहस्स आणुपुव्वी दव्वाणं कालतो केवच्चिरं होइ ? नियमा सव्वद्धा एवं दोन्निवि ॥ ५० ॥ संगहस्स आणुपुव्वी दव्वाणं कालतो केवच्चिरं अंतरं होति ? नत्थि अंतरं, एवं दोन्निवि ॥ ५१ ॥ संगहस्स आणुपुव्वी दव्वाइं सेस दव्वाणं कइ भागे होज्जा ? किं संखेज्जइ भागे होज्जा, असंखेज्जइ भागे होज्जा, संखेज्जेसु भागेसु होज्जा, असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा ? नो संखेज्जइ भागे होज्जा, नो असंखेज्जइ भागे होज्जा, नो

अर्थ

असंख्यातवे भाग को नहीं स्पर्शता हैं परंतु सब लोकको स्पर्शता है. ऐसे ही अनानुपूर्वी व अवक्तव्यका कहना ॥ ४४ ॥ काल द्वार—संग्रह नय के मत से आनुपूर्वी द्रव्य कितने काल रहता है ? अहो शिष्य ! नियमा से सदैव पाता है. ऐसे ही अनानुपूर्वी व अवक्तव्य द्रव्य का कहना ॥ ५० ॥ अंतर द्वार—अहो भगवन् ! संग्रह नय की अपेक्षा आनुपूर्वी द्रव्य का काल से कितना अंतर कहा है ? अहो शिष्य ! इस का अंतर नहीं है. ऐसे ही अनानुपूर्वी व अवक्तव्य का कहना ॥ ५१ ॥ भाग द्वार—अहो भगवन् ! संग्रह नय से आनुपूर्वी द्रव्य शेष द्रव्य में कितने भाग में होते हैं ? क्या संख्यात भाग में, असंख्यात भाग में, संख्यातवे भाग में, या असंख्यातवे भाग में, होवे ? अहो शिष्य ! उक्त चारों भांगे नहीं पाते

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir





संखेज्जेसु भागेसु होज्जा, नो असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा, नियमा तिभागे होज्जा, एवं दोन्निवि ॥ ५२ ॥ संगहस्स आणुपुव्वी दव्वाइं कयरंमि भावे होज्जा? नियमा साइ परिणामिए भावे होज्जा, एवं दोन्निवि। अप्पाबहुं नत्थि ।से तं अणुगमे। से तं संगहस्स अणोवणिहिया दव्वाणुपुव्वी । से तं अणोवणिहिया दव्वाणुपुव्वी ॥ ५३ ॥ से किं तं उवणिहिया दव्वाणुपुव्वी ? उवणिहिया दव्वाणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता तंजहा-पुव्वाणुपुव्वी, पच्छाणुपुव्वी, अणाणुपुव्वीय ॥ ५४ ॥ से किं तं पुव्वाणुपुव्वी?



हैं. मात्र तीसरे भाग में होवे. ऐसे ही अनानुपूर्वी व अवक्तव्य का कहना. उक्त तीनों द्रव्य से सब लोक भरा है ॥ ५२ ॥ भाव द्वार—अहो भगवन् ! संग्रह नय के मत से आनुपूर्वी द्रव्य कौन से भावमें है ? अहो शिष्य ! नियमा एक सादि परिणामिक भाव में है. ऐसे ही अनानुपूर्वी व अवक्तव्य द्रव्य भी सादि परिणामिक भाव में होते हैं. अल्पाबहुत द्वार नहीं है. यह अनुगम हुवा. यह संग्रह नय के मत से द्रव्य से अनुपानिधिका द्रव्यानुपूर्वी का कथन हुवा ॥ ५३ ॥ अब उपानिधि का द्रव्यानुपूर्वी कहते हैं. अहो भगवन् ! उपानिधिका द्रव्यानुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! उपनिधिका द्रव्यानुपूर्वी के तीन भेद कहे हैं. तद्यथा—१ पूर्वानुपूर्वी, २ पच्छानुपूर्वी और ३ अनानुपूर्वी ॥ ५४ ॥ अहो





For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

पुव्वाणुपुव्वी धम्मत्थि काए, अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए, पोग्गलत्थिकाए, आद्धसमए, से तं पुव्वाणुपुव्वी ॥ से किं तं पच्छाणुपुव्वी ? पच्छाणुपुव्वी अद्धासमए पोग्गलत्थिकाए जीवत्थिकाए आगासत्थिकाए अहम्मत्थि-काए धम्मत्थिकाए, से तं पच्छाणुपुव्वी ॥ से किं तं अणाणुपुव्वी ? एयाए चेव एगाइआए एगुत्तरियाए, छगच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णब्भासो दुरूवणो से तं

अर्थ

भगवन् ! पूर्वानुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! पूर्वानुपूर्वी—१ धर्मास्ति काया, २ अधर्मास्ति-काया, ३ आकाशास्ति काया, ४ जीवास्तिकाया, ५ पुद्गलास्तिकाया, और ६ अद्धासमय-(काल) है. अहो भगवन् ! पच्छानुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! पच्छानुपुर्वी सो-१ अद्धासमय, २ पुद्गला-स्तिकाया, ३ जीवास्तिकाया. ४ आकाशास्ति काया, ५ अधर्मास्ति काया और ६ धर्मास्ति काया. अहो भगवन् ! अनानुपूर्वी किसे कहते है ? अहो शिष्य ! इन छ ही द्रव्य को एकादि अंक से उत्तरोत्तर श्रेणी से गुना करते जावे जैसे एकको दो गुणा करने से दो होवे, दो को तीन से गुना करने से दो तीय ६ होवे, ६ को ४ से गुना करने से २४ होवे. २४ को ५ से गुना करने से १२० होवे और १२० को ६ से गुना करने से ७२० होवे, इस संख्या में से दो कम करे अर्थात् ७१८ की संख्या को अनानु-पूर्वी कहते है—प्रथम-१-२-३-४-५-६ यह पूर्वानुपूर्वी हुए. ६-५-४-३-२-१ यह पच्छानुपूर्वे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सूत्र

अणाणुपुव्वी ॥ ५५ ॥ अहवा उवणिहिया दव्वाणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता तंजहा-पुव्वाणुपुव्वी, पच्छाणुपुव्वी, अणाणुपुव्वी, से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ? पुव्वाणुपुव्वी परमाणुपोग्गले दुपएसिए तिपएसिए जाव दसपएसिए संखिज्जपएसिए असंखिज्जपए-सिए अणंतपएसिए से तं पुव्वाणुपुव्वी ॥ से किं तं पच्छाणुपुव्वी ? पच्छाणुपुव्वी अणंत पएसिए, असंखेज्जपएसिए संखिज्जपएसिए जाव दसपएसिए जाव तिपएसिए दुपएसिए परमाणुपोग्गले, से तं पच्छाणुपुव्वी॥से किं तं अणाणुपुव्वी ? आणाणुपुव्वी एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए अणंतगच्छगयाए सेढीए अन्नमण्णब्भासो दुरूवूणो



अर्थ

हुए और ७१८ भांगे अनानुपूर्वी के हुए. ॥ ५५ ॥ अथवा उपनिधिका के तीन भेद पूर्वानुपूर्वी, पच्छानुपूर्वी व अनानुपूर्वी उस में पूर्वानुपूर्वी से परमाणु पुद्गल, द्वि प्रदेशिक स्कंध, तीन प्रदेशिक स्कंध, यावत् दश प्रदेशिक स्कंध, संख्यात प्रदेशिक स्कंध, असंख्यात प्रदेशिक स्कंध व अनंत प्रदेशिक स्कंध, पच्छानुपूर्वी सो अनंत प्रदेशिक स्कंध, असंख्यात प्रदेशिक स्कंध, संख्यात प्रदेशिक स्कंध. दश प्रदेशिक स्कंध यावत् तीन प्रदेशिक स्कंध, द्विप्रदेशिक स्कंध व परमाणु पुद्गल. अहो भगवन् ! अनानुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! एक से अनंत पर्यंत उत्तरोत्तर एक २ अंक की वृद्धि करके उसे गुना करते जो अंक आवे उसे में दो कम पर्यंत अनानुपूर्वी जानना. इस की विधि पूर्वोक्त जैसे जानना. वह अनानुपूर्वी हुई. पर





For Private and Personal Use Only

सूत्र

सेतं अणाणुपुव्वी । सेतं उवणिहिया दव्वाणुपुव्वी । सेतं जाणगवइरित्ता दव्वाणुपुव्वी। सेतं नो अगमओ दव्वाणु पुव्वी । सेतं दव्वाणु पुव्वी ॥ ५६ ॥ से किंतं खेत्ताणु पुव्वी ? खेत्ताणुपुव्वी दुविहा पण्णत्ता तंजहा—उवणिहियाय, अणोवणिहियाय ॥ तत्थणं जा सा उवणिहिया साठुप्पा॥ तत्थणं जा सा अणोवाणाहिया सा दुविहा पण्णत्ता तंजहा—णेगमववहाराणं संगहस्सय॥ ५७ ॥ से किंतं णेगमववहाराणं अणोवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी ? णेगमववहाराणं अणोवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी पंचविहा पण्णत्ता तंजहा—अट्ठपय परूवणया, भंग समुक्कित्तणया, भंगोवदंसणया, समोयारे, अणुगमे ॥ ५८ ॥ से किं तं णेगम ववहाराणं अट्ठपय परूवणया ? नेगम ववहाराणं

अर्थ

यह ज्ञ शरीर भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्यानुपूर्वी हुई. यह नो आगम से द्रव्यानुपूर्वी हुई. यह द्रव्यानु. पूर्वी का कथन हुवा. ॥ ५६ ॥ अहो भगवन् ! क्षेत्रानुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! क्षेत्रानुपूर्वी के दो भेद कहे हैं तद्यथा—उपनिधि का और अनुपनिधिका. इस में से उपनिधि का वर्णन यहां नहीं करते हैं और अनुपनिधि का के दो भेद कहे हैं नैगम व्यवहार से नय और कि संग्रह नय से. ॥ ५७ ॥ अहो भगवन् ! नैगम व्यवहार नय से अनुपनिधिक क्षेत्रानुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! इस के पांच भेद कहे हैं. तद्यथा—१ अर्थपद प्ररूपना, २ भंग समुत्कीर्तनता, ३ भंगोपदर्शनता, ४ समवतार और ५ अनुगम. ॥ ५८ ॥ अहो भगवन् ! नैगम व्यवहार नय से अर्थपद प्ररूपना किसे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir





सूत्र

अट्ठपय परूवणया तिपएसोगाढे आणुपुव्वी, जाव दसपएसोगाढे आणुपुव्वी जाव संखिज्ज पएसोगाढे आणपुव्वी, असंखिज्ज पएसोगाढे आणुपुव्वी, एग पएसोगाढे अणाणुपुव्वी, दुपएसोगाढे अवत्तव्वए, तिपएसोगाढा आणुपुव्वीओ जाव दस पएसोगाढा आणुपुव्वीयो संखेज्ज पएसोगाढे आणुपुव्वीओ जाव असंखिज्ज पएसोगाढा आणुपुव्वीओ, एग पएसोगाढा अणाणुपुव्वीओ, दुपएसोगाढा अवत्तव्वयाइं, से तं णेगम ववहाराणं अट्ठपय परूवणया॥एयाएणं णेगम ववहाराणं अट्ठपय परूवणय एं किं पयोयणं? एयाए णेगम ववहाराण अट्ठपय परूवणयाए णेगम ववहाराणं भंग समुक्कित्तणया कज्जइ ॥ ५९ ॥ से किं तं णेगम ववहाराणं भंग समुक्कित्तणया ? णेगम ववहाराणं

अर्थ

कहते हैं ? नैगम व्यवहार नय की अर्थपद प्ररूपना से तीन प्रदेशावगाह, यावत् दश प्रदेशावगाह यावत् संख्यात, असंख्यात प्रदेशावगाह को अनुपूर्वी कहते हैं, एक प्रदेशावगाही को अनानुपूर्वी कहते हैं और द्विप्रदेशावगाही को अवक्तव्य कहते हैं. यह नैगम व्यवहार नय से अर्थपद प्ररूपना हुई. अहो भगवन् ! नैगम व्यवहार नय से अर्थपद प्ररूपना करने का क्या प्रयोजन है ? अहो शिष्य ! नैगम व्यवहार नय की अर्थपद प्ररूपना से भंग समुत्कीर्तनता किया जाता है ॥ ५९ ॥ अहो भगवन् ! नैगम व्यवहार नय के मत से भंग समुत्कीर्तन किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! नैगम व्यवहार नय की भंग

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सूत्र

भंग समुक्कित्तणया अत्थि आणुपुव्वी अत्थि अणाणुपुव्वी अत्थि अवत्तव्वए, एवं दव्वाणुपुव्वी गमेणं, खेत्ताणुपुव्वीएऽवि तं चेव छव्वीस भंगा भाणियव्वा जाव से तं णेगम ववहाराणं भंग समुक्कित्तणया ॥ एयाएणं णेगम ववहाराणं भंग समुक्कित्तणयाए किं पयोयणं ? एयाएणं णेगम ववहाराणं भंग समुक्कित्तणयाए णेगम ववहाराणं भंगोवदंसणया कज्जइ ॥ ६० ॥ से किं तं णेगम ववहाराणं भंगोवदंसणया ? णेगम ववहाराणं भंगोवदंसणया तिपएसोगाढे आणुपुव्वी, एग पएसोगाढे अणाणुपुव्वी, दुपएसोगाढे अवत्तव्वए, तिपएसोगाढा आणुपुव्वीओ,

अर्थ

समुत्कीर्तना से आनुपूर्वी है, अनानुपूर्वी है, अवक्तव्य है यों जिस प्रकार द्रव्यानुपूर्वी के २६ भांगे किये थे वैसे ही इस क्षेत्रानुपूर्वी के २६ भांगे करना यावत् यह नैगम व्यवहार नय के मत से भंग समुत्कीर्तन हुवा. अहो भगवन् ! नैगम व्यवहार नय के मत से भंग समुत्कीर्तन का क्या प्रयोजन है ? अहो शिष्य ! नैगम व्यवहार नय की भंग समुत्कीर्तना से भंगोपदर्शन होता है. ॥ ६० ॥ अहो भगवन् ? नैगम व्यवहार नय से भंगोपदर्शन किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! तीन प्रदेशावगाही आनुपूर्वी, एक प्रदेशावगाही अनानुपूर्वी, द्विप्रदेशावगाही अवक्तव्य, बहुत तीन प्रदेशावगाही बहुत







For Private and Personal Use Only

एग पएसोगाढा अणाणुपुव्वीओ, दुपएसोगाढा अवत्तव्वगाइं, अहवा तिपएसोगाढेय एग पएसोगाढेय आणुपुव्वीय अणाणुपुव्वीय, एवं तहा चेव दव्वाणुपुव्वी गमेणं छव्वीस भंगा भाणियव्वा जाव से तं णगम ववहाराणं भंगोवदंसणया ॥ ६१ ॥ से किं तं समोयारे ? समोयारे णेगम ववहाराणं आणुपुव्वी दव्वाइं कहिं समोयरंति १-किं आणुपुव्वी दव्वेहिं समोयरंति, अणाणुपुव्वी दव्वेहिं समोयरंति, अवत्तव्वग दव्वेहिं समोयरंति ? आणुपुव्वी दव्वाइं आणुपुव्वी दव्वेहिं समोयरंति ? नो अणा-णुपुव्वी दव्वेहिं नो अवत्तव्वय दव्वेहिं समोयरंति एवं तिण्णिविसट्ठाणे समोयरंति

**अर्थ** आनुपूर्वी, बहुत एक प्रदेशावगाही बहुत अनानुपूर्वी और बहुत द्विप्रदेशावगाही बहुत अवक्तव्य, अथवा तीन प्रदेशावगाही व एक प्रदेशावगाही आनपूर्वी अनानपूर्वी यों छव्वीस भांगे द्रव्यानुपूर्वी जैसे कहना. यावत् यह नैगम व्यवहार नय के मत से भांगोपदर्शनता हुई. ॥ ६१ ॥ अहो भगवन् ! नैगम व्यवहार नय से समवतार किसे कहते हैं ? नेगम व्यवहार नय से आनुपूर्वी द्रव्य का कहां समवतार होता है ? क्या आनुपूर्वी द्रव्य में, अनानुपूर्वी द्रव्य में या अवक्तव्य में होता है ? अहो शिष्य ! आनुपूर्वी द्रव्य का आनुपूर्वी द्रव्य में समवतार होता है परंतु अनानुपूर्वी व अवक्तव्य में समवतार नहीं होता है. ऐसे ही

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

त्ति भाणियव्वं से तं समोयारे ॥ ६२ ॥ से किं तं अणुगमे ? अणुगमे नव विहे पण्णत्ते तंजहा—संतपय परूवणया जाव अप्पबहुं चेव ॥ ६३ ॥ णेगम ववहाराणं आणुपुव्वी दव्वाइं किं अत्थि णत्थि ? णियमा अत्थि एवं दुण्णिवि ॥ णेगम ववहाराणं आणुपुव्वी दव्वाइं किं संखिज्जाइं असंखिज्जाइं अणंताइं ? णो संखिज्जाइं, नियमा असंखिज्जाइं णो अणंताइं, एवं दुण्णिवि ॥ णेगमववहाराणं खेत्ताणुपुव्वी दव्वाइं लोगस्स किं संखिज्जइ भागे असंखिज्जइ भागे जाव सव्वलोए होज्जा ? एगं दव्वं पडुच्च लोगस्स संखिज्जइ भागे वा होज्जा, असंखिज्जइ भागे वा होज्जा, संखेज्जेसु भागेसु वा होज्जा असंखेज्जेसु भागेसु वा

अर्थ

शेष दोनों का अपने स्थान में समवतार होता है, यह समवातर का कथन हुआ. ॥६२॥ अहो भगवन् ! अनुगम किसे कहते है ? अहो शिष्य ! अनुगम के नव भेद कहे हैं तद्यथा—सत्पद परूपना यावत् अल्पाबहुत ॥६३॥ अहो भगवन् ! नैगम व्यवहार नय के मत से आनुपूर्वी द्रव्य की क्या अस्ति है या नास्ति है ? अहो शिष्य ! नियमा अस्ति है नास्ति नहीं है ऐसे ही शेष दोनों का कहना. प्रश्न-नैगम व्यवहार नय के मत से आनुपूर्वी द्रव्य क्या संख्यात असंख्यात या अनंत है ? उत्तर-संख्यात व अनंत नहीं है परंतु असंख्यात है. ऐसे ही शेष दोनों का जानना. प्रश्न—नैगम व्यवहार नय के मत से आनुपूर्वी द्रव्य क्या लोक के संख्यात भाग में, हैं असंख्यातवे भाग में है यावत् क्या सब लोक में होते हैं ?





For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र होज्जा, देसूणे वा लोए होज्जा, नाणा दव्वाइ पडुच्च-नियमा सव्व लोए होज्जा णेगम ववहाराणं अणाणुपुव्वी दव्वाणं पुच्छाए? एग दव्व पडुच्च नो संखिज्जइ भागे होज्जा,

अर्थ उत्तर-एक द्रव्य आश्री संख्यात, असंख्यात, संख्यातवे, असंख्यातवे या कुछ कम सब लोक में होते हैं* और बहुत द्रव्य आश्री सब लोक में होते हैं. नैगम व्यवहार नय के मत से अनानुपूर्वी द्रव्य की पृच्छा उत्तर-एक द्रव्य की अपेक्षा से जाव असंख्यात भाग में होवे परंतु संख्यात भाग, संख्यातवे भाग,

---

* अचित्त महा स्कंध सब लोक व्यापी प्रथम कहकर अब यहां कुछ कम लोक कहने को × कहना है? उत्तर-लोक में एक प्रदेश अनानुपूर्वी का और दो प्रदेश अवक्तव्य के हैं. इतना ही यहां कम ग्रहण किया है प्रश्न—द्रव्यानुपूर्वी में भी सर्व लोक व्यापी आनुपूर्वी द्रव्य का कहा तो फिर अनानुपूर्वी व अवक्तव्य द्रव्य का अभाव होता है फिर इन का अस्तित्व कैसे रहा? उत्तर—द्रव्यानुपूर्वी में तो द्रव्य की ही आनुपूर्वी कही है परंतु क्षेत्र की नहीं कही है. उन अनानुपूर्वी द्रव्याधिक परस्पर भिन्न २ रहने को बहुत क्षेत्र है इस लिये विरोध नहीं है. जैसे एक क्षेत्र में बहुत दीपकों का प्रकाश हो सकता है ऐसे ही एक क्षेत्र में अन्य द्रव्य का भी समावेश होता है. प्रश्न—आकाश आनुपूर्वी द्रव्य की अस्ति है और उस में ही अनानुपूर्वी व अवक्तव्य द्रव्य की अस्ति है तो उस के द्रव्य की अवगाहना के भेद की विवक्षा क्यों नहीं की? उत्तर—उस की विवक्षा करने के लिये ही इस क्षेत्रा-





For Private and Personal Use Only

सूत्र

असंखिज्जइ भागे होज्जा, नो संखेज्जेसु नो असंखेज्जसु नो सव्वलोए होज्जा नाणा दव्वाइ पडुच्च—नियमा सव्वलोए होज्जा ॥ एवं अवत्तव्वग दव्वाणिवि भाणियव्वाणि णेगम ववहाराणं आणुपुव्वी दव्वाइं लोगस्स किं संखेजाति

अर्थ

असंख्यातवे भाग व सब लाक में होवे नहीं. बहुत द्रव्य आश्री सब लोक में होवे. ऐसे ही अवक्तव्य द्रव्य आश्री जानना. प्रश्न—नैगम व्यवहार नय से आनुपूर्वी द्रव्य क्या लोक के संख्यात भाग में स्पर्शे

---

नुपूर्वी में कुछ कम कहा है. जैसे पुरुष अंगुली रूप देश में देवता के प्रदेश का अभाव की विवक्षा की जाय क्यों कि देश की अस्ति नहीं है. और भी कुछ कम सब लोक का खुलासा करते हैं—प्रश्न—द्रव्यानुपूर्वी सब लोक व्यापी चाहिये पुनः कुछ कम कहने का क्या प्रयोजन ? उत्तर—लोक में आनुपूर्वी व अवक्तव्य यह दोनों सदैव होते हैं. अनानुपूर्वी का आकाश प्रदेश और अवक्तव्य का आकाश प्रदेश यों तीन आकाश प्रदेशी स्कंध की क्षेत्रानुपूर्वी से पृथक २ गवेषना की है. इस से प्रदेश कम द्रव्यानुपूर्वी कही. जैसे एक अचित्त के स्कंध में दूसरा अचित्त स्कंध है तो भी अचित्त महा स्कंध की मुख्यता देखाइ है जैसे एक राजा की सेना में अन्य मित्र राजाओं की सेना आमीलती है तो भी वह सब सेना मुख्य राजा की ही होती है, ऐसे ही द्रव्यानुपूर्वी में सब लोक कहा है. और जैसे राजा के महेल से प्रधान वगैरह का महेल अलग गिने जाते हैं वैसे ही यहां कुछ कम कहा है,

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

भाग फुसंति असंखज्जइ भागे फुसंति, संखेज्जे भागे फुसंति, जाव सव्वलोए फुसंति ? एग दव्वं पडुच्च–संखिज्जइ भागे फुसइ, असंखेज्जइ भागे, संखिज्जे भागे वा, असंखिज्जे भागे वा देसूणं वा सव्वलोगे फुसइ णाणा दव्वाइ पडुच्च नियमा सव्वलोअं फुसंति ॥अणाणुपुव्वी दव्वाइं अवत्तव्वग दव्वाइं च जहा खेत्तं, नवरं फुसणा भाणियव्वा ॥णेगम ववहाराणं आणुपुव्वी दव्वाइं कालओ केवच्चिरं होइ ? एवं तिण्णिवि एगं दव्वं पडुच्च–जहन्नेणं एग समयं, उक्कोसेणं असंखिज्जं कालं ।नाणा दव्वाइं पडुच्च नियमा सव्वद्धा ॥ नेगम ववहाराणं आणुपुव्वी दव्वाणं

अर्थ

असंख्यात भाग में स्पर्शे यावत् सब लोक में स्पर्शे ? अहो शिष्य ! एक द्रव्य आश्री संख्यात असंख्यात, संख्यातवे, असंख्यातवे भाग में, सब लोक में व स्पर्शे और बहुत द्रव्य आश्री नियमा से सब लोक को स्पर्शे जैसे आनुपूर्वी व अवक्तव्य का वैसा ही यहां भी कहना परंतु यहां पर स्पर्शना कहना. स्थिति द्वार-नैगम व्यवहार नय की अपेक्षा से आनुपूर्वी के द्रव्य की काल से कितनी स्थिति कही? अहो शिष्य! तीनों की एक द्रव्य आश्री जघन्य एक समय उत्कृष्ट असंख्यात काल की और बहुत द्रव्य आश्री सब काल की. स्थिति है अंतर द्वार-नैगम व्यवहार नय के मत से आनुपूर्वी द्रव्य का अंतर कितना कहा ? अहो शिष्य ! तीनों का एक द्रव्य आश्री अंतर जघन्य अंतर्मुहूर्त का उत्कृष्ट असंख्यात काल का और बहुत द्रव्य

For Private and Personal Use Only

सूत्र

अंतरं कालओ केवचिरं होइ ? तिण्हंपि—एगं दव्वं पडुच्च-जहण्णेण एक्कं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं । नाणा दव्वाइ पडुच्च—णत्थि अंतरं ॥ णेगम ववहाराणं आणुपुव्वी दव्वाइं सेस दव्वाणं कइ भागे होज्जा ? तिण्णिवि जहा दव्वाणुपुव्वीए। णेगम ववहाराणं आणुपुव्वी दव्वाइं कयरंमि भावे होज्जा ? णियमा साइपरिणामिए भावे होज्जा, एवं दोण्णिवि ॥ एएसिणं भंते ! णेगम ववहाराणं आणुपुव्वी दव्वाणं अणाणुपुव्वी दव्वाणं अवत्तव्वग दव्वाणय दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वपएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयाआ वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा, ? सव्वत्थो वा

अर्थ

आश्री अंतर नहीं है. भाग द्वार—नैगम व्यवहार नय की अपेक्षा से आनुपूर्वी द्रव्य अन्य शेष द्रव्यों के कितने भाग में हैं ? अहो शिष्य ! तीनों द्रव्य का जैसे द्रव्यानुपूर्वी में कहा वैसे ही कहना. भावद्वार—नैगम व्यवहार नय के मत से आनुपूर्वी द्रव्य कितने भाव में होवे ? अहो शिष्य ! तीनों ही द्रव्य निश्चय से आदि परिणामिक भाव में पावे. अल्पा बहुत द्वार—नैगम व्यवहार नय के मत से आनुपूर्वी द्रव्य, अनानुपूर्वी द्रव्य व अवक्तव्य द्रव्य द्रव्य आश्री. प्रदेश आश्री व द्रव्य प्रदेश आश्री कौन किस से अल्प बहुत तुल्य अथवा विशेषाधिक है ? अहो शिष्य ! सब से थोडा नैगम व्यवहार नय से अवक्तव्य द्रव्य द्रव्य आश्री. इस से अनानुपूर्वी द्रव्य द्रव्य आश्री विशेषाधिक इस से आनुपूर्वी द्रव्य द्रव्य आश्री

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

णेगम ववहाराणं अवत्तव्वग दव्वाइं दव्वट्ठयाए अणाणुपुव्वी दव्वाइ दव्वट्ठयाए विसेसाहियाइं, आणुपुव्वी दव्वाइं दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणाइं, पएसट्ठयाए—सव्वत्थोवाइं णेगम ववहाराणं अणाणुपुव्वी दव्वाइं, अवत्तव्वग दव्वाइं पएसट्ठयाए विसेसाहियाइं, आणुपुव्वी दव्वाइं पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणाइं, दव्वट्ठ-पएसट्ठयाए—सव्वत्थोवाइं णेगम ववहाराणं अवत्तव्वग दव्वाइं दव्वट्ठयाए, अणा-णुपुव्वी दव्वाइं दव्वट्ठयाए अपएसट्ठयाए विसेसाहियाइं, अवत्तव्वग दव्वाइं पएसट्ठ-याए विसेसाहियाइं, आणुपुव्वी दव्वाइं दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणाइं ताइं चेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणाइं, से तं अणुगमे ॥ से तं णेगम ववहाराणं अणोवणि-

अर्थ

असंख्यात गुना. अब प्रदेश आश्री कहते हैं. नैगम व्यवहार नय के मत से सब से थोडा अनानुपूर्वी अप्र[illegible] होने से, इस से अवक्तव्य विशेषाधिक प्रदेश आश्री इस से आनुपूर्वी द्रव्य प्रदेश आश्री संख्यात गुने. अब द्रव्य प्रदेश आश्री—सब से थोडे नैगम व्यवहार नय के मत से अवक्तव्य द्रव्य द्रव्य आश्री, इस से आनुपूर्वी द्रव्य आश्री व अप्रदेश आश्री विशेषाधिक, इस से अवक्तव्य द्रव्य प्रदेश आश्री विशेषाधिक, इस से आनुपूर्वी द्रव्य द्रव्य आश्री असंख्यात गुना. इस से आनुपूर्वी द्रव्य प्रदेश आश्री असंख्यात गुना, यह अनुगम का कथन हुवा. ॥ यह नैगम व्यवहार नय के मत से अनुपनिधिक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

हिया खेत्ताणुपुव्वी ॥६४॥ से किं तं संगहस्स अणोवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी? संगहस्स अणोवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी पंचविहा पण्णत्ता तंजहा—अट्ठपय परूवणया, भंग समुक्कित्तणया, भंगोवदंसणया, समोयारे, अणुगमे ॥ ६५ ॥ से किं तं संगहस्स अट्ठपय परूवणया ? संगहस्स अट्ठपय परूवणया ! तिपएसोगाढे आणुपुव्वी, चउप्पएसोगाढे आणुपुव्वी जाव दस पएसोगाढे आणुपुव्वी, संखिज्ज पएसोगाढे आणुपुव्वी, असंखिज्ज पएसोगाढे आणुपुव्वी, एग पएसोगाढे अणाणुपुव्वी, दुपएसोगाढे अवत्तव्वय, से तं संगहस्स अट्ठपए परूवणया ॥ एयाएणं संगहस्स अट्ठपय

अर्थ

क्षेत्रानुपूर्वी का कथन हुवा. ॥ ६४ ॥ अब संग्रह नय आश्री क्षेत्रानुपूर्वी का कथन कहते हैं. अहो भगवन् ! संग्रह नय से अनुपनिधि का क्षेत्रानुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! संग्रह नय से अनुपनिधि का क्षेत्रानुपूर्वी के पांच भेद कहे हैं तद्यथा—१ अर्थपद प्ररूपना, २ भंग समुत्कीर्तन, ३ भंगोपदर्शनता, ४ समवतार व ५ अनुगम. ॥ ६५ ॥ अहो भगवन् ! संग्रह नय से अर्थपद प्ररूपना किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! तीन प्रदेशावगाही आनुपूर्वी, चार प्रदेशावगाही आनुपूर्वी यावत् संख्यात प्रदेशावगाही आनुपूर्वी, असंख्यात प्रदेशावगाही आनुपूर्वी, एक प्रदेशावगाही आनुपूर्वी, और द्विप्रदेशाव-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

परूवणयाए किं पयोयणं ? संगहस्स अट्ठपय परूवणयाए संगहस्स भंग समुक्कि-त्तणया कज्जइ ॥ ६६ ॥ से किं तं संगहस्स भंग समुक्कित्तणया ? संगहस्स भंग समुक्कित्तणया अत्थि आणुपुव्वी, अत्थि अणाणुपुव्वी, अत्थि अवत्तव्वए अहवा अत्थि आणुपुव्वीय, अणाणुपुव्वीय एवं जहा दव्वाणुपुव्वीए संगहस्स तहा भाणियव्वं जाव से तं संगहस्स भंग समुक्कित्तणया ॥ एयाएणं संगहस्स भंग समुक्कित्तणयाए किं पयोयणं ? एयाएयं संगहस्स भंग समुक्कित्तणयाए संगहस्स भंगोवदंसणया कज्जइ ॥ से किं तं संगहस्स भंगोवदंसणया ? संगहस्स भंगोवदंसणया ! तिण्ए

अर्थ

गाही अवक्तव्य. यह संग्रह नय से अर्थपद प्ररूपना हुई. संग्रह नय से इस अर्थपद प्ररूपना करने का क्या प्रयोजन है ? अहो शिष्य ! अर्थपद प्ररूपना से भंग समुत्कीर्तन किया जाता है. ॥ ६६ ॥ अहो भगवन् ! संग्रह नय से भंग समुत्कीर्तन किसे कहते है ? अहो शिष्य ! संग्रह नय से भंग समुत्कीर्तन से आनुपूर्वी है, अनानुपूर्वी है, अवक्तव्य है, अथवा आनुपूर्वी अनानुपूर्वी है. यों द्रव्यानुपूर्वी में संग्रह नय से जो भांगे किये वे सब यहां कहना यावत् संग्रह नय से भंग समुत्कीर्तनन का कथन हुवा. अहो भगवन् ! इस भंग समुत्कीर्तन का क्या प्रयोजन हैं ? अहो शिष्य ! भंग समुत्कीर्तन से भंगोप-दर्शनता होती है. ॥ ६७ ॥ अहो भगवन् ! संग्रह नय से भंगोपदर्शनता किसे कहते हैं ? संग्रह नय

For Private and Personal Use Only

सोगाढे आणुपुव्वी, एग पएसोगाढे अणाणुपुव्वी, दुपएसोगाढे अवत्तव्वग, अहवा तिपएसोगाढेय एग पएसोगाढेय आणुपुव्वी, अणाणुपुव्वीय एवं जहा दव्वाणुपुव्वीए, संगहस्स तहा खेत्ताणुपुव्वीएवि भाणियव्व जाव से तं संगहस्स भंगो वदंसणया ॥ ६८ ॥ से किं तं समोआरे ? समोयारे संगहस्स आणुपुव्वी दव्वाइं कहिं समोयरंति ? किं आणुपुव्वी दव्वेहिं समोयरंति, अणाणुपुव्वी दव्वेहिं, अवत्तव्वग दव्वेहिं ? तिण्णिवि सट्ठाणे समोयरंति, से तं समोयारे ॥ ६९ ॥ से किं तं अणुगमे ? अणुगमे ? अट्ठविहे पण्णत्ते तंजहा—संतपय परूवणया जाव



की भंगोपदर्शनता से तीन प्रदेशावगाही आनुपूर्वी, एक प्रदेशावगाही अनानुपूर्वी, द्विप्रदेशावगाही अवक्तव्य अथवा तीन प्रदेशावगाही एक प्रदेशावगाही आनुपूर्वी अनानुपूर्वी. यों जैसे द्रव्यानुपूर्वी में संग्रह नय से कथन किया वैसे ही यहां क्षेत्रानुपूर्वी में कहना. यावत् यह संग्रह नय से भंगोपदर्शनता का कथन हुवा. ॥ ६८ ॥ अहो भगवन् ! समवतार किसे कहते हैं ? समवतार में संग्रह नय से आनुपूर्वी द्रव्य कहां समवतरते हैं ? क्या आनुपूर्वी द्रव्य में, अनानुपूर्वी द्रव्य में या अवक्तव्य द्रव्य में समवतारते हैं. अहो शिष्य ! तीनों अपने २ स्थान में समवतारते हैं. यह समवतार हुवा. ॥ ६९ ॥ अहो भगवन् ! अनुगम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! अनुगम के आठ भेद कहे हैं. तद्यथा—सत्पद प्ररूपना यावत्

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

अप्पा बहु नत्थि ॥ संगहस्स आणुपुव्वी दव्वाइं किं अत्थि णत्थि ? नियमा अत्थि। एवं तिण्णिवि, सेसगदाराइं जहा दव्वाणुपुव्वीए संगहस्स तहा खेत्ताणुपुव्वीएवि भाणियव्वाइं, जाव से तं संगहस्स अणोवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी ॥ से तं अणोवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी ॥ ७० ॥ से किं तं उवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी ? उवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता तंजहा—पुव्वाणुपुव्वी, पच्छाणुपुव्वी, अणाणुपुव्वी ॥ ७१ ॥ से किं तं पुव्वाणुपुव्वी, ? पुव्वाणुपुव्वी अहोलोए, तिरिअलोए,

अर्थ

भाव. यहां अल्पा बहुत्व नहीं है. संग्रह नय से आनुपूर्वी द्रव्य की अस्ति है या नास्ति है ? अहो शिष्य ! नियमा अस्ति है ऐसे ही तीनों का जानना. शेष सब द्वार जैसे संग्रह नय से द्रव्यानुपूर्वी के कहे वैसे ही क्षेत्रानुपूर्वी के जानना. यावत् यह अनुगम. यह संग्रह नय की अनुपनिधि का क्षेत्रानुपूर्वी हुई. यह संपूर्ण अनुपनिधि का क्षेत्रानुपूर्वी का कथन हुवा. ॥ ७० ॥ अब उपनिधि का क्षेत्रानुपूर्वी का कथन कहते हैं—अहो भगवन् ! उपनिधि का क्षेत्रानुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! उपनिधि का क्षेत्रानुपूर्वी के तीन भेद कहे हैं. १ पुर्वानुपूर्वी, २ पच्छानुपूर्वी ३ अनानुपूर्वी. ॥ ७१ ॥ अहो भगवन् ! पूर्वानुपूर्वी किसे कहते है ? अहो शिष्य ! अधोलोक, तीर्च्छा लोक व ऊर्ध्वलोक. यह पूर्वानुपूर्वी हुई

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

उड्ढलोए से तं पुव्वाणुपुव्वी ॥ ॥ से किं तं पच्छाणुपुव्वी ? पच्छाणुपुव्वी उड्ढलोए तिरिलोए अहोलोए, से तं पच्छाणुपुव्वी ॥ ॥ से किं तं अणाणुपुव्वी ? अणाणुपुव्वी एगाए चेव एगइयाए एगुत्तारियाए तिगिच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो से तं अणाणुपुव्वी ॥ ७२ ॥ अहो लोय खेत्ताणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता तंजहा—पुव्वाणुपुव्वी, पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ? पुव्वाणुपुव्वी ! रयणप्पभा, सक्करप्पभा, वालुपप्पभा, पंकप्पभा, धूमप्पमा, तमप्पभा तमतमप्पभा सेतं पुव्वाणुपुव्वी ॥ से किं तं पच्छाणुपुव्वी ? पच्छाणुपुव्वी तमतभा

अर्थ

पच्छानुपूर्वी में ऊर्ध्व लोक, तीर्च्छालोक व अधोलाक होवे. यह पश्चानुपूर्वी. अहो भगवन् ! अनानुपूर्वी किसे कहते अहो शिष्य ! इन तीनों का अन्योयाभ्यास करे अर्थात् एक को दुगुने करने से २ होवे दो को तीगुने से ६ होवे. इस में दो कम करे उसे अनानुपूर्वी कहते है. अर्थात् यहां पर ६ में से २ को कम करते ४ अनानुपूर्वी हुई. ॥ ७२ ॥ अधोलोक क्षेत्रानुपूर्वी के तीन भेद. तद्यथा—१ पुर्वानुपूर्वी, २ पच्छानुपूर्वी व अनानुपूर्वी. इस में पुर्वानुपूर्वी १ रत्न प्रभा, २ शर्कर प्रभा, ३ बालुक प्रभा, ४ पंक प्रभा ५ धूम्र प्रभा, ६ तमः प्रभा और ७ तमतमः प्रभा. पच्छानुपुर्वी में तमतम प्रभा, तमः प्रभा यावत् रत्न प्रभा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

जाव रयणप्पभा. सेतं पच्छाणुपुव्वी ॥ से किंतं अणाणुपुव्वी ? अणाणुपुव्वी ! एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए सत्तगच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो सेतं अणाणुपुव्वी ॥ ७३ ॥ तिरिय लोय खेत्ताणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता तंजहा पुव्वाणुपुव्वी, पच्छणुपुव्वी, अणाणुपुव्वी ॥ से किंतं पुव्वाणुपुव्वी ? पुव्वाणुपुव्वी ! ( गाहा )—जंबुद्दीवे लवणे, धायइ कालोय पुक्खरे वरुणे; खीर घय खोय नदी, अरुणवरे. कुंडले रुयगे ॥ १ ॥ आभरण वत्थगंधे, उप्पल तिलएय पुढवि

अर्थ

पर्यंत कहना और अनानुपूर्वी में इन सातों को एक २ वढाकर अन्योन्याभ्यास करते जो अंक आवे जिस से दो कम करे ( १-२-३-४-५-६-७ ) इन का परस्पर गुनाकार करने से ५०४० होवे. उस में से दो कम करने से ५०३८ अनानुपूर्वी हुइ. ॥ ७३ ॥ तीर्च्छा लोक क्षेत्रानुपूर्वी के तीन भेद कहे हैं—१ पूर्वानपूर्वी, २ पच्छानुपूर्वी ३ अनानुपूर्वी. अहो भगवन् ! पूर्वानुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य जम्बूद्वीप, लवणसमुद्र, धात की खंड द्वीप, कालोदधि समुद्र, पुष्कर द्वीप, पुष्कर समुद्र, वरुण द्वीप वरुण समुद्र, क्षीर द्वीप, क्षीर समुद्र, घृत द्वीप, घृत समुद्र, इक्षु द्वीप, इक्षु समुद्र, नंदीश्वर द्वीप, नंदीश्वर समुद्र, अरूण वर द्वीप, अरूण वर समुद्र, कुंडल द्वीप, कुंडल समुद्र, रूचक द्वीप. रूचक समुद्र इस प्रकार ही

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

निहि रयणे ॥ वासहर दह नईओ, विजया वक्खारकप्पिंदा ॥ २ ॥ कुरुं मंदर आवासा, कूडा नक्खत्त चंदा सूराय ॥ देवे नागे जक्खे भूएय संयंभुमरमणेय ॥३॥ से तं पुव्वाणुपुव्वी ॥ से किं तं पच्छाणुपुव्वी ? पच्छाणुपुव्वी ! सयंभूरमणेय जाव जंबूद्दीवे, से तं पच्छाणुपुव्वी ॥ से किं तं अणाणुपुव्वी ? अणाणुपुव्वी एयाए चेव एगइयाए एगुत्तरियाए असंखेज्जगच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णब्भासो दुरूवूणो। सेत्तं आणाणुपुव्वी ॥ ७३ ॥ उड्ढलोय खेत्ताणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता, तंजहा—पुव्वाणु-

अर्थ

एक १ आभरण. एक २ वस्त्र, गंध. उत्पल. कमल, पृथ्वी, नव निधि, चउदह रत्न वर्षधर पर्वत, महाविदेहादि, क्षेत्र गंगादि नदी, विजय, वक्षस्कार, देवलोक, इन्द्र देवकुरु आदि मेरु, मेरुपर्वत, आवास कूट नक्षत्र चंद्रमा, सूर्य, देव नाग, यक्ष व भूत, के नाम से असंख्यात द्वीप समुद्र कहे हैं यावत् अंतिम स्वयंभूरमण समुद्र है. यह पूर्वानुपूर्वी का कथन हुआ. अहो भगवन् पच्छानुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! पच्छानुपूर्वी स्वयंभूरमण से यावत् जम्बू द्वीप पर्यंत को पच्छानुपूर्वी कहते है, अहो भगवन् ! अनानुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य! एक से असंख्यात पर्यंत का अन्योन्याभ्यास कर के आदिव अंत का समुद्र छोड कर शेष संख्या अनानुपूर्वी की होती हैं यह अनानुपूर्वी हुई. ॥ ७४ ॥ उर्ध्वलोक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

पुव्वी, पच्छाणुपुव्वी, अणाणुपुव्वी ॥ से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ? पुव्वाणुपुव्वी सोहम्मे ईसाणे सणंकुमारे माहिंदे बंभलोए लंतए महासुक्के सहस्सारे आणए पाणए आरणे अच्चुए, गेवेज्जाविमाणे, अणुत्तरविमाणे, इसिपब्भारा. से तं पुव्वाणुपुव्वी ॥ से किं तं पच्छाणुपुव्वी ? पच्छाणुपुव्वी ! ईसिपब्भारा जाव सोहम्मे, से तं पच्छाणुपुव्वी ॥ से किं तं अणाणुपुव्वी ? अणाणुपुव्वी ! एयाएचेव एगाइयाए एगुत्तरियाए पन्नरस गच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो, से तं अणाणुपुव्वी ॥ अहवा उवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता तंजहा—पुव्वाणुपुव्वी, पच्छाणुपुव्वी, अणाणुपुव्वी ॥

अर्थ

अनानुपूर्वी के तीन भेद कहे हैं—पूर्वानुपूर्वी, पच्छानुपूर्वी व अनानुपूर्वी. इस में पूर्वानुपूर्वी सो सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्म लोक, लंतक, महाशुक्र, सहस्त्रार, आणत, प्राणत, आरण, अच्युत, ग्रैवेयक विमान, अनुत्तर विमान व ईषत्प्रागभार पृथ्वी. पच्छानुपूर्वी में ईषत्प्रागभार पृथ्वी, अनुत्तर विमान यावत् सौधर्म देवलोक. यह पच्छानुपूर्वी अनानुपूर्वी में एक से पन्नरह पर्यंत अन्योन्याभ्यास करके आदि अंत को छोडकर शेष रहे. यह अनानुपूर्वी हुई ॥ ७५ ॥ अथवा उपनिधिका क्षेत्रानुपूर्वी के तीन भेद—१ पूर्वानुपूर्वी, २ पच्छानुपूर्वी व ३ अनानुपूर्वी. इस में से अनानुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

से किं तं पुव्वाणुपुव्वी? पुव्वाणुपुव्वी! एगपएसोगाढे दुपएसोगाढे जाव दसपएसोगाढे संखिज्ज पएसोगाढे जाव असंखिज्ज पएसोगाढे, से तं पुव्वाणुपुव्वी ॥ से किं तं पच्छाणुपुव्वी? पच्छाणुपुव्वी! असंखिज्ज पएसोगाढे जाव एगपएसोगाढे, से तं पच्छाणुपुव्वी ॥ से किं तं अणाणुपुव्वी? अणाणुपुव्वी! एयाएचेव एगाइयाए एगुत्तरियाए असंखिज्ज गच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो. से तं अणाणुपुव्वी ॥ से तं उवणिहिया खेत्ताणुपुव्वी ॥ से त खेत्ताणुपुव्वी ॥ ७६ ॥ से किं तं कालाणुपुव्वी? कालाणुपुव्वी! दुविहा पण्णत्ता तंजहा—उवणिहियाए. अणोवणि-

अर्थ

शिष्य! एक प्रदेशावगाही, द्विप्रदेशावगाही, तीन प्रदेशावगाही यावत् दश प्रदेशावगाही, संख्यात प्रदेशावगाही व असंख्यात प्रदेशावगाही यह पूर्वानुपूर्वी. अहो भगवन्! पच्छानुपूर्वी किसे कहते हैं? अहो शिष्य! असंख्यात प्रदेशावगाही, संख्यात प्रदेशावगाही यावत् एक प्रदेशावगाही. यह पच्छानुपूर्वी अहो भगवन्! अनानुपूर्वी किसे कहते हैं? अहो शिष्य! एक से असंख्यात पर्यंत का अन्योन्याभ्यास करके दो कम करे और जो संख्या रहे उसे अनानुपुर्वी कहते हैं. यह उपनिधिका क्षेत्रानुपूर्वी हुई. यह क्षेत्रानुपूर्वी का कथन हुवा ॥ ७६ ॥ अब कालानुपूर्वी का कथन करते हैं. अहो भगवन्! कालानुपूर्वी किसे कहते हैं? अहो शिष्य! कालानुपूर्वी के दो भेद कहे हैं तद्यथा—१ उपानिधि का

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

हियाए ॥ तत्थण जा सा उवणिहियाए साठ्ठप्पा. तत्थणं जा सा अणोवणिहिया सा दुविहा पण्णत्ता तंजहा--णेगम ववहाराणं संगहस्सय ॥ ७७ ॥ से किं तं णेगम ववहाराणं अणोवणिहिया कालाणुपुव्वी ? णेगम ववहाराणं कालाणुपुव्वी पंचविहा पण्णत्ता तंजहा—अठ्ठपय परुवणया, भंग समुक्कित्तणया, भंगोवदंसणया, समोयारे, अणुगमे ॥ ७८ ॥ से किं तं णेगम ववहाराणं अठ्ठपय परुवणया ! तिसमय ठिइए आणुपुव्वी जाव दससमय ठिईए आणुपुव्वी, संखिज्ज समय ठिईए आणुपुव्वी, असंखिज्ज समय ठिईए आणुपुव्वी, एग समय ठिईए अणाणुपुव्वी, दुसमय ठिईए

सूत्र

या अनुपनिधिका. उस में से उपनिधिका का वर्णन यहां पर नहीं करने का है. और अनुपनिधिका के दो भेद नैगम व्यवहार व संग्रह ॥ ७७ ॥ अहो भगवन् ! नैगम व्यवहार नय से अनुपनिधिका कालानुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो गौतम ! नैगम व्यवहार नय के मत से अनुपनिधिका कालानुपूर्वी के पांच भेद कहे हैं जिन के नाम-१ अर्थ पद प्ररूपना, २ भंग समुत्कीर्तनता, ३ भंगोपदर्शनता, ४ समवतार व ५ अनुगम ॥ ७८ ॥ अहो भगवन् ! अर्थ पद प्ररूपना किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! तीन समय की स्थिति वाले यावत् दश समय की स्थितिवाले आनुपूर्वी. संख्यात समय की स्थितिवाले आनुपूर्वी. असंख्यात समय की स्थितिवाले आनुपूर्वी, एक समय की स्थितिवाले अनानुपूर्वी, और दो समय की स्थितिवाले

For Private and Personal Use Only

सूत्र

अवत्तव्वए, तिसमय ठिइयाओ आणुपुव्वीओ, एगसमय ठिईयाओ अणाणुपुव्वीओ दुसमय ठिईओ अवत्तव्वगाइं, से तं णेगमववहाराणं अट्ठपय परूवणया॥ एयाएणं णेगम ववहाराणं अट्ठपय परूवणयाए किं पयोयणं? एयाएणं णेगम ववहाराणं अट्ठपय परूवणयाए णेगम ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणया कज्जइ ॥ ७९ ॥ से किं तं णेगम ववहाराणं भंग समुक्कित्तणया? णेगम ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणया, अत्थि आणुपुव्वी, अत्थि अणाणुपुव्वी, अत्थि अवत्तव्वए. एवं दव्वाणुपुव्वी गममेणं कालाणुपुव्वीएवि ते चेव छव्वीसं भंगा भाणियव्वा जाव से तं णेगम ववहाराणं

अर्थ

अवक्तव्य. बहुत तीन समय की स्थितिवाले आनुपूर्वी, बहुत एक समय की स्थितिवाले अनानुपूर्वी बहुत दो समय की स्थितिवाले अवक्तव्य. यह नैगम व्यवहार नय से अर्थ पद प्ररूपना का कथन हुवा. अहो भगवन्! इस नैगम व्यवहार नय की अर्थ पद प्ररूपना का क्या प्रयोजन है? अहो शिष्य! नैगम व्यवहार नय की अर्थ पद प्ररूपना से नैगम व्यवहार नय का भंग समुत्कीर्तन होता है ॥ ७९ ॥ अहो भगवन्! नैगम व्यवहार नय से भंग समुत्कीर्तन किसे कहते हैं? अहो शिष्य! आनुपूर्वी है, अनानुपूर्वी है, अवक्तव्य है, यों द्रव्यानुपूर्वी में जैसे छव्वीस भांगे कहे हैं वैसे ही यहां पर कालानुपूर्वी का

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

भंगसमुक्कित्तणया ॥ एयाएणं णेगम ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणयाए किं पयोयणं ? णेगम ववहाराणं भंगोवदंसणया कज्जइ ॥ ८० ॥ से किं तं णेगम ववहाराणं भंगोवदंसणया ? णेगम ववहाराणं भंगोवदंसणया तिसमय ट्ठिईए आणुपुव्वी, एगसमय ठिईए अणाणुपुव्वी, दुसमय ट्ठिईए अवत्तव्वए, तिसमय ट्ठिईया आणुपुव्वीओ, एगसमय ट्ठिईया अणाणुपुव्वीओ, दुसमय ट्ठिईया अवत्तव्वगाइं. अहवा तिसमय ट्ठिईएय एगसमय ट्ठिइए आणुपुव्वी. अणाणुपुव्वीय, एवं तहा चेव दव्वाणुगमेणं

अर्थ

छव्वीस भांगे कहना. यावत् यह नैगम व्यवहार नय से भंग समुत्कीर्तनता का कथन हुवा. इस भंग समुत्कीर्तन का क्या प्रयोजन हैं ? अहो शिष्य ! इस से भंगोपदर्शनता होती है ॥ ८० ॥ अहो भगवन् ! नैगम व्यवहार नय के मत से भंगोपदर्शनता किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! तीन समय की स्थितिवाले आनुपुर्वी, एक समय की स्थितिवाले अनानुपूर्वी व दो समय की स्थितिवाले अवक्तव्य, बहुत तीन समय की स्थितिवाले बहुत आनुपूर्वी, बहुत एक समय की स्थितिवाले बहुत अनानुपूर्वी व बहुत दो समय की स्थितिवाले बहुत अवक्तव्य अथवा तीन समय की स्थितिवाले व एक समय की स्थितिवाले आनुपूर्वी अनानुपूर्वी. यों जैसे द्रव्यानुपूर्वी के छव्वीस भांगे कहे वैसे ही कालानुपूर्वी के छव्वीस भांग

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

छव्वीसं भंगा भाणियव्वा जाव से तं णेगमं ववहाराणं भंगोवदंसणया ॥ ८१ ॥ से किं तं समोयारे ? समोयारे णेगम ववहाराणं आणुपुव्वी दव्वाइं कहिं समोयरंति किं आणुपुव्वी दव्वेहिं समोयरंति, अणाणुपुव्वी दव्वेहिं ? एवं तिण्णि वि सट्ठाणे समोयरंति इति भाणियव्वं. से तं समोयारे ॥ ८२ ॥ से किं तं अणुगमे ? अणुगमे णवविहे पण्णत्ते तंजहा-संतपय परूवणया जाव अप्पाबहुंचेव ॥ णेगम ववहाराणं आणुपुव्वी दव्वाइं किं अत्थि णत्थि ? नियमा तिण्णि नाम वि अत्थि ॥ णेगम ववहाराणं आणुपुव्वी दव्वाइं किं संखेज्जाइं असंखेज्जाइं अणंताइं ? तिण्णिवि णो

अर्थ

कहना यावत् यह नैगम व्यवहार नय से भंगोपदर्शनता का कथन हुवा ॥ ८१ ॥ अहो भगवन् ! समव- तार किसे कहते हैं ? नैगम व्यवहार नय के मत से आनुपूर्वी द्रव्य का कहां समवतार होता है ? क्या आनुपूर्वी अनानुपूर्वी या अवक्तव्य द्रव्य में समवतार होता है ? अहो शिष्य ! तीनों का अपने २ स्थान में व्यवहार होता है. यह समवतार का कथन हुवा ॥ ८२ ॥ अहो भगवन् ! अनुगम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! अनुगम के नव भेद कहे हैं तद्यथा-सत्पद प्ररूपना यावत् अल्पाबहुत. नैगम व्यवहार नय के मत से आनुपूर्वी द्रव्य की क्या अस्ति है ? अहो गौतम ! तीनों की नियमा अस्ति है.





For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



संखेज्जाइं असंखेज्जाइं वा अणंताइं ॥ णेगम ववहाराणं आणुपुव्वी दव्वाइं लोगस्स किं संखिज्जइ भागे होज्जा, असंखिज्जइ भागे होज्जा, संखेज्जेसु भागेसु वा होज्जा, असंखेज्जेसु भागेसु वा होज्जा, सव्वलोए वा होज्जा ? एगं दव्वं पडुच्च संखेज्जइ भागे वा होज्जा, असंखेज्जइ भागे वा होज्जा, संखेज्जेसु वा भागेसु होज्जा, असंखेज्जेसु वा भागेसु होज्जा, देसूणे वा लोए होज्जा, णाणा दव्वाइं पडुच्च नियमा सव्वलोए होज्जा, एवं दोन्निवि । एवं फुसणावि ॥ नेगम ववहाराणं आणुपुव्वी दव्वाइं कालओ केवचिरं होंति ? एगं दव्वं पडुच्च जहण्णेणं तिण्णि समया, उक्कोसेणं

अर्थ

नैगम व्यवहार नय के मत से आनुपूर्वी द्रव्य क्या संख्यात, असंख्यात या अनंत है ? अहो शिष्य ! तीनों संख्यात व अनंत नहीं है परंतु असंख्यात है. नैगम व्यवहार नय के मत से आनुपूर्वी द्रव्य क्या लोक के संख्यात भाग में है, असंख्यात भाग में है, संख्यातवे भाग में है, असंख्यातवे भाग में है, या सब लोक में है? अहो शिष्य ! एक द्रव्य आश्री संख्यात भाग में है, असंख्यात भाग में है संख्यातवे भाग में है, असंख्यातवे भाग में है, या कुछ कम सब लोक में है. बहुत द्रव्य आश्री नियमा सब लोक में है. ऐसे ही अनानुपूर्वी व अवक्तव्य द्रव्य का कहना. और ऐसे ही स्पर्शना का भी कहना. नैगम व्यवहार नय से आनुपूर्वी द्रव्य काल से कितना काल तक रहे ? अहो शिष्य ! एक द्रव्य आश्री जघन्य तीन समय







For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

असंखेज्जं कालं. णाणा दव्वाइं पडुच्च सव्वद्धा ॥ णेगम ववहाराणं अणाणुपुव्वी दव्वाइं
कालओ केवचिरं होइ ? एगं दव्वं पडुच्च अजहन्नमणुक्कोसेणं एक्कंसमयं, णाणा
दव्वाइं पडुच्च सव्वद्धा. अवत्तव्वग दव्वाइं पुच्छा ? एगं दव्वं पडुच्च अजहण्ण
मणुक्कोसेणं दो समयाइं णाणा दव्वाइं, पडुच्च सव्वद्धा ॥ णेगम ववहाराणं अणाणुपुव्वी
दव्वाइं अंतरं कालओ केवचिरं होइ ? एगं दव्वं पडुच्च जहण्णेणं एगं समयं,
उक्कोसेणं दो समया. नाणा दव्वाइं पडुच्च नत्थि अंतरं ॥ णेगम ववहाराणं
अणाणुपुव्वी दव्वाणमंतरं कालओ केवचिरं होइ ? एगं दव्वं पडुच्च जहण्णेणं दो

अर्थ

उत्कृष्ट असंख्यात काल. बहुत द्रव्य आश्री सब काल तक रहे. नैगम व्यवहार नय के मत से अनानु-
पूर्वी द्रव्य कितना काल तक रहे ? अहो शिष्य ! एक समय आश्री अनानुपूर्वी की स्थिति अजघन्य
अनुत्कृष्ट एक समय की और बहुत द्रव्य आश्री सब काल की. अवक्तव्य द्रव्य की पृच्छा. अहो शिष्य !
एक द्रव्य आश्री अजघन्य अनुत्कृष्ट दो समय की स्थिति और बहुत द्रव्य आश्री सब काल की. अहो
भगवन् ! नैगम व्यवहार नय के मत से आनुपूर्वी द्रव्य का काल से कितना अंतर होता है ? अहो
शिष्य ! एक द्रव्य आश्री जघन्य एक समय उत्कृष्ट दो समय. बहुत द्रव्य आश्री अंतर नहीं है अहो
भगवन् ! नैगम व्यवहार नय के मत से अनानुपूर्वी का अंतर कितना होता है ? अहो शिष्य ! एक

For Private and Personal Use Only

सूत्र

समया, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं. णाणा दव्वाइं पडुच्च णत्थि अंतरं ॥ नेगम ववहाराणं अवत्तव्वग दव्वाणं पुच्छा ? एगं दव्वं पडुच्च जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं, णाणा दव्वाइं पडुच्च णात्थि अंतरं. ॥ भाग भाव अप्पाबहुं चेव जहा खेत्ताणपुव्वीए तहा भाणियव्वाइं. जाव से तं अणुगमे. से तं णेगम ववहाराणं अणोवणिहिया कालाणुपुव्वी ॥ ८३ ॥ से किं तं संगहस्स अणोवणिहिया कालाणुपुव्वी ? संगहस्स अणोवणिहिया कालाणुपुव्वी पंचविहा पण्णत्ता तंजहा— अट्ठपयपरूवणया, भंगसमुक्कित्तणया, भंगोवदंसणया, समोयारे, अणुगमे ॥ ८४ ॥

अर्थ

द्रव्य आश्री जघन्य दो समय उत्कृष्ट असंख्यात काल का और बहुत द्रव्य आश्री अंतर नहीं है. नैगम व्यवहार नय से अवक्तव्य द्रव्य के अंतर की पृच्छा. अहो शिष्य ! एक द्रव्य आश्री जघन्य एक समय उत्कृष्ट असंख्यात काल और बहुत द्रव्य आश्री अंतर नहीं है. इस का भाग, भाव और अल्पाबहुत जैसे क्षेत्रानुपूर्वी का कहा वैसे ही कहना. यह अनुगम का कथन हुवा. यह नैगम व्यवहार नय की अनुपनिधिका कालानुपूर्वी का कथन हुवा ॥ ८३ ॥ अहो भगवन् ! संग्रह नय से अनुपनिधिका कालानुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! संग्रह नय से अनुपनिधि का कालानुपूर्वी के पांच भेद कहे हैं तद्यथा—अर्थ पद प्ररूपना, भंग समुत्कीर्तनता, भंगोपदर्शनता, समवतार व अनुगम ॥ ८४ ॥ अहो भग-

सूत्र

से किंतं संगहस्स अट्ठपयपरूवणया ? संगहस्स अट्ठपयपरूवणया एयाइं पंचविहाइं जहा खेत्ताणुपुव्वीए संगहस्स तहा कालाणुपुव्वीए वि भाणियव्वाणि, णवरं ठिइ अभिलावो जाव सेतं अणुगमे। सेतं संगहस्स अणोवणिहिया कालाणुपुव्वी ॥ ८५ ॥ से किंतं उवणिहिया कालाणुपुव्वी ? उवणिहिया कालाणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता तंजहा—पुव्वाणुपुव्वी, पच्छाणुपुव्वी, अणाणुपुव्वी ॥ ८६ ॥ से किंतं पुव्वाणुपुव्वी ?

अर्थ

वन् ! संग्रह नय से अर्थ पद प्ररूपना किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! इस के पांचों द्वार का कथन जैसे संग्रह नय का क्षेत्रानुपूर्वी का कहा वैसे ही कहना. यावत् यह अनुगम हुवा. यह अनुपनिधिका का कथन हुवा ॥ ८५ ॥ अहो भगवन् ! उपनिधिका कालानुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! उपनिधिका कालानुपूर्वी के तीन भेद—पूर्वानुपूर्वी, पच्छानुपूर्वी व अनानुपूर्वी. ॥ ८६ ॥ अहो भगवन् ! पूर्वानुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! सर्व से सूक्ष्म जिस के दो विभाग न हो सके उसे समय कहते हैं, यह काल की गिनती में आदि भूत है इस लिये प्रथम समय का कथन किया गया है. असंख्यात समय की आवलिका, ३ ३७७३ आवलिका का श्वासोच्छवास, ४ सात श्वासोच्छवास का स्तोक ५ सात स्तोक का लव, ६ सात लव का मुहूर्त, ७ तीस मुहूर्त की एक अहो रात्रि, ८ पन्नरह अहो रात्रि का पक्ष, ९ दो पक्ष का मास. १० दो मास की ऋतु, ११ तीन ऋतु का एक अयन, १२ दो अयन

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

पुव्वाणुपुव्वी—समए, आवलिया, आणपाणू थोवे, लवे, मुहुत्ते, अहोरत्ते, पक्खे, मासे, उऊ, अयणे, संवच्छरे, जुगे, वाससए, वाससहस्से, वाससयसहस्से, पुव्वंगे, पुव्वे, तुडिअंगे, तुडिए, अडडंगे, अडडे, अववंगे, अववे, हुहुअंगे, हुहुए, उप्पलंगे उप्पले, पउमंगे, पउमे, णलिणंगे, णलिणे, अत्थिनिऊरंगे, अत्थिनिऊरे, अउअंगे, अउए, नउअंगे, नउए, पउअंगे, पउए, चूलिअंगे, चूलिया, सीसपेहेलिअंगे सीसपहेलिया; 

अर्थ

का संवत्सर, १३ पांच संवत्सर का युग, १४ बीस युग का शतवर्ष, १५ दश सो वर्ष का हजार वर्ष, १६ शत हजार वर्ष का लाख वर्ष, १७ चौरासी लक्ष वर्ष का पूर्वांग, १८ चौरासी लाख पूर्वांग का पूर्व, १९ चौरासी लाख पूर्व का त्रुटितांग, ऐसे ही २० त्रुटित, २१ अडडांग, २२ अडड, २३ अववांग, २४ अवव, २५ हुहुतांग, २६ हुहुत, २७ उत्पलांग, २८ उत्पल, २९ पद्मांग, ३० पद्म, ३१ नालनांग, ३२ नलिन, ३३ अस्ति निपुरांग, ३४ अस्ति निपुर, ३५ अयुतांग, ३६ अयुत, ३७ नयुतांग, ३८ नयुत, ३९ पउमांग, ४० पउम, ४१ चुलिआंग, ४२ चुलिअ, ४३ शीर्ष प्रहेलितांग व ४४ शीर्ष प्रहेलित. यहां तक १९४ अंक की गणना हुई. ७५८२६३२५३०७३०१०२४११५७९७ ३५६ ९९७ ५६९ ६४० ६२१८ ९६६८ ४८०८०१ ८३१२९६० ०००००० ००००० ०००० ००००० ०००००००००००००००० ०००००००००००००००००० ००००००००० ०००००००००० ००००००००० ०००००००००००००००० ०००००००००००००००००००० ०००००००००००० ०००००००००००००००

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

पलिओवमे, सागरोवमे, ओसाप्पिणी, उस्सप्पिणी, पोग्गल परियट्टे, अतीतद्धा, अणागतद्धा, सवद्धा. से तं पुव्वाणुपुव्वी, से किंतं पच्छाणुपुव्वी ? पच्छाणुपुव्वी ! सव्वद्धा, अणागतद्धा जाव समए. से तं पच्छाणुपुव्वी ॥ से किं तं अणाणुपुव्वी ? अणाणुपुव्वी एयाएचेव एगाइयाए एगुत्तरियाए अणंतगच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णब्भ भासोदुरूवूणो. से तं अणाणुपुव्वी ॥ ८७ ॥ अहवा उवणिहिया कालाणुपुव्वी

अर्थ

००००० इतनी संख्या होती है. यहां तक संख्यात कहे जाते हैं असंख्यात वर्ष का पल्योपम, दश क्रोडाक्रोड पल्योपम का एक सागरोपम, दस क्रोडाक्रोड सागरोपम का एक उत्सर्पिणी काल, दस क्रोडाक्रोड सागरोपम का एक अवसर्पिनी काल. बीस क्रोडाक्रोड सागरोपम का काल चक्र, अनंत काल चक्र का एक पुद्गल परावर्त, अनंत पुद्गल परावर्त का अतीत काल. अनंत पुद्गल परावर्त का अनागत काल, अनंत अतीत काल. अनंत अनागत काल का सर्व काल. यह पूर्वानुपूर्वी हुई अहो भगवन् ! पच्छानुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! पच्छानुपूर्वी में सव काल, अनागत काल यावत् एक समय पर्यंत की गिनती करना. यह पच्छानुपूर्वी का कथन हुवा. अहो भगवन् ! अनानुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! अनानुपूर्वी में एक से लेकर एक २ का उत्तर अन्योन्याभ्यास करते जो संख्या आवे उस में से आदि अंत का छोडकर शेष रहे सो अनानुपूर्वी ॥ ८७ ॥ अथवा अनुपनिधिका कालानुपूर्वी के

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र तिविहा पण्णत्ता तंजहा—पुव्वाणुपुव्वी. पच्छाणुपुव्वी, अणाणुपुव्वी, से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ? पुव्वाणुपुव्वी ! एगसमय ठिइए, दुसमय ठिइए, तिसमय ठिइए, जाव दससमय ठिइए, संखिज्ज समय ठिइए, असंखिज्ज समय ठिइए, से तं पुव्वाणुपुव्वी ॥ से किं तं पच्छाणुपुव्वी ? पच्छाणुपुव्वी ! असंखिज्ज समयठिइए, जाव एगसमय ठिइए, से तं पच्छाणुपुव्वी ॥ से किं तं अणाणुपुव्वी ? अणाणुपुव्वी ! एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए असंखिज्ज गच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवुणो. से तं अणाणुपुव्वी । से तं उवणिहिया कालानुपुव्वी ।

अर्थ तीन भेद कहे हैं तद्यथा—१ पूर्वानुपूर्वी, २ पच्छानुपूर्वी व ३ अनानुपुर्वी. इस में से पुर्वानुपुर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! एक समय की स्थितिवाले दो समय की स्थितिवाले, तीन समय की स्थितिवाले, यावत् दश समय की स्थितिवाले, संख्यात समय की स्थितिवाले व असंख्यात समय की स्थितिवाले, यह पुर्वानुपूर्वी. और पच्छानुपूर्वी में असंख्यात समय की स्थितिवाले, संख्यात समय की स्थितिवाले यावत् एक समय की स्थितिवाले कहना. और अनानुपूर्वी में एक से असंख्यात पर्यंत का अन्योन्याभ्यास करके दो कम कहना. यह अनानुपूर्वी का कथन हुवा, यह उपनिधिका कालानुपूर्वी का




For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

से तं कालाणुपुव्वी ॥ ८८ ॥ से किं तं उक्कित्तणाणुपुव्वी ? उक्कित्तणाणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता तंजहा—पुव्वाणुपुव्वी, पच्छाणुपुव्वी, अणाणुपुव्वी ॥ ८९ ॥ से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ?पुव्वाणुपुव्वी-उसभ, अजिए, संभवे, अभिणंदणे, सुमति, पउमप्पहे, सुपासे, चंदप्पहे सुविही सीतले, सेज्जंसे, वासुपुज्ज, विमले, अणंते, धम्मे, संती, कुंथू अरे, मल्ली, मुणिसुव्वए, णमी, अरिट्ठणेमी, पासे, बद्धमाणे. से तं पुव्वाणुपुव्वी॥ से किं तं पच्छाणुपुव्वी ? पच्छाणुपुव्वी ! बद्धमाणे जाव उसभे. से तं पच्छाणुपुव्वी ॥

अर्थ

कथन हुवा. यह कालानुपूर्वी का स्वरूप हुवा ॥ ८८ ॥ अहो भगवन् ! उत्कीर्तनानुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! उत्कीर्तनानुपूर्वी के तीन भेद कहे हैं—१ पूर्वानुपूर्वी. २ पच्छानुपूर्वी व ३ अनानुपूर्वी ॥ ८९ ॥ अहो भगवन् ! पूर्वानुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! पूर्वानुपूर्वी में १ श्री ऋषभदेव, २ श्री अजितनाथ, ३ श्री संभवनाथ, ४ श्री अभिनंदन, ५ श्री सुमतिनाथ, ६ श्री पद्मप्रभु, ७ श्री सुपार्श्वनाथ, ८ श्री चंद्रप्रभ, ९ श्री सुविधिनाथ, १० श्री शीतलनाथ, ११ श्री श्रेयांसनाथ, १२ श्री वासुपूज्य १३ श्री विमलनाथ, १४ श्री अनंतनाथ, १५ श्री धर्मनाथ, १६ श्री शांतिनाथ, १७ श्री कुंथुनाथ, १८श्री अरनाथ, १९ श्री मल्लीनाथ, २० श्री मुनिसुव्रत, २१श्री नमीनाथ, २२श्री अरिष्टनेमी, २३श्री पार्श्वनाथ, और २४ श्री महावीर स्वामी. यह पूर्वानुपूर्वी का कथन हुवा. अहो भगवन् ! पच्छानुपूर्वी किसे

For Private and Personal Use Only

सूत्र

से किं तं अणाणुपुव्वी ? अणाणुपुव्वी एयाएचेव एगाइयाए एगुत्तरियाए चउवीस गच्छगयाए सेढीए अण्णमण्णब्भासो दुरूवूणो, से तं अणाणुपुव्वी ॥ से तं उक्कित्त-णाणुपुव्वी ॥ ९० ॥ से किं तं गणणाणुपुव्वी ? गणाणुपुव्वी ! तिविहा पण्णत्ता तंजहा—पुव्वाणुपुव्वी. पच्छ णुपुव्वी. अणाणुपुव्वी ॥ से किं तं पुव्वाणुपव्वी? पुव्वाणुपुव्वी एगे,दस,सयं,सहस्सं, दससहस्साइं, सय सहस्सं, दससयसहस्साइं, कोडी,दसकोडीओ, कोडीसयं, दसकोडीसयाइं. से तं पुव्वाणुपुव्वी ॥ से किं तं पच्छाणुपुव्वी? पच्छाणु-

अर्थ

कहते हैं ? अहो शिष्य ! श्री वर्धमान स्वामी से श्री ऋषभनाथ पर्यंत पच्छानुपूर्वी कहते हैं. अहो भगवन् ! अनानुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! एक से चौवीस पर्यंत एकेक की उत्तरोत्तर वृद्धि करते २ अन्योन्याभ्यास करे और जो संख्या आवे उस में से दो कम करे वह अनानुपूर्वी. यह उत्की-र्तनानुपूर्वी हुई ॥ ९० ॥ अहो भगवन् ! गणनानुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! गणनानुपूर्वी के तीन भेद कहे हैं—पूर्वानुपूर्वी, पच्छानुपूर्वी व अनानुपूर्वी. अहो भगवन् ! पूर्वानुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! एक, दश, शत, सहस्र, दशसहस्र, लक्ष, दश लक्ष, क्रोड व दश क्रोड, सो क्रोड ( अब्ज ) हजारक्रोड दश (अब्ज)यह पूर्वानुपूर्वी हुई. अहो भगवन्! पच्छानुपूर्वी किसे कहते हैं? अहो शिष्य! पच्छानु-

सूत्र

पुव्वी-दसकोडीसयाइं जाव एक्को, से तं पच्छाणुपुव्वी ॥ से किं तं अणाणुपुव्वी ? अणाणुपुव्वी एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए दसकोडीसय गच्छयाए, सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो, से तं अणाणुपुव्वी ॥ से तं गणाणुपुव्वी ॥ ९१ ॥ से किं तं संठाणाणुपुव्वी ? संठाणाणुपुव्वी ! तिविहा पण्णत्ता तंजहा—पुव्वाणुपुव्वी, पच्छाणुपुव्वी, अणाणुपुव्वी ॥ से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ? पुव्वाणुपुव्वी ! समचउरंस संठाणे, निग्गोह,परिमडले सादी खुज्जे, वामणे, हूंडे,सेतं पुव्वाणुपुव्वी॥से किं तं पच्छाणु-

अर्थ

पूर्वी में दश अब्ज से एक पर्यंत की संख्या आती है. अनानुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! एक से दश अब्ज पर्यंत एक २ बढाते २ अन्योन्याभ्यास करके जो कम करते जो संख्या रहे उसे अनानुपूर्वी कहना. यह गणनापूर्वी का कथन हुआ ॥ ९१ ॥ अहो भगवन् ! संस्थानानुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! संस्थानानुपूर्वी के तीन भेद कहे हैं. तद्यथा—१ पूर्वानुपूर्वी, २ पच्छानुपूर्वी व ३ अनानुपूर्वी. अहो भगवन् ! पुर्वानुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! १ समचतुस्र संस्थान, २ न्यग्रोध परिमंडल संस्थान, ३ साद्य संस्थान, ४ कुब्ज संस्थान, ५ वामन संस्थान व ६ हुंडक संस्थान. इस को पूर्वानुपूर्वी कहते हैं. अहो भगवन् ! पच्छानुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! पच्छानुपूर्वी में हुंडक से समचतुस्र संस्थान पर्यंत गिनती करना. अहो भगवन् ! अनानुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

पुव्वी ? पच्छाणुपुव्वी ! हुंडे जाव समचउरंसे, से तं पच्छाणुपुव्वी ॥ से किं तं अणाणुपुव्वी ? अणाणुपुव्वी ! एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए छगच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो. से तं अणाणुपुव्वी ॥ से तं संठाणाणुपुव्वी ॥ से किं तं सामायारी आणुपुव्वी ? सामायारी आणुपुव्वी ! तिविहा पण्णत्ता तंजहा-पुव्वाणुपुव्वी, पच्छाणुपुव्वी, अणाणुपुव्वी ॥ से किं तं पुव्वाणुपुव्वी ? पुव्वाणुपुव्वी ! (गाहा) इच्छा मिच्छा तहक्कारो, अवस्सिया य निसीहिया॥ आपुच्छणा य पडिपुच्छा, छंदणा य

अर्थ

शिष्य ! अनानुपूर्वी एक से छ पर्यंत का अन्योन्याभ्यास करके दो कम करना. जो संख्या आवे उसे अनानुपूर्वी कहना यह संस्थानानुपूर्वी का कथन हुवा ॥ ९२ ॥ अहो भगवन् ! समाचारी आनुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! समाचारी आनुपूर्वी के तीन भेद कहे हैं. तद्यथा—१ पूर्वानुपूर्वी. २ पच्छानुपूर्वी व ३ अनानुपूर्वी. अहो भगवन् ! पूर्वानुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! इच्छा-गुरु आदि से कहे कि आप की इच्छा होवे तो मैं यह काम करूं, २ मिच्छा—अनाचार सेवन कर मिथ्या दुष्कृत्य देवे. ३ तहक्कार—हित शिक्षा के वचन को तहत्ति कहकर प्रमाण करे. ४ जब साधु उपाश्रय में से बाहिर निकले तब आवस्सही कहे. ५ उपाश्रय में आते समय निस्सही कहे, ६ जो कार्य करने का होवे सो गुरु को पूछकर करे, ७ कोई मुनि अपना कार्य करने का अन्य मुनि को कहे तो गुरु को पुछ-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







निमंतणा ॥ १ ॥ उवसंपयाय काले सामायारी भवे दसविहा ॥ से तं पुव्वाणुपुव्वी ॥ से किं तं पच्छाणुपुव्वी ? पच्छाणुपुव्वी ! उवसंपया जाव इच्छागाहो से तं पच्छाणुपुव्वी ॥ से किं तं अणाणुपुव्वी ? अणाणुपुव्वी एयाए चेव एगाइयाए एगुत्तरियाए दसगच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो, से तं अणाणुपुव्वी ॥ से तं सामायारी आणुपुव्वी ॥ ७३ ॥ से किं तं भावाणुपुव्वी ? भावाणुपुव्वी तिविहा पण्णत्ता तंजहा—पुव्वाणुपुव्वी, पच्छाणुपुव्वी, अणाणुपुव्वी ॥ से किं तं पुव्वाणुपुव्वी

**अर्थ**

कर उन मुनि का कार्य करे, ८ अन्न पानी आदि का समविभाग करना, ९ उन मे पूज्य मुनिवरों से आमंत्रणा करना और १० श्रुताध्ययन के वास्ते किसी अन्य मुनि के पास उपस्थित होना और उसे कहना कि मैं आप का हूं इत्यादि शब्दों को उपसंपदा समाचारी कहते हैं. यह दश प्रकार की समाचारी हुई. यह पूर्वानुपूर्वी का कथन हुवा. अब अहो भगवन् ! पच्छानुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! उपसंपदा से इच्छा पर्यंत गणना करना उसे पच्छानुपूर्वी कहते हैं. अहो भगवन् ! अनानुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! एक से दश पर्यंत अन्योन्याभ्यास करके जो संख्या आवे उस में से पहिले और पीछे का अंक छोडकर शेष सब अंक को अनानुपूर्वी कहते हैं यह समाचारी आनुपूर्वी का कथन हुवा ॥ ९३ ॥ अहो भगवन् ! भावानुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! भावानुपूर्वी के तीन भेद कहे हैं तद्यथा—१ पूर्वानुपूर्वी, २ पच्छानुपूर्वी व ३ अनानुपूर्वी. अब इन में पूर्वानुपूर्वी का प्रश्न

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



**सूत्र**

पुव्वाणुपुव्वी ! उदईए, उवसामिए, खईए, खउवसमिए, पारिणामिए, सन्निवाईए. से तं पुव्वाणुपुव्वी ॥ से किं तं पच्छाणुपुव्वी ? पच्छाणुपुव्वी ! सन्निवाइए जाव उदईए, से तं पच्छाणुपुव्वी ॥ से किं तं अणाणुपुव्वी ? अणाणुपुव्वी एयाएचेव एगाइयाए एगुत्तरियाए छगच्छगयाए सेढीए अन्नमन्नब्भासो, दुरूवूणो. से तं अणाणुपुव्वी, से तं भावाणुपुव्वी ॥ से तं आणुपुव्वी ॥ आणुपुव्वीपद सम्मत्तं ॥९४॥*॥ से किं तं

**अर्थ**

करते हैं. अहो भगवन् ! भाव संबंधी पूर्वानपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! यह पूर्वानुपूर्वी षट् प्रकार से बर्णन की गई है जैसे कि १ उदयिक भाव, २ उपशामिक भाव, ३ क्षायिक भाव, ४ क्षयोपशमिक भाव, ५ पारिणामिक भाव और ६ सन्निपातिक भाव. यह पूर्वानुपूर्वी हुई. अहो भगवन् ! पच्छानुपुर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! पच्छानुपूर्वी में सन्निपातिक भाव से उदयिक भाव पर्यंत गणना की गई है. यह पच्छानुपुर्वी हुई. अहो भगवन् ! अनानुपूर्वी किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! अनानुपूर्वी में एक से छ पर्यंत एकेक की वृद्धि करते अन्योन्याभ्यास करके जो अंक आवे उस में से पहिला व अंत का अंक छोडकर शेष अंक को अनानुपूर्वी कहते हैं. यह भावानुपुर्वी का कथन हुवा. यह अनानुपुर्वी का पद समाप्त हुवा ॥९४॥*॥ अब नाम विषय में कहते हैं. अहो भगवन् ! नाम किसे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

नामे ? नामे दसविहे पण्णत्ते तंजहा—एगनामे, दुनामे, तिनामे, चउनामे, पंचनामे, छनामे, सत्तनामे, अट्ठनामे नवनामे, दसनामे ॥ ९५ ॥ से किं तं एगनामे ?

अर्थ

कहते हैं ? अहो शिष्य ! नाम के दश भेद कहे हैं जैसे कि—जो ज्ञानादि गुण का प्रकाशक हो उस का एक नाम है, २ जिस के द्वारा दो पदार्थों का बोध होवे उसे द्विनाम कहते हैं, ३ जिस के द्वारा तीन पदार्थों का ज्ञान होवे उसे त्रिनाम कहते हैं. ४ जो चार प्रकार से वस्तुओं का स्वरूप निदर्श किया जाय वह चार नाम है. ५ जो पांच प्रकार से पदार्थों का विमर्श किया जाय वह पांच नाम है. ६ जिस से छ प्रकार से वस्तुओं का स्वरूप वर्णन किया जावे वही षट् नाम, ७ जिस से सात प्रकार से वस्तु निरूपणा की जावे वही सात नाम है. ८ जिस के अष्ट भेद वर्णन किये जावे उसी का नाम अष्ट नाम हैं. ९ नव प्रकार से द्रव्यादि पदार्थों को कहा जावे वही नव नाम है और १० दश प्रकार से जो पदार्थ वर्णन किये जावे उन्हीं का नाम दश नाम है. ॥ ९५ ॥ इस में पुनः प्रश्न करते हैं कि अहो भगवन् ? एक नाम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! द्रव्य के नाम (जीव जंतु आत्मा, प्राणी सत्व ) यों जीव द्रव्य के अनेक नाम हैं वैसे ही आकाश द्रव्य के नाम नभः आकाश, अंबर इत्यादि यह द्रव्यों के नाम हैं.) गुण जैसे ज्ञानादि गुण, तथा रूप, रस, गंध, स्पर्श यह गुण; पर्याय सो नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देव. यों द्रव्य, गुण व पर्याय के जितने नाम हैं उन सब को आगम

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

एगनामे ! नामाणि जाणि काणिय, दव्वाणगुणाण पज्जवाणंच ॥ते सिं आगम निहसे नामे ति परूविया सण्णा, से तं एगनामे ॥ ९६ ॥ से किं तं दुनामे? दुनामे दुविहे पण्णत्ते तंजहा-एगक्खरिए, अणेगक्खरिय ॥ से किं तं एगक्खरिए ? एगक्खरिए ही श्री धी स्त्री से तं एगक्खरिए ॥ से किं तं अणेगक्खरिए ? अणेगक्खरिए

अर्थ

रूप कसौटी शिष्य नाम पद का संज्ञा प्रतिपादन की गइ है. अर्थात् यह नाम पद आगम में कसौटी तुल्य हैं इस के द्वारा सब पदार्थों का बोध यथावत् होता है. तथा द्रव्य गुण पर्याय यह तीनों आगम रूप कसौटी में यथावत् सिद्ध होचुके हैं. जो संसार भर में वस्तु है वे सर्व समान प्रकार से एक नाम से भाषण की जाती है. सब द्रव्यों के एकार्थ वाची अनेक नाम होते हैं परंतु वह एक नाम में ही गर्भित हो जाते हैं. जैसे कसौटी द्वारा सुवर्ण की परीक्षा की जाती है वैसे ही ज्ञान रूपी कसौटी में जीवाजीव पदार्थों सुवर्ण तुल्य है. उन की परीक्षा की जाती है इस लिये यह नाम पद कसौटी रूप हैं. यह एक नाम का कथन हुवा ॥ ९६ ॥ अब शिष्य द्विनाम के लिये पृच्छा करता है. अहो भगवन् ! द्विनाम किस प्रकार से वर्णन किया गया है ? अहो शिष्य ! द्विनाम दो प्रकार से प्रतिपादन किया गया है. जैसे कि-एकाक्षरिक नाम व अनेकाक्षरिक नाम. अहो भगवन् ! एकाक्षरिक नाम किसे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

अणेगविहे पण्णत्ते तंजहा—कण्णा, वीणा, माला, सेत्तं अणेगक्खरिए ॥ अहवा दुनामे दुविहे पण्णत्ते तंजहा—जीवनामे, अजीवनामेय ॥ से किं तं जीवनामे ? जीवनामे अणेगविहे पण्णत्ते तंजहा—देवदत्ते, जिणदत्ते, विण्णुदत्ते, सोमदत्ते, से तं जीवनामे ॥ से किं तं अजीवनामे ? अजीवनामे अणेगविहे पण्णत्ते तंजहा—घडो पडो कडो रहो, से तं अजीवनामे ॥ ९७ ॥ अहवा दुनामे दुविहे पण्णत्ते तंजहा—अविसेसिएय, विसेसिएय ॥ अविसेसिए दव्वे विसेसिए जीवदव्वे अजीव

अर्थ

कहते हैं ? अहो शिष्य ! जिस के उच्चारण में एक ही अक्षर है जैसे-ह्री, श्री, धी, स्त्री, और जिस के उच्चारण में अनेक अक्षर होवें सो अनेकाक्षरिक जैसे कन्या, लता, वीणा, माला, अथवा द्विनाम के दो भेद किये हैं तद्यथा—१ जीव नाम, २ अजीव नाम, अहो भगवन् ! जीव नाम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! जीव नाम अनेक प्रकार से प्रतिपादन किया है तद्यथा—देवदत्त, यज्ञदत्त, सोमदत्त, यह जीव संज्ञक नाम है. अहो भगवन् ! अजीव नाम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! अजीव नाम के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा— घट, पट, रथ, कट, यह अजीव नाम का कथन हुवा ॥ ९७ ॥ अथवा द्विनाम के दो भेद कहे हैं विशेषिक व अविशेषिक, अविशेषिक नाम का अर्थ यह है कि जो नाम सर्व

For Private and Personal Use Only

दव्वेय ॥ अविसेसिए जीवदव्वे, विसेसिए—णेरइए, तिरिक्खजोणिए, मणुस्से, देवे ॥ अविसेसिए नेरईए, विसेसिए रयणप्पभाए, सक्करप्पभाए, वालुयप्पभाए, पंकप्पभाए, धूमप्पभाए, तमाए, तमतमाए ॥ अविसेसिए रयणप्पभाए पुढवी नेरइए विसेसिए—रयणप्पभाए पुढवी नेरईए पजत्त अपज्जत्तए ॥ एवं जाव अविसेसिए तमतमा पुढवी नेरइओ, विसेसिए-तमतमा पुढवी नेरइओ पजत्तएय अपज्जत्तए ॥ ९८ ॥ अविसेसिए तिरिक्खजोणिए, विसेसिए एगिंदिए, बेइंदिए, तेइंदिए, चउरिंदिए, पंचिंदिए ॥ अविसेसिए एगिंदिए, विसेसिए—पुढवी काइए,

स्थान में गर्भित हो जावे और विशेष नाम उसे कहते हैं कि जो केवल उसी द्रव्य का बोधक हो. उदाहरण—अविशेष द्रव्य इस में जीव व अजीव द्रव्य का गर्भितपना है और विशेष में जीव द्रव्य व अजीव द्रव्य है. वैसे ही अविशेष नाम जीव द्रव्य और विशेष नाम सो नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देवता. अविशेष नाम में नरक गति और विशेष नाम में रत्न प्रभा, शर्कर प्रभा, बालुप्रभा, पंकप्रभा, धूम्रप्रभा, तमप्रभा, व तमतमप्रभा. अविशेष में रत्नप्रभा और विशेष में रत्न प्रभा नरक के नैरायिक पर्याप्त व अपर्याप्त. यों तमतमा पर्यंत जानना. अविशेषिक व विशेषिक का नरक का अधिकार हुवा ॥९८॥ अब तिर्यंच का कहते हैं. अविशेष में तिर्यंच और विशेष में एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय,

सूत्र

आउकाइए, तेऊकाइए, वाउकाइए, वणस्सइकाइए ॥ अविसेसिए पुढवी काईए, विसेसिए सुहुम पुढवी काईए, बादर पुढवी काइए ॥ अविसेसिए सुहुम पुढवि काइए, विसेसिए पज्जत्तय सुहुम पुढवी काइय, अपज्जत्ताय सुहुम पुढवी काईए ॥ अविसेसिए बादर पुढवी काईए, विसेसिए पज्जत्तय बादर पुढवी काईए, अपज्जत्ताय बादर पुढवी काइए ॥ एवं आउकाईए, तेउकाइए, वाउकाईए, वणस्सइ काइएय ॥ अविसेसिय अपज्जत्तय भेदेहिं भाणियव्वा ॥ अविसेसिए बेंदिए विसेसिए पज्जत्तय बेंदिए अपज्जत्ताय बेंदिए ॥ एवं तेइंदिए, चउरिंदिएवि भाणियव्वा ॥ अविसेसिए पंचिंदिए तिरिक्खजोणिय, विसेसिए—जलयर पंचिंदिए तिरिक्खजोणिए,

अर्थ

व पंचेन्द्रिय. अविशेष में एकेन्द्रिय और विशेष में पृथ्वीकाया अपकाया, तेउकाया, वायुकाया, व वनस्पतिकाया. अविशेषिक में पृथ्वीकाया और विशेषिक में सूक्ष्म पृथ्वी काया व बादर पृथ्वी काया. अविशेषिक में सूक्ष्मपृथ्वी काया और विशेषिक में पर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वी काया व अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वी काया. अविशेष में बादर पृथ्वी काया और विशेष में पर्याप्त व अपर्याप्त बादर पृथ्वी काया. जैसे पृथ्वी-काया का कहा वैसे ही अपकाया, तेउकाया, वाउकाया व वनस्पतिकाया का जानना. अविशेष में द्वी-न्द्रिय विशेष में द्वीन्द्रिय के पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे ही त्रीन्द्रिय व चतुरेन्द्रिय का कथन जानना. अब तिर्यंच पंचेन्द्रिय का कहते हैं. अविशेष में तिर्यंच पंचेन्द्रिय, विशेष में जलचर, स्थलचर, व खेचर तिर्यंच

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिए, खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएय ॥ अविसेसिए जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिए, विसेसिए समुच्छिम जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिए, गब्भवक्कंतिय जलयर पंचिंदिए तिरिक्खजोणिए ॥ अविसेसिए समुच्छिम जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिए, विसेसिए पज्जत्तय समुच्छिम जलयर पंचिदिए तिरिक्खजोणिय, अपजत्ताय समुच्छिम जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएय ॥अविसेसिए गब्भवक्कंतिय जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिए, विसेसिए पज्जत्तय गब्भवक्कंतिय जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएय अपज्जत्ताय गब्भवक्कंतिय जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिए ॥ अविसेसिए थलयर पंचिंदिए तिरिक्खजोणिए विसेसिए-चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएय, परिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख

अर्थ

पंचेन्द्रिय. अविशेष में जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय और विशेष में संमूर्च्छिम जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय और गर्भज जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय, अविशेष में संमूर्च्छिम जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय और विशेष पर्याप्त व अपर्याप्त संमूर्च्छिम जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय. अविशेष में गर्भज जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय विशेष में पर्याप्त व अपर्याप्त गर्भज जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय, अविशेष में स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय व विशेष में चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय व परिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय. अविशेष में चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय. व

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

जोणिएय ॥ अविसेसिए चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिए, विसेसिए समुच्छिम चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएय, गब्भवक्कंतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएय ॥ अविसेसिए समुच्छिम चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिए, विसेसिए-पज्जत्तय समुच्छिम चउप्पय थलयर पंचेंद्रिय तिरिक्खजोणिय अपज्जत्तय समुच्छिम चउप्पय थलयर पंचिंदिए तिरिक्खजोणिए ॥ अविसेसिए-गब्भवक्कंतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिए, विसेसिए-पज्जत्तय गब्भ-वक्कंतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएय, अपज्जत्तय गब्भवक्कंतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएय ॥ अविसेसिए-परिसप्पथलयर पंचिंदिय

अर्थ

विशेष में संमूर्च्छिम व गर्भज चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय. अविशेष में संमूर्च्छिम स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय और विशेष में पर्याप्त व अपर्याप्त संमूर्च्छिम चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय अविशेष में गर्भज चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय और विशेष में पर्याप्त व अपर्याप्त गर्भज चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय. अविशेष में परिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय और विशेष में उरपरिसर्प व भुजपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय. इन दोनों के संमूर्च्छिम पर्याप्त व अपर्याप्त वैसे ही गर्भज, पर्याप्त व अपर्याप्त यों भेद करना. आविशेपिक खेचर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

तिरिक्खजोणिए विसेसिए, उरपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिए, भुजपरि-सप्पथलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिए य. एतेविसमुच्छिमा पज्जत्तगा अपज्जत्तगाय, गब्भवक्कंतिएवि पज्जत्तगा अपज्जत्तगाय भाणियव्वा ॥ अविसेसिए खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिय, विसेसिए समुच्छिम खहर पंचिंदिए गब्भवक्कंतिय खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिय। अविसेसिए समुच्छिम खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिय, विसेसिए-पज्जत्तय समुच्छिम खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिय, अपज्जत्तय समुच्छिम खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिय॥ अविसेसिए गब्भवक्कंतिय खहयर पंचिंदिय, विसेसिए पज्जत्तग गब्भवक्कंतिय खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिए अपज्जत्तय खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिए ॥ ९९ ॥ अविसेसिए मणुस्से, विसेसिए समुच्छिम मणुस्सेय, गब्भवक्कंतिय मणुस्सेय ॥

अर्थ

और विशेषक संमूर्च्छिम व गर्भज खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय. अविशेषक संमूर्च्छिम खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय और विशेषक पर्याप्त अपर्याप्त संमूर्च्छिम खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय. अविशेषक गर्भज खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय और विशेषक पर्याप्त अपर्याप्त गर्भज खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय. यह तिर्यंच का कथन हुवा ॥ ९९ ॥ अविशेषक-मनुष्य और विशेषक-संमूर्च्छिम मनुष्य व गर्भज मनुष्य. अविशेषक संमूर्च्छिम मनुष्य, विशेषक

For Private and Personal Use Only

सूत्र

अविसेसिए समुच्छिम मणुस्से, विसेसिए पज्जत्तग समुच्छिम मणुस्सेय, अपज्जत्तग समुच्छिम मणुस्सेय ॥ अविसेसिए गब्भवक्कंतिय मणुस्से, विसेसिए कम्मभूमिए, अकम्मभूमिए,अंतरदिवगेय॥संखेज्ज वासाउएय,असंखेज्जवासाउएय, पज्जत्तउ अपज्जत्तउ भेदो भाणियव्वो ॥ १०० ॥ अविसेसिए देवे, विसेसिए-भवणवासी, वाणमंतरा, जोतिसिए, वेमाणिएय ॥ अविसेसिए भवणवासी, विसेसिए-असुरकुमारे. नागकुमारे, सुवण्णकुमारे, विज्जुकुमारे, अग्गिकुमारे, दीवकुमारे, उदहिकुमारे, दिसाकुमारे, वाउकुमारे, थणियकुमारे, सव्वेसिंपि अविसेसिय. विसेसिए, पज्जत्तग अपज्जत्तग भेदा भाणियव्वा ॥ अविसेसिए वाणमंतर, विसेसिए-पिसाए, भूए, जक्खे, रक्खसे,

अर्थ

पर्याप्त अपर्याप्त संमूर्च्छिम मनुष्य. * अविशेषक गर्भज मनुष्य विशेषिक कर्मभूमि, अकर्मभूमि व अंतर्द्वीप इन तीनों के संख्यात वर्ष आयु वाले असंख्यात वर्ष आयु वाले,पर्याप्त व अपर्याप्त यों चार भेद अविशेषक व विशेषक में करना ॥ १०० ॥ अविशेषक देव और विशेषक भवनवासी, वाणव्यंतर, ज्योतिषी, व वैमानिक. अविशेषक में भवनवासी और विशेषक में १ असुर कुमार, २ नाग कुमार, ३ सुवर्ण कुमार, ४ विद्युत्कुमार, ५ अग्निकुमार, ६ द्वीपकुमार, ७ उदधि कुमार, ८ दिशाकुमार, ९

* संमूर्च्छिम मनुष्य के पर्याप्त नहीं होते हैं परंतु भांगा उत्पन्न करने के लिये ही ग्रहण किये हैं.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



**सूत्र** किंनरे, किंपुरिसे, महोरगे, गंधव्वे, एतेसिंपि अविसेसिय. विसेसिय पज्जत्तय अपज्जत्तय भेदा भाणियव्वा॥ अविसेसिए जोइसिए, विसेसिए-चंदे, सूरे, गह, णक्खत्ते, तारारूवे. एतेसिंपि अविसेसिए, विसेसिए पज्जत्तय अपज्जत्तय भेया भाणियव्वा ॥ अविसेसिए वेमाणिए, विसेसिए कप्पोवन्नेय, कप्पातीतए ॥ अविसेसिए कप्पोवन्ने, विसेसिए-सोहम्म,, ईसाणए, सणतकुमार, माहिंद, बंभलोय, लंतए, महासुक्कए, सहस्सार, आणय, पाणय, आरणए, अचुयए ॥ एतेसिं अविसेसिए, विसेसिए, पज्जत्तय अपज्जत्तय भेदा भाणियव्वा ॥ अविसेसिए कप्पातीतए, विसेसिए गेवेज्जए, अनुत्तरोय॥

**अर्थ** वायुकुमार १० स्तनितकुमार इन दशों का अविशेषक व विशेषक में पर्याप्त व अपर्याप्त के भेद कहना. अविशेषक वाणव्यंतर और विशेषक १ पिशाच, २ भूत, ३ यक्ष, ४ राक्षस, ५ किन्नर, ६ किंपुरुष, ७ महोरग, ८ गंधर्व. इन आठों का अविशेषिक व विशेषिक में पर्याप्त व अपर्याप्त के भेद कहना. अविशेषिक ज्योतिषी और विशेषिक चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र व तारा. इन के अविशेषक व विशेषक में पर्याप्त व अपर्याप्त के भेद कहना. अविशेषक वैमानिक और विशेषक में कल्पोत्पन्न व कल्पातीत. अविशेषक में कल्पोत्पन्न और विशेषक में १ सौधर्म, २ ईशान, ३ सनत्कुमार, ४ माहेन्द्र, ५ ब्रह्मलोक,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

अविसेसिए गेवेज्जओ, विसेसए-हेट्ठिम गेविज्जएहिं, मज्झिम गेविज्जएहिं, उवरिम गेविज्ज[illegible]हिं ॥ अविसेसिए हेट्ठिम गेविज्जए, विसेसिए-हेट्ठिम हेट्ठिम गेविज्जए, हेट्ठिम मज्झिम गेविज्जए. हेट्ठिम उवरिम गेविज्जए ॥ अविसेसिए-मज्झिम गेविज्ज, विसेसिए-मज्झिम हेट्ठिम गेविज्जए, मज्झिम मज्झिम गेविज्जए, मज्झिम उवरिम गेविज्जए ॥ अविसेसिए-उवरिम गेविज्जए. विसेसिए-उवरिम हेट्ठिम गेविज्जए, उवरिम मज्झिम गेविज्जए. उवरिम उवरिम गेविज्जए ॥ एतेसिं वि सव्वेसिं अविसेसिए विसेसिए पज्जत्तए अपज्जत्तए भेदा भाणियव्वा॥अविसेसिए अणुत्तरोववाइए, विसेसिए-विजयए,

अर्थ

६ लंतक, ७ महाशुक्र, ८ सहस्रार, ९ आणत, १० प्राणत, ११ आरण और १२ अच्युत. इन के भी अविशेषक व विशेषक में पर्याप्त व अपर्याप्त के भेद कहना. अविशेषक कल्पातीत और विशेषक में ग्रैवेयक व अनुत्तर विमान. अविशेषक में ग्रैवेयक और विशेषक में नीचे की, बीच की व ऊपर की. अविशेषक में नीचे की और विशेषक में नीचे नीचे की. नीचे की बीच की और नीचे की ऊपर की. अविशेषक बीच की. विशेषक बीच की नीचे की. बीच की बीच की, और बीच की ऊपर की. अविशेषक ऊपर की ग्रैवेयक, विशेषक ऊपर की नीचे की, ऊपर की बीच की व ऊपर की ऊपर की. इन सब के पर्याप्त व अपर्याप्त भेद कहना. अविशेषक अनुत्तरोपपातिक और विशेषक. १ विजय, २ वैजयंत

For Private and Personal Use Only

सूत्र

वेजयंतते, जयंतते, अपराजितए, सव्वट्ठसिद्धएय ॥ एतेसिंपि सव्वेसिं अविसेसिए विसेसिए पज्जत्तगा अपज्जत्तगा सेसा भाणियव्वा ॥ १०१ ॥ अविसेसिए अजीवदव्वे विसेसिए—धम्मात्थिकाए, अधम्मात्थिकाए, आगासात्थिकाए, पोग्गलात्थिकाए, अद्धासमए ॥ १०२ ॥ अविसेसिए पोग्गलात्थिकाए, विसेसिए परमाणु पोग्गले, दुपदेसिए तिपदेसए जाव अणंत पदेसियए, सेतं दुनामे ॥ १०३ ॥ से किंतं तिनामे ? तिनामे तिविहे पण्णत्ते तंजहा—दव्वणामे, गुणणामे, पज्जवणामे ॥ १०४ ॥ से किं तं

सूत्र

३ जयंत, ४ अपराजित व ५ सर्वार्थ सिद्ध इन के भी अविशेषक व विशेषक में पर्याप्त अपर्याप्त कहना ॥ १०१ ॥ अविशेषक अजीव द्रव्य विशेषक धर्मास्ति काया, अधर्मास्ति काया, आकाशास्ति काया, पुद्गलास्ति काया व अद्धासमय ( काल ) ॥ १०२ ॥ अविशेषक पुद्गलास्ति काया विशेषक—परमाणु पुद्गल, द्विप्रदेशिक स्कंध, तीन प्रदेशिक यावत् अनंत प्रदेशिक स्कंध यह द्विनाम का कथन हुवा ॥१०३॥ अहो भगवन् ! तीन नाम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! तीन नाम तीन प्रकार से वर्णित किये गये हैं तद्यथा—द्रव्य नाम-गुणपर्याय धारन करनेवाले को द्रव्य कहते हैं, गुणनाम-द्रव्य व पर्याय की पहिचान करनेवाले को गुण कहते हैं, और पर्याय नाम-जीव द्रव्य में ज्ञानादि गुणों का व अजीव द्रव्य में वर्णादि गुणों का परिवर्तन होवे उसे पर्याय कहते हैं ॥ १०४ ॥ अहो भगवन् ! द्रव्य नाम किसे कहते हैं ?

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

दव्वनामे ? दव्वनामे ! छव्विहे पण्णत्ते तंजहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए, पुग्गलत्थिकाए, अद्धासमएय से तं दव्वनामे ॥ १०५ ॥ से किं तं गुणनामे ? गुणनामे ! पंचविहे पण्णत्ते तंजहा—वण्णनामे, गंधनामे, रसनामे, फासनामे, संठाणणामे, ॥ से किं तं वण्णनामे ? वण्णनामे पंचविहे पण्णत्ते तंजहा— कालवण्णनामे, णीलवण्णनामे, लोहियवण्णनामे, हालिद्द, वण्णनामे, सुकिल्लवण्णनामे, से तं वण्णनामे ॥ से किं तं गंधनामे ? गंधनामे दुविहे पण्णत्ते तंजहा—सुरभिगंधनामे, दुरभिगंधनामेय, से तं गंधनामे ॥ से किं

अर्थ

अहो शिष्य ! द्रव्य नाम के छ भेद कहे हैं तद्यथा—धर्मास्तिकाया अधर्मास्तिकाया, आकाशास्तिकाया, जीवास्तिकाया. पुद्गलास्तिकाया व अद्धासमय. यह द्रव्य नाम हुवा ॥ १०५ ॥ अहो भगवन् ! गुण-नाम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! गुणनाम के पांच भेद कहे हैं तद्यथा—वर्ण नाम, गंध नाम, रस नाम, स्पर्श नाम व संस्थान नाम. इस में से वर्ण नाम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! वर्ण नाम के पांच भेद कहे हैं तद्यथा—१ कृष्ण वर्ण नाम, २ नील वर्ण नाम, ३ रक्त वर्ण नाम, ४ पीत वर्ण नाम और ५ शुक्ल वर्ण नाम. यह वर्ण नाम का कथन हुवा. अहो भगवन् ! गंध नाम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! गंध नाम के दो भेद कहे हैं. तद्यथा—सुरभिगंध नाम व दुरभिगंध नाम. रस नाम किसे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सूत्र

तं रसनामे ? रसनामे पंचविहे पण्णत्ते तंजहा–तित्तरसनामे, कडुयरसनामे, कसायरसनामे, अंबिलरसनामे, महुररसनामे से तं रसनामे ॥ से किं तं फासनामे? फासनामे ! अट्ठविहे पण्णत्ते–कक्खडफासणामे, मउयफासणामे, गुरुयफासनामे, लहुयफासनामे सीतफासनामे, उसिणफासनामे, णिद्धफासनामे, लुक्खफासनामे, से तं फासनामे ॥ से किं तं संट्ठाणणामे ? संट्ठाणणामे ! पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा–परिमंडल संट्ठाणणामे, वट्ट संट्ठाणणामे, तस संठ्ठणणामे, चउरंस संट्ठाणणामे, आयत संट्ठाणणामे से तं संट्ठाणणामे, से तं गुणणामे ॥ १०६ ॥ से किं

अर्थ

कहते हैं ?? रस नाम के पांच भेद कहे हैं. तिक्त रस नाम, कटुक रस नाम, कषायला रस नाम, अम्बट रस नाम व मधुर रस नाम. यह रस नाम का कथन हुवा. अब स्पर्श नाम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! स्पर्श नाम के आठ भेद कहे हैं तद्यथा–कर्कश स्पर्श नाम, मृदु स्पर्श नाम, गुरु स्पर्श नाम, लघु स्पर्श नाम, शीत स्पर्श नाम, ऊष्ण स्पर्श नाम, स्निग्ध स्पर्श नाम व रुक्ष स्पर्श नाम. यह स्पर्श नाम हुवा. अब संस्थान नाम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! संस्थान नाम के पांच भेद कहे हैं. तद्यथा—१ परिमंडल संस्थान नाम, २ वट्ट संस्थान नाम, ३ त्र्यंस संस्थान नाम, चउरंस संस्थान नाम, और आयतन संस्थान नाम. यह गुण नाम हुवा ॥ १०६ ॥ अहो भगवन् ! पर्यव नाम




For Private and Personal Use Only

सूत्र

तं पज्जवणामे ? पज्जवणामे ! अणेगविहे पण्णत्ते तंजहा—एगगुणकालए, दुगुणकालए, तिगुणकालए, जाव दसगुणकालए, संखेज्जगुणकालए, असंखेज्जगुणकालए, अणंत गुणकालए ॥ एवं—नील—लोहिय—हालिद्द—सुक्किलावि भाणियव्वा॥ एगगुण सुरभिगंधे, दुगुण सुरभिगंधे, जाव अणंतगुण सुरभिगंधे, एवं दुरभिगंधोवि भाणियव्वा, ॥ एगगुणतित्तो जाव अणंतगुणतित्ते, एवं कडुय-कसाय-अंबिल-महुरावि-भाणियव्वा ॥ एगगुण कक्खडे जाव अणंतगुण कक्खडे, एवं-मउय-गुरुय-लहु-सीतं-उसिण-णिद्ध-लुक्खावि भाणियव्वा, से तं पज्जवनामे ॥ १०७ ॥ तं पुण णामं तिविहा

अर्थ

किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! पर्यव नाम के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा-एक गुण काला, दो गुण काला, तीन गुण काला, यावत् दश गुण काला, संख्यात गुण काला, असंख्यात गुण काला व अणंत गुण काला, ऐसे ही नील, रक्त, पीत, व शुक्ल वर्ण का कहना. वर्ण का कहा वैसे ही सुरभिगंध व दुरभिगंध का कहना. एक गुण तिक्त यावत् अनंत गुण तिक्त, ऐसे ही कटुक, कषाय, व अंबिल व मधुर का कहना. ऐसे ही एक गुण कर्कश, यावत् अनंत गुण कर्कश, यों मृदु, गुरु, लघु, शीत, ऊष्ण, स्निग्ध व रुक्ष का कहना. यह पर्यव नाम हुवा ॥ १०७ ॥ और भी नाम के तीन भेद कहे हैं तद्यथा—स्त्री, पुरुष,

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

पण्णत्ता—इत्थी, पुरिसं, णपुंसगं चेव ॥ एएसिं तिण्हंपिए अंतं परूवणं वोच्छं—तत्थ पुरिसस्स अंता—आई—ऊ—उइवंति, चत्तारि ते इत्थियाओ हवंति, [illegible]ारपरिहीणा आंतयं. इंतियं, उंतियं अंताओ णपुंसगस्स बोधव्वा । एतेसिं तिण्हंपिय वोच्छाम निदरिसणएत्तो—आगारंतो राया; इगारंतो—गिरीय सिहरीय, ऊकारंतो—विण्हू, उंकारंतो दुमोउ अंताओ पुरिसाणं, आगारंतो—माला, इगारंतो—सिरीय लच्छीय, ऊगारंतो जंबू, वहूय अंताऊइत्थीणं ॥ अकारंतं धन्नं, इंकारंतं णपुंसगं अच्छि, उकारंतं पीलू महुंच, अंता णपुंसगाणं से तं तिणामे ॥१०८॥ से किं तं चउणामे

अर्थ

व नपुंसक. इन तीनों के अंत्याक्षर की प्ररूपणा कहते हैं. पुरुष लिंगवाले नाम के अंत में आकार, इकार, ऊकार व उकार होते हैं, स्त्री लिंगी नाम के अंत में आकार, ईकार व ऊकार होते हैं, और नपुंसकलिंगी नाम के अंत में आकार. इकार व उकार होते हैं. इस में से पुरुष लिंग का उदाहरण-आकारांत में राया, इकारान्त में गिरि. शिखरि, ऊकारांत में विराहू और उकारान्त में दुमोउ. यह पुरुष लिंग का कथन हुवा. स्त्री लिंग में आकारांत में माला, इकारांत में श्री, लक्ष्मी, ऊकारांत में जम्बू, वहू यह स्त्री लिंग के अंत्याक्षर का कथन हुवा. अब नपुंसक लिंग. अकारांत धान्य, इकारांत अच्छि और उकारांत पीलु, महु यह नपुंसक लिंग के अंत का कथन हुवा. यह तीन नाम का कथन हुवा ॥ १०८ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

? चउणामे! चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा-आगमेण, लोवेण पगइ, विगारोणं॥ से किं तं आगमेणं ? आगमेणं. पयामानि, पयांसि, कूडानि, से तं आगमेणं ॥ से किं तं लोवेणं ? लोवेणं-तेअत, तेऽत्र, पटोअत्र, पटोऽत, घटोअत, घटोऽत्र, से तं लोवेणं॥ से किं तं पयइएणं पेयाईए-अग्निएते, पटूइमौ; शालाएते, मालेइमे, से तं पगतिए॥

अर्थ

अहो भगवन् ! चार नाम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! चार नाम के चार भेद कहे हैं तद्यथा—१ आगम से पद बनता है, २ लोप से अर्थात् वर्णों के लोप से पद बनता है, प्रकृतिभाव से पद बनता है सो और अक्षरों के विकार से अर्थात् संधी होने से पद बनता है सो. अहो भगवन् ! आगम से पद किस प्रकार होता है ? अहो शिष्य ! विभक्त्यंत पद होता है उस में वर्ण का आगम होता है. जैसे पद्म शब्द का प्रथम विभक्ति का अनेक वचन का रूप पद्मानि हुवा. पयस शब्द का पयांसि रूप बना, २ और कूट शब्द का कूटानि पद बना. यह आगम से पद बनने का कहा. अहो भगवन् ! लोप किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! वर्णों के लोप होने पद इस प्रकार होता है जैसे कि-ते और अत्र इनों दोनों पद को मीलाने से तेऽत्र हुवा क्यों कि संस्कृत प्राकृत में ऐसा नियम है कि दो स्वर एक साथ आने से उस की संधी होती है. इस से यहां पर संधि में अकार का लोप हो गया. वैसे ही पटो+अत्र मीलने से पटोत्र हुवा. घटो अत्र मीलने से घटोऽत्र हुवा. यह लोप का [illegible]. अहो भगवन् !





For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सूत्र

से किं तं विगारेणं ? विगारेणं दंडस्य अग्रं-दंडाग्र सआगता,-सागता, दधिइदं--दधीदं, नदीईह-नदीह, मधु उदकं-मधूदकं, बधूऊहते-बधूहते, से तं विगारेणं, से तं चउनामे ॥ १०९ ॥ से किं तं पंचनामे ? पंचनामे । पंचविहे पण्णत्ते तंजहा-नामिकं, नैपातिकं, आख्यातिकं, उवसर्गिकं, मिश्रंच, । अश्व इति नामिकं, 

अर्थ

प्रकृति भाव किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! प्रकृति भाव उसे कहते हैं कि संधि कार्य के प्राप्त होने पर भी संधि न होवे. उसे निषेध संधि भी कहते हैं. इस के भी उदाहरन कहते हैं जैसे अग्नीएतौ यहां पर दोनों स्वर का संधि कार्य होना था परंतु प्रथम द्विवचन के रूप के आगे स्वर आने से संधि नहीं होसकती है इसलिये संधि नहीं की गई है. वैसे ही पटू+इमौ=पटूइमौ. शाले+एते=शालेएते. माले+इमे=माले-इमे. यह प्रकृतिभाव हुवा. अहो भगवन् ! विकार होने से पद कैसे बनते हैं ? अहो शिष्य ! विकार से जो पद बनते हैं उस के उदाहरण-दंडस्य+अग्रं=दंडाग्र. यहां पर दोनों स्वर की संधि होगई. वैसे ही सा+आगता=सागता. दधि+इदं=दधीदं. नदी+इह=नदीह. मधु+उदकं=मधूदकं वधू+उहते =वधूहते. यह विकार भाव हुवा. यह चार नाम का कथन हुवा ॥ १०९ ॥ अहो भगवन् ! पांच नाम कितने प्रकार से वर्णन किया है ? अहो शिष्य ! पांच नाम पांच प्रकार से वर्णन किया गया है. तद्यथा-जो नाम नाममाला आदि कोषों में वर्णन किये गये हैं उन को नामिक कहते हैं तथा नाम शब्द

For Private and Personal Use Only

प्रकृति का नाम भी है, क्यों कि प्रकृति से पर ही प्रत्ययो की संयोजना की जाती है. सो जो प्रकृति में आकृति रहे उसे नामिक कहते हैं. द्वितीय नैपातिक जो निपात में वर्णन किये गये हैं उसे नैपातिक कहते हैं. तृतीय आख्यातिक जो अख्यात में शब्दों का विवर्ण किया गया है उसे आख्यातिक कहते हैं, जो नाम उपसर्गों में वर्णन किया गया है उसे औपसर्गिक कहते हैं और जो उपसर्ग और धातु मीलकर बनता है उसे मीश्र कहते हैं. अब इन पांचों के उदाहरण कहते हैं—प्रथम नामिक का उदतुहरण अश्व का देते हैं. अश्व इस प्रकार से एक नाम है इस को प्रकृति रूप स्थापन करके प्रत्ययों की संयोजना करनी चाहिये. जैसे कि अश्वःअश्वौ अश्वाः, अश्वं, अश्वौ अश्वान् यों सातों विभक्तियों के रूप चाहिये. इसी प्रकार पुरुष वृक्ष घट घटादि सर्व नाम प्रकृति रूप होने से उसी को प्रत्यय लगाने से पद बन जाते ह. यह नामिक का कथन हुवा. खिश्चित नैपातिक खलु आदि निपात हैं. इन के अंतर्गत ही अव्यय प्रकरण है क्यों कि जो शब्द तीनों लिंगों सातों विभक्तियों और सर्व बचनों में एक समान रहे उसे शब्द की अव्यय संज्ञा होती है और निपात उस को कहते हैं कि जिस का सूत्रोंद्वारा कुच्छ और रूप सिद्ध होता हो परंतु निपात करके उस का वही रूप रखा जाय वही नैपातिक होता है. अब आख्यातिक पद का कहते हैं. जो पद क्रिया का बोधक है उस को आख्यातिक कहते हैं. जैसे कि धावति यह क्रिया का पद होने से आख्यातिक है. यह भगने की क्रिया बताता है. इन के धावति, धावतः धावंति अन्य पुरुष, धावसि, धावथः धावथ, मध्य पुरुष; और धावामि, धावावः धावामः यह

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir





सूत्र खल्विति नैपातिकं, धावातीत्याख्यातिकं, परित्यौपसर्गिकं संयत इति मिश्रं, से तं पंचनामे ॥ ११० ॥ से किं तं छनामे ? छनामे ! छव्विहे पण्णत्ते तंजहा—उदइए, उवसमिए, खइए खउवसमिए, पारिणामिए, संन्निवाइए ॥ १११ ॥ से किं तं

अर्थ उत्तम पुरुष के रूप होते हैं. अब औपसर्गिक पद का विवर्ण करते हैं जैसे प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निः, निर्‌दुःदुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत, अभि, प्रति, परि, उप यह उपसर्ग हैं. और नाना प्रकार के अर्थों से प्रयुक्त होते हैं सो परि आदि उपसर्गों से युक्त जो पद कहे गये हैं वे औपसर्गिक पद हैं. उपसर्ग के संबंध होने में धातुओं के अर्थ का परिवर्तन हो जाता है यथा—आहार, विहार, निहार, संहार, प्रहार इत्यादि प्रयोगों में अर्थ का परिवर्तन होता है इस का विशेष खुलासा व्याकरण से जानना. अब मीश्र पद का कथन कहते हैं—मीश्र उसे कहते हैं, कि जो दो तीन प्रकरणों से मिल कर शब्द बनता है जैसे-सम् उपसर्ग है यमु धातु है और कृदंत प्रत्यय है. सो तीनों के मीलने से संयत शब्द बन गया है. इस लिये इस को मीश्र नाम कहते हैं. यह पांच नाम का स्वरूप पूर्ण हो गया. और इस को पांच नाम कहते हैं ॥ ११० ॥ अहो भगवन् ! छ नाम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! छ प्रकार से कहे हैं तद्यथा—१ उदयिक, २ औपशमिक, ३ क्षायिक, ४ क्षयोपशमिक ५ पारिणामिक और ६ सन्निपातिक ॥ १११ ॥ अहो भगवन् ! उदयिक किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! उदयिक के

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

उदइए ? उदइए दुविहे पण्णत्ते तंजहा—उदइएय, उदयनिप्फन्नेय सेकिं तं उदइए? उदइए ! अट्ठण्हं कम्मपगडीणं उदएणं से तं उदइए ॥ से किं तं उदय निप्फन्ने ? उदयनिप्फण्णे दुविहे पण्णत्ते तंजहा—जीवोदय निप्फन्नेय, अजीवोदय निप्फन्नेय ॥ से किं तं जीवोदय निप्फन्नेय ? जीवोदय निप्फन्ने अणेगविहे पण्णत्ते तंजहा—नेरइए, तिरिक्खजोणिए, मणुस्से, देवे, पुढवीकाइए जाव तसकाइए कोहकसाइए जाव लोहकसाइए, इत्थीवेइए पुरिसवेदए णपुंसगवेदए, कण्हलेस्सए जाव

अर्थ

दो भेद—१ उदयिक और २ उदय निष्पन्न. अहो भगवन् ! उदय किसे कहते हैं ? अहो शिष्य! आठ कर्म प्रकृति के उदय को उदय कहते हैं. अहो भगवन् ! उदय निष्पन्न किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! उदय निष्पन्न के दो भेद कहे हैं तद्यथा—जीवोदय निष्पन्न व अजीवोदय निष्पन्न. अहो भगवन् ! जीवोदय निष्पन्न किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! जीवोदय निष्पन्न के अनेक भेद कहे हैं. तद्यथा—नैरयिक, तिर्यंच, मनुष्य, देव, पृथ्वी काया. यावत् त्रस काया. क्रोध कषाय यावत् लोभ कषाय, स्त्री वेद पुरुष वेद, नपुंसक वेद कृष्ण लेशी यावत् शुक्ल लेशी, मिथ्यादृष्टि, अविरति, असंज्ञी, अज्ञानी, आहारी, छद्मस्थ, संयोगी, संसारस्थ, असिद्ध और केवली. यह जीवोदय निष्पन्न हुवा. अहो भगवन् ! अजीवोदय निष्पन्न किसे कहते हैं ? अजीवोदय निष्पन्न के चउदह भेद कहे हैं तद्यथा—१ उदारिक

For Private and Personal Use Only

सूत्र

सुक्कलेसे, मिच्छादिट्ठी, अविरए, असन्नी अण्णाणी, आहारी, छउमत्थे, सयोगी, संसारत्थे, असिद्धे, अकेवली, से तं जीवोदय निप्फन्ने ॥ से किं तं अजीवोदय निप्फन्ने? अजीवोदय निप्फन्ने चउदसविहे पण्णत्ते, तंजहा—ओरालिय सरीरं, ओरालिय सरीर पओग परिणामियं वा दव्वं, वेउव्वियं वा सरीरं, वेउव्विय सरीर पओग परिणामियं वा दव्वं, एवं आहारग सरीरं, तेअगसरीरं, कम्म सरीरंच भाणियव्वं, पओग परिणामिए वण्णे-गंधे-रसे-फासे, से तं अजीवोदय निप्फन्ने ॥ से तं उदयनिप्फन्ने ॥

अर्थ

शरीर २ उदारिक शरीर के प्रयोग में आकर परिणमे पुद्गल, ३ वैक्रेय शरीर, ४ वैक्रेय शरीर में आकर परिणमे पुद्गल, ५ आहारक शरीर, ६ आहारक शरीर में आकर परिणमे पुद्गल, ७ तेजस शरीर ८ तेजस शरीर में आकर परिणमे पुद्गल, ९ कार्माण शरीर १० कार्माण शरीर में आकर परिणमे पुद्गल, ११ वर्ण, १२ गंध, १३ रस और १४ स्पर्श. यह अजीव उदय निष्पन्न हुवा. यह उदय निष्पन्न हुवा. और उदय भाव का कथन हुवा. इस जीवोदय निष्पन्न में ऐसा कहा कि जहां तक चउदहवे गुण स्थान तक जीव है वहां तक कर्मोदय होता है और अजीवोदय निष्पन्न में मुख्यता शरीर के पुद्गलों की होती है. कर्म पुद्गलों का विपाक शरीर पर देखा जाता है. यह उदय नाम हुवा ॥११२॥ अहो भगवन् !

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

से तं उदइए नामे ॥ ११२ ॥ से किं तं उवसमिए ? उवसमिए दुविहे पण्णत्ते तंजहा—उवसमेय, उवसमनिप्फन्नेय ॥ से किं तं उवसमे? उवसमे-मोहणिज्ज कम्मस्स उवसमेणं. से तं उवसमे ॥ से किं तं उवसम निप्फन्ने ? उवसम निप्फन्ने अणेग विहे पण्णत्ते तंजहा—उवसंतकोहे. जाव उवसंत लोहे. उवसंतपेज्जे, उवसंतदोसे, उवसंत दंसण मोहणिज्जं. उवसंत चरित्त मोहणिज्जं, उवसमिया सम्मत्तं लद्धीए, उवसमिया चरित्त लद्धिए, उवसंत कसाए, छउमत्थ वीतरागो ॥ से तं उवसम निप्फन्नं ॥ से तं उवसमिए नामे ॥ ११३ ॥ से किं तं खइए ? खइए दुविहे

अर्थ

उपशम किसे कहते हैं ! अहो शिष्य ! उपशम भाव के दो भेद कहे हैं तद्यथा—उपशम और उपशम निष्पन्न. अहो भगवन् ! उपशम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! मोहनीय कर्म का उपशम होने से उपशम होवे अहो भगवन् ! उपशम निष्पन्न किसे कहते हैं ! अहो शिष्य ! उपशम निष्पन्न के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा—१ क्रोध उपशमावे यावत् ४ लोभ उपशमावे. ५ राग उपशमावे. ६ द्वेष उपशमावे, ७ दर्शन मोहनीय कर्म उपशमावे. ८ चारित्र मोहनीय उपशमावे, ९ उपशम सम्यक्त्व लब्धि. १० उपशम चारित्र लब्धि, ११ उपशम कषाय, १२ छद्मस्थपना और १३ वीतरागपना. यह उपशम निष्पन्न का कथन हुवा. यह उपशम नाम हुवा ॥ ११३ ॥ अहो भगवन् ! क्षायिक किसे कहते हैं ! अहो शिष्य !

सूत्र

पण्णत्ते तंजहा—खइएय, खयनिप्फन्नेय ॥ से किं तं खइए ? खइए अट्ठण्हं कम्म पगडीणं खएणं से तं खइए ॥ से किं तं खयनिप्फन्ने ? खयनिप्फन्ने अणेगविहे पण्णत्ते तंजहा—१ उपण्ण णाणदंसणधरे अरहाजिणे केवली.-खीण आभिणिबोहिय णाणावरणे, खीण सुयणाणावरणे, खीणउहिणाणावरणे, खीण मणपज्जव णाणावरणे, खीण केवल णाणावरणे, अणावरणे, निरावरणे, खीणावरणे, णाणावरणिज्ज कम्म विप्पमुक्के २ केवलदंसी सव्वदंसी, खीणनिद्दे, खीणनिद्दानिद्दे, खीणप्पयले, खीण-प्पयलप्पयले, खीणथीणिगद्धे, खीणचक्खुदंसणावरणे, खीणअचक्खुदंसणावरणे खीणउहीदंसणावरणे, खीणकेवलदंसणावरणे, अणावरणे, निरावरणे खीणावरणे

अर्थ

क्षायिक के दो भेद. तद्यथा—क्षायिक और क्षय निष्पन्न आठों प्रकृतियों का क्षय होवे सो क्षायिक है और क्षय निष्पन्न के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा—१ उत्पन्न केवल ज्ञान केवल दर्शन के धारक, इन्द्रादिक के पूज्यनीय, राग द्वेष जीतनेवाले केवली भगवान कि जिन को मति ज्ञानावरणीय, श्रुत ज्ञानावरणीय, अवधि ज्ञानावरणीय, मनः पर्यव ज्ञानावरणीय व केवल ज्ञानावणीय, क्षय हुवे हैं, जो आवरण रहित निरावरणीय व ज्ञानावरणीय कर्म से जो मुक्त हैं और २ केवल दर्शी, सर्व दर्शी, निद्रा, निद्रानिद्रा, प्रचला, प्रचलाप्रचला, सयनगृद्धि निद्रा, चक्षु दर्शनावरण, अचक्षु दर्शनावरण, अवधि दर्शनावरण, व

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

दंसणावरणिज्ज कम्मविप्पमुक्के, ३ खीणसायावेयणिज्जे, खीणअसायावेयणिज्जे, अवेयणे निवेयणे, खीणवेयणे, सुभासुभवेयणिज्ज विप्पमुक्के, ४ खीण कोहे जाव खीण लोहे, खीणपेज्जे, खीणदोसे, खीणदंसण मोहणिज्जे, खीणचारित्त मोहणिज्जे, अमोहे णिमोहे खीणमोहे मोहणिज्ज कम्म विप्पमुक्के, ५ खीणनेरइय आउए, खीण तिरिक्ख जोणियाउए, खीणमणुस्साउए, खीणदेवाउए, अणाउए निराउए खीणाउए आउकम्म विप्पमुक्के, ६ गतिजाति सरीर अंगोवंग बंधण संठाण संघयण अणेग बोंदीबंध संघायविप्पमुक्के, खीणसुभनामे खीण असुभनामे अणामे, निण्णामे खीणनामे, सुभासुभणामकम्म विप्पमुक्के, ७ खीण उच्चागोए खीणणीयागोए, अगोए निगोए

अर्थ

केवल दर्शनावरण के क्षय करनेवाले, आवरण रहित निरावरणीय व दर्शनावरणीय से रहित होते हैं— साता वेदनीय, असाता वेदनीय के क्षय करनेवाले, वेदना रहित निर्वेदनीय व शुभाशुभ वेदनीय कर्म क्षय करनेवाले होते हैं ४ क्षीण क्रोध यावत् लोभ, राग, व द्वेष वाले दर्शन मोहनीय व चारित्र मोहनीय के क्षय करनेवाले मोह रहित क्षीण मोह वाले व मोहनीय कर्म से रहित होते हैं ५ नरक तिर्यंच मनुष्य व देव का आयुष्य के क्षय करने वाले, आयुष्य रहित व आयुष्य कर्म के क्षय करनेवाले होते हैं ६ गति, जाति, शरीर, अंगोपांग, बंधन, संस्थान, संघयण, संघात से रहित शुभ नाम व अशुभ नाम क्षय करनेवाले, नाम कर्म रहित व शुभाशुभ नाम

For Private and Personal Use Only

सूत्र

खीणगोए, उच्च नीय गोत्तकम्म विप्पमुक्के, खीणदाणांतराए, खीणलाभांतराए, खीण भोगांतराए, खीणउवभोगांतराए, खीणवीरिय अंतराए, अणंतराए णिरंतराए, खीणंतराए, अंतराय कम्मविप्पमुक्के, सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिणिव्वुए अंतगडे, सव्व दुक्खप्पहीणे, से तं खयानिप्फन्ने, से तं खइयनामे ॥११४॥ से किं तं खउवसमिए ? खउवसमिए दुविहे पण्णत्ते तंजहा—खउवसमेय, खउवसम निप्फन्नेय ॥ से किं तं खउवसमे ? खउवसमे चउण्हं घाइकम्माणं खउवसमेणं तंजहा—णाणावरणिज्जस्स, दंसणावरणिज्जस्स, मोहणिज्जस्स, अंतराइयस्स खउवसमेणं, से तं खउवसमे ॥ से किं

अर्थ

कर्म रहित होते हैं. ७ उच्च गोत्र, नीच गोत्र, का क्षय करनेवाले, गोत्र रहित अगोत्रीय व ऊंच नीच गोत्र रहित होते हैं. ८ दानांतराय, लाभांतराय, भोगांतराय, उपभोगांतराय व वीर्यांतराय के क्षय करनेवाले, सिद्ध, बुद्ध, मुक्त अंतकृत व सब दुःख से रहित होते हैं. यह क्षायिक के भेद हुवे ॥ ११४ ॥ अहो भगवन् ! क्षयोपशमिक किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! क्षयोपशमिक के दो भेद कहे हैं तद्यथा—क्षयोपशम व क्षयोपशम निष्पन्न. इस में से क्षयोपशम ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय व अंतराय का क्षयोपशम से होता है इन चारों घनघातिक कर्म की प्रकृतियों में से जो २ विपाकोदय में आई हैं

सूत्र

तं खउवसम निष्फन्ने ? खउवसम निष्फन्ने अनेगविहे पण्णत्ते तंजहा–खउवसमिया अभिणिबोहिय णाणलद्धी, जाव खउवसमिया मणपज्जवणाणलद्धी खउवसमिया मति अण्णाणलद्धी, खउवसमिया सुय अण्णाणलद्धी, खउवसमिया विभंगणाणलद्धी खउवसमिया चक्खुदंसणलद्धी, खउवसमिया अचक्खुदंसणलद्धी, खउवसमिया ओहीदंसणलद्धी, एवं सम्मदंसणलद्धी, मिच्छा दंसणलद्धी, सम्मामिच्छादंसणलद्धी, खउवसमिया सामाइय चरित्तलद्धी, एवं छेदोवठाणलद्धी, परिहारविसुद्धिलद्धी, सुहुमसंपरायचारित्तलद्धी, एवं चरित्ताचरित्तलद्धी, खउवसमिया दाणलद्धी, एवं

अर्थ

उन का क्षय करे और जो २ प्रकृतियों प्रदेशोदय में रही है उन का उपशम करे उसे क्षयोपशम भाव कहते हैं. यह क्षयोपशम हुवा. अहो भगवन्! क्षयोपशम निष्पन्न किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! क्षयोपशम निष्पन्न के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा–१ मति ज्ञान लब्धि, २ श्रुत ज्ञान लब्धि, ३ अवधि ज्ञान लब्धि, ४ मनःपर्यव ज्ञान लब्धि, ५ मति अज्ञान लब्धि, ६ श्रुत अज्ञान लब्धि, ७ विभंग ज्ञान लब्धि, ८ चक्षु दर्शन लब्धि, ९ अचक्षु दर्शन लब्धि, १० अवधि दर्शन लब्धि, ११ सम्यक्त्व दर्शन लब्धि, १२ मिथ्या दर्शन लब्धि, १३ सम मिथ्या दर्शन लब्धि, १४ सामायिक चारित्र लब्धि, १५ छेदोपस्थापनीय चारित्र लब्धि, १६ परिहार विशुद्ध चारित्र लब्धि, १७ सूक्ष्म संपराय चारित्र

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

लाभ—भोग उवभोग—लद्धी, खउमसमिया वीरियलद्धी, एवं पंडिय वीरियलद्धी, बाल पंडिय विरीयलद्धी, खउवसमिया—सोइंदियलद्धी, जाव खउवसमिया फासिंदिय लद्धी. खउवसमिया आयारधरे, एवं सुयगडधरे, ठाणांगधरे, समवाय, एवं विवाह पण्णत्ती, णायधम्मकहा, उवासगदसा, अंतगडदसा, अणुत्तरोववाइ दसा, पण्हवागरणधरे, खउवसमिआ विवागसुयधरे, खउवसमिए दिट्ठीवायधरे. खउवसमिय णवपुव्वीए जाव खउवसमिए चऊदसपुव्वीए, खउवसमिए गणिवायए, से तं खउवसम निप्फन्ने. से तं खउवसमिए ॥११५॥ से किं तं परिणामिए भावे ? परिणामिए भावे

अर्थ

लब्धि, १८ दान लब्धि, १९ लाभ लब्धि, २० भोग लब्धि, २१ उपभोग लब्धि, २२ वीर्य लब्धि, २३ पंडित वीर्य लब्धि, २४ बाल वीर्य लब्धि, २५ बाल पंडित वीर्य लब्धि, २६ श्रोत्रेन्द्रिय लब्धि, यावत् स्पर्शेन्द्रिय लब्धि, ३१ आचारांग सूत्र धारक, ३२ सूत्र कृतांग सूत्र धारक, ३३ स्थानांग सूत्र धारक, ३४ समवायांग सूत्र धारक, ३५ विवाह प्रज्ञप्ति सूत्र धारक, ३६ ज्ञाता धर्म कथांग धारक, ३७ अंतकृत धारक. ३८ अनुत्तरोपपातिक सूत्र धारक, ३९ प्रश्न व्याकरण सूत्र धारक, ४० विपाक सूत्र धारक, ४१ दृष्टिवाद सूत्र धारक, ४२ नव पूर्व ज्ञान के धारक, यावत् चउदह पूर्व के ज्ञान के धारक, और आचार्य पद के धारक. यह क्षयोपशम निष्पन्न के भेद हुवे ॥ ११५ ॥ अहो भगवन् !

For Private and Personal Use Only

सूत्र

दुविहे पन्नत्ते तंजहा- साइय पारिणामिय, अणादिय पारिणामिय । से किं तं सादि पारिणामिय ! सादि पारिणामिय अणेगविहे पण्णत्ते तंजहा-जुन्नासुरा, जुण्णगुलो, जुण्णघयं, जुण्णतंदुला चेव, अझाया, अब्भरुक्खा, संझा, गंधव्वणगराय, उक्कावाया, दिसा दाहा, गज्जियं, विज्जु, निग्घाया, जुया, जक्खालित्ता, धूमिया, महिया, रउग्घाओ, चंदोवरागा, सूरोवरागा, चंदपरिवेसा, सूरपरिवेसा, पडिचंदा, पडिसूरा इंदधणु, उदगमच्छा, कविहसिया, अमोहा, वासा, वासधरा, गामा, णगरा, घारा, पव्वत्ता, पाताला, भवणा, निरया, पासाओ, रयणप्पहा, सक्करप्पहा, वालुयप्पहा,

अर्थ

पारिणामिक भाव किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! पारिणामिक भाव के दो भेद कहे हैं तद्यथा-सादि पारिणामिक व अनादि पारिणामिक. इस में से सादि पारिणामिक किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! सादि पारिणामिक के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा-पुरानी मदिरा, पुराना गड, पुराना घृत, पुराने तंदुल, बद्दल, वृक्षाकार बद्दल, संध्या रंग, गंधर्व नगर, उल्कापात, दिशादाह, गर्जारव, विद्युत्, काष्ट का शब्द, धूत, यक्ष चिन्ह, धूम्र, धूंधर, रजघात, चंद्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण, चंद्र कुंडल, सूर्य कुंडल प्रतिचंद्र, प्रतिसूर्य, इन्द्र धनुष्य, उदक मत्स्य, आकाश में कपि का हंसना अमोघ, भरतादि क्षेत्र, क्षेत्र की मर्यादा करने-वाला वर्षधर पर्वत, ग्राम, नगर, घर, पर्वत, पातालकलश, भवन, नरकावास, प्रासाद, रत्नप्रभा, शर्कर

सूत्र

पंकप्पहा, धूमप्पहा, तमा, तमतमा, सोहम्मे जाव अच्चुए, गेवज्जे, अणुत्तरे, इसि, प्पभाग, परमाणुपोग्गले, दुपदेसिए जाव अणंतपदेसिए से तं सादि पारिणामिए ॥ से किं तं अणादि परिणामिए ? अणादि पारिणामिए अणेगविहे पण्णत्ते तंजहा– धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए, पोग्गलत्थिकाए, अद्धा समए, लोए, अलोए, भवसिद्धियाए, अभवसिद्धियाए, से तं अणादि पारिणामिए ॥ से तं पारिणामिए ॥ ११६ ॥ से किं तं सन्निवाइ नामे ? सन्निवाइए नामे जण्णं एतेसिं चेव उदइए उवसमिए, खइए, खउवसमिए, पारिणामियाणं भावाणं

अर्थ

प्रभा, बालुप्रभा, पंक प्रभा, धूम्र प्रभा, तम प्रभा, तमतमप्रभा, सौधर्म देवलोक यावत् अच्युत देवलोक, ग्रैवेयक, अनुत्तर विमान, इषत्प्राग्भार पृथ्वी, परमाणु पुद्गल, द्विप्रदेशिक स्कंध यावत् अनंत प्रदेशिक स्कंध. यह सादि परिणामिक हैं, अहो भगवन् ! अनादि परिणामिक किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! अनादि परिणामिक के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा–१ धर्मास्तिकाया, २ अधर्मास्ति काया, ३ आकाशास्ति काया, अद्धा समय, लोक, अलोक, भव्यसिद्धिकजीव, अभव्यसिद्धिकजीव यह अनादि परिणामिक हुवा, यह परिणामिक भाव का कथन हुवा ॥ ११६ ॥ अहो भगवन् ! सन्निपातिक भाव किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! सन्निपातिक भाव में उदयिक, औपशमिक, क्षायिक, क्षयोपशमिक, इन

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



अनुवादक-बालब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलक ऋषिजी

मूल

दुगसंजोगेणं तिगसंजोगेणं चउक्कसंजोगेणं पंचगसंजोगेणं निप्फज्जइ सव्वे से सन्निवाइए नामे ॥ तत्थणं दस दुग संजोगा, दस तियसंजोगा, पंच चउकसंजोगा, एग पंच संजोएणं ॥ तत्थणं जे ते दस दुगसंयोगा तेणं इमे—१ अत्थिनामे उदइए उवसमनिप्फन्ने, २ अत्थिनामे उदइए खयनिप्फन्ने, ३ अत्थिनामे उदइए खउवसमनिप्फन्ने, ४ अत्थिनामे उदईए परिणामिय निप्फन्ने, ५ अत्थिनामे उवसमिए खयनिप्फन्ने, ६ अत्थिनामे उवसमिए खउवसम निप्फन्ने, ७ अत्थिनामे उवसमिए पारिणामिय निप्फन्ने, ८ अत्थिनामे खइए खउवसम निप्फन्ने, ९ अत्थिनामे खईए

अर्थ

पांचों भाव के द्विसंयोगी, तीन संयोगी, चार संयोगी व पांच संयोगी, यों भांगे होते हैं. इस में से द्विसंयोगी १० भांगे, तीन संयोगी, १० भांगे चार संयोगी ५ भांगे और पांच संयोगी एक भांगा यों २६ भांगे होते हैं. इस में से ९ वा भांगा सिद्ध में, १५ वा केवली में १६ वा चारों गति में, २१ वा उपशम श्रेणि में, २४ वा क्षपक श्रेणी में, २६ वा छद्मस्त साधु में, यों ६ भांगे पाते हैं. बाकी के २० भांगे शून्य हैं. अब द्विसंयोगी दस भांगे निम्नोक्त प्रकार से बताते हैं— १ उदय उपशम, २ उदय क्षायिक, ३ उदय क्षयोपशम, ४ उदय पारिणामिक, ५ उपशम क्षायिक, ६ उपशम क्षयोपशमिक, ७ उपशम पारिणामिक, ८ क्षायिक क्षयोपशमिक, ९ क्षायिक पारिणामिक और

प्रकाशक-राजाबहादुर लाला सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी

For Private and Personal Use Only

सूत्र

परिणामिय निप्फन्ने, १० अत्थिनामे खउवसमिए पारिणामिय निप्फन्ने ॥११७॥ १ कयरे से णामे उदइए उवसम निप्फन्ने ? उदइए त्तिमणुस्से उवसंता कसाया एसणं से नामे उदइए उवसम निप्फन्ने २ कयरे से नामे उदईए खइय निप्फन्ने ? उदइत्ति मणुस्से खइयं सम्मत्तं, एसणं से नामे उदईए खयानिप्फन्ने, ३ कयरे से नामे उदइए खउवसम निप्फन्ने ? उदइए त्तिमणुस्से खउवसमियाइं, इंदियाइं, एसणंसे नामे उदइए, खउवसम निप्फन्ने ४ कयरे से णामे



अर्थ

१० क्षयोपशम पारिणामिक. ॥ ११७ ॥ अब इन दशों का विवेचन करते हैं. अहो भगवन् ! जो उदयिक व उपशम निष्पन्न है वह कौनसा नाम है ? अहो शिष्य ! उदय भाव में मनुष्य गति है और उपशम भाव में उपशांत कषाय है. इसलिये यही नाम औदयिक उपशम निष्पन्न कहा जाता है. परंतु यह भंग दिग्र दर्शन मात्र ही है क्यों कि दर्शन मोहनीय कर्म की प्रकृति उपशम भाव में संभव हो सकती है परंतु पारिणामिक भाव इस में नहीं है इसलिये यह भंग केवल दिग दर्शन मात्र ही है इस प्रकार आगे भी जानना. प्रश्न—औदायिक और क्षायिक निष्पन्न नाम कौनसा है ? उत्तर—औदयिक भाव में मनुष्य गति है और क्षायिक निष्पन्न सम्यक्त्व है इसलिये इन से उत्पन्न हुए औदायिक

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

उदईए, पारिणामिय निप्फन्ने ? उदइए त्ति मणुस्से, परिणामिए जीवे, एसणं से नामे उदइए परिणामिय निप्फन्ने ५ कयरेसे नामे उवसमिए खयनिप्फन्ने ? उवसंताकसाया खइयं सम्मत्तं, एसणं सेनामे उवसमिए खयनिप्फन्ने, ६ कयरे सेनामे उवसमिए खउवसम निप्फन्ने ? उवसंता कसाया, खउवसमियाइं इंदियाइं, एसणं सेनामे उवसमिए, खउवसमनिप्फन्ने. ७ कयरे से नामे उवसमिए, पारिणामिए निप्फन्ने ? उवसंता कसाया, पारिणामिए जीवे, एसणं से नामे उवसमिए, पारिणामिय निप्फन्ने, ८

अर्थ

क्षायिक निष्पन्न नाम होता है. प्रश्न—औदयिक क्षयोपशम निष्पन्न नाम कौनसा है ? उत्तर—औदयिक नाम में मनुष्य गति है और क्षयोपशम भाव में इन्द्रिय है. सो यही औदयिक क्षयोपशमिक नाम हुवा. प्रश्न—औदयिक पारिणामिक निष्पन्न नाम कौनसा है ? उत्तर—औदयिक भाव में मनुष्य गति है और पारिणामिक में जीव है. इसलिये औदयिक और पारिणामिक निष्पन्न नाम कहा गया है. प्रश्न—औदयिक क्षय निष्पन्न नाम कौनसा है ? उत्तर—उपशम कषाय है और क्षायिक सम्यक्त्व है इन्हीं का नाम औपशमिक क्षय निष्पन्न है. प्रश्न—औपशमिक क्षयोपशम निष्पन्न नाम कौनसा है ? उत्तर—उपशम कषाय और क्षयोपशम इन्द्रिय इन्हीं का नाम औपशमिक क्षयोपशम निष्पन्न है, प्रश्न—औप-

For Private and Personal Use Only

सूत्र

कयरे से नामे खइए, खउवसमनिप्फन्ने ? खईयं सम्मत्तं, खउवसमियाइं इंदियाइं, एसणं से नामे खईए, खउवसमनिप्फन्ने. ९ कयरे से नामे खइए, पारिणामिय निप्फन्ने ? खइयं सम्मत्तं, पारिणामिए जीवे, एसणं से नामे खइए पारिणामिए निप्फन्ने, १० कयरे से नामे खओवसए, पारिणामिय निप्फन्ने ? खउवसमियइं इंदियाइं, पारिणामिए जीवे, एसणं से नामे खउवसमिए, पारिणामिय निप्फन्ने ॥११८॥ तत्थणं जे ते दस तिग संजोगा तेणं इमे-१अत्थि नामे उदइए उवसमिए

अर्थ

शमिक पारिणामिक नाम कौनसा है ? उत्तर—उपशम कषाय और पारिणामिक जीव है. इसलिये औपशमिक पारिणामिक रखा गया है. प्रश्न—क्षायिक क्षयोपशम निष्पन्न नाम कौनसा है ? उत्तर—क्षायिक सम्यक्त्व और क्षयोपशम इन्द्रिय है. इसलिये क्षायिक क्षयोपशमिक निष्पन्न नाम कहा गया है. प्रश्न—क्षायिक पारिणामिक निष्पन्न नाम कौनसा हैं ? उत्तर—क्षायिक सम्यक्त्व पारिणामिक जीव है. इसलिये क्षायिक पारिणामिक निष्पन्न नाम कहा गया है. प्रश्न—क्षयोपशमिक पारिणामिक निष्पन्न नाम कौनसा है ? उत्तर—क्षयोपशमिक इन्द्रिय और पारिणामिक जीव है, इसलिये क्षयोपशमिक पारिणामिक नाम कहा गया है. यह द्विसंयोगी दश भांगे का कथन हुवा. ॥ ११८ ॥ अब दश तीन संयोगी भांगे का

सूत्र

खयनिप्फन्ने, २ अत्थि नामे उदइए उवसमिए खउवसमनिप्फन्ने, ३ अत्थि नामे उदइए उवसमिए पारिणामिय निप्फन्ने. ४ अत्थि नामे उदइए खइए खउवसम-निप्फन्ने, ५ अत्थिनामे उदइए खइए पारिणामिय निप्फन्ने, ६ अत्थि नामे उदइए खउवसमिए, पारिणामिय निप्फन्ने, ७ अत्थि नामे उवसमिए खइए, खउवसम-निप्फन्ने, ८ अत्थि नामे उवसमिए खइए पारिणामिय निप्फन्ने, ९ अत्थिनामे उवसमिए खउवसमिए पारिणामिए निप्फन्ने, १० अत्थिनामे खइए खओवसमिए पारि-णामिए निप्फन्ने॥ ११९॥ कयरे से नामे उदइए उवसमिए खयनिप्फन्ने? उदइएत्ति

अर्थ

कथन करते हैं. १ औदयिक औपशमिक व क्षय निष्पन्न, २ औदयिक औपशमिक व क्षयोपशम निष्पन्न, ३ औदयिक औपशमिक व पारिणामिक निष्पन्न, ४ औदयिक क्षायिक व क्षयोपशम निष्पन्न ५ औदयिक क्षायिक व पारिणामिक निष्पन्न, ६ औदयिक क्षयोपशमिक व पारिणामिक निष्पन्न ७ औपशमिक, क्षायिक व क्षयोपशम निष्पन्न. ८ औपशमिक क्षायिक व पारिणामिक निष्पन्न. ९ औप-शमिक क्षयोपशमिक व पारिणामिक निष्पन्न और १० क्षायिक क्षयोपशमिक व पारिणामिक निष्पन्न. ॥ ११९ ॥ अब दश भांगे का खुलासा करते हैं. प्रश्न-औदयिक, औपशमिक व क्षयनिष्पन्न नाम

सूत्र

मणुस्से,उवसंता कसाया खइयं सम्मत्तं एसणं से नामे उदइए उवसमिए खयनिप्फन्ने. २ कयरे से नामे उदइए उवसमिए खउवसम निप्फन्ने ? उदइएत्ति मणुस्से, उवसंता कसाया, खउवसमियाइं इंदियाइं, एसणं से नामे उदइए उवसमिए खउवसम निप्फन्ने. ३ कयरे से नामे उदईए उवसमिए परिणामिय निप्फन्ने ? उदइए त्तिमणुस्से, उवसंता कसाया, परिणामिए जीवे, एसणं से नामे उदइए उवसमिए पारिणामिय निप्फन्ने ४ कयरे से नामे उदइए खइए खउवसमिय निप्फन्ने? उदइए त्तिमणुस्से, खइयं सम्मत्तं, खउवसमियाइं इंदियाइं, एसणं से नामे

अर्थ

कैसे होता है ? उत्तर-उदय में मनुष्य गति, उपशांत कषाय और क्षायिक सम्यक्त्व इसी से औदयिक औपशमिक व क्षय निष्पन्न नाम कहा गया है. २ प्रश्न—औदयिक औपशमिक व क्षयोपशम निष्पन्न नाम कैसे कहा है ? उत्तर—उदय में मनुष्य गति, उपशांत कषाय और क्षयोपशमिक इन्द्रिय हैं. इस से औदयिक औपशमिक व क्षयोपशमिक नाम रखा गया है, ३ औदयिक औपशमिक व पारिणामिक निष्पन्न नाम किसे कहते हैं ? उत्तर—उदय में मनुष्य गति, उपशांत कषाय और परिणाम में जीव है इसलिये औदयिक औपशमिक पारिणामिक नाम रखा गया है. ४ प्रश्न-औदयिक क्षायिक व क्षयोपशम निष्पन्न कैसे कहा गया है ? उत्तर—उदय मनुष्य गति क्षायिक सम्यक्त्व व क्षयोशम इंद्रिय हैं; इसी से

सूत्र

उदईए खईए खउवसम निप्फन्ने, ५ कयरे से नामे उदईए खइए पारिणामिय निप्फन्ने ? उदईएत्ति मणुस्से. खइयं सम्मत्तं, पारिणामिए जीवे, एसणं से नामे उदईए खईए पारिणामिय निप्फन्ने ६ कयरे से नामे उदईए, खउवसमिए पारिणामिय निप्फन्ने ? उदइएत्ति मणुस्से, खउवसमियाइं इंदियाइं, पारिणामिए जीवे एसणं से नामे उदइए, खउवसमिए पारिणामिय निप्फन्ने, ७ कयरे से नामे उवसमिए खइए खउवसम निप्फन्ने उवसंता कसाया, खइयं सम्मत्तं खउवसमियाइं इंदियाइं एसणं सेनामे उवसमिए खइए खउवसम निप्फन्ने. ८ कयरे सेनामे

अर्थ

इन का नाम औदयिक क्षायिक व क्षयोपशमिक रखा गया है, ५ प्रश्न—औदयिक क्षायिक व पारिणामिक निष्पन्न नाम कैसे होता है ? उत्तर—उदय मनुष्य गति, क्षायिक सम्यक्त्व और पारिणामिक जीव है. इस लिये औदयिक क्षायिक व पारिणामिक निष्पन्न नाम कहा गया है. ६ प्रश्न—औदयिक क्षयोपशमिक पारिणामिक निष्पन्न नाम कौनसा है ? उत्तर—उदय मनुष्य गति, क्षयोपशम इन्द्रिय और पारिणामिक जीव है; इस लिये उदय क्षयोपशम पारिणामिक निष्पन्न नाम कहा गया है. ७ प्रश्न—औपशमिक क्षायिक क्षयोपशम निष्पन्न नाम कैसे कहा? उत्तर—उपशांत कषाय, क्षायिक सम्यक्त्व और क्षयोपशम इन्द्रिय है, इस लिये औपशमिक क्षायिक क्षयोपशम निष्पन्न नाम कहा है. ८ प्रश्न—औपशमिक क्षायिक व पारि-

सूत्र

उवसमिए खईए पारिणामिय निप्फन्ने ? उवसंता कसाया खईए सम्मत्तं पारिणामिए जीवे, एसणं से नामे उवसमिए, खईए पारिणामिय निप्फन्ने, ९ कयरे से नामे उवसमिए खउवसमिए पारिणामिय निप्फन्ने ? उवसंता कसाया, खउवसमियाइं इंदियाइं, पारिणामिए जीवे. एसणं से नामे उवसमिए खउवसमिए पारिणामिय निप्फन्ने, १० कयरे से नामे खईए खउवसमिए पारिणामिय निप्फन्ने ? खइयं सम्मत्तं, खउवसमियाइं इंदियाइं, पारिणामिए जीवे. एसणं से नामे खईए खउवसम पारिणामिय निप्फन्ने ॥ १२० ॥ तत्थणं जे ते पंच चउक संजोगा

अर्थ

णामिक निष्पन्न नाम किसे कहते हैं ? उत्तर—उपशांत कषाय, क्षायिक सम्यक्त्व और पारिणामिक जीव हैं, इस लिये औपशमिक क्षायिक व पारिणामिक निष्पन्न नाम कहा. ९ प्रश्न—औपशमिक क्षयोपशमिक व पारिणामिक निष्पन्न नाम किसे कहते हैं ? उत्तर—उपशांत कषाय, क्षयोपशम इन्द्रिय व पारिणामिक जीव है. इस लिये औपशमिक क्षयोपशमिक पारिणामिक निष्पन्न नाम कहा गया है. प्रश्न-क्षायिक क्षयोपशमिक पारिणामिक निष्पन्न नाम किसे कहते हैं ? उत्तर-क्षायिक सम्यक्त्व, क्षयोपशम इन्द्रिय लब्धि, पारिणामिक जीव हैं, इस से क्षायिक क्षयोपशमिक व पारिणामिक निष्पन्न नाम कहा गया है ॥ १२० ॥ अब चार

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

तेणं इमे-१ अत्थि नामे उदईए. उवसमिए खईए, खउवसमिए निप्फन्ने, २ अत्थिनामे उदइए, उवसमिए, खईए, पारिणामिय निप्फन्ने. ३ अत्थि नामे उदईए उवसमिए खउवसमिए पारिणामिय निप्फन्ने. ४ अत्थि णामे उदईए खइए खउवसमिए पारिणामिय निप्फन्ने, ५ अत्थि नामे उवसमिए खईए खउवसमिए पारिणामिय निप्फन्ने॥१२१॥ १ कयरे से नामे उदईए उवसमिए खईए खउवसम निप्फन्ने? उदइएत्ति मणुस्से, उवसंता कसाया, खइयं सम्मत्तं, खउवसमियाइं इंदियाइं, एसणं से नामे उदईए उवसमिए खईए खउवसमनिप्फन्ने. २ कयरे नामे से उदईए उवसमिए खईए

अर्थ

संयोगी पांच भांगे बताते हैं—१ औदयिक औपशमिक क्षायिक व क्षयोपशमिक, २ औदयिक औपशमिक क्षायिक व पारिणामिक, ३ औदयिक औपशमिक क्षयोपशमिक व पारिणामिक, ४ औदयिक क्षायिक क्षयोपशमिक व पारिणामिक निष्पन्न. यों पांच भांगे हुवे ॥ १२१ ॥ प्रश्न—औदयिक औपशमिक क्षायिक व क्षयोपशमिक नाम निष्पन्न कैसे कहा? उत्तर—उदय में मनुष्य गति, उपशांत कषाय, क्षायिक सम्यक्त्व व क्षयोपशम इन्द्रिय लब्धि है इस से औदयिक औपशमिक क्षायिक व क्षयोपशम निष्पन्न नाम कहा. २ प्रश्न—औदयिक औपशमिक क्षायिक व पारिणामिक निष्पन्न नाम कैसे कहा? उत्तर—उदय में

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



मूल

पारिणामिए निप्फन्ने ? उदईएत्ति मणुस्से, उवसंता कसाया, खइयं सम्मत्तं, पारिणामिए जीवे. एसणं से नामे उदईए खउवसमिए, खईए पारिणामिय निप्फन्ने ३ कयरे से नामे उदईए उवसमिए खउवसमिए पारिणामिय निप्फन्ने? उदईएत्ति मणुस्से. उवसंता कसाया खउवसमियाइं इंदियाइं, पारिणामिए जीवे, एसणं से नामे उदईए उवसमिए खउवसमिए पारिणामिया निप्फन्ने. ४ कयरे से नामे उदईए खईए खउवसमिए पारिणामिय निप्फन्ने ? उदईएत्ति मणुस्से, खइयं सम्मत्तं, खउवसमियाइं इंदियाइं, पारिणामिए जीवे एसणं से नामे उदईए खईए खउवसमिए पारिणामिय निप्फन्ने ५ कयरे से

अर्थ

मनुष्य गति, उपशांत कषाय, क्षायिक सम्यक्त्व व पारिणामिक जीव है इस लिये औदयिक औपशमिक क्षायिक व पारिणामिक नाम कहा है. ३ प्रश्न—औदयिक औपशमिक क्षयोपशमिक व पारिणामिक नाम कैसे कहा ? उत्तर—उदय में मनुष्य गति, उपशांत कषाय, क्षयोपशम में इन्द्रिय लब्धि और पारिणामिक जीव हैं. इस लिये औदयिक औपशमिक क्षयोपशमिक व पारिणामिक निष्पन्न नाम है. ४ प्रश्न—औदयिक क्षायिक क्षयोपशमिक व पारिणामिक नाम कैसे कहा ? उत्तर—औदयिक में मनुष्य गति, क्षायिक सम्यक्त्व, क्षयोपशम इन्द्रिय लब्धि और पारिणामिक जीव है. इस लिये औदयिक औपशमिक क्षायिक

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

नामे उवसमिए खईए खउवसमे पारिणामिय निप्फन्ने ? उवसंता कसाया, खइयं सम्मत्तं खउवसमियाइं इंदियाइं, पारिणामिए जीवे एसणं से नामे उवसमिए खईए खउवसामिए पारिणामिय निप्फन्ने ॥ १२२ ॥ तत्थणं जे ते से एगे पंच संजोगं सेणं इमे—१ अत्थिणामे उदईए उवसमिए खईए खउवसमिए पारिणामिय निप्फन्ने ॥ कयरे से नामे उदईए उवसमिए खईए खउवसामिए पारिणामिए निप्फन्ने ? उदइएत्ति मणुस्से, उवसंता कसाया खइयं सम्मत्तं, खउवसमियाइं इंदियाइं; पारिणामिए जीवे, एसणं से नामे उदईए, उवसमिए खईए खउवसमिए पारिणामिए

अर्थ

व पारिणामिक निष्पन्न नाम कहा गया है. ५ प्रश्न—औपशमिक क्षायिक, क्षयोपशमिक व पारिणामिक निष्पन्न नाम कैसे कहा ? उत्तर–उपशांत कषाय, क्षायिक सम्यक्त्व, क्षयोपशम इन्द्रिय की लब्धि व पारिणामिक जीव है इस लिये औपशमिक क्षायिक क्षयोपशमिक व पारिणामिक नाम कहा ॥ १२२ ॥ अब पांच सयोगी भांगा एक बताते हैं—औदयिक औपशमिक क्षायिक क्षयोपशमिक व पारिणामिक निष्पन्न है. प्रश्न—ऐसा नाम क्यों कहा ? उत्तर–उदय में मनुष्य गति, उपशांत कषाय, क्षायिक सम्यक्त्व, क्षयोपशम इन्द्रिय लब्धि और पारिणामिक जीव है. इस लिये औदयिक औपशमिक क्षायिक क्षयो-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

निप्फन्ने, से तं सन्निवाइए ॥ से तं छ नामे ॥ १२३ ॥ से किं तं सत्त नामे ? सत्त नामे सत्त सरा पण्णत्ता तंजहा–१ ( गाहा ) सज्जे, २ रिसहे, ३ गंधारे, ४ मज्झिमे, ५ पंचमे सरे ॥ ६ धेवए चेव ७ निसाए सरा सत्त वियाहिया ॥ १ ॥ एएसिणं सत्तण्हं सराणं सत्त सरठाणा पण्णत्ता तंजहा–( गाहा ) सज्जंच अग्ग जीहाए, उरेण रिसहं सरं ॥ कंठोग्गएणं गंधारं, मज्झ जीहाए मज्झिमं ॥ २ ॥ नासाए पंचमंबूया, दंतोट्ठेणे य धेवतं॥भमुहक्खेवणेणसाए, सरट्ठाणा वियाहियाइ॥ ३ ॥

अर्थ

१ मिक व पारिणामिक निष्पन्न नाम कहा. यह सन्निपातिक भाव कहा. यह छ नाम का कथन हुवा. ॥ १२३ ॥ सात नाम का कथन कहते हैं–अहो भगवन् ! सप्त नाम कितने प्रकार से वर्णन किया गया है ? अहो शिष्य ! सात नाम के अंतर्गत सात स्वरों का वर्णन किया गया है जिन के नाम–१ षड्ज स्वर, २ रिषभ स्वर, ३ गांधार स्वर, ४ मध्यम स्वर, ५ पंचम स्वर, ६ धैवत स्वर, और ७ निषाद स्वर. अब इन सातों स्वरों के उत्पत्ति स्थानक बताते हैं. १ षड्ज स्वर जिव्हा के अग्रभाग से बोला जाता है, २ रिषभ स्वर का स्थान हृदय है, ३ गांधार स्वर कंठाग्र से निकलता है, ४ मध्यम स्वर जिव्हा के मध्य भाग से बोलाता है, ५ नासिका से पंचम स्वर बोला जाता है, ६ दांतके जोग से धैवत स्वर निकलता है और ७ निषाद स्वर नेत्र की भ्रकुटी के आक्षेप से बोला जाता है. ॥ १-३ ॥ सातों



For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







**सूत्र** सत्तस्सरा जीव णिस्सिया पण्णत्ता तंजहा-( गाहा ) सज्जं रवइमउरो, कुक्कुडोरिसभं सरं ॥ हंसो रवइ गंधारं, मज्झिमं च गवेलगा ॥ ४ ॥ अह कुसुम संभवे काले, कोइला पंचमं सरं ॥ छट्ठंच सारसाकुंचा, नेसायं सत्तमंगउ ॥ ५ ॥ सत्तसरा अजीव निस्सिया पण्णत्ता तंजहा-( गाहा ) सज्जंरवइ मुयंगो, गोमुही रिसभं सरं ॥ संखो रवइ गंधारं, मज्झमं गुण झल्लरी ॥ ६ ॥ चउचरण पतिट्ठाणा, गोहिया पंचमंसरं ॥

**अर्थ** स्वर जीव निस्सृत प्रतिपादन किये गये हैं जिन के द्वारा स्वर ज्ञान की शीघ्र ही प्राप्ति होजाती है. सो वे निम्न लिखितानुसार है. १मयूर षड्ज स्वर का उच्चारण करता है,२कुकडा (मुर्गा) का ऋषभ स्वर होता है. ३ हंस गांधार स्वर में बोलता है, ४ गौ एलक आदि पशु मध्यम स्वर में बोलते हैं ५ वसंत ऋतु में कोयल पंचम स्वर में बोलती है, ६ सारस और क्रौंच पक्षी धैवत स्वर में उच्चारण करते हैं. और ७ सप्तम स्वर निषाद में हस्ती उच्चारण करता है. यह सात ही स्वर जीव निश्राय से वर्णन किये गये. ॥ ४-५ ॥ अब अजीव निश्राय से जो है सो कहते हैं. १ मृदंग षड्ज स्वर में बजता है, २ गोमुखी-रामवादित्र रिषभ में बोलता है. ३ शंख गांधार स्वर में बोलता है, मध्यम स्वर झालर-छैणों का होता है, चार पांव वाली भूमि पर प्रतिष्ठित गोधिका मे से पंचम स्वर नीकलता है. ६ ढोल नामक वादित्र धैवत स्वर में उच्चारण करता है और ७ महा भेरी नामक वादित्र सप्तम निषाद स्वर में

For Private and Personal Use Only

सूत्र

आडंबरोयरेवइयं, महा भेरीय सत्तमं ॥ ७ ॥ एते सिणं सत्तण्हं सराणं, सत्तसर लक्खणा पण्णत्ता तंजहा—(गाहा)सज्जेण लहइवित्तं, कयंचण विणस्सइ॥गावो पुत्ताय मित्ताय ॥ णारीणं होइ वल्लहो ॥ ८ ॥ रिसहेणओ एसज्जं सेणावच्चं धणाणिय वत्थ गंध मलंकारं, इत्थीओ सयणाणिय ॥ ९ ॥ गंधारे गिइ जुत्तिन्ना, विज्जवित्ति

अर्थ

उच्चारण करता हैं. यह सर्व एक अंश को ले कर इन के उदाहरण दिये गये हैं. ॥ ६-७ ॥ इन सात स्वर के सात लक्षण कहे हैं. जैसे जिस व्यक्ति का षड्ज स्वर होता है उस की आजीवि का ठीक होती है उस के द्वारा उसे धन की प्राप्ति होती है, उस का किया हुवा कार्य सब को माननीय होता है, गौ आदि पुत्र वा मित्र उस के बहुत होते हैं. नारी जनों को वह भी बहुत वल्लभ होता है, सो इन के द्वारा प्रथम षड्ज स्वर की लक्ष्यता होती है. ॥ ८ ॥ रिषभ स्वर के महात्म्य से ऐश्वर्य भाव सेनापति और धन का अतीव संग्रह व सुगंध अलंकार स्त्रियें पर्यंकादि सर्व प्रकार से प्राप्त होता हैं. और इन लक्षणों से निश्चय होता है कि इस व्यक्ति का रिषभ स्वर है. ॥ ९ ॥ गांधार स्वर वाला गीतों के ज्ञान का गीतज्ञ होता है और जिस की संसार में प्रधान आजीविका होती है, पुनः कलाओ में प्रवीण होता है. इस स्वर को जानने वाले बुद्धिवान कवि होते है और अन्य छंदादी शास्त्र के

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

कलाहिया ॥ हवंति कइणोपाणा, जे अन्ने सत्थ पारगा ॥ १० ॥ मज्झिमस्स रमंताओ, हवंति सुहजीविणो॥ खायाति पियति देती, मज्झिमस्सर मस्सिओ॥ ११ ॥ पंचम सरमंताओ, हवंती पुहवीपती ॥ सूरो संगह कंतारो, अणेग गणणायगो ॥ १२ ॥ धेवयस्सरमंताओ, हवंति दुहजीविणो ॥ कुवेलाय कुविसिय, चोराचंडाल मुट्ठिया ॥ १३ ॥ णेसाहस्सर मंताओ, होंति हिंसगावश ॥ जंघाचारा जेहवाहा,

अर्थ

पारगामी होते हैं. ॥ १० ॥ मध्यम स्वर वाले जीव सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं, उन के खान पान करने में वा देने में किसी प्रकार से विघ्न उपस्थित नहीं होते हैं परंतु पदार्थों के विशेष संग्रह करने में वे असमर्थ होते हैं. इसी से वे मध्यम स्वर आश्रित कहे जाते हैं. ॥ ११ ॥ पंचम स्वर वाले जीव भूमि के अधिपति होते हैं, समर में शूरवीर भी होते हैं, अनेक प्रकार के पदार्थों के भी संग्रह करने वाले होते हैं, और अनेक तर के नाम होते हैं. यह पंचम स्वर के लक्षण कहे हैं. ॥ १२ ॥ धैवत स्वर वाले जीव दुःख पूर्वक जीवन व्यतीत करने वाले होते हैं पुनः जिन के कवस्त्र व दुष्ट आजीविका होती है, इस स्वर के धारन करने वाले जीवी चौर्य कर्म, चांडालादि कर्म, काष्टिकादि प्रहार करने वाले होते हैं इसीलिये यह स्वर निषिद्ध होता है तथा इस स्वर वाला जीव पाप कर्म विशेष करता है. ॥ १३ ॥ निषाद स्वर वाले जीव हिंसक व अतीव भ्रमण करने वाले होते हैं तथा जंघाओं के दम

For Private and Personal Use Only

सूत्र

हिंडगा भार वाहगा ॥ १४ ॥ एतेसिंण सत्तण्हंसराणं तओगामा पण्णत्ता तंजहा-सज्जगामे, मज्झिमगामे, गंधारगामे, ॥ सज्जगामस्सणं सत्त मुच्छणाओ पण्णत्ताओ तंजहा-( गाहा ) मंगी, कोरवी, आहरिया, रयणी, सारकंताय । छट्ठी अ सारसी नाम, सुद्धसज्जाय सत्तमा ॥ १५ ॥ मज्झिम गामस्सणं सत्तमुच्छणाओ पण्णत्ताओ तंजहा-( गाहा ) उत्तर मंदा, रयणि, उत्तरा उत्तरासमा, ॥ सम्मोकंताय सोवीरा अभिरूवा होंति सत्तमा ॥ १६ ॥ गंधार गामस्सणं सत्तमुच्छणाओ पण्णत्ताओ

अर्थ

करने वाले, लख वाहक और भार वाहक भी होते हैं अर्थात् जो शूद्र क्रिया है उन के कर्ता निषाद स्वर वाले ही होते हैं अब इन सात स्वरों के तीन ग्राम व सात मूर्च्छना के विषय में कहते हैं. ॥ १४ ॥ इन सात स्वर के तीन ग्राम प्रतिपादन किये हैं १ षड्ज ग्राम २ मध्यम ग्राम और ३ गांधार ग्राम. इन में षड्ज ग्राम की सात मूर्छनाए कही गई है. १ मांगी, २ कोरवी. ३ हरिता, ४ रत्ना, ५ सारकंता, ६ सारसी और ७ शुद्ध षड्ज नामक सप्तमी मूर्च्छना है. ॥ १५ ॥ मध्यम ग्राम की भी सात मूर्च्छना ये प्रतिपादन की गई है जिन के नाम-१ उत्तरामंदा, २ रत्ना, ३ उत्तरा, ४ उत्तर सभा, ५ समकांता. ६ सुवीरा, और ७ अभिरूपा. ॥ १६ ॥ गांधार ग्राम की भी सात मूर्च्छना ये प्रतिपादन की गई हैं जैसे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

तंजहा–( गाहा )–नंदाय, क्खूड्डिमा, पूरिमाय चउत्थी सुद्ध गंधारा ॥ उत्तर गंधारावि य, सायंचमिया हवइ मुच्छा ॥ १७ ॥ सुट्ठुत्तर मायामी, सा छट्ठी सव्वओ णायव्वा ॥ अहउत्तरायया कोडिमाय सा सत्तमा हवइ मुच्छा ॥ १८ ॥ सत्तसरा कओ भवंती ? गीयस्स का भवंति जोणी ? कति समया ओसासा, कइवा गेयस्स आगारा ॥ १९ ॥ सत्तसरा णाभीओ भवंती, गीयंचरुन्न जोणि, पाद समा ओसासा, तिन्नि गीयस्स आगारा ॥ २० ॥ आइ मिउ आरंभंता, समुव्वहंताय मज्झयारंमि ॥ अवसाणं अववत्ता, तिण्णि गेयस्स आगारा ॥ २१ ॥ छद्दोसे अट्ठगुणे, तिण्णि अ वित्ताइ

अर्थ

कि १ नंदिका, २ क्षुद्रिका, ३ पुरीमा, ४ शुद्ध गांधार, ५ उत्तर गांधार, ६ सुष्टुत्तर मायाम और ७ उत्तरा कोटिमा. यह सप्तमी मूर्च्छना है. ॥ १८ ॥ अब सात स्वरों के विशेष प्रश्नोत्तर करते हैं. सातों स्वर किस स्थान में उत्पन्न होते हैं ? गीत की कौनसी योनि होती हैं, कितने समय प्रमाण स्वर में उच्छवास होता है, और गीतों के कितने आकार हैं ? ॥ १९ ॥ अब इन के उत्तर देते हैं. सातों स्वर नाभि से उत्पन्न होते हैं. गीतों की रुदित योनि है, गीतों के पद पद में उच्छवास हैं. और गीतों के तीन आकार कहे हैं. ॥ २० ॥ गीत की आदि में आरंभ करते कोमल स्वर चाहिये, फीर बीच में महा ध्वनि चाहिये और गीत अंत के में मंद स्वर होवे. इसलिये यह तीन आकार कहे हैं ॥ २१ ॥ जो रंग भूमि नाट्य भूमि में सुशिक्षित बनकर गाता है वही स्वर के छ दोष, आठ गुन

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

दोणि भणितिउ ॥ जो जाणाही सोगाहीत्ति सुसिक्खिओ रंग मज्झंमि ॥ २२ ॥ भीयं, दुयं, मपिच्छं, उत्तालं व कमसो मुणेयव्वं ॥ कागस्सरं मणुणासं, छद्दोसा होंति गीयस्स ॥ २३ ॥ पुणरत्तं च अलंकियंच, वत्तं च तहेव विधुट्ठं ॥ महुरं समं सुललियं, अट्ठगुणा होति गीयस्स ॥ २४ ॥ उरकंठ सिर पसत्थं च, गिज्जंतो

अर्थ

छंदो के तीन भेद और दो प्रकार की भाषा को जानता है. ॥ २२ ॥ गीत के गाने में षट् प्रकार के दोष होते हैं जैसे कि १ भय सहित गाना, २ शीघ्र २ गाना. ३ श्वास होने पर गाना ४ ताल से विपरीत गाना, ५ कगवत् स्वर के होने पर गाना और ६नासिका में गाना ॥ २३ ॥ गीत के गाने में अष्ट प्रकार के गुन निम्न प्रकार से प्रतिपादन किये गये हैं. जैसे कि १ स्वर कला में प्रविणता, २ राग में रक्तता ३ अलंकार सहित. ४ प्रगट वचन. ५ शुद्ध स्वर, ६ कोकिलावत् मधुर स्वर, ७ तालादि वादित्र सम स्वर, और ८ सललित स्वर हो. यही गीत के गाने के आठ गुन हैं. इन गुणों के साथ गीत गाने से गीत निर्दोष कहे जाते है. ॥ २४ ॥ प्रकारांतर से गीत शुद्धि का विवर्ण किया जाता है. जैसे कि उर, कण्ठ, शिर विशुद्ध होवे, मृदु गीत गाया जावे. चातुर्यता के साथ अक्षरों का संचारण किया जावे, पद द्धरचनाष होवे, फिर हस्तादि की ताल सम होवे. नृत्य करने वाले का प्रत्क्षेप ठीक होवे, इस प्रकार

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

मउय रिभिय ॥ पदबंध समंताल पउखेवं, सत्तसरसी भरणेयं ॥ २५ ॥ अक्खरसमं पयसमं, तालसमं लयसमं ॥ गहसमं च निससियं च उससियं, सम्मं संचारसमं च सत्ताति ॥ २६ ॥ निद्दो सैसारवंतंच हेउजुत्ते मलंकियं ॥ उवणीय सोवयारं च, मियं मधुर मेवय ॥ २७ ॥ सम्मं अद्धसमं चेव, सव्वत्थं विसमंसज्जं, तिण्णिवित्तं पयाराइं, चउत्थो नो पलब्भइ ॥ २८ ॥ सक्कया, पागया,

अर्थ

विशुद्धि के साथ जब गाना गाया जाता है तब उस गीत को सप्त स्वर विशद्ध कहते हैं ॥ २५ ॥ फिर अक्षर सम हों, पद सम हों, ताल सम हों, लता सम हों, ग्रह सम हों, श्वासोच्छवास सम हो, और सतार आदि में संचार भी सम हो—यह भी सात गुण स्वर के प्रकारांतर से कहे गये हैं. ॥ २६ ॥ वृत्त के आठ गुण होते है जैसे कि १ छंद निर्दोष २ विशिष्ट अर्थ का सूत्र कर हेतु युक्त, ३ अलंकृत, ४ नयों से युक्त, ५ शुद्ध अलंकार पूर्वक ६ विरुद्धादि दोषों रहित ७ मिष्टाक्षरी और ८ मधुर. ॥ २७ ॥ फिर भी तीन प्रकार के वृत्त कहे गये हैं जिन के चार पदों के परस्पर समान वर्ण होते हैं उन्हे सम छंद कहते हैं, जिन के प्रथम पाद व तृतीय पाद और द्वितीय पाद व चतुर्थ पाद समान होवे उन्हे अर्ध समच्छंद कहते हैं परंतु जिस छंद के चारों पाद विषम होवे उसे सर्व विषम छंद कहते है यही तीनों वृत्तों के प्रकार कहे गये हैं परंतु चतुर्थ प्रकार कहीं भी उपलब्ध नहीं है. ॥ २८ ॥ अब भाषा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

२ चेव, भणिओ होति दुण्णिओ ॥ सरमंडलंमिगिज्जंते, पसत्था इसी भासिया ॥ २९ ॥ केसी गायइ महुरं ? केसी गायइ खरंच रुक्खंच ॥ केसी गायति चउरं। केसीय विलंबितं दुतं केसीयाए विस्सरं पुण केरसी ( गाथा धिकंमिदं ) ॥ ३० ॥ गोरी गायइ महुरं, काली गायति खरंच रुक्खंच ॥ सामा गायति चउरं, काणी अविलंवियं दुतं अंधा ॥ ३१ ॥ बिस्सरंपुण पिंगला ( गाथाधिकमिदमपि) ॥ सत्त

अर्थ

विषय कहते हैं. तीर्थ करोंनेसंस्कृत व प्राकृत ये दोनों भाषा प्रतिपादन की है और दोनों भाषाओ में स्वर मंडळ गायन किया जाता है. और यह दोनों भाषा सुंदर है और ऋषि भाषित है. (यहां पर ऋषि शब्द का अर्थ भगवान से है.) ॥२९॥ अब फिर प्रश्न कहते हैं कि कौनसी स्त्री मधुर गीत गाती है, कौनसी स्त्री खार और रूक्ष गीत गाती है. कौनसी स्त्री दक्षता पूर्वक गाना गाती है, कौनसी स्त्री विलंब से गाती है. कौनसी स्त्री शीघ्रता से गाती है और कौनसी स्त्री विस्वर गाती है ? ॥ ३० ॥ १ गौर वर्ण वाली स्त्री मधुर गीत गाती है. काले वर्ण वाली स्त्री कर्कश गीत गाती है, श्याम वर्ण वाली स्त्री दक्षता पूर्वक गाती हैं. एक आंख वाली स्त्री विलंब से गाती है, नेत्र हीन–अंधी स्त्री शीघ्र गाना गाती है और कपिल स्त्री विस्वर गाती है, ॥ ३१ ॥ अब सप्त स्वरों का उपसंहार कहते हैं—इस स्वर मंडल में सप्त

For Private and Personal Use Only

सूत्र सरा तउगामा, मुच्छणा एगवीसइ ताणा एगुणा पण्णासं ॥ सम्मत्तं सर मंडलं ॥ ३२ ॥ सेत्तं सत्त नामे ॥ १२४ ॥ से किं तं अट्ठ नामे ? अट्ठ नामे अट्ठविहा वयणविभत्ती पण्णत्ता तंजहा—( गाहा ) निद्देसे पढमाहोइ, बितिया उवएसेणं ॥ तइया करणंमिकया चउत्थी संपदावणे ॥ १ ॥ पंचमिय अवायाणे, छट्ठी सस्सामिं वायणे ॥ सत्तमी सन्निहाणत्थे, अट्ठमीमंतणी भवे ॥ २ ॥ तत्थ पढमाविभत्ती निद्देसो सो इमोय हवंती॥ बितिया पुण उवएसे, भणकुणसुइ मंवयंच

अर्थ स्वर, तीन ग्राम, २१ मूर्छना, और ४९ तान वर्णन की गइ है परंतु तान उसे कहते हैं कि जैसे एक वीणा में ७ छेद हैं उन में एक स्वर सात सात वार गाया जाता है सो इस प्रकार सातों सात ४९ तान हुए. सो यह ४९ तान भी स्वर मंडल के बीच में है. इस प्रकार स्वर मंडल की समाप्ति को कही है अपितु इसे ही सप्त नाम कहते हैं ॥३२॥ यह सात नाम का कथन हुआ. ॥ १२४ ॥ अहो भगवन् अष्ट नाम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! अष्ट नाम में अष्ट विभक्ति कही हैं तद्यथा—निर्देश में प्रथम विभक्ति होती है. २ उपदेश में द्वितीया, ३ कारण में तृतीया, ४ संप्रदान में चतुर्थी, ५ अपादान में पंचमी, ६ संबंध में षष्ठी, ७ आधार में सप्तमी और ८ आमंत्रण में अष्टमी विभक्ति होती है. ॥ १-२ ॥ अब इन आठों विभक्तियों के उदाहरन कहते हैं. इस में प्रथम विभक्ति निर्दोष रूप इस प्रकार है. सः,

 

**सूत्र** वंति ॥ ३ ॥ ततिया करणंमि कया, भणियं च कयंच तेणं वा मएवा ॥ हंदिणमो साहाए हवइ चउत्थीसं पयाणंमि ॥ ४ ॥ अवणय गिण्हएत्तो, एउत्तिवा पंचमी अपायाणे ॥छट्ठी तस्सइमस्स, वागयस्सवासामि संबंधे॥ ५ ॥हवइ पुणसत्तमी तंइमंमि आहार काल भावेय ॥ आमंतणी भवे अट्ठमिउ, जहाहे जुवाणेति ॥ ६ ॥ सेतं अट्ठमी नामे ॥ १२५ ॥ से किंतं नव नामे ? नव नामे ! नव कव्वरसा

**अर्थ** अयं, अहं. उपदेश में द्वितीया होती हैं. जैसे शास्त्रं पढ, कार्यं कुरु अर्थात् शास्त्र का अभ्यास कर और कार्य कर. ॥ ३ ॥ करण में तृतीया विभक्ति होती है पठितं वा कृतं तेन मया वा अर्थात् मैंने अथवा तैने अभ्यास किया या कार्य किया. चतुर्थी संप्र ानमें नमः स्वाहाः अग्नये. अर्थात् अग्नि देवता को नमस्कार पांचवी विभक्ति अपादान में होती है जैसे एतस्माद् दूरं अपनय, अर्थात् इस से दूर करो, षष्ठी स्वामी संबंध में राज्ञःपुरुषः राजा का पुरुष ॥ ५ ॥ सप्तमी बिभक्ति आधार में होती हैं तथा काल और भाव में भी होजाती है जैसे प्रधो रमते अर्थात् वसंत मास में लोग क्रीडा करते हैं यह काल में सप्तमी हुइ अथवा चारित्रेऽवतिष्ठते—अर्थात् चारित्र में रहा है यह भाव में सप्तमी हुइ. आठवी विभक्ति आमंत्रण में जैसे हे युवान् ! यह अष्टमी विभक्ति हुइ. यह आठ नाम का कथम हुवा. ॥ १२८ ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

पण्णत्ता तंजहा—( गाहा ) वीरो, सिंगारो, अब्भुओय, रुद्दो अहोइ बोधव्वो ॥ वेलणओ विभच्छो हासो, कलुणो पसंतोय ॥ १ ॥ तत्थ परिच्चागंमिय, दाणे तव चरणा सत्तुजण बिणासेय ॥ अणणुसयधिती, परक्कमालिंगो वीररसो होइ ॥२॥ वीरोरसोजहासो नाम महावीरो जो रज्जं॥ पयहिऊण पव्वइउ॥ कामकोह महासत्तू पक्ख निग्घायणं कुणइ ॥ ३ ॥ सिंगारो नामरसो, रति संजोगाभिलास संजणणो

अर्थ

अहो भगवान्! नव नाम किसे कहते हैं? अहो शिष्य! नव प्रकार के रस कहे हैं जैसे १ वीर रस, २ शृंगार रस, ३ अद्भुत रस, ४ रौद्र रस ५ व्रीडा रस-लज्जा रस ६ बीभत्स रस, ७ हास्य रस, ८ करुणा रस और ९ प्रशांत रस इन नव नाम में से प्रथम वीर रस का वर्णन करते हैं-दान देने में, तपश्चर्या करने में, चारित्र पालने में शत्रु का विजय करने में और पाप का पश्चाताप करने में मन को स्थिर कर सच्चे मन से पराक्रम फोडे इस प्रकार पराक्रम का चिन्ह जहां होवे उसे वीररस कहना उदाहरण जैसे श्री महावीर का स्वामी पराक्रम-राज्यऋद्धि का त्याग कर प्रवर्ज्या दीक्षा धारन करे फिर कामक्रोधादि महा प्रबल शत्रुओं का पक्ष की निर्धात करने में प्रवर्ते यह सच्चावीर रस है. ॥ २-३ ॥ अब शृंगार रस का वर्णन करते हैं. स्त्री के साथ संभोग के अभिलाषी संयोगिक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir





सूत्र

॥ मंडणा विलास विव्वोय, हास लीलारमणलिंगो ॥ ४ ॥ सिंगारो रसोजहा, महुर विलाससलालिय॥हिउयमादण कर जुवाणाणं सामाय॥ ५ ॥मेहला दामं विम्हयकारो अपुव्वो, अणुभूत पुव्वो यजो रसो होइ, हरिसविसाय उप्पत्तिलक्खणो अब्भुतोनाम ॥ ६ ॥ अब्भुअउरसो जहा, अब्भुअतरमिहाएतो ॥ अन्नं किं अत्थि

अर्थ

कार्य वांच्छा उत्पन्न करने के लिये भूषणादि से शरीर का मंडन करे. नेत्रादि अंगोपांग की चेष्टा कर अंग को बिकार में प्रवर्तावे, हास्य मस्करी से कामोत्पादक भाषा बोले, परस्पर क्रीडा करे, यह शृंगार जानना. इस का उदाहरण रणकार युक्त मधुर शब्द विलास लीला व कटाक्ष करने वाली युवती या युवान के हृदय में रमण करे ऐसे कंदर्पावतार रूप शृंगार भाषण व स्त्रियों नेपुरादि भूषण के घूघंकार-घमकार करती दांतों की मेखला को दर्शाती रत्न जडित कटि मेखलादि मलाकार करती कायर पुरुषों को विमोहित करे. यह शृंगार रस है. ॥ ३-४ ॥ अब अद्भूत रस के लक्षण कहते हैं-प्रथम अनुभवः नहीं होवे वैसा विस्मय कारक बनाव को अद्भूत रस कहते हैं. कितनेक अच्छे अद्भूत बनाव हर्षोत्पादक होते हैं और कितनेक खेद करने वाले होते हैं. यह उस के लक्षण कहे हैं अब उस का उदाहरण कहते है. सम्यग् दृष्टि हलु कर्मी जीवों को जिनेन्द्र प्रणीत शास्त्रों का गूढार्थ श्रवण मनन करते आनंद में मग्न हो आश्चर्य चकित होते हैं. और आश्चर्य में विचार करते हैं कि ऐसी विचित्रता अन्य

For Private and Personal Use Only

सूत्र

जीवलोगम्मि जं जिणवयणे अच्छा, तिकाल जुत्ता मुणिज्जंति ॥ ७ ॥ भयजगण ण रूवसद्दंधगार चिंता कहा समुप्पन्नो, ॥समोह संभमविसाय, मरणलिंगी रसोरुद्दा ॥ ८ ॥ रोद्दोरसा जहा भिउडी विडंबिय मुहो ॥ संदट्ठोट्ठइयरुहिरमो, ? किण्णा हणीसपमुसं असुरणिभो, भीमरसिय अइरोद्द रोद्दोसिए ॥ ९ ॥ विणउवयार

अर्थ

किसी शास्त्रों में देखने में नहीं आइ. इस प्रकार के जिन वचन में रक्त बने जीव इस लोक में तत्त्वार्थ के तथा त्रिकाल के स्वरूप के सदा ज्ञाता होते हैं. ॥ ५-७ ॥ अब चौथे रौद्र रस का दृष्टांत कहते हैं व्यंतरादि की चेष्टा के भयंकर रूपों को देखकर तथा अंधकार में भय स्थान देख भयानक शब्द श्रवण कर हृदय में रौद्र रस प्रगट होता हैं इस से जीव मूढता, व्याकुलता व विषाद पना धारन करते हैं कितनेक प्राण का भी त्याग करदेते हैं. इसे रौद्र रस कहना. इस का उदाहरण जब रौद्र रस उत्पन्न होता है तब ललाट में तीन सळ उत्पन्न होते हैं. मुखमुद्रा विकराल बनती है, दिल में युद्ध आमंत्रण करता है, अन्य को पीडित करता है, घात कर रुधिर से हस्त व शस्त्र भरे रहते हैं. वह राक्षस समान बनता है, भयंकर शब्दों कर के अन्य को कहे कि तू भयंकर दिखाता है. यह रौद्र रस जानना. ॥ ८ ९ ॥ विनय उपचार अश्लील वार्ता, उपाध्यायादि कीस्त्रियों से मैथुन क्रीडा, मर्यादाओं का

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

गुब्भगरुदारमेरावतिक्कमुप्पन्नो ॥ वेलणउनामरसो लज्जा संका जणणलिंगो ॥ १० ॥ वेलणोरसो जहा, किं लोइय करणीआओ ॥ लज्जणतरगं तिलिज्जयामोत्ति, वारिज्जमि गुरुजणो, परिवंदे[illegible] बहुपोत्ति ॥ ११ ॥ असुइ कुणिमदु दंसण, संजोगाब्भास गंध निप्फन्नो ॥ निव्वेअविहिंसा लक्खणो, रसोहोइ बीभच्छो ॥ १२ ॥ बीभच्छो

अर्थ

अतिक्रम करना इत्यादि कारणों से लज्जा रस उत्पन्न होता है. इस रस के शंका वा लज्जा चिन्ह है. उदाहरण जैसे नव वधू अपनी प्यारी सखी से कहती है कि मेरी प्यारी सखी ! जो मेरे भर्तादि के संयोग से रुधिर चर्चित वस्त्र हुए हैं उन वस्त्रों को मेरे श्वसुरादि अनेक नरनारियों को दिखलाते हैं, यद्यपि यह मेरे पतिव्रत धर्म की प्रशंसा करते हैं परंतु इन कारणों से मैं तो परम लज्जित होती हूं क्यों कि जब मैथुन क्रिया के नाम से ही लज्जा उत्पन्न होती है अपितु यह तो मेरे उदाहरण ही दे रहे हैं इसलिये इस संसार में इस से बढ कर लज्जा का स्थान क्या होगा, अपितु कोई भी नहीं. अतः विवाहादि में भी मेरें वस्त्र दिखलाये जाते हैं इसलिये मैं परम लज्जित होती जाती हूं. सो इसी का नाम लज्जा रस है. ॥ १०-११ ॥ बीभत्स रस उसे कहते हैं कि जो अशुचि मांसपिंड दुर्दर्शन, इत्यादि के वारंवार देखने से दुर्गति के निमित्त से वैराग्य और दया भाव उत्पन्न होता है वही बीभत्स रस है, अपितु यह वार्ता मोक्ष गमन आत्मा की अपेक्षा की गइ है. ॥ १२ ॥ और वे धन्य है कि जिन्होंने

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

रसो जहा, असूइ मलभरिय ॥ निज्झरसभाव दुग्गंधी, सव्वकालं पिधन्नाओ सरीर कलिबहु मल कलुसं विमुचंति ॥ १३ ॥ रूव [illegible] य वेस भासा, विवरिय [illegible] समुप्पन्नो ॥ हासो मणप्पभासो पगा[illegible]लिंगो रसो होइ ॥ १४ ॥ हासो रसो जहा पासुत्तमसि मंडिय पडिबुद्ध ॥ देयरपलोयतीहाजहणथण [illegible]रकं[illegible]रण, [illegible]मिय मज्झाहसती सामा ॥ १५ ॥ पियविप्पउ गवंध वहवाहिं विणिवायसंभ समुप्पन्नो

अर्थ

अशुचि व मल से भरे हुवे श्रोत्रादि विवर जो स्वभाव से दुर्गंध यह शरीर है उस को छोडदिया है. क्यों कि यह शरीर मल से कलुषित हो रहा है. सदैव काल इस के सर्व द्वार मल को प्रस्रवण कर रहे हैं. इसलिये वे धन्यवाद को योग्य हैं जो इस अपार मय शरीर को छोडकर मोक्ष गमन हो गये हैं. ॥ १३ ॥ अब हास्य रस का विवर्ण करते हैं. रूप का परिवर्तन करता अथवा वृद्धादि का रूप धारण करता. भाषा विपरीत बोलनी, जिस के द्वारा हास्य की उत्पत्ति हो और मन प्रफुल्ल हो जाय सो यही उक्त चिन्ह हास्य रस के हैं. अर्थात् इन लक्षणों ही से हास्य रस की प्रतीति होती है. ॥ १४ ॥ इस के उदाहरण मे केवल इतना ही विवर्ण है कि श्यामा स्त्री निज देवर का उपहास करती है और उस के मुखादि को केवल हास्य के लिये मषी से अलंकृत करती है. उसी को हास्य रस कहते हैं. ॥ १५ ॥ अब करुणा रस विषय कहते है. करुणा रस उसे कहते हैं. जो विषय के



For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

 

मूल

॥ सोइअविल विपयण्हाय रुन्नलिंगो रसो कलुणो ॥ १६ ॥ कलुणोरसो जहा, पज्झाय किलामिअयं ॥ बाहागय पप्फु अच्छीय, बहुसो तस्स विओगे पुत्तिय, दुब्बलयंते मुहंजायं ॥ १७ ॥ निद्दो समणस्स माहाप्पा, संभवो जो पसंत भावेणं ॥ अविकार लक्खणो, सो रसो पसंतो णायव्वो ॥ १८ ॥ पसंतो रसो जहा, सब्भाव निव्विगारं ॥ उवसंत पसंत सोमदिट्ठी, अहीजहं मुणिणो सोहंति मुह

अर्थ

वियोग से अथवा बंध बधन व्याधि से अथवा पुत्रादि की मृत्यु से चित्त को अशांति उत्पन्न होती है उसी के कारणों से चिंता करना, विलाप करना. मूर्च्छावश होना यह सब लक्षण करुणा रस के होते हैं. इस में उदाहरण यह है कि जैसे किसी युवती कन्या के पति वियोग से वह कन्या परम दुःखित अश्रु पूर्ण नेत्र, जिस के मुख की आकृति मलीन है इत्यादि लक्षणों से निश्चय कराती है कि यह करुणा रस से व्याप्त हो रही है. सो इसी को करुणा रस कहते हैं ॥ १७ ॥ अब प्रशांत रस विषय कहते हैं. मन के निर्दोष होने पर व भावों की विशेष शांति होने पर प्रशांत रस की उत्पत्ति होती है. और निर्विकार रूप का होना यही प्रशांत रस का मुख्य लक्षण है. ॥ १८ ॥ इस रस में उदाहरण इस प्रकार दिया गया है. कि जैसे कषायों के उपशम होने से और सौम्य दृष्टि होने से अंतः परम शांति होने पर मुनि

For Private and Personal Use Only

सूत्र

कमलं पीवरसिरीयं ॥ १९ ॥ एएनव कव्वरस्सा, बत्तीसा दास विही समुप्पन्नो ॥ गाहाहिं मुणेयव्वा, हवंति सुद्धा वमीसावा ॥ २० ॥ से तं नवनामे ॥१२६॥ से किं तं दसनामे ? दसनामे दसविहे पण्णत्ते तंजहा—१ गोणे. २ नोगोणे. ३ आयाण पदेणं, ४ पडिवक्ख पदेणं, ५ पहाणयाए, ६ अणादि सिद्धंतेणं, ७ नामेणं,

अर्थ

का मुख रूपी कमल उपशम रूप श्री से अलंकृत होती है उसी का नाम प्रशांत रस है. ॥ १९ ॥ यह नव काव्य रस सूत्र के ३२ दोषों की विधि की रचना से उत्पन्न होते हैं जैसे कि अनिष्ठ दोष से रहित अद्भूत रस की उत्पत्ति होती है ऐसे ही और अन्य दोष करके भी चाहिये यह सब गाथा काव्य छंदादि में जानने चाहिये परंत काव्यादि में शुद्ध रस भी होते हैं. मिश्रित रस भी होते हैं. जैसे कि एक काव्य में एक रस हो उसे शुद्ध रस कहते हैं. यदि एक काव्य में दो तीन रस हो उसे मिश्रित रस कहते हैं ३२ दोषों के प्रयोग से इन की उत्पत्ति होती है और अन्य प्रकार से भी उत्पत्ति होती है. अलंकार ग्रंथ और छंदादि ग्रन्थो में इन का सविस्तार स्वरूप जानना. चाहिये यह नव नाम का स्वरूप पूर्ण हो गया. ॥ १२६ ॥ अहो भगवन् [ दश नाम किसे कहते है ? अहो शिष्य ! दश नाम दश प्रकार से वियर्ण किये गये हैं, जैसे कि—१ गुण निष्पन्न नाम. २ निर्गुण नाम, ३ आदानपद नाम, ४ प्रति पक्ष नाम, ५ प्रधान पद नाम, ६ अग्रादि सिद्ध नाम, ७ नामकर नाम, ८ अवयव नाम, ९



For Private and Personal Use Only

सूत्र

अवयवेणं, ९ संजोगेणं १० पमाणेणं ॥ १२७ ॥ से किं तं गोणे ? गोणे ! खमती त्ति खमणो, तवती त्ति तवणो जलती त्ति जलणो, पवती त्ति पवणो, सेतं गोणे ॥ से किं तं नो गोणे ? नोगोणे ! अंकुतो संकुतो, अमुग्गो, समुग्गो. अलालं, पलालं, अकुलिया सकुलिया, अमुद्दो समुद्दो, नो पलं असती त्ति पलासं, अमातिवाहए माइवाहए अबीयवावए, बीयावावए, नो इंदगोवतीत्ति इंदगोवउ. सेतं



अर्थ

संयोग नाम और १० प्रमाण नाम. ॥ १२७ ॥ अहो भगवन् ! गुण निष्पन्न नाम किसे कहते है ? अहो शिष्य ! गुन निष्पन्न उस कहते हैं जैसे कि क्षमा करने से क्षमण, ज्वलन होने से ज्वलन, ताप होने से तपन. पवित्र करने से पवन, ए सर्व गुण निष्पन्न नाम है. अहो भगवन् ! अगुण निष्पन्न नाम किसे कहते है ? जैसे कि कुन्त न होने पर शकुन्त, समुद्र न होने पर समुद्र, भद्रा के न होने पर भद्र, लाल के न होने पर लाल, कुलिका के न होने पर शकुलिका, मांस के न खाने पर पलाश, अमातृव हक को मातृवाहक, अबीजवापक को बीजवापक, इन्द्र के न गोपों पर इन्द्रगोप इत्यादि सर्व प्रयोग गुण निष्पन्न नहीं है परंतु गुण से विरूद्ध नाम प्रसिद्ध है=आदान पद उसी का नाम हैं. कि जिस अध्याय का आदि सूत्र से नाम प्रसिद्ध हो जाय. और उसी नाम अध्याय से उच्चारण किया जाय. इस पद में चउदह

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



मूल

नोगोणेत्ति ॥ से किंतं आयाणपदेणं ? आयाणपदेणं ! धम्मोमंगल, चाउरंगीजं, असंखयं, आवंती. अहातत्थिज्जं, अद्दइज्जं, सेत्तं आयाण पदेणं॥ से किं तं पडिवक्ख पदेणं ? पडिवक्खपदेणं ! नवेसु गामागार णगर खेड कव्वड मंडल दोणमुह पट्टणा सम सन्निविसेसुय निविस्समाणेसु असिवासिवा अग्गीसीयला विसंमहुर, कल्लालघरेसु आविलंसादुयं जे लत्तए सेअलत्तए, जेलाउए से अलाउए, जे सुभए से कुसुभए,

अर्थ

उदाहरण दिखाये गये हैं. जैसे कि १ धर्मो मंगल दिगाथा का कि अध्याय २ चतुरंगी अध्याय, ३ असंख्याध्याय, ४ आवंती अध्याय ५ पुरुष [illegible]ध्याय, ६ एकाध्याय, ७ [illegible]ध्याय, ८ [illegible]ध्याय, ९ मोक्ष मार्गाध्याय, १० समोसरण अध्याय ११ [illegible] अध्याय १२ [illegible] १३ [illegible]ध्याय आदि कुमाराध्याय अब प्रतिपक्ष का उदाहरण कहते हैं. प्रतिपक्ष पद [illegible] है कि जो अर्थ से विरुद्ध पद है. जैसे कि नूतन ग्राम नगरों में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] होते हैं परंतु उन को लोग [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अर्थ में होता है. इसलिये अशिवा को शिवा कहना यह [illegible] [illegible] पद है वैसे ही अग्निशीतल, विष मधुर, कलाल के घर में मदिरा स्वादु, रक्त को अरक्त, लाबु को अलाबु, शुभ को कुशुभ इस प्रकार

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir





सूत्र

आलवंतेविबलीय भासए, सेतं पडिवक्खपदेणं ॥ से किंतं पहाणयाए ? पहाणयाए असोगवणे, सत्तिवणे, चंपगवणे, चुयवणे, नागवणे पुन्नागवणे, उच्छुवणे, दक्खवणे, सालवणे, सेतं पहाणयाए ॥ से किंतं अणादिय सिद्धंतेणं ? अणादिय सिद्धंतेणं ! धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए, पुग्गलत्थिकाए, अद्धासमए, सेतं अणादिय सिद्धंतेणं ॥ से किंतं नामेणं ? नामेणं ! पिउपियाम

अर्थ

प्रतिपक्ष वचन उच्चारण करना उसी को प्रतिपक्ष धर्म कहते हैं, अहो भगवन्! प्रधान नाम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य! बहुत पदार्थ होने पर जो अधिक हो उस नाम से बोला जावे सो प्रधान नाम जैसे कि-अशोक वृक्ष अधिक होने से अशयवन ऐसे ही सप्तपर्ण वन, चंपकवन, आम्रवन, नागवन, पुन्नागवन, इक्षुवन, शालवन, इत्यादि प्रधान नाम जानना. अहो भगवन्! अनादि सिद्ध नाम किसे कहते हैं ! अहो शिष्य ? अनादि सिद्ध नाम सो धर्मास्ति काया, अधर्मास्ति काया, आकाशास्ति काया, जीवास्ति काया पुद्गलास्ति काया, और अद्धा समय यह अनादि सिद्ध नाम है अहो भगवन्! नाम पद किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! जो पित पितामह के नाम से नाम निष्पन्न होता है और उसी से प्रसिद्धि को भी प्राप्त हो जाता है जैसे तेतली पुत्र, वरुण, मागनंत्तुआ, मृगा पुत्रा, थावर्चा पुत्र इत्यादि सर्व नाम से निष्पन्न नाम पद है. अहो

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

महस्स नामेणं उन्नामिज्जइ, सेतं णामेणं ॥से किं तं अवयवेणं ? अवयवेणं ! सिंगी, सिखी, विसाणी, दाढी, पखी, खुरी, णही, बाली, दुप्पय, चउप्पयाय, बहुप्पया नंगुली, केसरी, कउही, परियर बंधेण भेडं, जाणिज्जा, महिलीयं नियत्थेणं, सित्थेणं दोणवाय, कयंच एगाए गाहाए, से तं अवयवेणं ॥ १२८ ॥ से किं तं संजोगेणं ? संजोगेणं ! चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा—१ दव्वसंजोगे, २ खेत्तसंजोगे, ३ कालसंजोगे

अर्थ

भगवन् ! अवयव नाम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! अवयव की प्रधानता से जो नाम निष्पन्न हो उसे अवयवी नाम करते हैं जैसे कि शृंग होने से शृंगी, शिखा होनेसे शिखी ऐसे ही विषाणी, दाढी, पक्षी, खुरी, नखी, बाली, द्विपद चतुष्पद, बहुपद, नांगुली, केसरी, वैसे ही सैनिक वेष से शूरवीर, बने हुए एक कणसे सब अनाजपका हुवा एक गाथा से कवि, यह सब अवयव प्रधान पद है क्यों कि जिस जीव का जो अवयव प्रधान होता है उसी के प्रयोग से उस के नाम का उच्चारण किया जाता है. ॥ १२८ ॥ अहो भगवन् संयोग नाम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! संयोग नाम चार प्रकार से कहा है जैसे कि १ द्रव्य संयोग, २ क्षेत्र संयोग, ३ काल संयोग, और ४ भाव संयोग अहो भगवन् ? द्रव्य संयोग किसे करतेहै? अहो शिष्य ! द्रव्य संयोग तीन प्रकार से कहा है तद्यथा—१ सचित्त २ अचित्त

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सूत्र

भावसंजोगे। से किंतं दव्वसंजोगे ? दव्वसंजोगे तिविहे पण्णत्ते तंजहा—सचित्ते, आचित्ते, मीसए ॥से किंतं सचित्ते ? सचित्ते ! गोमिएगोहिं पसूहिं पसूहिए, महिसीए, उरणीहि, उरणिए, उट्टीहिं, उट्टिवाले, सेतं सचित्तं ॥ से किंतं अचित्ते ? अचित्ते ! छत्तेण छत्ती, दंडेणं दंडी, पडेणं पडी, घडेणं घडी, से तं अचित्ते ॥ से किं तं मीसए ? मीसए हलेणं हालीए, सगडेणं सागडिए, रहेण रहिए, नावाए नावीए,



अर्थ

३मीश्र. अहो भगवन् ! सचित्त द्रव्य संयोग किसे कहते है ? अहो शिष्य ! इस के उदाहरण हैं कहते जिस के पास गौएं है उसे गोधान कहते हैं, जिस के पास ऊंट है उसे औष्ट्रिक कहते हैं, जिस के पास पशु है वह पशु वाला कहाता है, जिस के पास अजादि बहुत है वह अजादि वाला कहाता है, यह सचित्त द्रव्य संयोगज नाम हुआ. अहो भगवन् ! अचित्त द्रव्य संयोगज नाम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! जैसे छत्र धारने से छत्री दंड धारन करने से दंडी, वस्त्र धारन करने से वस्त्री (बजाज) घडा धारन करने से घडिया कहते हैं. इत्यादि अचित्त वस्तु के प्रसंग से जो नाम पडे उसे अचित्त संयोग नाम कहना. अहो भगवन् ! मीश्र संयोगज नाम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! मीश्र संयोगज नाम सो हल चलाने वाला हाली, सकट चलाने वाला साकडी, रथ चलाने वाला सारथी, नावा चलाने





For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

सेतं दव्वसंजोगे ॥ १२९ ॥ से किंतं खेत्तसंजोगे ? खेत्तसंजोग, भरहेरवए, हेमवए हिरणवए, हरिवासे, रम्मगवासए देवकुरुए, उत्तरकुरुए, पुव्वविदेहए, अवराविदेहए अहवा मागहए, मालवए, सोरट्ठए, मरहट्ठए कुंकणए, कोसलए, सेतं खेत्तसंजोगे ॥ १३० ॥ से किंतं कालसंजोगे ? कालसंजोगे सुसमसुसमए, सुसमए, सुसमदुसमए, दूसम सुसमए, दुसमए, दुसम दुसमए, अहवा पाउसए, वासारत्तए, सारदए,

अर्थ

ष का नाविक कहाते हैं इत्यादि मिश्र वस्तु के संयोग से जो नाम होवे वह मिश्र संयोगज द्रव्य नाम कहा जाता है. यह द्रव्य संयोगज नाम हुआ. ॥ १२९ ॥ अहो भगवन् ! [illegible] संयोगज नाम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! भरत क्षेत्र में [illegible] भारतीय [illegible] एरवती हेमवती, एरणवती हरिवासी, रम्यकवासी, देवकुरुक, उत्तर कुरुक, पूर्व विदेही मगध देशोत्पन्न को मागधी, मालव देश वासी को मालवीय सौराष्ट्र देश वासी को सौराष्ट्रीय, महाराष्ट्र देश वासी को महाराष्ट्रीय, कोकण देश वासी को कोकणस्थ, कौशल देश वासी को कौशली इत्यादि क्षेत्र के संयोग से नाम होते हैं यह क्षेत्र संयोग नाम का कथन हुआ. ॥ १३० ॥ अहो भगवन् ! काल संयोगज नाम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! सुषमा सुषमी आरे में उत्पन्न हुए को सुषमा सुषमी ऐसे ही सुषमी, दुःखमा सुषमी, सुषमा दुषमी, दुषमी और दुषमा दुषमी अथवा प्रावृट् ऋतु के जन्मे को पाउसी, वर्षा ऋतु के जन्मे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

हेमंतए, वसंतए गिम्हाए, से तं काल संजोग ॥ १३ ॥ से किं तं भाव संजोगे ? भाव संजोगे दुविहे पण्णत्ते तंजहा—पसत्थेय, अपसत्थेय ॥ से किं तं पासत्थे ? णाणेणं णाणी, दंसणेणं दंसणी, चरित्तेणं चरित्ती, सेत्तं पसत्थं ।से किं तं अपसत्थे ? अपसत्थे ! कोहेणं कोही, माणेणं माणी, मायाए माई लोभेणं लोभी, से तं अपसत्थे। से तं भाव संजोगे । से तं संजोगेणं ॥ १३२ ॥से किं तं प्पमाणेणं ? प्पमाणेणं चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा—१ नामप्पमाणे, २ ठवणप्पमाणे, ३ दव्वप्पमाणे, ४ भावप्पमाणे ॥ से किं तं नाम प्पमाणे ? नामप्पमाणे जस्सणं जीवस्सवा

अर्थ

की वर्षाती. शरद ऋतु के जन्मे को शरदज. हेमंत ऋतु के जन्मे को हेमंती. वसंत ऋतु के जन्मे को वसंती ग्रीषम ऋतु के जन्मे का ग्रीष्याक. काल के संयोग से नाम स्थापन करे सो काल नाम. ॥ १३१ ॥ अहो भगवन् ? भाव संयोगज नाम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! भाव संयोगज नाम के दो भेद कहे हैं. प्रशस्त व अप्रशस्त, इस में प्रशस्त भाव संयोगज नाम सो ज्ञान से ज्ञानी, दर्शन से दर्शनीय चारित्र से चारित्रीय. इत्यादि सद्गुणों से जो नाम पडे सो प्रशस्त. और दुर्गुणों से जो नाम पडे सो अप्रशस्त जैसे क्रोध से क्रोधी. मान से मानी. माया से मायावी, लोभ से लोभी. यह भाव संयोगी हुवा. यह संयोग नाम हुवा. ॥ १३२ ॥ अहो भगवन् ! प्रमाण नाम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! प्रमाण नाम के चार भेद कहे हैं. तद्यथा—१ नाम प्रमाण, २ स्थापना प्रमाण, ३ द्रव्य प्रमाण और ४ भाव





For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

अजीवस्सवा, जीवाणं वा, अजीवाणं वा तदुभयस्स वा तदुभयाणं वा प्पमाणंत्ति नामं कज्जति, से तं णामप्पमाणे ॥ १३३ ॥ से किं तं ठवणप्पमाणे ? ठवणप्पमाणे सत्तविहे पण्णत्ते तंजहा—१ णक्खत्ते, २ देवय, ३ कुले, ४ पासंड, ५ गणे, ६ आजीवियाहेउ, ७ अभिप्पाइय ॥ १३४ ॥ से किं तं णक्खत्ते नामे ? णक्खत्ते नामे १ कत्तियाहिं जाएकत्तिए, २ कत्तियादिन्ने, ३ कत्तिया धम्मे, ४ कत्तिया सम्मे, ५ कत्तियादेवे, ६ कत्तिया दासे, ७ कत्तियासेणे, ८ कत्तियारक्खिए,

अर्थ

प्रमाण. अहो भगवन् ! नाम प्रमाण किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! जिस एक जीव का, अथवा एक अजीव का, बहुत जीव का अथवा बहुत अजीव का, अथवा एक जीव अजीव मीश्र का अथवा बहुत जीव अजीव मीश्र का प्रमाण ऐसा नाम स्थापन करे उसे प्रमाण नाम कहना. ॥ १३३ ॥ अहो भगवन् ! स्थापना नाम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! स्थापना नाम सात प्रकार का कहा है. तद्यथा—१ नक्षत्र नाम, २ देव नाम, ३ कुल नाम, ४ पाखंड नाम ५ गण नाम. ६ आजीविका नाम, और ७ अभिप्राय नाम. यह स्थपना नाम सात प्रकार का हुआ ॥ १३४ ॥ अहो भगवन् ! नक्षत्र नाम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! नक्षत्र नाम जैसे कृत्तिका के जन्मे हुए १ कार्तिकी, २ कार्तिकी दिन, ३ कार्तिक धर्म, ४ कार्तिक शर्म, ५ कार्तिक देव, ६ कार्तिक दास, ७ कार्तिक सेन ८ कार्तिक राक्षित.

सूत्र

॥१ रोहिणी हिंजाए, २ रोहिणीए, ३ रोहिणीदिन्ने, ४ रोहिणी धम्मे, ५ रोहिणी सम्मे, ६ रोहिणीदेवे, ७ रोहिणी सेण ८ रोहिणी रक्खिए. एवं सव्वणक्खंत्तेसुनामा भाणियव्वा ॥एत्थसंगहणी गाहाओ—१ कत्तिया, २ रोहणी, ३ मिगसर, ४ अद्दा ५ पुणव्वसुय ६ पुस्सेय, ७ तत्तोय अस्सिलेसा, ९महा, १० दोफगुणीओ ॥ १ ॥ हत्थो १२ चित्ता, १३ साति १४ विसाहा, १५ तहा होइ अणुराहा ॥१६ जेट्ठो १७ मूला १८ पुव्वासाढा. १९ तह उत्तराचेव ॥ २ ॥ २० अभिइ, २१ सवण, २२ धणिट्ठा, २३ सताभिसया २५ दो हुंति भद्दवया ॥ २६ रेवइ, २७अस्सिणी,

अर्थ

यह आठ नाम कहे. ऐसे ही देशरूढी से कार्तिक नाम पीछे प्रत्यय शब्द लगाते हैं वे सब कार्तिकी नाम जानना. ऐसे ही रोहिणी नक्षत्र के जन्मे की रोहिणिक, रोहिणी दिना, रोहिणी धर्म, रोहिणी शर्म, रोहिणी देव, रोहिणी दास, रोहिणी सेन और रोहिणी रक्षित. यों आगे भी सब नक्षत्रों के अनुसार नाम कहना. अब सब नक्षत्रों के नाम कहते हैं. १ कृत्तिका, २ रोहिणी, ३ मृगशर, ४ आर्द्रा, ५ पुनर्बसु, ६ पुष्य, ७ अश्लेषा, ८ मघा, ९ पूर्वा फाल्गुनी, १० उत्तरा फालगुनी, ११ हस्त, १२ चित्रा, १३ स्वाति, १४ विशाखा, १५ अनुराधा, १६ ज्येष्ठा, १७ मूल, १८ पूर्वाषाढा, १९ उत्तराषाढा, २० अभिजित, २१ श्रवण, २२ धनिष्ठा, २३ शतभिषा, २४ पूर्वाभद्र पद, २५ उत्तराभद्र पद, २६ रेवती,

मूल

२८ भरणी; एसाणक्खत्त [illegible] णक्खत्त णामे ॥ १३५ ॥ से किंतं देव णामे ? [illegible] अग्गिए २ अग्गिदिन्ने, ३ अग्गिसम्मे, ४ [illegible] अग्गिसेणे, ८ अग्गि रक्खिए, एवं सव्वणक्खत्त [illegible] णिगाहाउ—१ अग्गि, २ पयावइ, ३ सोमे, ४ रुद्द, ५ अदिती, ६ विहस्सइ, ७ सप्पे, ८ पिती, ९ भग, १० अज्जम ११ सविया, १२ तट्ठा, १३ वाउय, १४ इंदग्गि, १५ मित्तो, १६ इंदो, १७ निरति, १८ आउ

अर्थ

२७ अश्विनी और २८ भरणी. इन नक्षत्रों की परिपासी से नाम कहा जावे सो नक्षत्र नाम. ॥ १३० ॥ अहो भगवन् ! देव नाम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! देव नाम सो उक्त अट्ठाइस नक्षत्रों के अधिष्ठित देवता होते हैं इन के नाम से रखे जैसे-अग्नि देवाधिष्ठित नक्षत्र में जन्मे हुए का १ अग्नि, २ अग्नि दिन, ३ अग्नि शर्म, ४ अग्नि [illegible] ५ अग्नि देव ६ अग्नि दाम, ७ अग्नि सेन, ८ अग्नि रक्षित. इत्यादि. यों सब नक्षत्रों के देवता के नाम [illegible] इन अट्ठाइस नक्षत्र के अठाइस देवता के नाम कहते हैं. १ अग्नि देव, २ प्रजापति देव, ३ सोम देव ४ रौद्र देव ५ अदिति देव, ६ बृहस्पति देव, ७ सर्प देव, ८ प्रीति देव, ९ भगदेव, १० अर्जव देव ११ सविता देव, १२ तुष्टा देव, १३ वायु देव, १४ इंद्राग्नि देव, १५ मित्र देव, १६ इन्द्र देव, १७ निरति देव, १८ आयु देव, १९ विश्व देव, २० ब्रह्मदेव

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

१९ विसोय, २० बंभ, २१ विण्णु, २२ अवसु, २३, वरुणे, २४ अय, २५ विवद्धा २६ दुस्सा २७ असो, २८ जमे चेव॥१॥ से तं देवतानामे !।१२६।।से किंतं कुल नामे? कुलनामे ! उग्गे २ भोगे, ३ राइओ. ४ क्खत्तिए. ५ इक्खागे, ६ णाते, ७ कोरवे से तं कुल नामे ॥१२७॥से किं तं पासंड नामे ? पासंड नामे! समणे, पंडुरंगे, भिक्खू, काविलाउय, तावसए, परिवायए. से तं पासंड नामे॥ १२८ ॥से किं तं गण नामे? गणे नामे !

अर्थ

२१ विष्णु देव, २२ वसुदेव, २३ वरुण देव, २४ अजा देव, २५ विवृद्ध देव, २६ पुष्य देव २७ आसो देव, २८ मयदेव. इत्यादि देवताओं के नाम से नाम रचे सो देव नाम जानना. ॥ १२६ ॥ अहो भगवन् ! कुल नाम किसे कहते हैं? अहो शिष्य! जिस कुल में उत्पन्न हुवा हो उसी कुल के नाम से प्रसिद्धि होवे सो कुल नाम. जैसे उग्रकुल में उत्पन्न हुए सो १ अग्रकुलोत्पन्न, राज कुलोत्पन्न, भोग कुलोत्पन्न, क्षत्रिय कुल, इक्षाग कुल, ज्ञातकुल, और कौरव कुल, इत्यादि कुलानुसार नाम देव सो कुल नाम. ॥ १२७ ॥ अहो भगवन् ! पाखंड नाम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! पाखंड नाम सो १ श्रमण, २ पंडरंग, ३ भिक्षुक, ४ कपिल, ५ तापस और ६ परिव्राजक, यह पाखंड नाम हुवा. ॥ १२८ ॥ अहो भगवन् ! गण नाम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! गण नाम सो जैसे मल्ल होने से

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

यल्ले, मल्लदिन्ने, मल्लधम्मे, मल्लसम्मे, मल्लदासे. मल्लसेणे, मल्लरक्खिए. सेतं गण नामे ॥ १३९ ॥ से किं तं जीवित हेऊ नामे ? जीवित हेऊ नामे ! अवकरवए, तुतुरुडिए उज्झियए, कज्जवए,सुप्पए,से तं जीवित त हेऊ नामे ॥ १४० ॥ से किंतं आभिप्पाइ नामे ? आभिप्पाइनामे ! अंबए, निंबए, बंबूलए, बकुलए, पलासए सिलए, पीलूए, करीरए, सेतं आभिप्पाइ नामे ॥ से तं ठवणाणप्पमाणे ॥१४१ ॥ से किं तं दव्वप्पमाणे ? दव्वप्पमाणे ! छव्विहा पण्णत्ता तंजहा—धम्म

अर्थ

१ मल्ल, २ मल्ल दीन, ३ मल्ल धर्म. ४ मल्ल शर्म, ५ मल्ल देव ६ मल्ल दास, ७ मल्ल सेन. ८ मल्ल रक्षित, इत्यादि नाम रखे सो गण नाम जानना. ॥ १३९ ॥ अहो भगवन् ? जीवित हेतु नाम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! बालकों को दीर्घ काल जीवित रखने के लिये जो नाम दिया जाता है. सो जैसे १ कचरा, २ उकरडा. ३ उज्झित.४ कांजो,५सपडियो बबुं ६ इत्यादि जीवित नाम हेतु जानना. ॥ १४० ॥ अहो भगवन् ! अभिप्राय नाम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! अभिप्राय नाम सो गुन की अपेक्षा सहित अपने अभिप्राय से परूप नाम को स्थापन करे. जैसे आम्ब, नीब, चम्बू, बकुल, पलास, सिलक, पीलक, करी. यह अभिप्राय नाम जानना. यह स्थापना नाम का कथन हुवा. ॥ १४१ ॥ अब अहो भगवन् ! द्रव्य प्रमाण नाम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! द्रव्य प्रमाण नाम के छ भेद कहे है

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

त्थिकाए जाव अधासमए से तं दव्वप्पमाणे ॥ १४२ ॥ से किं तं भावप्पमाणे ? भावप्पमाणे ! चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा–समासिए, ताद्धितए, धाउए, निरुत्तीए ॥ २४३ ॥ से किं तं समासए ? समासए ! सत्तसमासा भवंति तंजहा- १ द्वंद्वय, २ बहुव्वीही, ३ कम्म धारए, ४ द्विगूय, ५ तप्पुरिसे, ६ अव्वइ भावे, एगसेसउसत्तमे ॥ ॥ १४४ ॥ से किं तं द्वंद्वे ? द्वंद्व–दंताश्च ओष्टौच-दंतोष्टम्. स्तनौच उदरंच–स्तनोदरं वस्त्रंच पात्रंच–वस्त्रपात्रम अश्वाश्च, महिषाश्च-

अर्थ

तद्यथा–१ धर्मास्तिकाया. २ अधर्मास्तिकाया, ३ आकाशास्तिकाया, ४ जीवास्तिकाया, ५ पुद्गलास्तिकाया और ६ अद्धासमय. यह द्रव्य प्रमाण हवा. ॥ १४२ ॥ अहो भगवन् ! भाव प्रमाण किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! भाव प्रमाण चार प्रकार से कहा गया हैं. तद्यथा–१ सामासिक, २ तद्धित, ३ धातु और ४ निरुक्त ॥ १४३ ॥ अहो भगवन् ! समास किसे कहते है ? अहो शिष्य ! समास सात प्रकार से कहा है. तद्यथा–१ द्वंद्व, २ बहुव्रीहि, ३ कर्मधारय, ४ द्विगु, ५ तत्पुरुष, ६ अव्ययी भाव और ७ एक शेष, ॥ १४४ ॥ अहो भगवन् ! द्वंद्व सामास किस कहते हैं ? अहो शिष्य ! द्वंद्व समास के मुख्याता से दो भेद होते हैं. एक अवयव प्रधान और दुसरा समाहार प्रधान. इन में से यहां समाहार प्रधान के उदाहरण कहते हैं. जैसे दंताश्च ओष्टौच–दंतोष्टम, स्तनौच उदरंच: स्तनोदरम्, वस्त्रंच पात्रंच–वस्त्र

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

अश्वमहिषं, अहिश्च नकुलंच—अहिनकुलम्. से तं दंदे ॥ से किं तं बहुव्रीही ? बहुव्रीही ! समासे ! फुल्लाइमंमि गिरिंमिकुडयकलंबा सो इमोगिरी—फुलिय कुडय कलंबो से तं बहुविही समासे॥से किं तं कम्म धारए ? कम्म धारए ! धवलो वसहो—धवलवसहो,किण्हो मिग्गो, किण्हमिगो सेतोपडो—सेउपडो, रत्तो-पडो-रत्तपडो,

अर्थ

पात्रम्, अश्वाश्च महिषाश्च-अश्वमहिषम् अहिश्च नकुलंच अहिन कुलं. यह द्वंद्वसमास हुवा. अहो भगवन् ! बहुव्रीहि समास किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! बहुव्रीहि समास तीन प्रकार से कहा गया है जैसे—उत्तर पदार्थ प्रधान, उभय पदार्थ प्रधान अथवा अन्य पदार्थ प्रधान. परंतु यहां उदाहरण में मात्र अर्थ पदार्थ प्रधान बताया गया है. जैसे इस पर्वत में कुटज कलंबुके वृक्ष प्रफुल्लित बने हैं, इस से यह प्रफुल्लितकुटज कलंबः अय गिरिः यह अन्य पद प्रधान बहुव्रीही समास हुवा. अहो भगवन् ! कर्म धारय समास किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! कर्म धारय दो प्रकार से प्रतिपादन किया गया है. जैसे-उत्तर पद प्रधान पूर्व पद प्रधान. सूत्र में मात्र उत्तर पद प्रधान के उदाहरण दिये गये हैं. जैसे धवलश्चासो वृषभः धवलवृषभः. कृष्णश्चासौ मृगः कृष्णमृगः श्वेतश्चासो पटः श्वेतपटः, रक्तश्चासो पटः रक्तपटः, यह कर्मधारय समास हुवा. अहो भगवन् ? द्विगु समास किसे कहते हैं ? अहो शिष्य !

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

से तं कम्म धारए॥से किं तं द्विगु ?तिणि कडुगा ? द्विगु तिकिटुगं, तिणि।महुरा।णि-तिमहुरं, तिणि गुणा—तिगुणं, तिणिपुराणि—तिपुरं, तिणिसराणि—तिसरं, तिणि पुक्खराणि—तिपुक्खरं, तिणिं विंदुया—तिणिविंदुयं,तिणिपहा—तिपहं, पंचनदीउ— पंच नंदं, सत्तगया—सत्तगयं, नवतुरंगा—नवतुरंगं, दसगांमा—दसगामं, दस×पुराणि-

अर्थ

संख्या वाची शब्दों से समाहार किया जावे वह द्विगु समास है. जैसे कि त्रीणि कुटकानि समाहृतानि त्रिकुटकम् अर्थात् तीन कटुक वस्तुओं का समाहार किया तब त्रिकटुक हुवा. वैसे ही त्रीणि मधुराणि समाहृतानि त्रिमधुरम् त्रयानाम गुणानांम समाहारः त्रिगुणम् तीन गुणों का समाहार सो, तीन पुरों के समाहार को त्रिपुरम्, तीन सुरों के एकत्व करने पर त्रिसरम् तीन कमलों के एकत्र करने पर त्रिपुष्कर्, तीन विंदुओं के एकत्व होने पर त्रिविंदुकम्, तीन पथ के एकत्व होने पर त्रिपथम् पांच नदियों के समाहार होने से पंचनदिकं. सात हस्तियों एकत्रित होने पर सप्तगजम्. नव अश्वों के एकत्रित होने पर नव तुरंगम्, दश ग्राम के समुह को दशग्रामम्, दश पुर के समुह को दशपुरम्. यह द्विगुसमास का कथन हुवा. अहो भगवन् ! तत्पुरुष समास किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! तत्पुरुषसमास के आठ भेद होते हैं. सात विभक्तियों के सात और आठवा नर तत्पुरुष. परंतु सूत्र में मात्र सप्तमी विभक्ति के तत्पुरुष

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

दसपुरं, से तं द्विगु ॥ ॥ से किं तं तप्पुरिसे ? तप्पुरिसे—तित्थे कागो—तित्थकागो, वणेहत्थी—वणहत्थी, वणेवराहो-वणवराहो, वणेमहिसो-वणमहिसो, वणेमउरो—वणमउरो, से तं तप्पुरिसे ॥ से किं तं अव्वई भावे ? अव्वइ भावे-अणुगामं—अणुणदियं अणुफरिहं—अणुचरिहं से तं अव्वइ भावे ॥ से किं तं एगसेसे ?

अर्थ

समास दिखलाये गये हैं. जैसे तीर्थ में काक रहता हैं वह तीर्थ काकः वन में हस्ती होता है उसे वन हस्ती कहते हैं, वन में वराह रहता है उसे वन वराह कहते हैं, वन में महिष रहता हैं उसे वन महिष कहते हैं, वन में मयुर रहता, उसे वन मयुर कहते हैं. यह तत्पुरुष समास हुवा, अहो भगवन् ! अव्ययी भाव समास किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! अव्ययी भाव सामस के निम्नोक्त उदाहरण हैं जैसे—ग्राम के समीप सो अनुग्राम. नदि के समीप सो अनुनदी, खाइ के समीप सो अनुफरिहा, और जो मार्ग के समीप है सो अनुचारियम् है यह अव्ययी भाव समास हुवा. अहो भगवन् ! एक शेष समास किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! जो सामान्य जाति के वाचक शब्द हैं उन का लोपकर जब एक पद शेष रहजाय उसे एक शेष समास कहते है परंतु वह एक शेप समास पूर्व पदों का भी वाचक रहेगा जैसे पुरुषश्च पुरुषश्च=पुरुषौ. यहां पुरुष शब्द को द्विवचन में रखने से दो वार लिखने की आवश्यक्त

For Private and Personal Use Only

सूत्र

एगसेसे ! जहा एगो पुरिसो तहा बहवे पुरिसा, जहा बहवे पुरिसा तहा एगो पुरिसो, जहा एगो करिसावणो तह बहवे करिसावणा, जहा बहवे करिसावणा तहा एगो करिसावणो, जहा एगासाली तहा बहवे साली, जहा बहवे साली तहा एगासाली, से तं एगसेसे ॥ से तं समासिए ॥ १४९ ॥ से किं तं तद्धीए? तद्धितीए ! अट्ठविहे पण्णत्ता तंजहा—१ (गाहा) कम्मे, २ सिप्प, ३ सिलोए, ४ संजोग, ५ समीवउथ, ६ संजुह, ॥ ७ इस्सरिय, ८ अवच्चणेय, तद्धित नामंतु

अर्थ

रही नहीं. अब इस के दृष्टांत जैसे एक पुरुष है वैसे ही अन्य बहुत पुरुष हैं और जैसे बहुत पुरुष हैं वैसे ही एक होता है. जैसे एक शाली है वैसे ही अन्य शाली है और जैसे अन्य शाली है वैसे ही एक शाली है. जैसे एक सुवर्ण मुद्रा है. वैसे ही अन्य बहुत सुवर्ण मुद्रा है और जैसे अन्य बहुत सुवर्ण मुद्रा है वैसे ही एक सुवर्ण मुद्रा है. यह एक शेष समास हुवा यह समास का कथन संपूर्ण हुवा. ॥१४९॥ अहो भगवन् ! तद्धित किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! तद्धित के प्रत्यय लगने से जो नाम होता है उसे तद्धितज कहते हैं. इस के आठ भेद कहे है तद्यथा—१ कर्म नाम २ शिल्प नाम, ३ श्लोक नाम, ४ संयोग नाम, ५ समीप नाम, ६ संयूथ नाम, ७ ऐश्वर्य नाम और ८ अपत्य नाम. प्रश्न—कर्म नाम किसे कहते हैं ? उत्तर—कर्म नाम के उदाहरण निम्न प्रकार से हैं जैसे-तृण हारक, काष्ठहारक, पत्रहारक

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

अट्ठविहं ॥ १ ॥ से किं तं कम्मनामे ? कम्मनामे ! तणहारए, कट्ठहारए, पत्ताहारए, दोसीए, सोत्तिए, कप्पासिए, भंडवे, आलिए, कोलालिए, से तं कम्म नामे ॥ से किं तं सिप्पनामे ? सिप्पनामे ! वत्थिए, तंतिए तुन्नाए, तंतुवाए, कडकारे, पट्टकारे, छत्तकारे, चित्तकरे, दंतकारे, लेप्पकारे, कोट्टिमकारे से तं सिप्पनामे ॥ से किं तं सिलोयनामे ? सिलोएनामे ! समणे, माहणे, सव्वातिही, से तं सिलोगनामे ॥ से कि तं संजोयनामे ? संजोयनामे !

अर्थ

अर्थात् तृण, काष्ट व पत्र लाने वाला, दौहिक-वस्त्र बेचने वाला, सौत्रिक, सूत्र बेचने वाला, कार्पासिक-कपास बेचने वाला, कौलालिक- भाजन बेचने वाला, भांड वैचारिक-कांस्यादिक का विक्रय करने वाला यही कर्म नाम है. प्रश्न-शिल्प नाम किसे कहते हैं ? उत्तर-शिल्प नाम इस प्रकार से हैं. वस्त्र के शिल्प का ज्ञाता सो वास्त्रिक, इसी प्रकार तांत्रिक, तंतुओं का समाहार करने वाला, तंतुवाय, पट्टवाय, तंठउवइ, वसट, मुंज के कर्म करने वाले मुंजकार; काष्टकार, छत्रकार, वस्त्रकार ! पुस्तकारक पुस्तक लिखने वाला, चित्रकार, दांतकार, शिल्पकार, लेपकार, भूमि आदि सम्मार्जन करने वाला कोट्टिमकार, यह सब शिल्प नाम का कथन हुआ. प्रश्न श्लाघनीय तद्धित नाम किसे कहते हैं ? उत्तर-श्लाघा पूर्वक तद्धित नाम निम्न प्रकार से है श्रमण, ब्राह्मण सर्व आतिथिये सब स्तवनीय नाम साधु

सूत्र

रन्नोससुरए, रन्नो जामाउए, रन्नोसाले, रन्नोसादुए, रण्णो भगिणीपत्ती. सेतं संजोयनामे ॥ से किं तं सामिवनामे ? सामिवनामे ! गिरिसमविनगर—गिरिनगरं, विदिसाए समीवे नगरं—विदिसानगरं, वेनाए समीवेणगरं—वेणाए नगरं, नगरस्स समीवे नगरं—नगरायडं, से तं समीव नामे ॥ से किं तं संजूहे नामे ? संजूहे नामे ! तरंगवतीकारे मलयवतीकारे, अत्ताणुसट्ठिकारे, विंदुकारे, से तं संजूह नामे ॥ से

अर्थ

पद में देखे जाते हैं; परंतु श्लाघनीय अर्थ की उत्पत्ति हेतुभूत अर्थ मात्र में तद्धित प्रत्यय होते हैं इसलिये श्रमण भवं श्रामण्यं. यह तद्धित रूप हुवा. यह श्लोक नाम हुवा. प्रश्न— संयोग नाम किसे कहते हैं ? उत्तर—संयोग नाम-उसे कहते हैं कि जिस से संयोग पूर्वक उच्चारण किया जाय. जैसे कि राजश्वसुर-राजा का श्वसुर, राजा का जामाता, राजा का साला राजा का दूत., राजा की भगिनी के पति, यह संयोग नाम हुवा. प्रश्न—समीप नाम किसे कहते हैं ? उत्तर—इस के उदाहरण निम्न प्रकार से हैं. जैसे गिरि समीप जो नगर होता है, वह गिरिनगर है, जो विदिशा के समीप नगर है वह विदिशा नगर है, वेणा नदी के समीप जो नगर है वह वेणाय नगर, जो नगर के समीप नगर होता है वह नगराय नगर है. यही समीप नाम है. प्रश्न—संयूथ नाम किसे कहते हैं ? उत्तर—संयूथ नाम के उदाहरण निम्न प्रकार से हैं, जैसे तरंगपतिकारक मलयपति कारक, आत्मानुपष्टि कारक,

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







मूल

किंतं इस्सरिय नामे ? इस्सरिय नामे ! इस्सरे, तलवरे, माडंबिए, कोडंबिए, इब्भ सेट्ठी, सत्थवाहे, सेणावइ, से तं इस्सरिय नामे॥ से किं तं अवच्च नामे ? अवच्चनामे अरिहंत माया, चक्कवट्टीमाया, बलदेवमाया, वासुदेवमाया, रायमाया, मुणिमाया, गणंमाया, वायगमाया, से तं अवच्चनामे ॥ से तं ताद्धितए ॥ १४६ ॥ से किं धातुए ? धातुए ! भू सत्तायाम् परस्मै भाषा. एध वृद्धौ, स्पर्ध संघर्षे गाधृ

अर्थ

विदूकारक. यह संयूथ नाय हुवा. प्रश्न–ऐश्वर्य नाम किसे कहते हैं ? उत्तर–ईश्वर, तलवर माडंबिक, कौटुम्बिक, सेठ. सेनापति सार्थवाह इत्यादि ऐश्वर्य नाम है. प्रश्न–अपत्य नाम किसे कहते हैं ! उत्तर–अपत्य नाम उसे कहते हैं. कि जो पुत्र के नाम से माता का नाम प्रसिद्ध हो जैसे तीर्थंकर की माता, चक्रवर्ती की माता, बलदेव की माता, वासुदेव की माता, राजा की माता, मुनि की माता, गण की माता, वाचकाचार्य की माता. यह अपत्य नाम का कथन हुवा. वह तद्धित नाम का कथन हुवा. ॥ १४६ ॥ प्रश्न–धातु कौनसे २ हैं उत्तर–भू धातु विद्यमान अर्थ में हैं. उस के परस्मै भाषा में भवति. भवतः, भवंति; भवसि. भवथः, भवथ; भवामि. भवावः भवामः ये रूप होते हैं, एध धातु वृद्धि अर्थ में है, स्पर्ध धातु संघर्ष अर्थ में होता है, गाधृ धातु प्रतिष्ठा लिप्सा ( इच्छा ) व संचय अर्थ में होता है, और बाधृ धातु विलोकन अर्थ में होता है, इन के परस्मै पद आत्मने पद, सेट्, अनिट्, सकर्म का, अकर्मक और

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सूत्र

प्रतिष्टालिप्ताग्येत्र वाघृरोट ( लोडने ) से तं धाउए ॥ १४७ ॥ से किंतं निरुत्तिए ? मह्यां शेतेमहिष, भ्रमति चरोतिति भ्रमरः महर्मुहुर्लसतीति मुसलं कपिरिवकंपते कपित्थं चिदिति करोति खलंच भवति चिक्खल्लं उर्द्धकर्णः उलूकः मेषस्यमाला मेखला सेत्तं निरुत्तए ॥ सेतं भावप्पमाणे ॥ सेतंप्पमाणेणं ॥ से तं दसनामे ॥ नामेतिपयं सम्मत्तं ॥ १४८ ॥ * * * *

अर्थ

भाव कर्म में भिन्न २ रूप बनाये जाते हैं. इन का पूर्ण विस्तार व्याकरण से जानना. यहां सूत्र में तो मात्र सूचना रूप दिया है. ॥ १४७ ॥ प्रश्न-निरुक्ति किसे कहते हैं ? उत्तर—जो वर्णों के अनुसार अर्थ किया जावे उसे निरुक्ति कहते हैं. जैसे मह्यां शेते इति महिषः. अर्थात् पृथ्वी में जो शयन करता है वह महिष भैंसा, भ्रमति रौति इति भ्रमरः जो भ्रमण करता हुवा शब्द करता है वह भ्रमर, मुहुर्मुहु र्लसति इति मुसलं अर्थात् जो वारंवार ऊंचे नीचे जाता हैं. वह मुसल, कपि जैसे वृक्ष की शाखा, में लंबायमान होवे और चेष्टा करे सो कपित्थ. पादों को श्लेष करने वाला व पादों को स्पर्श होकर कठिन करने वाला वही चिक्खल है, जिस के कर्ण ऊर्ध्व हो वह उल्लू, मुख की माला वही मेखला है, यह, निरुक्ति तद्धित का कथन हुवा. यह भाव प्रमाण का स्वरूप हुवा. यह प्रमाण का कथन हुवा. यह दश नाम का विवर्ण हुवा. यह नाम पद संपूर्ण हुवा. ॥ १४८ ॥ *



For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

से किं तं पमाणे पमाणे? चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा-१ दव्वप्पमाणे, २ खेत्तप्पमाणे, कालप्पमाणे, ४ भावप्पमाणे ॥ १ ॥ से किं तं दव्वप्पमाणे ? दव्वप्पमाणे दुविहे पण्णत्ते तंजहा-पदेस निप्फन्नेय, विभाग निप्फन्नेय॥से किं तं पदेस निप्फन्ने ? पदेस निप्फन्ने ! परमाणु पोग्गले, दुपएसिए जाव दसपएसिए, संखेज्जपएसिए, असंखेज्ज पएसिए, अणंत पएसिए, से तं पदेस निप्फन्ने ॥ से किं तं विभाग निप्फन्ने ? विभाग निप्फन्ने ! पंचविहे पण्णत्ता तंजहा-१ माणे, २ उम्माणे, ३ ओमाणे

अर्थ

अहो भगवन् ! प्रमाण किसे कहते हैं ? हे शिष्य ! प्रमाण के चार प्रकार कहे हैं तद्यथा- १ द्रव्य प्रमाण, २ क्षेत्रप्रमाण, ३ कालप्रमाण, और ४ भावप्रमाण ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! द्रव्यप्रमाण किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! द्रव्यप्रमाण के दो भेद कहे हैं, तद्यथा-१ प्रदेश निष्पन्न और २ विभाग निष्पन्न ॥ अहो भगवन् ! प्रदेश निष्पन्न द्रव्य प्रमाण किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! प्रदेश निष्पन्न द्रव्य प्रमाणसो-पर प्रमाणु पुद्गल, द्विप्रदेशिकस्कन्ध, यावत् दशप्रदेशिक स्कन्ध, संख्यात प्रदेशी स्कन्ध, असंख्यात प्रदेशिक स्कन्ध, यह प्रदेश निष्पन्न हुवा ॥ अहो भगवन् ! विभाग निष्पन्न किसे कहते है? अहो शिष्य! विभाग निष्पन्न सो-अपने प्रदेश छोडकर अपद विविध अथवा विशिष्ट जो भासविकल्प तथा प्रकार उस कर जो निष्पन्न हो वह विभाग निष्पन्न, उस के पांच प्रकार कहे हैं, तद्यथा-१मान, २

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

४ गणिमे, ५ पडिमाणे ॥ २ ॥ से किं तं माणे ? माणे दुविहे पण्णत्ता तंजहा— धन्नमाण प्पमाणेय, रसमाण प्पमाणेय ॥ से किं तं धन्नमाण प्पमाणे ? धन्नमाण प्पमाणे दो असघा उपसती, दो पसिउ सेतिती, चत्तारिसेइ आउकुलओ, चत्तारि कुलया पत्थो, चत्तारि पत्थो आढगं, चत्तारि आढगाइ दोणो, सट्ठिआढयाइ जहन्नए कुंभे, असीति आढयाइं मज्झम कुंभे, आढगसयं उक्कोसए कुंभे, अट्ठसय आढय-

अर्थ

उन्मान, ३ ओमान, ४ गणितमान और ५ प्रतिमान ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! मान किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! मान के दो प्रकार कहे है तद्यथा—१ धान्य के मान का प्रमाण और २ रस के मानका प्रमाण ॥ अहो भगवन् ! धान्य के मान का प्रमाण किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! धान्य के मानका प्रमाण सो दोनों हाथ की हथेलीयों मिलनेसे एक पसली हो. दोपसलीकी एकसेती ※ चार सेती एक कुवड, चार कुवड एक पात्था, चार पाथा का एक अढक, चार अढक का एक द्रोण, साठ अढकका जघन्य कुंभ, अस्सी अढक का मध्यम कुंभ, सो अढक का उत्कृष्ट कुंभ, एकसो आठ अढक का एक वाहो, अहो भगवन् ! यह धान्य मान प्रमाण से क्या प्रयोजन है ? अहो शिष्य ! इस धान्य मान प्रमानकर—१ मुक्तोली-कोठी, २ मुख-बडी कोठी, इढर-

---

※ यह मगध देशका मान कहते हैं.

For Private and Personal Use Only

सूत्र

सतीए व'ही, एएणं धन्नमाण प्पमाणं किं पओयणं ? एतेणं धन्नमाण प्पमाणेणं— मुत्तोली, मुहव इडुर, अलिंद, अयचारि, संसित्ताणं, धन्नमाणप्पमाणणिवत्त लक्खणं भवति, से तं धन्नमाण प्पमाणे ॥ १ ॥ से किं तं रसमाण प्पमाणे ? रसमाण प्पमाणे धन्नमाण प्पमाणाओ चउभागविवड्डिए अब्भंतर सिहाजुत्ते रसमाण प्पमाणे विहिज्जंति तंजहा— १ चउसट्ठिया ४, २ बत्तीससियं ८, ३ सोलसिया १६, ४ अट्ठभाइया ३२, चउ

अर्थ

गाडीपर रखने की कोठी. ४ अलिन्द-गंत्रीपर धरसो चिनेकी कोठी. ५ अपचारी कुडा धान्य का कोठार सब धान्य भरने के बरतनादि तथा धान्य मापनेके भाजन में का परिज्ञान इस से होता है. यह धान्य मान प्रमान हुवा ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! रसमान प्रमान किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! रसमान प्रमान सो इस धान्यमान प्रमाण से चार भाग अधिक और आभ्यंतर शिखायुक्त क्यों कि धान्य के जैसी रसकी शिखा नहीं चडती है. इस लिये इसे रसमान कहना. तद्यथा—एक माणीका चौसठवा भाग चारपल प्रमाण सो चोसठीया, एकमाणी के बत्तीस विभाग आठपल प्रमाण सो बत्तीसीया, एक माणी का सोलवा भाग वह सोलसिया, एकमाणी का आठवाभाग अठभइया, एकमाणी का

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

भाइया ६४, ६ अद्धमाणी १२८, ७ माणी २५६, दो चउसट्ठियाओ, चउप्पलमाणाउ बत्तीसिया ॥ १ ॥ दो बत्तीसियाउ, सोलसियाउ, दोसोलसियाओ, अट्ठभागिया, दो अट्ठभागिया, चउभागिया, दो चउभागीयाउ, अद्धमाणी दो अद्धमाणीउ, माणी ॥ एएणं रसमाण प्पमाणेणं किं पओयणं ? एएणं रसमाण पमाणेणं—१ वारक २ घडक, ३ करक, ४कलस, ५ ककरि, ६ दइय,७करोडिय ८कुंडियं;९संसित्ताणं रसाणं. रसमाण प्पमाणं निवत्ति लक्खणं भवति॥सेतंरसमाण पमाणे ॥ से तं माणे ॥ ४ ॥ से किं तं उम्माणे ! जण्णं उमिणिज्जइ तंजहा—१

अर्थ

चौथा भाग प्रमाण वह चउभाइया. आधीमाणी सो अर्धणा, और २५६ पलकी एक पूरीमाणी. चार पलप्रमाण चौसठीया, वैसे दो चौसठीया. चार पल प्रमाण बत्तीसीया, दो बत्तीसीया का सोलसिया. दो सोलसीयाका अठभागीया. दो अठभागीया का चउभागीया. दो चउभागीया की आधीमाणी. दो आधीमाणी, की पूरीमणी. ॥ अहो भगवन् इस प्रमाण का प्रयोजन है ? अहो शिष्य इस रस प्रमाण से १. बडा. घडा. २ छोटा कुंभ. ३ गागर. ४ कलश. ५ दीवडी—बत्थी. ६ करोडिय, ७ कुंडी. ८ संक्तिक-पली. ९ार चमचा रसमान प्रमान से इन का निवृति लक्षण प्रमाण होता है. यह रस मान प्रमाण हुवा ॥ और यह मान भी हुवा ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! उन्मान किसे कहते हैं ? अहे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

अद्ध करिसो, २ करिसो, ३ अद्धपलं, ४ पलं, ५ अद्ध तुला, ६ तुला, ७ अद्ध भारो, ८ भारो,॥ १ दो अद्ध करिसो करिसो २ दो करिसो अद्ध पलं, ३ दो अद्धपलाइ पलं, ४ पंच पलसइया तुलं, ५ दसतुलाओ अद्धभारो, ६ बीसतुलाओ भारो ॥ एएणं उम्माण प्पमाणेणं किं पओयणं ? तेणं एएणं उम्माणप्पमाणेणं पत्ता गुरु तगरचोय कुंकुम, खंड, गुल, मच्छंडि आदीणं दव्वाणं उम्माणप्पमाण निवत्ति लक्खण भवति ॥ सेतं उम्माणे ॥ ५ ॥ से किंतं ओमाणे ? ओमाणे ! जण्णं

अर्थ

शिष्य ! उन्मान सो जो उन्मानका निजस्व रूपपने स्थापन करे सो तद्यथा—१ पल्यका आठवा भाग अर्ध कर्षा. २ पल्यका चौथा भागकर्ष. ३ आधापल्य. ४ पल्य. साढी बावन पलकी अर्ध तुला, तुला, १०५० पलका आधाभार, २१०० पल्य का पूर्ण भार, दो अर्धकर्षा का, एक कर्ष, दो कर्ष अर्ध पला, दोआधे पल का पल, १०५ पल एक तुला, पांच अर्ध तुला सो साढी बावन पल, दश तुला आधाभार १०५० पल, बीसतुला एकभार ॥ अहो भगव ! इस उन्मान से क्या प्रयोजन है ? अहो शिष्य ! उन्मान प्रमान कर तमाल पत्रादि पत्र, अगर, तार, चूवा, कुंकम, खांड ( सक्कर ) मच्छंडी (मिश्री) आदि द्रव्य का उन्मान प्रमान का निवृत्ति लक्षण होता है यह उन्मान प्रमान हुवा. ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! उन्मान किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! जिस का





For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

ओमिणिज्जइ तंजहा—हत्थेणवा, दंडेणवा, धणुकेणवा, जुगेवा, नालियाएवा, अक्खेणवा, मुसलेणवा, ( गाहा ) दंड धणु जुग नालियाय, अखमुसलं च,॥ चउत्थं, दस नालियंच, रज्जु वियाणतो माणंसणाए ॥ १ ॥ वत्थुमि हत्थमेज्जं, खिते दंडं धणुं च पत्थमि ॥ खीयं च नालियाए, वियाणतो माणसणाए ॥२॥ एएणं ओमाणप्पमाणेणं ।कि पओयणं ? एएणं ओमाणप्पमाणेणं खायाचिय करगाचित्त कड

अर्थ

खाइ प्रमुख भूमी का माप किया तद्यथा—१ हाथकर, चार हाथ के दंडकर, इतना ही धनुष्य कर, जुग-धूसरे कर, नाली कर, आखे कर मुशल कर× यह दंड-धनुष्य जुग नाली अक्ष मुशल चार हाथ के हों ऐसे दश नाली की रज्जु ( रस्सी ) यह मानोन्मान की सम्पदा जानना- घर की भूमीका में हाथ का माप जानना. खेत की भूमिका में दंड का माप जानना. पंथकी भूमिका में धनुष्य का मपान जानना, कूपादि में नाली का मान जानना. यों युगादि का भी जानना. अहो भगवन् ! इस ओमान प्रमान से क्या प्रयोजन है ? अहो शिष्य ! इस ओमान प्रमान कर कूप खाइ आवास में कात्र घर वांसकडा

× यह सब चार हाथ प्रमाने जानना. परंतु सब अलग २ वस्तु के मापने में आते हैं इसलिये इन के यहां अलग २ नाम कहे हैं.

For Private and Personal Use Only

सूत्र

पड निवि परिरसव संसित्ताण दव्वाणं ओमाणप्पमाण निवत्तलक्खणं भवति ॥ सेतं ओमाणे ॥ ६ ॥ से किंतं गणिमे ? ! जण्णं गणिज्जइ—एगो, दस, सयं सहस्स दससहस्साइं, सयसहस्सा, दससयसहस्साइं, कोडी, ॥ एतेणं गणिम प्पमाणेणं किं पओयणं ?एएणं गणिमप्पमाणेणं भयंग भित्ति भत्तवेयण, आयव्वयं संसियाणं दव्वाणं गणिम प्पमाण निवत्त लक्खणं भवति, से तं गणिमे॥ ७ ॥ से किं तं पडिमाणे ? पडिमाणे ! जण्णं पडिमिज्जंति तंजहा—गुंजा, कांगणी, निप्फावो,

अर्थ

वस्त्र भींत कोटादि का प्रमाण की निवृत्ति होती है यह ओमान प्रमाण हुवा ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! गणित प्रमाण किसे कहते हैं? अहो शिष्य ! गणित प्रमाण सो-जिस की संख्या गिनती कीजावे यथा-एक दश, सो, हजार, दश हजार, लाख, दशलाख, क्रोड, इत्यादि ॥ अहो भगवान ! इस गणित प्रमाण से क्या प्रयोजन है ? अहो शिष्य ! इस गणित प्रमाण कर काम करने वाला भृत्य नौकर को भोजन देकर रखे तथा रूपयादि देकर रखे जिनकी पगारका प्रमाण तथा आयव्याय का निवृत्ति लक्षण होता है ॥ यह गणित द्रव्य का प्रमाण हुवा ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! प्रतिमान प्रमाण किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ? पडिमान प्रमाण सो सुवर्णादि वस्तु का उस के प्रतिरूप वस्तुसे उस का प्रमान किया जावे

सूत्र

कम्ममासओ, मंडलओ, सुवण्णो, ॥ पंचगुंजाओ, कम्ममासओ, चत्तारि कांगणीओ कम्ममासओ, तिण्णि निप्फावा कम्ममासओ, एवं चउक्को कम्ममासओ, बारस कम्ममासया मंडलओ, एवं अडयालीसाओ, कागणीओ, मडलओ, सोलस कम्म मासया सुवण्णो, एवं चउसट्ठि कागणीउ सुवण्णो, एएणं पडिमाण प्पमाणेणं किं पउयणं ? एएणं पडिमाण प्पमाणेणं सुवण्ण रजत मणि मोत्तिय संख सिलप्पवाला दीण दव्वाणं पडिमाण प्पमाण निवत्त लक्खण भवति, से तं पडिमाणे ॥ से तं विभाग निप्फन्ने ॥ से तं दव्वप्पमाणे ॥ ८ ॥ से किं तं खेत्तप्पमाणे ? खेत्त-

अर्थ

सो प्रतिमान प्रमाण कहिये तद्यथा—गुंजा ( चिरमी ) सवागुंजा की कांगनी, निफाव, तीन निफाव का एक मासा, बारेमासा एक मंडलिक, सोले कर्म मासा, चार कांगनी एकमासा तीन निफाव, एक कर्म मासा, चार कागुनी से निष्पन्न चतु कर्म मासा, का बारे कर्म मासा एक मंडलक, यों अडतालीस कागुनी का एक मंडलक जानना, सोले कर्म मासा का एक सौनइया. चौसठ कागुनी का एक सानैया. अहो भगवन् ! इस प्रतिमान प्रमाण से क्या प्रयोजन है ? अहो शिष्य इस प्रतिमान प्रमानकर सुवर्ण, चान्दी, मणि, मोती शंख ( दक्षिणावर्त ) शिला, प्रवाल आदि द्रव्य का प्रमाण रूप निवृति लक्षण होता है. यह प्रतिमान प्रमान हुवा ॥ और यह विभाग निभाग भी हुवा ॥ और यह द्रव्य प्रमान भी हुवा ॥ ८ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

प्पमाणे ! दुविहे पण्णत्ते तंजहा—पदेस निष्फन्नेय विभाग निष्फन्नेय ॥ ९ ॥ से किं तं पदेस निष्फन्ने ? पदेस निष्फन्ने ! एगपदेसोगाढे, दुपएसोगाढे, तिपएसोगाढे, संखिज्ज पएसोगाढे, असंखिज्ज पएसोगाढे, से तं पदेस निष्फन्ने ॥ १० ॥ से किं तं विभाग निष्फन्ने? विभाग निष्फन्ने ! (गाहा) अंगुल विहत्थी रयणी कुत्थि, धणु गाउयंच बोधव्वे ॥ जोयण सेढी पयरं लोग मलोगे विय तहेव ॥ ११ ॥ से किं तं अंगुले ? अंगुले तिविहे पण्णत्ते तंजहा—आयंगुले, उस्सेहंगुले, प्पमाणंगुले॥

अर्थ

अहो भगवन् क्षेत्र प्रमाण किसे कहते हैं? अहो शिष्य! क्षेत्र प्रमाण दो प्रकार कहे हैं. तद्यथा-१ प्रदेश निष्पन्न और २ विभाग निष्पन्न ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! प्रदेश निष्पन्न क्षेत्र प्रमाण किस को कहते हैं ? अहो, शिष्य ! प्रदेश निष्पन्न क्षेत्र प्रमान सो एक प्रदेशावगाही दो प्रदेशावगाही तीन प्रदेशावगाही यावत् संख्यात प्रदेशावगाही असंख्यात प्रदेशावगाही पुद्गलों का प्रदेश निष्पन्न कहना. ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! विभाग निष्पन्न क्षेत्र प्रमान किसें कहते हैं ? अहो शिष्य ! निभाग विष्पन्न क्षेत्र प्रमान सो-अंगुल विहस्ति ( वेंत ) हाथ, कुच्छी, धनुष्य, गाउ, योजन, श्रेणि, प्रतर, लोक, अलोक जानना. ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! अंगल किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! अंगुल तीन प्रकार के कहे हैं तद्यथा—१





For Private and Personal Use Only

सूत्र

॥ १२ ॥ से किं तं आयंगुले ? आयंगुले ! जेणं जया माणुस्सा भवंति तेसिणं तया अप्पणो अंगुलेणं दुबालसंगुलाइं मुहं, नवमुहाइं पुरिसे प्पमाणं जुत्ते भवति, दो माणिए पुरिसे माणजुत्ते भवति, अद्धभा तुलमाणे पुरिसे उम्माणजुत्ते भवती (गाहा) माणुम्माण प्पमाणजुत्ता लक्खणं वंजण गुणेहिं उववेया ॥ उत्तम कुलपसुया, उत्तम पुरिसा मुणेयव्वा ॥ १ ॥ होतिपुण अहियं पुरिसा अट्ठसयं अंगुला ओविद्धा

अर्थ

आत्मांगुल, २ उत्सेधांगुल, ३ प्रमाण अंगुल ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! आत्मांगुल किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! आत्मांगुल सो जो भरत क्षेत्र के मनुष्य जिस काल जिस आरे में जितने बडे होवें उन मनुष्यों का उस काल में अपना २ जितना अंगुल होवे उस अंगुल से उन का मुख बारा अंगुल का होता है. और नव मुख जितना (१०८ अंगुल) पुरुष शरीर का प्रमाण होता है. अब पुरुष का द्रोणमान युक्तपना कहते हैं—पुरुष प्रमाण कूंडी पानी से भरकर उस में पुरुष बैठे बाद उस में द्रोण प्रमाने पानी बाहिर निकले उसे द्रोणमान द्रव्य प्रमान कहना. (४ अढक की एक द्रोण होती है) अब तोलने का कहते हैं—आधे भार तोल में जो मनुष्य हों उसे प्रमाणुपेत मनुष्य कहना. इस प्रकार मान उन्मान प्रमाण युक्त उत्तम पुरुष स्वास्तिकादि लक्षण मश तिलकादि व्यंजन क्षमा ज्ञानादि गुण कर उपपेत उग्र भोगादि उत्तम कुलोत्पन्न हो उसे उत्तम पुरुष जानना ॥ १ ॥ १०८ अंगुल प्रमाण शरीर होवे वह उत्तम पुरुष ८६ अंगुल प्रमान शरीर

सूत्र

॥ छण्णउइ अहम पुरिसा, चउरुत्तरं माज्झिमल्लाउ ॥ २ ॥ हीणावा अहियावा, जे खलुसर सत्तसार॥परिहीणा ते उत्तम पुरि॰णं अत्रसाण पेसत्ताण मुवंति ॥ ३ ॥ एएणं अंगुल प्पमाणेणं छ अंगुलाइंपाउ. दोपया विहत्थी, दो विहत्थीउ रयणी, दो रयणीउ कुत्थी दो कुत्थीउ दंडं– धणु—जुगे—मालिया—अक्ख—मुसले, दो धणुसहस्साइं गाउय, चत्तारि गाउयाइं जोयणं, एएणं आयंगुलेणं किं

अर्थ

हो सो अधम पुरुष. १०४ अंगुल का शरीर हो सो मध्यम पुरुष तथा १०८ अंगुल से हीन तथा अधिक जो पुरुष हो परंतु आदेय वचनवंत. सत्व धैर्यवंत रूपादि सार युक्त हीनता रहित हो उसे भी उत्तम पुरुष जानना. वह स्ववश नहीं रहता अन्य की आज्ञा में परवशपने रहता सेवक पना पाता है. इस प्रकार के अंगुल प्रमान करके ६ अंगुल का १ पाँव, २ पाँव की विहस्ती, दो विहस्ती का हाथ, २ हाथ की कुच्छी. २ कुच्छी का दंड-धनुष्य-युग-नासिका—अक्ष मुसल होता है. २००० धनुष्य का गाउ, ४ गाउ का योजन. अहो भगवन्! इस अंगुल का क्या प्रयोजन है? अहो शिष्य! इस आत्मांगल कर जिस वक्त जो मनुष्य होते हैं उस वक्त उन मनुष्यों के आत्मांगुल करके कुवा तलाव, द्रह, नदी, बावडी, पुष्करनी, नेहर, गुंजाली, तलाव, तलाव की पंक्ति बिलों की पंक्ति, उद्यान कानन, वन, बगीचे, बनराजी, देवालय, सभा, पानी की पपा, स्थुभ, खाइ, नगर के फिरती खाइ, कोट अटालक, रास्ता नगर

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

पयोयणं ? एएणं आयंगुलेणं जेणं जया माणुस्सा हवंती, तेसिगं तया आयंगुलेणं अगड तलाग दहणइ बावी पुक्खरणी दीहिया गुंजालिया, सर, सरसरपंतीयाओ, विलपंतियाओ, उज्जाणं काणणं, बणवणसंडं वणरातीओ, सभा पवा थूभा, खाइया, फरिहाओ, पागार, अट्टलयं, चरिय, दार, गोपुर,पासाय, घर तोरण, लेण, आवणा, सिंघाडग, तिगचउक्क, चच्चर, चउपह,महापह,पह,सगड, रह जाण जुग गिल्लि थिल्लि, सिविय संदमाणियाओ लोही लोह कडाह कडिलय भंडमत्तोवगरण मादीणि अज्ज कालियाइंच जोयणाइं मविज्जंति ॥ से समासतो

अर्थ

द्वार, प्रसाद, घर, तोरण, पर्वत की लेन, दुकान, त्रिपंथ, चौपंथ, बहुत पंथ. महापंथ, गाडी, रथ, बग्घी, जुग, ऊंट की गिल्ली.हाथी की अंबाडी, शिबिका, पालखी, लोहा. लोह की कडाइ, कडाव. भंडोपकरण, इत्यादि का प्रमाण जिस काल में जो मनुष्य हो उन के अंगुल से योजन पर्यंत किया जाता है. यह आत्मा अंगुल तीन प्रकार का कहा है. तद्यथा—१ सुची अंगुल, २ प्रतर अंगुल और ३ घनांगुल, असतत्व कल्पना से तीन अंगुल लम्बी एक आकाश प्रदेश की चौडी श्रेणि को सूची अंगुल कहना. सुची अंगुल को सुची अंगुल से गुना करे अर्थात् ३+३=९. अंगुल की श्रेणि सो प्रतर अंगुल. प्रतर को सूइ से गुनाकार करे अर्थात् ९+३=२७ अंगुल प्रमान श्रेणि सो घनांगुल. यह ३×९=२७ सो

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

तिविहे पण्णत्ते तंजहा—सूई अंगुले, पयरंगुले, घणंगुले ॥ अंगुलाय तसिढी, सूइअंगुले, सूती सूतीए गुणिता पतरंगुले, ९ पत्तरसूईए गुणितं घणंगुले २७, ॥ एएसिणं सूईअंगुल पतरंगुल घणअंगुलाणं कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुआवा तुल्लिआवा विसेसाहियावा ? सव्वथोवे सूईयअंगुले पयरंगुले असंखेज्जगुणे, सेतं घणंगुले असंखिज्जगुणे आयंगुलं ॥ १ ३ से किं तं उस्सेहंगुले ? उस्सेह अंगुले अणेगविहे पण्णत्ते तंजहा ( गाहा ) परमाणु-तसरेणु, ३ रहरेणु, ४ अग्गयं च बालस्स, ५ लिक्खा, ६ जुयाय, ७ जवो, अट्ठ-

अर्थ

असत्य कल्पना से फक्त समजाने के लिये कहा है परंतु तीनों असंख्यात २ प्रदेश की श्रेणि जानना. अहो भगवन् ! सुची अंगुल प्रतर अंगुल घन अंगुल में कौन २ किस से थोडा ज्यादा तुल्य विशेष हैं ? अहो शिष्य ! सब से थोडा सुची अंगुल, उस से प्रतर अंगुल असंख्यात गुना, उस से घनअंगुल असंख्यात गुना, यह आत्म अंगुल जानना. ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! उत्सेध अंगुल किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! उत्सेध अंगुल सो परमाणु २ बृद्धि करते जो निष्पन्न होवे उसे कहते हैं. इस के अनेक प्रकार कहे हैं. तद्यथा—परमाणु, त्रसरेणु, रथरेणु, बाल, भाग लीख, यूका, यव, इन सब को अनुक्रम से आठ २ गुने अधिक करना. इस का खुलासा कहते हैं. अहो भगवन् ! परमाणु किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! परमाणु दो प्रकार के कहे हैं. तद्यथा—१ सूक्ष्म परमाणु और २ व्यवहारिक परमाणु.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

गुण विवड्डिया कमसे ॥ १ ॥ से किं तं परमाणु? परमाणु दुविहे पण्णत्ते तंजहा— सुहुमेय, ववहारिएय ॥ तत्थणं जे से सुहुमे से ट्ठप्पे तत्थणं जे से ववहारिए सेणं अणंताणं सुहुम परमाणु पोग्गलाणं समुदय समिति समागमेणं ववहारिए परमाणु पोग्गले निप्फज्जंति, सेणं भंते ! असिधारंवा, खुरधारंवा उगाहेज्जा ? हंता उगाहेज्जा, तीसेणं तत्थ छिज्जज्जवा ? नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थ कमाति सेण भंते ! अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं वीतीवएज्जा ? हंता वीतीवएज्जा, सेणं तत्थ डज्झेज्जा नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थ कमाति, सेणं भंते ! पुक्खरवट्टस्स महामेहस्स मज्झं मज्झेणं वीतीवएज्जा ? हंता वीतिवएज्जा

अर्थ

इस से तो सूक्ष्म परमाणु है उस का वर्णन तो यहां ही रहने देना. और जो व्यवहारिक परमाणु है ऐसे अनंत सूक्ष्म परमाणु के समागम से एक व्यवहार परमाणु होता है. अहो भगवन् ! वह परमाणु पुद्गल तलवार की धार से, उस्तरे की धार से भी छेदित होता है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ युक्त नहीं अर्थात् उस के दो खण्ड नहीं होते हैं. उस पर किसी भी प्रकार का तीक्ष्ण शस्त्र किंचित मात्र भी असर नहीं कर सकता है. अहो भगवन् ! वह व्यवहार परमाणु अग्नि काय के मध्य मध्य में होकर चला जाता हैं क्या ? हां शिष्य ! चला जाता है. अहो भगवन् ! वह परमाणु अग्नि काय में से जाता हुवा वहां जलता हैं क्या ? अहो शिष्य ! यह अर्थ समर्थ नहीं अर्थात् अग्नि उसे जला नहीं सकता है. अहो भगवन् ! वह परमाणु पुष्करावर्त महा मेघ के मध्य २ में होकर चला जाता है क्या ?

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

सेणं तत्थ उदओलि सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे णो खलु तत्थ सत्थ कमति, सेणं भंते ! गंगाए महाणदी पडिसोयं हव्वमागच्छेज्जा ? हंता हव्वमागच्छेज्जा सेणं तत्थ विणिघातंमावज्जेज्जा ? नो इणट्ठे समट्ठे णो खलु तत्थ सत्थ कमति, सेणं भंते ! उदगावत्तंवा उदगविंदुवा उगाहेज्जा ? हंता उगाहेज्जा ? सेणं तत्थ कुच्छेज्जवा, परिआवज्जेज्जवा ? णो इणट्ठे समट्ठे णो खलु तत्थ सत्थ कमति ॥ ( गाहा )— सत्थेण सुतिक्खेणवि, छेत्तुं भेत्तुं च जं कीरइ न सक्का ॥ तं परमाणु सिद्धावयंति, आदि

अर्थ

हां शिष्य चला जाता हैं. अहो भगवन् ! वह वहां मेघ में से जाता हुवा पानी से भींजता है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है. अहो भगवन् ! वह परमाणू गंगा नदी के प्रतिश्रोत में ( प्रवाह में ) शीघ्रता से जाता है क्या ? हां शिष्य शिघ्रता से जाता है. अहो भगवन् ! वह परमाणु गंगा नदी के प्रवाह में से जाता हुवा घाव को प्राप्त होता है क्या ? अहो शिष्य ! यह अर्थ समर्थ नहीं. उसे पानी का शस्त्र भी परिणमता नहीं है. अहो भगवन् ! वह व्यवहार परमाणू बहुत पानी भरा हो उस में रहता है क्या ? हां गौतम ! रहता है. अहो भगवन् ! वह परमाणु पानी में रहता हुवा सडता है गलता है क्या ? अहो शिष्प यह अर्थ समर्थ नहीं हैं. अर्थात गलता सडता नहीं हैं. मतलब की किसी भी प्रकार का शस्त्र उस का छेदन भेदन गलन

For Private and Personal Use Only

सूत्र

प्पमाणेणं ॥ १ ॥ अणंत ववहारिअ परमाणु पोग्गलाणं समुदय समिति समागमेणं सा एगा उसण्ह सण्हिआइवा सण्ह सण्हिआइव उड्ढरेणुति वा, तसरेणुति वा, रहरेणुति वा, अट्ठ उसण्ह सण्हियाओ सा एगा सण्हसण्हिया, अट्ठ सण्हसण्हियाउ सा एगा उड्ढरेणु, अट्ठ उड्ढरेणुओ सा एगा तसरेणु अट्ठ तसरेणुउ सा एगा रहरेण अट्ठ रहरेणुओ देवकुरु उत्तरकुरुआणं मणुयाणं से एगेवालग्गे, अट्ठ देवकुरु उत्तरकुरुणं मणुयाणं वालग्ग हरिवास रम्मगवासाणं मणुयाणं से एगे वालग्गे, अट्ठ हरिवास रम्मग वासाणं मणुस्साणं बालग्ग हेमवंत हेरणवंताणं मणुस्साणं से एगेवालग्गे, अट्ठ

अर्थ

सहत करने समर्थ नहीं होता है. वैसे ही परमाणु पुद्गल केवली भगवान ने शास्त्र में उत्सेध अंगुल की प्रमाण की आदि में कहा हैं, ऐसे अनंत व्यवहारिक परमाणु पुद्गल का समुदाय समागम होने से एक शीत श्रेणि ( सरदी ) का पुद्गल होता हैं आठ शीत श्रेणिक पुद्गल के समागमसे एक उर्द्धरेणु ( तरवले में देखावे सो ) होती हैं, आठ उर्द्धरेणु जितनी एक त्रसरेण [ त्रसजीव चलने से उडेसो ] होती है. आठ त्रसरेणु के समागमसे एक रथरेणु ( रथचलते उडेसो ) होती हैं आठ रथरेणु के समागमजितना बडा एक उत्तरकुरु देव कुरु क्षेत्र के मनुष्यों का बालाग्र होता है. आठ देव कुरु उतर कुरु के क्षेत्र के मनुष्य के बालाग्र जितना जाडा एक हरी वास रम्यक वास क्षेत्र के मनुष्य का बालग्र होता है. आठ हरीवास रम्यकवास मनुष्य क क्षेत्र

सूत्र

हेमवंत हेरणवताणं मणुस्साणं वालेया पुव्वविदेह अवरविदेहाणं मणुस्साणं सेएगे वालग्गे, अट्ठ पुव्वविदेह अवरविदेहाणं मणुस्साणं बालग्ग भरहेरवयाणं मणुस्साणं से एगे वालग्गे, अट्ठ भरहेरवयाणं मणुस्साणं वालग्ग सा एगा लिक्खा, अट्ठ लिक्खाओ सा एगाजूया, अट्ठ जूयाओ सा एगे जवमज्झे, अट्ठ जवमज्झा से एगे अंगुले; एएणं अंगुल प्पमाणेणं छ अंगुलाइं पादो, बार अंगुलाइ विहत्थी, चउवीस अंगुलाइ रयणी, अडयालीस अंगुलाइ कुच्छी, छण्णउइ अंगुलाइ से एगे दंडेइवा–धणुइवा–जुगेइवा–नालियाइवा–अखेतिवा–मुसलेतिवा, एएणं धणु-

अर्थ

का वालाग्र जितना जाडा एक हेमवय एरण्यवय मनुष्यका वालाग्र होता है. आठ हेमवय हेरण्यवय मनुष्य के बालाग्र जितना जाडा एक पूर्व महाविदेह पश्चिम महाविदेह क्षेत्रके मनुष्यका वालाग्र होता है. पूर्व महाविदेह पश्चिम महा बिदेह क्षेत्र के मनुष्य के आठ बालाग्र जितना जाडा एक भरत ऐरावत क्षेत्र का मनुष्य के बालग्र होता है. भरतैरावत क्षेत्र के मनुष्य के बालाग्र जितनी जाडी एकलीख, आठ लीख जितनी जाडी एक यूका, आठ यूका जितना जाडा एक यव मध्य. आठ यवमध्य जितना बडा एक उत्सेध अंगुल होता है. इस उत्सेध अंगुल के प्रमाणे से छ अंगुल का पाद. १२ अंगुल की विहत्थी, २४ अंगल हाथ, ४८ अंगुल की कुच्छी, ९६ अंगुल का दंड-धनुष्य-युग-नाला-आखा-मूशल होता है. इस धनुष्य से २००० धनुष्य का

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

प्पमाणं दो धणु सहस्साइं गाउयं चत्तारि गाउयाइं जोयणं ॥ एएणं उस्सेहंगुले किं पयोणं ? एएणं उस्सेहंगुलेणं नेरइय तिरिक्खजोणिय मणुस्स देवाणं सरीरोगाहणामविज्जंति ॥ १४ ॥ णेरइयाणं भंते! के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा—भवधारणिज्जाय, उत्तरवेउव्वियाय तत्थणं जामा भवधारणिज्जा सा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जातिभागं, उक्कोसेणं पंचधणु सयाइं, तत्थणं जामा उत्तर वेउव्विया सा जहन्नेणं अंगुलस्स संखेज्जति भागं उक्कोसेणं धणुसहस्सं,रयणप्पभा पुढवी नेरइयाणं भंते! के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता?गोयमा! दुविहा पण्णत्ता तंजहा-भवधारणिज्जा उत्तर वेउव्विया, तत्थ जा सा भवधारणिज्जा सा

अर्थ

गाऊ (कोस) चार कोस का योजन. अहो भगवन् ! इस उत्सेध अंगुल का क्या प्रयोजन है? अहो शिष्य ! इस उत्सेध अंगुल से नरक तिर्यंच मनुष्य देवता की शरीर की अवगाहना का माप किया जाता है ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! नार की के नेरीये के शरीर की कितनी बडी अवगाहना है ? अहो गौतम ! नेरीये के शरीर दो प्रकार के होते हैं, तद्यथा—जन्मसे हो वह भवधारणिय शरीर और वैक्रय बनावे वह वैक्रेय शरीर. इस में जो भवधारणिय शरीर है उस की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग की उत्पन्न होते समय, उत्कृष्ट पांच सो धनुष्य की सातवी नरक की अपेक्षा.





For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं उक्कोसेणं सत्तधणुइं तिण्णिरयणी छच अंगुलाइं, तत्थणं जासा उत्तरवेउव्विया सा जहन्नेणं अंगुलस्स संखेज्जइ भागं उक्कोसेणं पण्णरस-धणुइ, अढाइज्जाउरयणीउ,॥सक्करप्पभाए पुढवीए नेरइयाणं भंते! के महालिया सरीरो गाहणा पण्णत्ता ?गोयमा!दुविहे पण्णत्ता तंजहा—भवधारणिज्जाय उत्तर वेउव्वियाय, तत्थणं जासा भवधारणिज्जा सा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं उक्कोसणं पणर सेणं धणुयाइं अढाइज्जाउरयणीउ, तत्थणं जा सा उत्तर वेउव्विया सा जहन्नेणं अंगुलस्स संखेज्जति भागं उक्कोसेणं एकतीसंधणुइं एगरयणीय ॥ वालुप्पभाए पुढवीए नेरइयाणं भंते ! के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा

अर्थ

और जो उत्तर वैक्रय शरीर बनाते हैं उस की अवगाहना-जघन्य अंगुल के संख्यातवे भाग ( कृत्रि इतना ही होता है ) उत्कृष्ट एक हजार धनुष्य की. अहो भगवन् ! रत्न प्रभा नरक के नेरिये के शरीर की कितनी बडी अवगाहना है ? अहो शिष्य ! दो प्रकार की अवगाहना कही है तद्यथा—भवधारणिय शरीर की और उत्तर वैक्रेय शरीर की. इस में भवधारणिय शरीर की. जघन्य अंगुलके असंख्यातवे भाग की. उत्कृष्ट सात धनुष्य तीनहाथ छअंगुल की, तहां जो उत्तर वैक्रय की जघन्य अंगुलके असंख्यातवे भाग की उत्कृष्ट पंदरा धनुष्य अढाइ हाथ की

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

पण्णत्ता तंजहा—भव धारणिज्जाय, उत्तर वेउव्वियाय तत्थणं जा सा भवधारणिज्जा सा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं, उक्कोसेणं एकतीसं धणुइं, एगारयणीय, तत्थणं जा सा उत्तर वेउव्विया सा जहन्नेणं अंगुलस्स संखेज्जति भागं, उक्कोसेणं वासट्ठिधणुयाइं. दो रयणीउय ॥ एवं सव्वासि पुढवीणं पुच्छा भाणियव्वा पंकप्पभाए भवधारणिज्जा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं बासाट्ठधणुइं, दोरयणीउय, उत्तर वेउव्विया जहन्नेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं उक्कोसेणं पणवीस धणुसय; धूमप्पभाए भवधारणिज्जा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं, उक्कोसेणं पणवीसं धणुसयं, उत्तर वेउव्विया जहन्नेणं संखेज्जइ भागं उक्कोसेणं अड्ढाइज्जाइ

अर्थ

ऐसे ही प्रश्नोत्तर आगे भी जानना. शर्करप्रभा नरक की भवधारणिय शरीर की जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग उत्कृष्ट पंदरह धनुष्य अढाइहाथ की, उत्तर वैक्रय शरीर की जघन्य अंगुल के संख्यात वे भाग उत्कृष्ट एकतीस धनुष्य एक हाथ की, वालुप्रभा पृथ्वी में भव धारणिय शरीर की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट सवा एकतीस धनुष्य की. उत्तर वैक्रय शरीर की जघन्य अंगुल के संख्यातवे भाग उत्कृष्ट साढी वासठ धनुष्य की, पंकप्रभा नरक के नेरीये के भव धारणिय शरीर की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग, उत्कृष्ट साढी वासठ धनुष्य की, उत्तर वैक्रय शरीर की जघन्य अंगुल के संख्यात

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

धणुसयाइं, तमाए भवधारणिज्जा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं, उक्कोसेणं अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं ॥ तमाए भवधारणिज्जा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं उक्कोसेणं अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं, उत्तर वेउव्विया–जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ भागं, उक्कोसेणं पंचधणु सयाइं ॥ तमतमाप्पभा पुढवीए नेरइयाणं भंते! के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा–भवधारणिज्जाय उत्तर वेउव्वियाय, तत्थणं जा सा भवधारणिज्जा सा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ भागं, उक्कोसेणं पंचधणुसयाइं, तत्थणं जा सा उत्तर वेउव्विया सा जहन्नेणं अंगुलस्स

अर्थ

वे भाग उत्कृष्ट सवासो धनुष्य की. धूम्रप्रभा नरक के नेरीये की भव धारणिय शरीर की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग, उत्कृष्ट सवासो धनुष्य की, उत्तर वैक्रय शरीर की जघन्य अंगुल के संख्यातवे भाग उत्कृष्ट अढाइसो धनुष्य की. तमप्रभा नरक के नेरीयें के भव धारणिय शरीर की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट अढाइसो धनुष्य की. उत्तर वैक्रय शरीर की जघन्य अंगूल के संख्यातवे भाग उत्कृष्ट पांचसो धनुष्य की. तमतमा प्रभा नरक के नेरीये की भवधारणिय शरीर की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे, भाग उत्कृष्ट पांच सो धनुष्य की, उत्तर वैक्रय शरीर की जघन्य अंगुल

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir





सूत्र

संखेज्जइभागं उक्कोसेणं धणुसहस्सं ॥ १५ ॥ असुर कुमाराणं भंते ! के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा—भवधारणिज्जाय, उत्तर वेउव्वियाय तत्थणं जासा भवधारणिज्जा सा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं सत्तरयणीउ, तत्थणं जासा उत्तरवेउव्विया सा जहन्नेणं अंगुलस्स संखेज्जति भागं, उक्कोसेणं जोयण सय सहस्सं एवं असुरकुमारगमेणं थणिय कुमाराणं ताव भाणियव्वं ॥ १६ ॥ पुढवि काइयाणं भंते ! के महालिया सरीरो गाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं एवं सुहुमाणं ओहियाणं अपज्जत्तगाणं पज्जत्तगाणं एवं जाव बादरवाउकाइयाणं

अर्थ

के संख्यातवे भाग उत्कृष्ट हजार धनुष्य की ॥ १५ ॥ असुर कुमार जाति के देवता के भवधारणिय शरीरकी जघन्य अवगाहना अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट सात हाथकी, उत्तर वैक्रय शरीरकी जघन्य अंगुल के संख्यातवे भाग उत्कृष्ट एक लाख योजन की. इस प्रकार की यावत् स्तनीत कुमार पर्यंत दशों ही जाति के भुवनपति देवता के शरीर की अवगाहना जानना. ॥ १६ ॥ पृथ्वीकाया अप्काय तेजसकाया और वायुकाया. इन चार के सूक्ष्म के पर्याप्त अपर्याप्त की और बादर के पर्याप्त अपर्याप्त की



For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाणं भाणियव्वं ॥ वणस्सइ काइयाणं भंते ! के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं उक्कोसेणं सातिरेगं जोयण सहस्साणं सुहुम वणस्सइ काइयाणं उहियाणं अपज्जत्तगाणं पज्जत्तगाणं तिण्हंपि जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं वि अंगुलस्सअसंखेज्जाति भागं बायर वणस्सइ काइयाणं जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागंउक्कोसेणं सातिरेगं जोयण सहस्सं॥ १७॥ एवं बेइंदियाणं पुच्छा?गोयमा! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं उक्कोसेणंविबारसजोयणाइं, अपज्जत्तगाणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं उक्कोसेणंवि अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, पज्जत्तगाणं जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं उक्कोसेणं बारस जोयणाइं ॥ तेइंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जति-

अर्थ

शरीर की अवगाहना जघन्य उत्कृष्ट अंगुल के असंख्यातवे भाग की. वनस्पति की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन की, सूक्ष्म वनस्पति की अपर्याप्त पर्याप्त की जघन्य उत्कृष्ट अवगाहना अंगुल के असंख्यातवे भाग की, बादर वनस्पति की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन की ॥ १७ ॥ बेन्द्रिय की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

भागं उक्कोसेणं तिण्णिगाउयाइं, अपज्जत्तगाणं जहन्नेणंवि उक्कोसेणंवि अंगुलस्स असंखेज्जति भागं पज्जत्तागाण जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं उक्कोसेणं तिण्णिगाउयाइ ॥ चउरिंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइं, अपज्जत्तगाणं जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंगुलस्स असंखेज्जति भागं, पज्जत्तगाणं जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइं ॥ १८ ॥ पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं भंते ! के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं, उक्कोसेणं जोयण सहस्सं, ॥जलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! एवं चेव, समुच्छिम जलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं पुच्छा ?

अर्थ

बारा योजन की. तेन्द्रिय की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट तीन गाउ की, चौरिन्द्रिय की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट चार गाऊ की. इन तीनों विकेन्द्रिय के अपर्याप्त जघन्य उत्कृष्ट अंगुल की असंख्याते भाग की अवगाहना जानना. और पर्याप्त की समुच्चय जैसे जानना. ॥ १८ ॥ समुच्चय तिर्यंच पंचेन्द्रिय की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट हजार योजन की इतनी ही समुच्चय जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय की अवगाहना जानना. सम्मूर्च्छिम जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनि की भी इतनी अवगाहना जानना. अपर्याप्त सम्मूर्च्छिम जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनी की जघन्य

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

गोयमा ! एवं चेव, अपज्जत्तग समुच्छिम जलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणंवि उक्कोसेणंवि अंगुलस्स असंखेज्जइ भागं, पज्जत्तग समुच्छिम जलयर पंचिंदियस्स पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं उक्कोसेणं जोयण सहस्सं गब्भवक्कंतिय जलयर पंचिंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं उक्कोसेणं जोयण सहस्सं अपज्जत्तग गब्भवक्कंतिय जलयर पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं उक्कोसेणंवि अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं पज्जत्तग गब्भवक्कंतिय जलयर पुच्छा ? गोयमा, जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं, उक्कोसेणं जोयण सहस्सं ॥ चउप्पय थलयर पंचिंदिय

अर्थ

उत्कृष्ट अंगुल के असंख्यातवे भाग. पर्याप्त समूर्च्छिम जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट हजार योजन की. गर्भज जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट हजार योजन की, अपर्याप्त गर्भज जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय की जघन्य उत्कृष्ट अंगुल के असंख्यातवे भाग. पर्याप्त गर्भज जलचर की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन की. चतुष्पद थलचर पंचेन्द्रिय की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट छ गाऊ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







मूत्र

पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं उक्कोसेणं छगाउयाइं. समुच्छिम चउप्पय थलयर पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखिज्जइ भागं उक्कोसेणं गाउय पुहुत्तं, अपज्जत्त समुच्छिम चउप्पय थलयर पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंगुलस्स असंखेज्जति भागं पज्जत्त समुच्छिम चउप्पय थलयर पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं उक्कोसेणं गाउय पुहुत्तं गब्भवक्कंतिय चउप्पय थलयर पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं उक्कोसेणं छगाउयाइं अपज्जत्तगगब्भवक्कंतिय चउप्पय थलयर पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणंवि अंगुलस्स असंखेज्जति भागं पज्जत्त

अर्थ

की. समूर्च्छिम चतुष्पद स्थलचर की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग. उत्कृष्ट गाऊ पृथक्त्व की (दो कोस से नव कोसत) अपर्याप्त समूर्च्छिम चतुष्पद स्थलचर की जघन्य उत्कृष्ट अंगुल के असंख्यातवे भागकी. पर्याप्त संमूर्च्छिम स्थलचर की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट प्रत्येक गाउ की, गर्भज स्थलचर तिर्यंच की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट छ गाउ की अपर्याप्त गर्भज चतुष्पद स्थलचर की जघन्य उत्कृष्ट अंगुल के असंख्यातवे भाग की. पर्याप्त गर्भज चतुष्पद स्थलचर की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट छ गाऊ की, उरपरिसर्प स्थलचर की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट हजार

For Private and Personal Use Only

गब्भवक्कंतिय चउप्पय थलयर पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जाति भागं उक्कोसेणं छ गाउयाइं ॥ उरपरिसप्प थलयर पंचिंदिय पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं उक्कोसेणं जोयण सहस्सं, समुच्छिम उरपरिसप्प थलयर पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं उक्कोसेणं जोयण पुहुत्तं, अपज्जत्तग समुच्छिम उरपरिसप्प थलयर पुच्छा? गोयमा ! जहन्नेणं वि उक्कोसेणंवि अंगुलस्स असंखेज्जातिभागं पज्जत्तग समुच्छिम उरपरिसप्प थलयर पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं उक्कोसेणं जोयण पुहुत्तं, गब्भवक्कंतिय उरपरिसप्प थलयर पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखे-

अर्थ

योजन की. समूर्च्छिम उरपरिसर्प की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट पृथक्त्व योजन की. अपर्याप्त समूर्च्छिम उरपरि सर्प की जघन्य उत्कृष्ट अंगुल के असंख्यातवे भाग, पर्याप्त समूर्च्छिम उरपरिसर्प की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट पृथक्त्व योजन, गर्भज उरपरीसर्प की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट हजार योजन की. अपर्याप्त गर्भज उरपरिसर्प की जघन्य उत्कृष्ट अंगुल के असंख्यातवे भाग, पर्याप्त गर्भज उरपरिसर्प की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट हजार योजन

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir





मूल

ज्जातिभागं, उक्कोसेणं जोयण सहस्सं, अप्पज्जत्त गब्भवक्कंतिय उरपरिसप्प थलयर पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जाति भागं, उक्कोसेणंवि अंगुलस्स असंखेज्जाति भागं, पज्जत्तग गब्भवक्कंतिय उरपरिसप्प थलयर पंचिंदिय पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जातिभागं उक्कोसेणं जोयणसहस्सं ॥ भुय परिसप्प थलयर पंचिंदिय पुच्छा ? गोयमा ! जहन्न अंगुलस्स असंखेज्जात भाग, उक्कोसेणं गाउपहुत्तं, समुच्छिम भुयपरिसप्प थलयर पुच्छा? गोयमा ! जहन्नं अंगुलस्स असंखेज्जाति भागं, उक्कोसेणं, धणु पुहुत्तं; अपज्जत्तग समुच्छिम भुयपरिसप्प थलयर पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जाति भागं उक्कोसेणंवि अंगुलस्स असंखेज्जाति भागं, समुच्छिम भुयपरिसप्प थलयर

अर्थ

की. भुजपरिसर्प थलचर की जघन्य अंगल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट पृथक्त्व गाऊ की, संमूर्च्छिम भुजपरिसर्प की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट धनुष्य पृथक्त्व की, अपर्याप्त समूर्च्छिम भुजपर सर्प की जघन्य उत्कृष्ट अंगुल का असंख्यातवा भाग, पर्याप्त समूर्च्छिम भुजपर सर्प की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट पृथक्त्व धनुष्य की. गर्भज भुजपर सर्प की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट गाऊ पृथक्त्व की, अपर्याप्त गर्भज भुजपर सर्प की जघन्य उत्कृष्ट अंगुल के असंख्यातवे भाग, पर्याप्त गर्भज भुजपरिसर्प स्थलचर की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट पृथक्त्व गाऊ

For Private and Personal Use Only

सूत्र

पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं, उक्कोसेणं धणु पुहुत्तं, गब्भवक्कंतिय भुयपरिसप्प थलयर पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं उक्कोसेणं गाउ पुहुत्तं, अपज्जत्तग गब्भवक्कंतिय भुय परिसप्प थलयर पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंगुलस्स असंखेज्जति भागं, पज्जत्तग गब्भवक्कंतिय भुय परिसप्प थलयर पुच्छा ? गोयमा ! जहन्न अंगुलस्स असंखेज्जति भागं, उक्कोसेणं गाउपुहुत्तं, खहयर पंचिंदिय पुच्छा ? गोयमा! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं, उक्कोसेणं धणुपुहुत्तं ॥ समुच्छिम खहयराणं जहा भुय परिसप्पाणं १ समुच्छिमाणं तिसुवि गमेसु, तहा भाणियव्वा. गब्भवक्कंतिय खहयर पुच्छा? गोयमा! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखिज्जइ भागं उक्कोसेणं धणुपुहुत्तं अपज्जत्तग गब्भवक्कंतिय खहयर पुच्छा? गोयमा! जहन्नेणंवि उक्कोसेणंवि अंगुलस्स असंखेज्जति भागं

अर्थ

की. खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट पृथक्त्व धनुष्य की, सम्मूर्च्छिम खेचर के तीनों आलापक जैसे भुजपर के कहे तैसे ही कहना. गर्भज खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट धनुष्य पृथक्त्व की. अपर्याप्त गर्भज खेचर की जघन्य उत्कृष्ट अंगुल के असंख्यातवे भाग. पर्याप्त गर्भज खेचर की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट पृथक्त्व धनुष्य की. अब तिर्यंच पंचेन्द्रिय की उत्कृष्ट अवगाहना संक्षेप में दो गाथा कर कहते हैं—सम्मूर्च्छिम-जलचर की हजार

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

पज्जत्तग गब्भवक्कंतिय खहयर पुच्छा? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं उक्कोसेणं धणु पुहुत्तं ॥ एत्थ संगहाणि गाहाउ भवंति तंजहा (गाहा) सहस्स गाउय पुहुत्तं, ततोय जोयण पुहुत्तं ॥ दोण्हं तु धणुपुहुत्तं समुच्छिमे होइ उच्चत्तं ॥ १ ॥ जोयण सहस्स गाउयाइं, तत्तोय जोयण सहस्सं ॥ गाउय पुहुत्तं भुयगे, पक्खीसंभवेधणुपुहुत्तं ॥ २ ॥ १९ ॥ मणुस्साणं भंते ! के महालिया सरीरो गाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं, समुच्छिम मणुस्साणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं.उक्कोसेणंवि अंगुलस्सवि असंखेज्जति भागं गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं पुच्छा ? गोयमा! जहण्जेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ भागो, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं

अर्थ

योजन की, चतुष्पद की पृथक्त्व गाऊ की. उरपर की पृथक्त्व योजन की, भुजपर की और खेचर की पृथक्त्व धनुष्य की. अब गर्भज की अवगाहना कहते हैं. जलचर की हजार योजन की. स्थलचर की छ गाउ की, उरपर की हजार योजन की, भुजपर की पृथक्त्व गाउ की और खेचर की पृथक्त्व धनुष्य की. ॥ १९ ॥ अब मनुष्य की अवगाहना कहते हैं. समुचय मनुष्य की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट तीन गाउ की. समूर्च्छिम मनुष्य की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट भी अंगुल के असंख्यातवे भाग, गर्भज मनुष्य की जघन्य अंगुलके असंख्यातवे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

अपत्तजग गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं पुच्छा ? गोयमा! जहन्नेणंवि उक्कोसेणंवि अंगुलस्स असंखेज्जति भागं, पज्जत्तग गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं पुच्छा गोयमा ! जण्हणेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं उक्कोसेणं तिण्णिगाउयाइं॥२०॥वाणमंतराणं भवधारणिज्जाय उत्तरवेउव्वियाय जहा असुरकुमाराणं तहा भाणियव्वा जहा वाणमंतराणं तहाजोइसियाणं । सोहम्मे कप्पे देवाणं भंते ! के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा–भवधारणिज्जाय उत्तरवेउव्वियाय, तत्थणं जासा भवधारणिज्जा सा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं उक्कोसेणं सत्तरयणीओ, तत्थणं जा सा उत्तार वेउव्विया सा जहन्न अंगुलस्स असंखेज्जइ भागं उक्कोसेणं जोयण सयसहस्सं ॥ एवं ईसाण कप्पेवि भाणियव्वं जहा सोहम्मे कप्पे देवाणं

अर्थ

भाग उत्कृष्ट तीन गाउ की, अपर्याप्त गर्भज मनुष्य की जघन्य उत्कृष्ट अंगुल के असंख्यातवे भाग, पर्याप्त गर्भज मनष्य की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट तीन गाउ की. ॥ २० ॥ अब देवता की अवगाहना कहते हैं, वाणव्यंतर ज्योतिषी की जैसी असुरकुमार देवता की कही तैसे ही कहना, सौधर्म देवलोक के देवता के भवधारणिय शरीर की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट सात हाथ की, उत्तर वैक्रय करे उस की जघन्य अंगुल के संख्यातवे भाग उत्कृष्ट एक लाख योजन की. ऐसे ही ईशान देवलोक की भी कहना. सनत्कुमार देवलोक के देव के भवधारणिय शरीर की जघन्य

For Private and Personal Use Only

सूत्र पुच्छा तहा सेस कप्पे देवाणंवि पुच्छा ? भाणियव्वा जाव अचुअकप्पो-सणंकुमार भवधारणिज्जा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं उक्कोसेणं छ रयणीओ, उत्तरवेउव्विया जहा सोहम्मे तहा सणंकुमारे, तहा माहिंदेवि, बंभलोग लंतएसु भवधारणिज्जा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं उक्कोसेणं पंचरयणीओ, उत्तर वेउव्विया जहा सोहम्मे, महासुक्क सहस्सारेसु, भवधारणिज्जा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं, उक्कोसेणं चत्तारि रयणीओ, उत्तर वेउव्विया जहा सोहम्मे, आणत पाणत अराण अच्युएसु भव धारणिज्जा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं, उक्कोसेणं

अर्थ अंगुल के असंख्यातवे भाग, उत्कृष्ट छ हाथ की. उत्तर वैक्रय की सौधर्म देवलोक जैसी. माहेन्द्र देवलोक की भी सनत्कुमार जैसी जानना. ब्रह्म और लांतक देवलोक के देव के भवधारणिय शरीर की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट पांच हाथ की. उत्तर वैक्रय की सौधर्मा देवलोक जैसी कहना. महाशुक्र और सहस्रार देवलोक की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट चार हाथ की, आरण अच्युत देवलोक की भी इतनी ही कहना. उत्तर वैक्रय सौधर्म देवलोक जैसी. कहना. ग्रैवेयवेक के देवता के एक भवधारणी ही शरीर है. यह उत्तर वैक्रय रूपनहीं बनाते हैं इसलिये ग्रीवेक के देवता की भवधारणीय

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

तिण्णिरयणीओ उत्तरवेउव्विया जहा सोहम्मे ॥ गेवेज्जगा देवेणं भंते! के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा एगे भव धारणिज सरीरे पण्णत्ता सेजहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जाति भागं, उक्कोसेणं दो रयणिओ॥ अणुत्तरोववाइया देवाणं भंते ! के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! एगे भव धारिणिज्जे सरीरे पण्णत्ते से जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागे उक्कोसेणं एगारयणी ॥ २१ ॥ से समासओ तिविहा पण्णत्ता तंजहा—सूईअंगुले, पतरंगुले, घणंगुले॥ एग अंगुलायया

अर्थ

शरीर की जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग उत्कृष्ट दो हाथ की. अनुत्तर विमानवासी देवता के भी एक भव धारणिय शरीर है उस की जघन्य अवगाहना अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्पत्ति काल आश्रिय और उत्कृष्ट एक हाथ की यो चौवीस दंडक के. जीवों की अवगाहना उत्सेध अंगुल से कही ॥ २१ ॥ उत्सेध अंगुल के तीन प्रकार कहे हैं. तद्यथा—१ सूची अंगुल, २ प्रतर अंगुल और ३ घनांगुल इस में एक अंगुल प्रमाण क्षेत्र की एक प्रदेशिक श्रेणी सो सूची अंगुल, सूची अंगुल को सूची गुना करे वह प्रतर अंगुल और प्रतर अंगुल को सूची से गुना करे वह घनांगुल, अहो भगवन् ! इन सूची अंगुल प्रतर अंगुल और घनागुल में कौन २ किस २ से ज्यादा कमी तुल्य बराबर





For Private and Personal Use Only

सूत्र

एग पदेसीय सेढी सूई अंगुले, सूईसूइए गुणिआ पत्तर अंगुले, पयर सूईएणिते घणंगुले ॥ एएसिणं सूई अंगुले पयर अंगुले घणंगुलोणं कयरे २ हिंतो अप्पेवा बहुएवा तुलेवा विसेसाहिएवा ? सव्वत्थोवे सूई अंगुले, पतरंगुले असंखेज्जगुणे, घणंगुले असंखेज्जगुणे, से तं उस्सेहअंगुले ॥ २२ ॥ से किं तं पमाणंगुले ? पमाणं गुले ! एगमेगस्सणं रण्णो चाउरंत चक्कवट्टिस्स अट्ठसोवण्णए कांगणी रयणे छत्तले

अर्थ

है ? अहो शिष्य ? सब से थोडा सूची अंगुल, उस से प्रतर अंगुल असंख्यातगुना और उस से घनांगुल असंख्यातगुना. यह उत्सेध अंगुल प्रमान का कथन हुआ ॥ २२ ॥ अहो भगवन् ! प्रमाणु अंगुल किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! उत्सेध अंगुल से हजार गुना अधिक वह प्रमाण अंगुल तथा प्रकर्ष रूप जिस का प्रमाण सब से बडा हो उसे प्रमाण अंगुल कहीये. वह इस प्रकार होता है भरतादि क्षेत्र में जब एकेक चक्रवर्ती महाराजा होते हैं उन के ... उन ... कांगनी रत्न होता है उस का वजन आठ सौनैये भर होता है × इस कांगनी ... चारों तरफ के चार, ऊपर, नीचे

---

× नोट ४ मधुर तृण फल का एक ... सर्षप, १६ ... सर्षप का ... को १ रती, ( गुंजा ) ८ रति का १ मासा १६ मासा, का १ सोनैया.

सूत्र

दुवालसंसिए अट्ठ कण्णिए अहिगरण संगाणं संठिए पण्णत्ते, तस्सणं एगमेगा कोडी उस्सेहंगुलविक्खंभा तं समणस्स भगवओ महावीरस्स अद्धंगुलं तं सहस्सगुण प्पमाणंगुलं भवति ॥ एतेणं अंगुलप्पमाणेणं ॥ छ अंगुलाइं पाउ, दुबालसं गुलाइं विहत्थी, दो विहत्थीउ रयणी, दोरयणीउ कुत्थी दो कुत्थिओ धणु, दोधणु सहस्साइं गाउयं; चत्तारिगाउय जोयणं॥एएणं प्पमाणंगुलेणं किं पयोयणं? एएणं प्पमाणंगुलेणं

अर्थ

दोनों यों छेतले होते हैं, ऊपर नीचे के चारों तरफ के आठ, और बीच में के चारों तरफ के चार यों बारेहांस ( पेल ) होते हैं, चार ऊपर के चार नीचे के यों आठ कर्णिका ( कौने ) होते हैं अधिकरक नाम ( सोनार की ऐरण ) के संस्थान ( आकार ) से संस्थित कहा है. उस कांगनी रत्न की एकेक कोडी ( तले ) एक उत्सेध अंगुल के प्रमाण से चौडी कही है. और वह श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामीजी का आधा अंगुल+ उसे एक हजार गुना करने से प्रमाण अंगुल का प्रमाण होता है. इस अंगुल प्रमाण

+ अर्थकार कहते हैं कि- श्री महावीर स्वामीजी का शरीर स्वत: के आत्मांगुल से ८४ अंगुल ( साढे तीन हाथ ) ऊंचा है, उत्सेध अंगुल से १६८ अंगुल का ऊंचा शरीर होता है. और जो उत्तम पुरुष का १०८ अंगुल तथा १२० अंगुल शरीर ऊंचा कहा है वह ८४ अंगुल तो सहज ही ऊंचा और दोनों हाथ ऊंचे करें तब २४ अंगुल ऊपर होते १०८ अंगुल होते हैं.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir





सूत्र पुढवीकंडाणं, पातालाणं, भावणाणं, भवणपत्थडाणं, निरयाणं, निरयावलीणं, निरय पत्थडाणं, कप्पाणं, विमाणाणं, विमाणवलीणं, बिमाण पत्थडाणं, टंकाणं, कूडाणं, सेलाणं, सिहरीणं, पभाराणं, विजयाणं, वक्खारेणं, वासाणं, वासहराणं, वेइयाणं, दाराणं, तोरणाणं, दीवाणं, समुद्दाणं,आयामाविक्खंभोचत्तोवेहपरिक्खेवा माविज्जंति ॥ से समासओ तिविहा पण्णत्ता तंजहा–सेढी अंगुले, पतरंगुले,घणंगुले, असंखेज्जाओ

अर्थ से छ अंगुल के दो पाव, बारा अंगुल की विहत्थी, दो विहत्थी का एक हाथ, दो हाथ की एक कुच्छी, दो कुच्छी का एक धनुष्य, २००० धनुष्य का गाऊ (कोस)४ गाऊ का योजन. अहो भगवन्! इस प्रमाण अंगुल से क्या प्रयोजन है ? अहो शिष्य ! इस प्रमाण अंगुल से रत्न प्रभा के १६ पृथ्वी का कांड, ४ पाताल कलश, ७ क्रोड ७२ लाख भुवनपति के भुवन, भुवन के पाथडे, नरकावासे, देवताओं के विमान, विमान की पंक्ति, विमान का पाथडा, टंक-पर्वतो का विभाग, गंगा आदि कुंड, चूल हेमवंतादि पर्वत, मेरु आदि पर्वत पर्वत की खाइ, महा विदेह क्षेत्र की विजय, बक्कार पर्वतों, हेमवयादि वास क्षेत्र, पद्मवर वेदिकादि वेदीका, विजयादि द्वार, द्वारों पर के तोरण,जम्बू आदि द्वीप, लवणादि समुद्र, इत्यादि का लम्बा पना, चौडापना का प्रमाण किया जाता है. इस प्रमाण अंगुल के भी तीन भेद कहे हैं.

For Private and Personal Use Only

सूत्र

जोयण कोडाकोडीओ सेढी सेढीय गुणिता पयरं, पयर सेढीयगुणिया लोगं, संखेज्जेणं लोगोगुणिओ संखेज्जालोगा, असंखेज्जेण लोगो गुणिउ असंखेज्जा लोगा, अणंतेणं लोगो गुणिउ अणंता लोगा ॥ एएसिणं सेढी अंगुल पयरंगुल घणंगुलाणं कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? सव्वत्थोवा सेढी अंगुले, पयरंगले असंखेज्जगुणे, घणंगुले असंखेज्जगुणे ॥ से तं प्पमाणं गुले ॥ से तं वि

अर्थ

तद्यथा-१ सूची अंगुल, २ प्रतर अंगुल, और ३ घनांगुल इस में से असंख्यात कोडाकोडी योजन श्रेणि कहे उस श्रेणि से योजन गुनाकारकरे, उसे प्रतर की श्रेणि से गुनाकार करे तब लोक होवे. उसे संख्यात लोक से गुने तब अलोक में असंख्यात लोक की कल्पना होवे, उसे असंख्यात लोक से गुनाकार करे, तब असंख्यात लोक की कल्पना होवे. उसे अनंत लोक से गुनाकार करे तब अलोक में अनंत लोक की कल्पना होवे.× अहो भगवन्! इस सेढी अंगुल, प्रतर अंगुल, घनांगुल में कौन २ थोडा ज्यादा तुल्य विशेष है? अहो शिष्य! सब से थोडा सेढी अंगुल, उस से प्रतर अंगुल असंख्यात गुना, उस से घन अंगुल असंख्यात गुना. यह प्रमाण अंगुल कहा. और यह विभाग

× अनंत लोक के आकाश प्रदेश जितने निगोद के एक शरीर में जीव हैं.

सूत्र

भागानिप्फन्ने, से तं खेत्तप्पमाणे॥२३॥से किं तं कालप्पमाणे? कालप्पमाणे दुविहे पण्णत्ते तंजहा—पदेस निप्फन्ने, विभाग निप्फन्ने॥से किं तं पदेसनिप्फन्ने ? पदेस निप्फन्ने एग समय ट्ठिईए, दुसमयाट्ठिईए, ति समयट्ठिईए, जाव दस समयट्ठितीए, संखेज समयट्ठितीए, असंखेज्जसमए ठिवीए से तं पदेस निप्फन्ने ॥ २४॥ से किं तं विभागानिप्फन्ने ? विभाग निप्फन्ने ! १ समया, २ आवलिय ३ मुहुत्ता, ४ दिवस, ५ अहोरत्त, ६ पक्ख, ७ मासाय, ८ संवच्छरं, ९ जुग, १० पलिया, ११सागर

अर्थ

निष्पन्न क्षेत्र प्रमाण हुआ ॥ और यह क्षेत्र प्रमाण भी हुआ ॥ २३ ॥ अहो भगवन् ! काल किसे कहते हैं ? अहो शिष्य काल प्रमाण दो प्रकार के कहे हैं. तद्यथा—१ प्रदेश निष्पन्न और २ विभाग निष्पन्न ॥ अहो भगवन् ! प्रदेश निष्पन्न किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! प्रदेश निष्पन्न काल प्रमान सो—एकसमय स्थिति वाला, दो समय स्थिति वाला, तीन समय स्थिति वाला, यावत् दश समय की स्थिति सख्यात, काल समय की स्थिति वाला, और असंख्यात समय की स्थिति वाला, यह प्रदेश निष्पन्नहुआ ॥ २४ ॥ अहो भगवन् ! विभाग निष्पन्न किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! विभाग निष्पन्न सो—१समय २ आवलिका, ३ मुहुर्त, ४ दिन, ५ अहो रात्रि, ६ पक्ष, ७ महिने, ८ सं[illegible] ९

१२ उसप्पिणी, १३ परियट्टा ॥ २५ ॥ से किं तं समए ? समए! समयस्सणं पन्नवणा करिस्सामि से जहा नामए—तुन्नागदारए सिया तरुणे, बलवं, जुगवं,जुवाणे, अप्पायंके थिरग्गहत्थे, दढपाणिपाय, पासपिट्ठंतराउरु परिणते तल जमल परिहाणि भवाहु चमेट्ठग दुहण मुट्ठिय समाहत निचिय गतकाए, उरस्सबल समन्नागए लंघण पवण जविण वायाम समत्थे छेए दक्खेपत्तट्ठे कुसले मेहावी निउणे निउवण सिप्पो वगए, एगं महं तीती पडिसाडियंवा पट्टसाडियंवागाहाय संयराहं हत्थमेत्तं उसारेज्जा





जुग, १० पल्योपम, ११ सागरोपम, १२ उत्सर्पनी, १३ अवसर्पनी, १४ पुद्गल परावर्त ॥ ३५ ॥ अहो भगवन् ! समय किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! अब में समय की प्ररूपना करता हुं तथा दृष्टान्त— दरजी का पुत्र तरुण अवस्था वाला, शरीर कर बलवान्, सुख युक्त का जाना, योवनवंत, रोग रहित. स्थिर संघयन का धारक, हाथ पांव जिस के दृढ—मजबूत हो. ऐसे ही पृष्ट पृष्टान्तर—हृदय उरु— साथल पूर्ण हो तल वृक्ष के युगल समान वर्तुलाकार स्कन्ध हो. नगर की भांगल समान भुजा हो. लोह के मुद्गल मुष्टीकर फिरा कर मजबुत निबड शरीर किया हो, हृदय के बलकर प्रतिपूर्ण हो किसी वस्तु का उल्लंघन प्रलंघन करने में समर्थ हो, छेदज्ञ—प्रयोग का जान. प्रतिवृक्षे कुशल हो मेधावी— पंडित हो, निपुण हो सिल्पोपग्राही हो, इस प्रकार का दरजी का पुत्र एक बडी वस्त्र की साडी सूक्ष्म सूत

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

तत्थ चोअए पण्णवयं एवं वयासी—जेणं कालेणं तेणं तुन्नागदारएणं तीसेपडि साडियाए वा पट्टसाडियाए वा सयराहं हत्थमेते उसारिते से समए भवती ? नोइणट्ठे समट्ठे, कम्हा ? जम्हा संखेज्जाणं तंतूणं समुदय समिति समागमेणं एग पडिसाडिया निप्फज्जइ, उवरिज्जंमितंतुमी अछिन्ने हेट्ठिल्ले तंतु नाछिज्जइ, अन्नंमिकाले उवरिल्ले तंतु छिज्जइ अन्नंमि काले हेट्ठिले तंतु छिज्जइ,तम्हा से समए न भवती, एवं वयंतं पंण्णवयं चोअयए एवं वयासी—जेणं कालेणं तेणं तुन्नाग दारएणं तीसे

अर्थ

की वनाइ हुई उसे ग्रहण कर के शीघ्रता से हाथ कर फाडे तब शिष्य गुरु से यों कहने लगा कि—अहो भगवन् ! जिस वक्त वह दरजी का पुत्र उस साडी के पट को सूक्ष्म—वारीक सूत से बनाये हुअे को एक ही वक्त हाथ में ग्रहण कर फाडने लगा उसे समय कहना क्या ? अहो शिष्य ! यह अर्थ योग्य नहीं. अहो भगवन् ! किस कारन यह अर्थ योग्य नहीं है ? अहो शिष्य ! जिस लिये संख्याते तंनू ( तारा ) के समुदाय के समागमकर एक पट साडिका वस्त्र निष्पन्न हुआ है उस में का उपर का प्रथम का एक तूंतू [ तार ] का छेदन हुअे विने अन्य नीचे के तार का छेदन नहीं होवे, इस लिये ऊपर का तंतू टूटा वह काल अलग और नीचे का दूसरा तंतू टूटा वह काल अलग. इस लिये उसे समय नहीं कहना.ऐसा सुनकर फिर शिष्य वोला—जिस वक्त वह दरजी का पुत्र उस पटसाटी का का ऊपर का

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

पडि साडिए एवा पट्ट साडिया एवा उवरिल्ले तंतुछिन्ने से समए भवति? नो इणट्ठे समट्ठे कम्हा? जम्हा संखेज्जाणं पमाणं समुदाय सामिति समागमेणं एगे पम्हेछिज्जति उवरिल्ले पम्हेअछिन्ने हेट्ठिल्ले पम्हेन छिज्जति अन्नंमिकाले पम्हेछिज्जति, अन्नंमिकाले हेट्ठिले पम्हे- छिज्जति तम्हा से समए न भवति, एयं वयंतं तं पण्णवगं चोयए वयासी-जेणं कालेणं तेणं तुन्नाग दारएणं तस्स तंतुस्स उवरिल्ले पम्हेछिन्ने से समए भवति? न भवति, कम्हा? जम्हा अणंताणं संघायाणं समुदय समिती समागमेणं एगे पम्हे निप्फज्जति उवरिल्ले संघाते अविसंघाते हेट्ठिल्ले संघाते नवि संघातिज्जति, अन्नंमि काले उवरिल्ले संघाते

अर्थ

तार तोडे उतने में एक समय हो जाता है क्या? अहो शिष्य! यह अर्थ भी समर्थ नहीं. अहो भगवन्! किस कारन यह अर्थ समर्थ नहीं? अहो शिष्य! जिस लिये संख्याते रुइ के तंतू के समूह के समागम से वह एक तार बना है, उस में का ऊपर का रूई का तंतू तूटे विना नीचे का तंतू टूटता नहीं हैं. इसलिये ऊपर का तंतू तोडा वह काल अलग और नीचे का तंतू तोडा वह काल अलग इसलिये वह समय नहीं होता है. ऐसा सुन शिष्य ने प्रश्न किया अहो भगवन्! जिस वक्त उस दरजी के पुत्र नें उस सूत्र-तार का उपर का रुइ का तंतू तोडा उसे समय कहना क्या? अहो शिष्य! यह अर्थ समर्थ नहीं. अहो भगवन्! किसलिये यह अर्थ समर्थ नहीं? अहो शिष्य! वह रुइ का तंतू अनंत पुद्गल प्रमाणुओं केस समुदाय के मागम कर निष्पन्न हुवा है उस में

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

विसंघाति, अन्नांमि काले होट्ठिले संघाते विसंघातिज्जाति, तम्हा से समए न भवति एतोविअन्नं सुहुमतराए समए समणाउसो ! असंखेज्जाणं समयाणं समुदय सामिति समागमेणंआवालि आत्तिपवुच्चाति, संखेज्जाउ आवलियाउ ऊसासो संखेज्जाउ अवालियाउ नीसासो, ( गाहा )—हट्ठस्स अणवल्लगस्स, निरुवकिट्ठस्स जंतुणो ॥ एगे ऊसासनिसासे एस पाणुत्ति पवुच्चइ ॥ १ ॥ सत्तपाणुणिसेथोवे, सत्तथोवाणिसे लवे ॥ लवाणं सत्तहत्तरिए, एस मुहुत्तेत्ति आहिते ॥ २ ॥ तिण्णि व सहस्सा,

अर्थ

का ऊपर का परमाणु अलग हुवे विना नीचे का परमाणु अलग नहीं होता है, इसलिये ऊपर का परमाणु अलग हुवा वह काल अलग और नीचे का परमाणु अलग हुवा वह काल अलग. इसलिये उसे समय नहीं कहनां. अहो शिष्य ! इस काल से भी अत्यन्त सूक्ष्म समय है अर्थात् एक तार तूटे उतने काल में असंख्यात समय व्यातीत हो जाते है. अहो श्रमण आयुष्यमंतो ! इस प्रकार के असंख्यात समय के समुदाय के समागम से एक आवलिका काल कहा है. संख्यात ( ३७३७ )आवलिका का एक उश्वास होता है और संख्यात आवलिका का ही एक निश्वास होता है. यह श्वाशोश्वास उस ही मनुष्य का ग्रहण करना कि जिस मनुष्य का शरीर हृष्टपुष्ट हो ग्लानानि व जरा कर रहित हो, किसी प्रकार के उपद्रव कर रहित ऐसे मनुष्य के श्वासोश्वास को आणपाण कहते हैं. ऐसे ७ आणपाण

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

सत्तयसयाइं तेहत्तरि च उस्सासा ॥ एस मुहुत्तो भाणिओ, सव्वेहि अणंत नाणीहिं ॥ ३ ॥ एएणं मुहुत्त पमाणेणं, तीसं मुहुत्ता अहोरत्तं ॥ पण्णरस अहोरत्ता पक्खो, दो पक्खामासो दोमासा उऊ तिण्णि उऊ अयणं, दो अयणाइं संवच्छरे, पंच संवच्छराइं जुगे वीसजुगाइं वाससयं, दसवास सयाइं वास सहस्सं सयं वास सहस्साणं वास सय सहस्सं. चउरासी वास सयसहस्साइं से एगे पुव्वंगे, चउरासीइं पुव्वंग सय सहस्साइं से एगे पुव्वे, चउरासीइं पुव्वसत से एगेतु डिअंगे, चउरासिति

अर्थ

का एक स्तोक काल होता है. ७ स्तोक काल का १ लव, ७७ लव का एक मुहूर्त तीन हजार सात सो तीहातर ( ३७७३ ) श्वासोश्वास का एक मुहूर्त अनंत तीर्थंकरोने कहा है. इस मुहूर्त के प्रमाण कर ३० मुहूर्त की अहो रात्रि, १५ अहो रात्रि का पक्ष, २ पक्ष का महिना, २ महिने की ऋतु, ३ ऋतु की अयन, २ अयन का १ संवत्सर ( वर्ष ) पांच वर्ष का युग, २० युग के सो वर्ष. दश सो वर्ष के १ हजार वर्ष, १०० हजार वर्ष के १ लाख बर्ष, ८४ लाख वर्ष का एक पूर्वांग, ८४ लाख पूर्वांग का एक पूर्व. ८४ ॥ लाख पूर्व का १ तुटिआंग, ८४ लाख तुटिअंग का १ तुटित. ८४ लाख तुटित का १ अडडांग, ८४ लाख अडडांग का १ अडड, ८४ लाख अडड का १ अववांग, ८४ लाख अववांग का एक अवव, ८४ लाख अवव का एक हुहुआंग, ८४ लाख हुहुआंग का १ हुहु ८४ लाखहुहु

For Private and Personal Use Only

सूत्र

तुडिअगं सत सहस्साइं से एगेतुडिए, चउरासीति तुडिय सत सहस्साइं से एगे अडडंगे, चउरासीति अडडंगे सत सहस्साइं से एगे अडडे, एवं अववंगे, अववे, हुहुअंगे हुहुए, उप्पलंगे, उप्पले, पउमंगे, पउमे, नालिणंगे, नालिणे, अत्थिनिपुरंगे, अत्थिनिपुरे, अउयंगे, अउए, पउअंगे, पउए, णउअंगे, णउए, चूलिअंगे, चूलिणा; चउरासीति सीसपहेलिअंगे सत सहस्साइं सा एगासीस पहेलिया ॥ एतावता चेव गणिए, एतावता चेव गणियस्सविसए, एतोपर उवमिए पवत्तत्ति ॥ २६ ॥ से किं

अर्थ

का १ उत्पलांग, ८४ लाख उत्पलांग का १ उत्पल, ८४ लाख उत्पल का एक पद्मांग, ८४ लाख पद्मांग का एक पद्म. ८४ लाख पद्म का १ नलिनांग, ८४ लाख नलीनांग का १ नलीन, ८४ लाख नलीन का १ अत्थीनेपुरांग, ८४ लाख अत्थिनेपुरांग का १ अत्थिनेपुर, ८४ लाख अत्थीनेपुर का १ अउअंग, ८४ लाख अउअंग का १ अउ. ८४ लाख अउ का एक पउमांग, ८४ लाख पउमांग का पउम, ८४ लाख पउम का १ नउअंग, ८४ लाख नउअंग का १ नउ, ८४ लाख नउ का १ चूलिआंग, ८४ लाख चूलिआंग का १ चूलित, ८४ लाख चूलित का १ शिर्षपहेलिकांग, ८४ लाख शिर्षप्रहेलीकांग का १ शिर्षप्रहेली, यहां तक सब १९४ अंक हुअे यहां तक गणित संख्या का प्रमाण है. इस के उपरांत असंख्य होने से उस का स्वरूप ओपमा प्रमाण द्वारा कहते हैं ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! उपमिक

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







मूल

तं उवमिए? उवमिए दुविहे पण्णत्ते तंजहा—पलिओवमेय, सागरोवमेय ॥ से किं तं पलिओवमे ? पलिओवमे तिविहे पण्णत्ते तंजहा—उद्धार पलिओवमे अद्धा पलिओवमे खेत्त पलिओवमे ॥ से किं तं उद्धार पलिओवमे? उद्धार पलिओवमे ! दुविहे पण्णत्ते तंजहा सुहुमेय, ववहारिएय ॥ तत्थणं जे से सुहुमे ते ठप्पे ॥ तत्थणं जे से ववहारिए—से जहा नामए पल्लेसिया जोयण आयामविक्खंभेणं, जोयणं उव्वेहेणं तंतिगुणं सविसेसं

अर्थ

प्रमाण किसे कहते हैं ! अहो शिष्य ! ओपमिक प्रमाण के दो भेद कहे हैं तद्यथा—१ पल्योपम और २ सागरोपम ॥ अहो भगवन् ! पल्योपम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! पल्योपम तीन प्रकार के कहे हैं. तद्यथा—१ उद्धार पल्योपम, २ अद्धा पल्योपम और ३ क्षेत्र पल्योपम ॥ अहो भगवन् ! उद्धार पल्योपम किसे कहते है ? अहो शिष्य ! उद्धार पल्योपम दो प्रकार के कहे हैं, तद्यथा—१ सूक्ष्म उद्धार पल्योपम और २ व्यवहार पल्योपम * इस में जो सूक्ष्म पल्योपम है उसे यहां स्थिर रखना

* यहां अनुद्वार सूत्र में प्रथम उत्सेध अंगुल का मान भरतैरावत क्षेत्र के मनुष्य के बालाग्र से कल्पा है यह योजन तो फक्त २४ दंडक के जीवों के शरीर की अवगाहना की मपती करने कल्पा है इस लिये इस योजन को यहां कूप के प्रमाण में ग्रहण नहीं करना परन्तु जो भगवती सूत्र के ६ शतक ७ उद्देशे में महाविदेह क्षेत्र के मनुष्य के बालग्र की एक लीख गिनी है उस योजन के मान से एक योजन का कुप जानना. यह योजन उक्त योजन से कुछ कम होता है. यही योजन उद्धारादि पल्योपम के मान में ग्रहण किया गया है.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

परिक्खेवेणं, सेणं पल्ले एगाहिय बेआहिय तेआहिय, उक्कोसेणं सत्तरत्त परूढाणं संसट्ठे सन्निचित्ते भरते बालग्गे कोडीणं तेणाबलग्गा नो अग्गी डहेज्जा, नो वाउहरेज्जा, नो कुहेज्जा, नो पलिविद्धंसेज्जा नो पूइत्ताए हव्वमागच्छेज्जा तओणं समए २ एगमेगं बालग्गं अवहाय जाव इएणं कालेणं सेपल्ले खीणे नीरइए निल्लेवे निट्ठिते भवइ, से तं ववहारिए उद्धार पलिओवमे ॥ ( गाहा ) एएसिं पल्लाणाणं,

अर्थ

अर्थात् सूक्ष्म पल्योपम का वर्णन आगे करेंगे. और जो व्यवहार पल्योपम है, वह यथादृष्टांत कोइ पाला [ धान की मपती करने का टोपला या कुप ] एक योजन का लम्बा चौडा गोल और एकही योजन का ऊंडा, उस की त्रिगुनी से कुछ अधिक परधी. उस पाले में एक दिन के दो दिन के उत्कृष्ट सात दिन के जन्मे बच्चे के बालाग्र छेदन कर एकत्र करें वे क्रोडोंगम बालाग्र कर उस पाले को माति पूर्ण ठोंस २ कर भरे, ऐसे ठोंस के भरे की उन बालाग्रकों अग्नि जलासके नहीं, वायु उडासके नहीं. अन्दर सडने पावे नहीं ( पोलार के अभाव से ) विनाश पावे नहीं. दुर्गंधीपने को प्राप्त होवे नहीं. इस प्रकार ठसोठस भरकर फिर उन बालाग्र में से एकेक समय में एकेक बालाग्र निकाले यों निकालते २ जितने काल में वह पाला खाली होवे, बालाग्र के रज रहित लेप रहित, होवे अर्थात् सब बालाग्र उस के निकल

For Private and Personal Use Only

सूत्र

कोडाकोडिहवेज्ज दसगुणिया ॥ तं चेवव ववहारियस्स उद्धारसागरोवमस्स एगस्स भवे परिमाणं ॥ १ ॥२७॥ एतेहिं चेवव वहारिया पलिओवम सागरोवमेहिं किं पयोयणं एतेहिं ववहारिय पलिओवमेहिं सागरोवमैहिं णत्थि किंचिवि पउयणं केवलं पणवणा पणविज्जंति स तं ववहारिए उद्धार पलिओवमे ॥ २८ ॥ से किं तं सुहुमे उद्धार पलिओवमे ? सुहुमे उद्धार पलिओवमे से जहा णामए पल्ले सिया जोयणं आयामाविक्खंभेणं जोयणं उव्वेहेणं, तं तिगुणसविसेसं परिक्खेवेणं सेणं पल्ले एगाहिया

अर्थ

जावे एक भी बालाग्र उस में रहे नहीं उतने काल के समुह को एक व्यवहार पल्योपम कहना. और इस उद्धार पल्योपम के काल को दस क्रोडाक्रोड गुना करे, उतने काल के समुह एक उद्धार सागरोपम का प्रमाण होता है. ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! इस व्यवहार पल्योपम सा[illegible] से क्या प्रयोजन है ? अहो शिष्य ! इस व्यवहार पल्योपम सागरोपम से कुछ भी प्रयोजन [illegible] यह कुछ भी काम में आता नहीं है, फक्त वस्तुतः भेद बताने के लिये ही यहां इस की प्ररूपना की गइ है. यह व्यवहार उद्धार पल्योपम हुवा. ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! सूक्ष्म उद्धार [illegible]पम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! सूक्ष्म उद्धार पल्योपम भी यथा दृष्टांत पाला ( या कुवा ) [illegible] [illegible]जन का लम्बा चौडा और एक योजन का ऊंडा त्रिगुनी कुछ अधिक परधी वाला उस पाले से एक दिन के दो दिन के

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

बेआहिया तेआहिया उक्कोसेणं सत्तरत्त परूढाणं संसट्ठे सनिवत्तिते भरते वालग्गकोडीणं तत्थणं एगमगे बालग्गे असंखेज्जाइं खंडाइं कज्जइ तेणं वालग्गा दिट्ठिउगाहणाउ असंखेज्जति भागमेत्ता सुहुमस्स पणगजीवस्स सरीरोगाहणाउ असंखेज्जगुणा तेणं वालग्गा, नो अग्गीडहेज्जा नो वाउहरेज्जा, नो पलिविद्धंसेज्जा, नो पूइत्ताए हव्वमा-च्छेज्जा, तउणं समए २ एगमेगे वालग्गं अवहाय जावइएणं कालेणं से पल्ले खीणे नीरए निल्लेवे णिट्ठिए भवति से तं सुहुमे उद्धार पलिओवमे ॥ एएसिं पल्लाणं

अर्थ

तीन दिन के उत्कृष्ट सात दिन मे जन्मे बच्चे के बालाग्र उस एकेक बालाग्र के असंख्यात २ खण्ड (टुकडे) इतने बारीक हों जावें की जो दृष्टी के ग्राह्य में नहीं आवें, क्यों कि उनकी अवगाहना अंगुल के असंख्यातवे भाग होने से देखावें नहीं. वह बालग्र सूक्ष्म फूलन में रहे जो जीवों हैं उन के शरीर की अवगाहना से असंख्यात गुना अधिक बडा जानना. ऐसे बालाग्र कर उस पाले को ऐसा ठोंस २ कर भरे कि उसे अग्नि जला सके नहीं वायु उडासके नहीं, पानी सडा सके नहीं विनाश पा सके नहीं कदापि दुर्गंध को प्राप्त होवे नहीं. फिर उन बालाग्र में से एकेक बालाग्र समय २ में हरण कर निकालेवे २ जितने काल में वह पाला खाली होवे रज रहित लेप रहित होवे अर्थात् सब बालाग्र खुट जावे उस में एक भी बालाग्र रहे नहीं उतने काल के समुह को एक सूक्ष्म उद्धार पल्योपम कहना. और ऐसे दश

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

कोडाकोडी हवेज्ज दसगुणिता तं सुहुमस्स उद्धार सागरोवमस्स भवेपरिमाणं ॥ एतेहिं सुहुम उद्धार पलिओवम सागरोवमेहिं किं पयोयणं ? एतेहिं सुहुम उद्धार पलिउवम सागरोवमेहिं दीवसमुद्दाणं उद्धारोघेप्पइ ॥ २९ ॥ केवइयाणं भंते ! दीव समुद्दा उद्धारेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जावइयाणं अड्ढाइज्जाणं उद्धार सागरोवमाणं उद्धारसमया एवइयाणं दीव समुद्दा उद्धारेणं पण्णत्ता, से तं सुहुमे उद्धार पलिओवमे ॥ से तं उद्धार पलिओवमे ॥ ३० ॥ से किं तं अद्धापलिओवमे ? अद्धापलिओवमे दुविहे पण्णत्ते तंजहा—सुहुमेय, ववहारिएय ॥ ३१ ॥ तत्थणं जे

अर्थ

क्रोडाक्रोड पाले खाली होवे वह सूक्ष्म उद्धार सागरोपम का प्रमाण जानना. अहो भगवन् ! इस सूक्ष्म उद्धार पल्योपम सागरोपम से क्या प्रयोजन है ? अहो शिष्य ! इस सूक्ष्म उद्धार पल्योपम सागरोपम कर द्वीप समुद्रों का उद्धार [ संख्या ] का प्रमाण किया जाता है ॥ २९ ॥ अहो भगवन् ! वे द्वीप समुद्रों कितने हैं ? अहो शिष्य ! जितने अढाइ ( २॥ ) उद्धार सागरोपम ( अर्थात् २५ क्रोडाक्रोड उद्धार पल्योपम ) जिस के समय होते हैं. इतने सब द्वीप समुद्रों कहे हैं. यह सूक्ष्म उद्धार दल्योपम कहा हैं. ॥ ३० ॥ अहो भगवन् ! अद्धा पल्योपम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! अद्धा पल्योपम के दो भेद कहे है. तद्यथा—सूक्ष्म अद्धा पल्योपम और व्यवहार अद्धा पल्योपम ॥ ३१ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

जे से सुहुमे सेट्टुप्पे, तत्थणं जे से ववहारिए से जहा नामए पल्लेसिया जोयणं आयाम विक्खभेणं, जोयणं उव्वेहेणं, तं तिगुणं सविसेसेणं परिक्खेवेणं,संणे पल्ले एगाहिय, बेयाहिया तेयाहिय जाव भरिए वालग्ग कोडीणं तेणं वालग्गा णो अग्गीडहेज्जा, नो वाउहरेज्जा, नो कुहेज्जा, नो पलिविद्धंसेज्जा, नो पूइत्ताएहव्वमागच्छेज्जा, ततेणं वाससए २ एगमेगं वालग्गं अवहाय जावइएणं कालेणं से पल्लेखीणे निरए निल्लेवे, निट्ठिए भवति-सेतं ववहारिए अद्धापलिउवमे ॥ एएसिं पल्लाणं कोडाकोडी भविज्ज दसगुणिया तं ववहारियस्स अद्धासागरोवमस्स

अर्थ

इस में सूक्ष्म पल्योपम तो यहां ही रहा, और जो व्यवहार अद्धा पल्योपम है सो यथा दृष्टांत-उक्त प्रकार कोइ पाला एक योजन का लम्बा चौडा और एक योजन का ऊंडा त्रिगुनी अधिक परधी वाला उस पाले को एक दिन दो दिन तीन दिन यावत् सात दिन के बच्चे के बालाग्र की क्रोडाक्रोडी कर. उस पाले को ठोंस २ भरे इस प्रकार भरे की उसे अग्नि जला सके नहीं, वायु उडा सके नहीं, पानी गलासके नहीं. किसी भी प्रकार विध्वंस पासके नहीं फिर उस पाले में से सो सो वर्ष के अन्तर से एकेक बालाग्र निकालते २ जितने काल में वह पाला खाली होवे रज रहित लेप रहित साफ खाली होवे एक भी बालाग्र उस में रहे नहीं उतने वर्षों के समुह को एक अद्धा पल्योपम कहना. और ऐसे दश क्रोडाक्रोड

सूत्र

एगस्स भवे परिमाणं॥एएहिं ववहारि एहिं अद्ध पलिउवम सागरोवमेहिं किं पयोयणं॥एएहिं ववहारिएहिं अद्धा पलिउवमेहिं सागरोवमेहिं नात्थि किंचि पयोयणं, केवल पणवणा पणविज्जंति, से तं ववहारिए अद्धा पलिओवमे ॥ ३२ ॥ से किं तं सुहुमे अद्धा पलिओवमे—से जहा नामए पल्ले सिया जोयणं आयाम विक्खंभेणं, जोयणं उव्वेहेणं. तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं, सेणं पल्लेए एगाहिया बेयाहिया तेयाहिया जाव ससरत्त पसूढाणं, संसट्ठे सन्निचिए, भरिहे वालग्गाण कोडीण, तत्थणं एगमेगे वालेग्गे असंखेज्जाइ खंडाइ कज्जाइ, तेणं बालग्गा दिट्ठीणं उग्गाहणाओ असंखेज्जइमे

अर्थ

पाले खाली होवे इतने वर्षों के समूह को एक व्यवहारिक अद्धा सागरोपम कहना. अहो भगवन् ! इस व्यवहार अद्धा पल्योपम सागरोपम से क्या प्रयोजन है ? अहो शिष्य ! इस व्यवहार अद्धा पल्योपम सागरोपम से कुछ भी प्रयोजन नहीं है, फक्त प्रमाण मात्र बताया है. यह व्यवहार अद्धा पल्योपम कहा. ॥ ३२ ॥ अहो भगवन् ! सूक्ष्म अद्धा पल्योपम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! सूक्ष्म अद्धा पल्योपम सो यथा दृष्टांत—उक्त प्रकार का ही पाला एक योजन का लम्बा चौडा यावत् त्रिगुनी परधी वाला उस पाले को एक दिन के दोदिन के तीन दिन के यावत् सातदिन के जन्मे बच्चे के बालाग्र ग्रहण कर उनमें से एकेक बालग्रह के असंख्यात खण्ड करे, वे ऐसे सूक्ष्म होजावे की वे दृष्टीसे देखसके नहीं

सूत्र

भागमेत्ता, सुहुमस्स पणग जीवस्स सरीरोगाहणाउ असंखेज्जगुणा, तेणं वालग्गणोअग्गीड हेज्जा नो वाउ हरेज्जा, नो कुहेज्जा, पलिविद्धंसेज्जा नो पूइत्ताए हव्वमगच्छेज्जा, ततेणं वाससए २ एगमेगं वालग्गं अवहाय जावइएणं कालेणं से पल्ले खीणे निरए निल्लेवे निराट्ठिया भवति से तं सुहुमे अद्धा पलिउवमे ॥ एएसिं पल्लाणं कोडाकोडी भवेज्ज दस गुणिया तं सुहुमस्स अद्धा सागरोवमस्स, एगस्स भवे परिमाणं ॥ एतेहिं सुहुमेहिं अद्धा पलिओवम सागरोवमेहिं किं पयोयणं, एतेहिं सुहुमेहिं अद्धा पलिउवम सागरोवमेहिं नेरइय तिरिक्खजोणिय मणुस्स देवाणं आउयंमविज्जं ॥

अर्थ

क्योंकि उन की अवगाहना अंगुलके असंख्यातवे भाग की होती है, उन बालाग्र कर उस पालेको ठसोठस एसा भरे की जिसे अग्नि जलासके नहीं, वायुउडास के नहीं, पानी गाला नहीं किसी भी प्रकार विध्वंस पासके नहीं, उन बालाग्र मेंके सो सो वर्ष में एक बालाग्र निकलते २ जितने काल में वह पाला खाली होजावे रजरहित लेप रहित साफ होजावे उतने वर्ष के समूह को एक सूक्ष्म पल्योपम कहना और ऐसे दश क्रोडा क्रोडी पाले खाली होजावे इतने वर्ष के समूह को एक सूक्ष्म अद्धा सागरोपम कहना ॥ अहो भगवन् ! इस सूक्ष्म अद्धा पल्योपम से क्या प्रयोजन हैं ? अहो शिष्य ! इस सूक्ष्म अद्धा पल्योपम सागरोपम से नरक तिर्यंच मनुष्य देवता का आयुष्य का प्रमाण किया जाता है ॥ ३१ ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

नेरइयाणं भंते! केवइयं कालं ठिइ पण्णत्ता ?गोयमा! जहन्नेणं दसवास सहस्साइं उक्कोसेणं तेतीसं सागरोवमाइं, रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाणं भंते ! केवइयं काल ठिइ पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दस वास सहस्साइं उक्कोसेणं एग सारगोवमं, अपज्जत्तगरयणपभा पुढवी नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता?गोयमा ! जहन्नेणंवि अंत्तोमुहुत्तं उक्कोसेणं वि अंतोमुहुत्तं, पज्जत्तगरयणप्पभा पुढवी नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालंठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दस वास सहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं एग सागरोवमं अंतोमुहुत्तं ॥ सक्करप्पभा पुढवी नेरइया

अर्थ

अहो भगवान् ? समुचय नरक के जीवों की कितने कालकी स्थिति कही है ? अहो शिष्य ! जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट तेंतीस सागरोपम की ॥ अहो भगवान् ! रत्नप्रभा नरक के नेरीये की कितनी स्थिति कही है ? अहो शिष्य ! जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट एक सागरोपम की. अहो भगवान् ! अपर्याप्त नरक के नेरीयेकी कितने काल की स्थिति कही है ! अहो शिष्य ! जघन्य उत्कृष्ट अन्तर मुहूर्त एसे ही प्रश्नोत्तर आगे भी सर्व स्थान जनना. पर्याप्त रत्नप्रभानरक के नेरीये जघन्य दश हजार वर्ष अन्तर मुहुर्त कर्व (यह अपर्याप्त अवस्था का अन्तर मुहुर्त्त कमी जानना ऐसे ही सर्व स्थान

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

णं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा ! जहन्नेणं एगं सागरोवमं, उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं, एवं सेसं पुढवीसु पुच्छा?भाणियव्वाइं-जहण्णं एगं सागरोवमं, उक्कोसेणं तिण्णि; वालुप्पभा पुढवी नेरइयाणं जहण्णं तिण्णि सागरोवमाइं, उक्कोसेणं सत्तासागरोवमाइं, पंकप्पभा पुढवी नेरइयाणं जहन्न सत्त सागरोवमाइं, उक्कोसेणं दससागरोवमाइं, धूमप्पभापुढवी नेरइयाणं जहण्णं दस सागरोवमाइं, उक्कोसेणं सत्तरस्ससागरोवमाइं, तमप्पभाए पुढवी नेरइयाणं जहण्णं सत्तरस सागरोवमाइं उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं, तमतमा पुढवी नेरइयाणं भंते ! केवतियं कालंठिति पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्ण बावीसंसागरोवमाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं

अर्थ

जानना ) उत्कृष्ट एक सागरोपम अन्तर मुहुर्त कम. शर्करप्रभा नरक के नेरीये की जघन्य एक सागरोपम की उत्कृष्ट तीन सागरोपम की वालुप्रभा नरक के नेरीये की, जघन्य तीन सागरोपम उत्कृष्ट सात सागरोपम, पंकप्रभा नरक के नेरीये जघन्य सात सागरोपम उत्कृष्ट दश सागरोपम धूम्रप्रभा नरक के नेरीये की जघन्य दश सागरोपम उत्कृष्ट सतरा सागरोपम. तम प्रभा नरक के नेरीये की जघन्य सतरा सागरोपम उत्कृष्ट बावीस सागरोपम की, तमतम प्रभा नरक के नेरीये की जघन्य

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

॥ ३४ ॥ असुरकुमाराणं भंते ! केवइयं कालंठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णं दसवास सहस्साइं उक्कोसेणं सातिरेगं सागरोवमं, असुरकुमारीणं भंते ? केवतियं कालं ठिति पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्ण दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं अद्धपंचमाइं पलिओवमाइ ॥ नागकुमारणं भंते! केवतियं कालंठिति पण्णत्ता ? गोयमा! जहण्ण दसवाससहस्साइ, उक्कोसे देसूणाइं दुण्णिपलिओवमाइं, नागकुमारीणं भंते ! केवइय कालं ठिति पण्णत्ता? गोयमा ! जहण्ण दसवाससहस्साइं, उक्कोसं देसूणं पलिओवमं, एवं जहा नागकुमाराणं देवाणं देवीणय तहा जाव थणियकुमाराणं देवाणय देवीणय भाणियव्वं ॥ ३५ ॥ पुढवीकाइयाणं भंते ! केवइयं कालंठिइ पण्णत्ता ?

अर्थ

बावीस सागरोपमकी उत्कृष्ट तेंतीस सागरोपम की,॥३४॥असुर कुमार देवताकी जघन्य दश हजार वर्षकी उत्कृष्ट कुछ अधिक एक सागरोपम की. असुर कुमार की देवी की जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट साढी चार पल्योपम की, नागकुमार देवता की जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट कुछ कम दो पल्योपम की, नागकुमार की देवी की जघन्य दश हजारवर्ष उत्कृष्ट कुछ कम एक पल्योपम. यों जिस प्रकार नागकुमार देवता की और देवी की स्थिति कही उस ही प्रकार यावत् स्तनित कुमार पर्यन्त देवता की देवी स्थिति कहना. ॥ ३५ ॥ पृथ्वीकाया की जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट बावीस हजार वर्ष की सूक्ष्म पृथ्वी काया

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

गोयमा ! जहण्णं अंतोमुहुत्तं उक्कोसं बावीसं वाससहस्साइं, सुहुमपुढवीकाइयाण ओहियाणं अप्पज्जत्तगाणं पज्जत्तगाणं तिण्हंपिं पुच्छा ? गोयमा : जहणेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ बादर पुढवी काइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं, अपज्जत्तग बादर पुढवी काइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्ण अंतोमुहुत्तं उक्कोसं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुतुणाइं, एवं सेस काइयाणवि पुच्छा वियणं भाणियव्वं, आउकाइयाणं जहण्णं अंतोमुहुत्तं उक्कोसं सत्तवाससहस्साइं, सुहुमआउकाईयाणं ओहियाणं अपज्जत्तगाणं पज्जत्तगाणं तिण्हिवि जहणेणंवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं पज्जत्तगा बादर आउकाइयाणं

अर्थ

औधिक की अपर्याप्त की और पर्याप्त की जघन्य और उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की स्थिति जानना. बादर पृथ्वीकाय की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट बावीस हजार वर्ष की अपर्याप्त बादर पृथ्वीकाय की जघन्य भी उत्कृष्ट भी अंतर्मुहूर्त की. पर्याप्त बादर पृथ्वीकाया की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट बावीस हजार वर्ष में अंतर्मुहूर्त कम. हीऐसे समुचय अप्काय की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट सात हजार बर्ष की, सूक्ष्म अप्काय सूक्ष्म अप्काय के अपर्याप्त और पर्याप्त की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की बादर अप्कायकी जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट सात हजार वर्ष की. बादर अप्काय के अपर्याप्त की जघन्य उत्कृष्ट

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसं सत्तवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, तेउकाइयाणं जहण्णं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णिराइंदियाइं सुहुम तेउकाइयाणं ओहियाणं अपज्जत्ताणं पज्जत्ताणं तिण्णिवि जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं, बादर तेउकाइयाणं जहण्णं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णिराइंदियाइं, अपज्जत्तगबादरतेउकाइयाणं जहन्नेणंवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वि अंतोमुहुत्तं, पज्जत्तगबादर तेउकाइयाणं जहण्णं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णिराइंदियाणं अंतोमुहुत्तूणाइं, वाउकाइयाणं जहण्णं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णिवास सहस्साइं सुहुमवाउकाइयाणं ओहियाणं अपज्जत्तगाणं पज्जत्तगाणय तिण्हंवि जहण्णेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं बादरवाउकाइयाणं जहण्णं अंतोमुहुत्तं उक्कोसं

अर्थ

अंतर्मुहूर्त की बादर अप्काय के पर्याप्त की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट सात हजार वर्ष अंतर्मुहूर्त कम की. समुचय तेजस्काय की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट तीन अहोरात्रि,की सूक्ष्म तेजस्काय सूक्ष्म तेजस्काय के अपर्याप्त और पर्याप्त तीनों की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की बादर तेजस्काय की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट तीन अहो रात्रि की, बादर तेजस्काय के अपर्याप्त की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की बादर तेजस्काय के पर्याप्त का जघन्य अन्तर मुहूर्त की उत्कृष्ट तीन अहोरात्रि की अन्तर मुहूर्त काम समुचय वायुकाय की जघन्य अन्तर मुहूर्त की उत्कृष्ट तीन हजार वर्ष की सूक्ष्मवायुकाया सूक्ष्मवायुकाय के

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

तिण्णिवास सहस्साइं, अपज्जत्तग बादर वाउकाइयाणं जहन्नेणंवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं, पजत्तग बादर वाउकाइयाणं जहन्नं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णिवास सहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, वणस्सइ कइयाणं जहन्नं अंतोमुहुत्तं उक्कोसं दसवाससहस्साइं, सुहुमवणस्सइ काइयाणं ओहियाणं अपज्जत्तगाणं पज्जत्तगाणय तिण्हंवि जहन्नेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं, बादरवणस्सइ काइयाणं जहन्नं अंतोमुहुत्तं उक्कोसं दसवाससहस्साइं, अपज्जत्तग बादरवणस्सइ काइयाणं जहन्नेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं, पज्जत्तग बादरवणस्सइ काइयाणं

अर्थ

अपर्याप्त पर्याप्त की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर मुहूर्त की. बादर वायुकाय की जघन्य अन्तर मुहूर्त की उत्कृष्ट तीन हजार वर्ष की. बादर वायु काय के अपर्याप्त की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर मुहूर्त की बादर वायुकाय के पर्याप्त की जघन्य अन्तर मुहुर्त की उत्कृष्ट तीन हजार वर्ष अन्तर मुहूर्त कम की समुचय वनस्पति काय की जघन्य अन्तर मुहूर्त की उत्कृष्ट दश हजार वर्ष की. सूक्ष्म वनस्पति काय की, सूक्ष्मवनस्पति के अपर्याप्त की और पर्याप्त की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर मुहूर्त की, बादर बनस्पति काय की जघन्य अन्तर मुहूर्त की उत्कृष्ट दश हजार वर्ष की. बादर वनस्पति काय के अपर्याप्त की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर मुहूर्त की. बादर वनस्पति काय के पर्याप्त की जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्ट दश हजार वर्ष में अन्तर मुहूर्त

For Private and Personal Use Only

सूत्र

जहन्नं अंतोमुहुत्तं उक्कोसं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइ ॥ ३६ ॥ बेंदियाणं भंते ! केवइयं कालं ठिति पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बारस संवच्छराणि, अपज्जत्तग बेंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं पज्जत्तग बेंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसं बारस संवच्छराइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ तेइंदियाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्न अंतोमुहुत्तं, उक्कोसं एगुणपण्णासं राइंदियाइं, अपज्जत्तग तेंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं, पज्जत्तग तेंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं एगुणपण्णासं राइंदियाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ चउरिंदियाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा !

अर्थ

कम की ॥ ३६ ॥ बेइन्द्रिय की जघन्य अन्तर मुहूर्त की उत्कृष्ट बारह वर्ष की. बेइन्द्रिय के अपर्याप्त की जघन्य अन्तर मुहूर्त की उत्कृष्ट अन्तर मुहूर्त की, बेइन्द्रिय के पर्याप्त की जघन्य अन्तर मुहूर्त की उत्कृष्ट बारह वर्ष में अन्तर मुहूर्त कम की, [illegible] की जघन्य अन्तर मुहुर्त की उत्कृष्ट गुनपचास दिन की. तेइन्द्रिय के अपर्याप्त की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर मुहुर्त, तेइन्द्रिय के पर्याप्त की जघन्य अन्तर मुहुर्त की उत्कृष्ट गुनपच्चास दिन में अन्तर मुहुर्त कमी की चौरिन्द्रिय की जघन्य अंतर मुहुर्त की उत्कृष्ट छ महिने की,

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir





सूत्र

जहन्नं अंतोमुहुत्तं उक्कोसं छम्मासा, अपज्जत्तग चउरिंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं, पज्जत्ता चउरिंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छम्मासा अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ ३७ ॥ पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसं तिण्णि पलिओवमाइं, जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नं अंतोमुहुत्तं उक्कोसं पुव्वकोडी, समुच्छिम जलयर पंचिंदिय पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसं पुव्वकोडी, अपज्जत्तग समुच्छिम जलयर पंचिंदिय पुच्छा ? गोयमा !

अर्थ

चौरिन्द्रिय के अपर्याप्त की जघन्य उत्कृष्ट अन्तर मुहुर्त की, चौरिन्द्रिय के पर्याप्त की जघन्य अन्तर मुहुर्त की उत्कृष्ट छ महीने में अन्तर मुहुर्त कम की ॥ ३७ ॥ समुच्च तिर्यंच पंचेन्द्रिय की जघन्य अन्तर मुहुर्त की उत्कृष्ट तीन पल्योपम की, जलचर पंचिन्द्रिय तिर्यंच योनिक की जघन्य अन्तर मुहुर्त की उत्कृष्ट क्रोड पूर्वकी. समूर्च्छिम जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचकी जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्ट क्रोड पूर्वकी. अपर्याप्त समूर्च्छिम जलचर की जघन्य अन्तर मुहुर्त की उत्कृष्ट भी अन्तर मुहुर्त की, पर्याप्त समुर्च्छिम जलचर की जघन्य अन्तर मुहूर्त की उत्कृष्ट क्रोड पूर्व अन्तर मुहूर्त कम की. गर्भज जलचरकी अन्तर मुहुर्त की उत्कृष्ट क्रोड पूर्व की,



For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

जहन्नेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं, पज्जत्तग समुच्छिम जलयर पंचिंदिय पुच्छा? गोयमा! जहण्णं अंतोमुहुत्तं उक्कोसं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणाइ, गब्भवक्कंतिय जलयर पंचिंदिय पुच्छा? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी, अपज्जत्तग गब्भवक्कंतिय जलयर पंचिंदिय पुच्छा? गोयमा! जहन्नेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं, पज्जत्तय गब्भवक्कंतिय जलयर पंचिंदिय पुच्छा? गोयमा! जहन्नं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणाइ ॥ चउप्पय थलयर पंचिंदिय पुच्छा? गोयमा! जहन्नं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णिपलिओवमाइं, समुच्छिम चउप्पय थलयर पंचिंदिय पुच्छा? गोयमा! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं

अर्थ

गर्भज अपर्याप्त जलचर की जघन्य उत्कृष्ट क्रोड पूर्व की. पर्याप्त गर्भज जलचर की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट क्रोड पूर्व अंतर्मुहूर्त कम की. चतुष्पद स्थलचर पंचेन्द्रिय की जघन्य अंतर्मुहूर्त भी उत्कृष्ट तीन पल्योपम की. समूर्च्छिम चतुष्पद स्थलचर की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट चउराशी हजार वर्ष की. अपर्याप्त समूर्च्छिम चतुष्पद स्थलचर की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, पर्याप्त समूर्च्छिम चतुष्पद स्थलचर की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट चौरासी हजार वर्ष अंतर्मुहूर्त कम की. गर्भज चतुष्पद स्थलचर की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम की. पर्याप्त

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

उक्कोसेणं चउरासीतिवास सहस्साइं, अपज्जत्तय समुच्छिम चउप्पय थलयर पंचिंदिय पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं पज्जत्ताय समुच्छिम चउप्पय थलयर पंचिंदिय ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं चउरासितीवास सहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं गब्भवक्कंतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णिपालिओवमाइं, अपज्जत्ताग गब्भवक्कंतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय ? गोयमा ! जहन्नेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं, पज्जत्ताग गब्भवक्कंतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णिपलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ उरपरिसप्प थलयर पंचिंदिय ? गोयमा !

अर्थ

गर्भज चतुष्पद स्थलचरकी जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और पर्याप्त गर्भज चतुष्पद स्थलचरकी जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट तीन पल्योपम अंतर्मुहूर्त कम की उरपरिसर्प स्थलचर की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट क्रोड पूर्व की. समुर्च्छिम उरपरिसर्प स्थलचर की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट त्रेतन हजार वर्ष की. अपर्याप्त समूर्छिम उरपरिसर्प स्थलचर की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की, पर्याप्त समूर्च्छिम उरपरिसर्प की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट त्रेपन हजार वर्ष में अंतर्मुहूर्त कम की. गर्भज उरपरिसर्प स्थलचर की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट क्रोड पूर्व की. अपर्याप्त गर्भज उरपरि सर्प स्थलचर की जघन्य अंतर्मुहूर्त

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी समुच्छिम उरपरिसप्प थलयर पंचिंदिय जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेवण्णंवास सहस्साइं, अपजत्त समुच्छिमय उरपरिसप्प थलयर पंचिंदिय ? गोयमा ! जहण्णेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं, पजत्तय समुच्छिम उरपरिसप्प पंचिंदिय ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेवन्नवास सहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं गब्भवक्कंतिय उरपरिसप्प थलयर पंचिंदिय ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी अपजत्त गब्भवक्कंतिय उरपरिसप्प थलयर पंचिंदिय ? गोयमा ! जहन्नेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं पजत्तय गब्भवक्कंतिय उरपरिसप्प थलयर पंचिंदिय ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं

अर्थ

उत्कृष्ट भी अंतर्मुहूर्त की. पर्याप्त गर्भज सर्प स्थलचर की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट क्रोड पूर्व अंतर्मुहूर्त कम की. भुजपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट पूर्व क्रोडी की. समूर्च्छिम भुजपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट बयालीस हजार वर्ष की, अपर्याप्त समुर्च्छिम भुजपरिसर्प स्थलचर की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट भी अंतर्मुहूर्त की. पर्याप्त समुर्च्छिम भुजपरिसर्प स्थलचर की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट बायालीस हजार वर्ष अंतर्मुहूर्त कम की, गर्भज भुजपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट क्रोड पूर्व की बयालीस अपर्याप्त गर्भज भुजपरिसर्प

For Private and Personal Use Only

सूत्र पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणाइ ॥ भुय परिसप्प थलयर पंचिंदिय ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी. समुच्छिम भुयपरिसप्प थलयर पंचिंदिय? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बयालीसंवाससहस्साइं, अपज्जत्तग समुच्छिम भुयपरिसप्प थलयर पंचिंदिय ? गोयमा ! जहन्नेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं. पज्जत्तय समुच्छिम भुयपरिसप्प थलयर पंचिंदिय ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बयालीस वास सहस्साइ अंतोमुहुत्तूणाइ, गब्भवक्कंतिय भुय-परिसप्प थलयर पंचिंदिय ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी. अपज्जत्तय गब्भवक्कंतिय भुयपरिसप्प थलयर पंचिंदिय ? गोयमा ! जहन्नेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं, पज्जत्तय गब्भवक्कंतिय भुयपरिसप्प थलयर पंचिंदिय ?

अर्थ स्थलचर की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त. पर्याप्त गर्भज भुजपरिसर्प स्थलचर की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट क्रोड पूर्व अंतर्मुहूर्त न्यून की. खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट पल्योपम के असंख्यातवे भाग की, समूर्च्छिम खेचर पंचेन्द्रिय की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट बहुतर हजार वर्ष की, अपर्याप्त समूर्च्छिम खेचर तिर्यंच की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की. पर्याप्त समूर्च्छिम खेचर की

सूत्र

गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणाइ ॥ खहयरं पंचिंदिय जाव ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जति भागे, समुच्छिम खहयर पंचिंदिय ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावत्तरिवाससहस्साइं, अपज्जत्तग समुच्छिम खहयर पंचिंदिय ? गोयमा ! जहन्नेणं वि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं, पज्जत्तग समुच्छिम खहयर पंचिंदिय ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावत्तरिवास सहस्साइं अंतोमुहुत्तूणं ॥ गब्भवक्कंतिय खहयर पंचिंदिय ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जति भागो, अपज्जत्तग गब्भवक्कंतिखहयर पंचिंदिय ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं, पज्जत्ता गब्भवक्कंतिय खहयर पंचिंदिय ? गोयमा

अर्थ

जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट बहुतर हजार वर्ष अंतर्मुहूर्त कम की. गर्भज खेचर की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट पल्योपम के असंख्यातवे भाग की. अपर्याप्त गर्भज खेचर तिर्यंच की जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की और पर्याप्त गर्भज खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट पल्योपम के असंख्यातवे भाग अंतर्मुहूर्त कम की. यह तिर्यंच पंचेन्द्रिय की उत्कृष्ट स्थिती गाथा कर कहते हैं– सम्मूर्छिम की, जलचर की क्रोड पूर्व की, स्थलचर की चौरासी हजार वर्षकी, उरपारिसर्प की त्रेपन हजार

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसे पलीओवमस्स असंखेज्जति भागो अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ एत्थणं एएसिं संगहणीगाहा भवंती तंजहा (गाहा) समुच्छिमे पुव्वकोडी, चउरासीइं भवे सहस्साइं ॥ तेवन्नाबायाला धावत्तरिमे पक्खीणं ॥ १ ॥ गब्भंमि पुव्वकोडी, तिण्णिय पलिओवमाइं परमाउ ॥ उरगभुयग पुव्वकोडी, पलिउवमासंख भागोय ॥ २ ॥ ३८ ॥ मणुस्साणं भंते ! केवइयं कालठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसं तिण्णिपलिउवमाइं ॥ समुच्छिम मणुस्सा ? गोयमा ! जहन्नेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं, गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं ? गोयमा ! जहन्नं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णिपलिओवमाइं, अपज्जत्तग गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं ?

अर्थ

वर्ष की भुजपर की बयालीस हजार वर्ष की. खेचर की बहुतर हजार वर्ष की. और गर्भज की जलचर की क्रोड पूर्व की, स्थलचर की तीन पल्योपम की, उरपर की क्रोड पूर्व की भुजपर की क्रोड पूर्व की. खेचर की पल्योपम के असंख्यातवे भाग की ॥ ३८ ॥ समुचय मनुष्य की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उतकृष्ट तीन पल्योपम की, समूर्च्छिम मनुष्य की जघन्य तथा उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की (यह अपर्याप्त ही मरते हैं) गर्भज मनुष्य की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट तीन पल्योपम की. अपर्याप्त गर्भज मनुष्य की

For Private and Personal Use Only

सूत्र

गोयमा ! जहन्नेणंवि उक्कोसेणंवि अंतोमुहुत्तं, पज्जत्त गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णिपलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइ ॥३९॥ वाणमंतराणं भंते ! देवाणं केवतियं कालंट्ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नं दसवास सहस्साइं उक्कोसं पलिओवमाइं, वाणामंतरीणं भंते! देवीण केवतियं ठिती कालं? गोयमा! जहन्नेणं दसवास सहस्साइं, उक्कोसं अद्ध पलिओवमाइ ॥४०॥ जोतिसियाणं भंते ! देवाणं केवइयंकालं ठिती? गोयमा! जहन्नेणं अट्ठभागप लिओवमं उक्कोसं पलिओवमं वास सतसहस्स मब्भहियं, चंदविमाणाणं भंते! देवाणं? गोयमा! जहन्नेणं चउभाग पलिओवमं उक्कोसेणं पलिओवमं वाससयसहस्सं मब्भहियं, चंदविमाणाणं भंते ! देवीणं ?

अर्थ

जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की. गर्भज मनुष्य की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट तीन पल्योपम अंतर्मुहूर्त कम की ॥३९॥ वाणव्यन्तर देवता की जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट एक पल्योपम की. वाणव्यन्तर देवी की जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट आधी पल्योपम की. ॥ ४० ॥ ज्योतिषी देवता की जघन्य कुछ अधिक पल्योपम के आठवे भाग का उत्कृष्ट एक पल्योपम एक लाख वर्ष की, ज्योतिषी की देवी की जघन्य पल्योपम के आठवे भाग की उत्कृष्ट आधा पल्योपम ५० हजार वर्ष की. चन्द्र विमानवासी देवता की जघन्य पल्योपम के चौथे भाग की उत्कृष्ट एक पल्योपम एक लाख वर्ष की, चन्द्र विमानवासी

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

गोयमा ! जहन्नेणं चउभाग पलिओवमं, उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासाए वाससहस्सेहिं मब्भहियं, सूरविमाणाणं भंते ! देवाणं ? गोयमा ! जहण्णं चउभाग पलिओवमं उक्कोसं पलिओवमं वाससहस्स मब्भहियं सूरविमाणाणं भंते ! देवीणं ? गोयमा ! जहन्नं चउभाग पलिओवमं, उक्कोसं अद्धपलिओवमं पंचहिंवाससएहिं मब्भहियं. गहविमाणाणं भंते ! देवाणं ? गोयमा ! जहण्णं चउभाग पलिओवमं, उक्कोसं पलिओवमं, गहविमाणाणं भंते ! देवीणं ? गोयमा ! जहण्णेणं चउभाग पलिओवमं, उक्कोसं अद्धपलिओवमं, णक्खत्तविमाणाणं भंते !

अर्थ

देवी की जघन्य पल्योपम के चौथे भाग की उत्कृष्ट आधा पल्योपम पचास हजार वर्ष की. सूर्य विमान-वासी देव की जघन्य पल्योपम के चौथे भाग की उत्कृष्ट एक पल्योपम एक हजार वर्ष की, सूर्य विमान वासी देवी की जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्ट आधी पल्य पांच सो वर्ष की. ग्रह विमानवासी देवता की जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्ट एक पल्योपम की. ग्रह विमानवासी देवी की जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्ट आधी पल्योपम की नक्षत्र विमानवासी देवता की जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्ट आधे पल्य की, नक्षत्र विमानवासी देवी की जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्ट कुछ अधिक पाव पल्योपम की.





For Private and Personal Use Only

सूत्र

देवाणं ? गोयमा ! जहण्णेणं चउभाग पलिओवमं उक्कोसं अद्धपलिओवमं, णक्खत्त विमाणाणं भंते ! देवीणं ? गोयमा ! जहण्णेणं चउभाग पलिओवमं, उक्कोसेणं सातिरेगं चउभाग पलिओवमं, ताराविमाणाणं भंते ! देवाणं ? गोयमा ! जहण्णेणं सातिरेगं अट्ठभाग पलिओवमं उक्कोसेणं चउभाग पलिओवमं, ताराविमाणाणं भंते ! देवीणं केवतियं कालठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठभाग पलिओवमं उक्कोसेणं सातिरेगं अट्ठभाग पलिओवमं॥ ४१ ॥ विमाणियाणं भंते ! देवाणं केवइयं कालंठिइ पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं, वेमाणिणीणं भंते ! देवीणं केवतियं कालंठिती पण्णत्ता?

अर्थ

तारा विमानवासी देवता की जघन्य पल्योपम के आटवे की उत्कृष्ट पाव पल्योपम की. तारा विमानवासी देवी की जघन्य पल्य के आठवे भाग की उत्कृष्ट कुछ अधिक पल्य के आठवे भाग की ॥ ४१ ॥ समुच्चय वैमानिक देवता की जघन्य एक पल्योपम की. उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम की. समुच्चय वैमानिक देवी की जघन्य एक पल्य की उत्कृष्ट पच्चावन पल्य की. सौधर्म देवलोक के देवता की जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट दो सागरोपम की. सौधर्म देवलोकवासी परिग्रह देवीकी जघन्य एक पल्यो

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं उक्कोसेणं पणपण्ण पलिओवमाइं ॥ सोहम्मेणं भंते ! कप्पे देवाणं ? गोयमा ! जहण्णं पलिओवमं उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं, सोहम्मेणं भंते ! कप्पे परिग्गहियाणं देवीणं जहन्नं पलिओवमं उक्कोसेणं सत्तपलिओवमाइं, सोहम्मे कप्पे अपरिग्गहियाणं देवीणं जहन्नं पलिओवमं उक्कोसेणं पण्णास पलिओवमाइं ॥ ईसाणेणं भंते ! कप्पे देवाणं ? गोयमा ! जहन्नेणं साइरेगं पलिओवमं, उक्कोसेणं साइरेगाइं दो सागरोवमाइं, ईसाणेणं भंते ? कप्पे परिगहियाणं देवीणं ? गोयमा ! जहन्नेणं साइरेगं पलिओवमं उक्कोसेणं नव पलिओवमाइं, ईसाणेणं कप्पे अपरिग्गहियाणं देवीणं जण्णं साइरेगं पलिओवमं, उक्कोसेणं पणाण्णपलिओवमं,

अर्थ

पम की उत्कृष्ट सात पल्योपम की, सौधर्म देवलोकवासी अपरिग्रही देवीयों की जघन्य एक पल्य की उत्कृष्ट पचास पल्य की. ईशान देवलोक के देवता की जघन्य कुछ अधिक एक पल्योपम की उत्कृष्ट कुछ अधिक दो सागरोपम की, ईशान देवलाकेवासी परिग्रह देवी की जघन्य कुछ अधिक एक पल्योपम की उत्कृष्ट नव सागरोपम की. ईशान देवलोकवासी अपरिग्रही देवी की जघन्य कुछ अधिक एक पल्योपम की उत्कृष्ट पचावम पल्योपम की. सनत्कुमारवासी देवता की जघन्य कुछ अधिक दो सागरोपम की उत्कृष्ट सात सागरोपम की, माहेन्द्र देवलोक के देव की जघन्य कुछ अधिक दो सागर की उत्कृष्ट कुछ अधिक





For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

सणं कुमारेणं भंते ! देवाणं ? गोयमा ! जहन्नेणं दो सागरोवमाइं उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइं, महिंदेणं भंते ! देवाणं ? गोयमा ! जहन्नेणं साइरेगाइं दो सागरोवमाइं, उक्कोसेणं साइरेगाइं सत्त सागरोवमाइं. बंभलोएणं भंते ! कप्पे देवाणं ? जहण्णेणं सत्त सागरोवमाइं उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं, लांतए कप्पे ? जहन्नं दस सागरोवमाइं उक्कोसेणं चउदस सागरोवमाइं, महासुक्के कप्पे ? जहन्नेणं चउदस सागरोवमाइं, उक्कोसेणं सतरस्स सागरोवमाइं, सहस्सारे कप्पे ? जहन्नेणं सतरस्स सागरोवमाइं उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमाइं, अण्णए कप्पे देवाणं ? जहन्नेणं अट्ठारस सागरोवमाइं, उक्कोसेणं

अर्थ

सात सागरोपम की, ब्रह्म देवलोक देव की जघन्य सात सागरोपम की उत्कृष्ट दश सागरोपम की, लंतक देवलोक के देवता की जघन्य दश सागरोपम की उत्कृष्ट चउदा सागरोपम की, महसुक्र देवलोक के देव की जघन्य चउदा सागरोपम की उत्कृष्ट सतरा सागरोपम की, सहस्रार देवलोक के देवता की जघन्य सतरा सागरोपम की उत्कृष्ट अठारा सागरोपम की. आणत देवलोक के देवों की जघन्य अठारा सागरोपम की उत्कृष्ट उन्नीस सागरोपम की, प्राणत देवलोक के देवों की जघन्य उन्नीस सागरोपम की उत्कृष्ट बीस सागरोपम की. अरण देवलोक के देवों की जघन्य बीस सागरोपम की उत्कृष्ट इक्कीस

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

एगुणवीसं सागरोवमाइं, पण्णए कप्पे ? जहण्णेणं एगुणवीसं सागरोवमाइं; उक्कोसं वीसं सागरोवमाइं, आरणे ? जहण्णेणं वीसं सागरोवमाइं उक्कोसं इगवीसं सागरोवमाइं, अच्चूए ? जहण्णेणं एकवीसं सागरोवमाइं उक्कोसं बावीसं सागरोवमाइं; हेट्ठिय हेट्ठिमगेवेज्ज विमाणेसुणं भंते ! देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहणं बावीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं तीवीसं सागरोवमाइं. हेट्ठिम मज्झिमगे वेजविमाणेसुणं ? गोयमा ! जहन्नतेवीसं सागरोवमाइं उक्कोसं चउवीस सागरोवमाइं, हेट्ठिम उवरिम गेविज्ज देवाणं ? जहण्णेणं चउवीस सारगोवमाइं उक्कोसेणं पणवीस सागरोवमाइ, मज्झिम हट्ठिम गेविज्जग देवाणं ? जहण्णेणं पणवीस सागरोवमाइ, उक्कोसेणं

अर्थ

सागरोपम की. अच्युत देवलोक के देवों की जघन्य इक्कीस सागरोपम की उत्कृष्ट बावीस सागरोपम की. नीचे के नीचे के ग्रैवेयक देवता की जघन्य बावीस सागरोपम की उत्कृष्ट तेवीस सागरोपम की, नीचे के मध्य के ग्रैवेयक के देवों की जघन्य तेवीस सागरोपम की उत्कृष्ट चौवीस सागरोपम की. नीचे के ऊपर के ग्रैवेयक के देवता की जघन्य चौबीस सागरोपम की उत्कृष्ट पच्चीस सागरोपम की. मध्य के नीचे के ग्रैवेयक के देवता की जघन्य पच्चीस सागरोपम की उत्कृष्ट छवीस सागरोपम की. मध्य के मध्य की ग्रैवेयक के देवता की जघन्य छवीस सागरोपम की उत्कृष्ट सत्तावीस सागरोपम की, मध्य के

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

छब्वीसं सागरोवमाइं, मज्झिम मज्झिम गेवेज्जग देवाणं जहण्णेणं छब्वीस सागरोवमाइं उक्कोसेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं, मज्झिम उवरिम गेविज्जग देवाणं जहण्णेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं, उवरिमहेट्ठिम गेवेज्जग-देवाणं जहण्णेणं आट्ठवीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं एगुणतीस सागरोवमाइं, उवरिम मज्झिय गेवेज्जग देवाणं जहण्णेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं तीसं सागरोवमाइं, उवरिम उवरिम गेवेज्जग देवाणं जहण्णेणं तीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं एगतीसं सागरोवमाइं, विजय वेजयंत जयंत अपरिजित विमाणेसुणं भंते ! देवाणं केवतियं कालं ट्ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नं एगतीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं

अर्थ

ऊपर की ग्रैवेयक के देवता की जघन्य सत्तावीस सागरोपम की उत्कृष्ट अठावीस सागरोपम की. ऊपर के नीचे के ग्रैवेयक के देवता की जघन्य अठावीस सागरोपम की उत्कृष्ट गुनतीस सागरोपम की. ऊपर के मध्य के ग्रैवेयक के देवता की जघन्य गुनतीस सागरोपम की उत्कृष्ट तीस सागरोपम की. ऊपर के ऊपर की ग्रैवेयक के देवता की जघन्य तीस सागरोपम की, उत्कृष्ट इकतीस सागरोपम की. विजय वैजयंत जयंत अपराजित इन चार अनुत्तर विमानवासी देवता की जघन्य इकतीस सागरोपम की उत्कृष्ट तेंतीस सागरोपम की. अहो भगवन् ! सर्वार्थ सिद्ध महा विमानवासी देवता की कितने काल की स्थिति कही है ? अहो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir





सूत्र

तेतीसं सागरोवमाइं, सव्वट्ठ सिद्धेणं भंते ! महाविमाणे देवाणं केवतियं कालंठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नमणुक्कोसं तेतीसं सागरोवमाइं । से तं सुहुमे अद्धा पलिओवमे ॥ सेतं अद्धा पलिओवमं ॥ ४२ ॥ से किं तं खेत्तं पलिओवमे ? खेत्तं पलिओवमे दुविहे पण्णत्ते तंजहा-सुहुमेय ववहारिएय. तत्थणं जे सुहुमे से ठुप्पे, तत्थणं जे से ववहारिए से जहा नामए पल्लेसिया जोयणं आयम विक्खभेणं, जोयणं उव्वेहेणं, तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं, से णं पल्ले एगाहिया बेआहिय तेआहिय जाव भरिते वालग्ग कोडीणं, तेणं वालग्गा णो अग्गी ड-

अर्थ

शिष्य ! जघन्य अउत्कृष्ट तेंतीस सागरोपम की. यह सूक्ष्म आधा पल्योपम हुवा और आधा पल्योपम भी हुवा ॥ ४२ ॥ अहो भगवन् ! क्षेत्र पल्योपम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! क्षेत्र पल्योपम के दो प्रकार कहे हैं तद्यथा—सूक्ष्म क्षेत्र पल्योपम और व्यवहार क्षेत्र पल्योपम. इस में से सूक्ष्म क्षेत्र पल्योपम को तो यहां स्थिर रखना. और व्यवहारिक क्षेत्र पल्योपम सो यथा दृष्टांत—उक्त प्रकार पाला एक योजन का लम्बा चौडा एक योजन का ऊंडा त्रिगुनी परधीवाला उस पाले को एक दिन के दो दिन के तीन दिन के यावत् सात दिन के जन्मे बच्चे के बालाग्र की क्रोडाक्रोडी के समुह कर ठसोठस भरे ऐसा भरे की वह अग्नि से जले नहीं वायु में उडे नहीं पानी में गले नहीं यावत् किसी भी प्रकार विनाश पावे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

हेज्जा जाव णो पूइत्ताए हव्वमा गच्छेज्जा, जे णं तस्स पल्लस्स आगास पएसा तेहिं वालग्गेहिं अप्फुन्ना तओणं समए २ एगमेगं आगासपएसं अवहाय जाव ईएणं कालेणं से पल्ले खीणे जाव निट्ठिए भवती से तं ववहारिए खेत्त पलिओवमे ॥ एएसिं पल्लाणं कोडाकोडी भवेज्ज दस गुणियाते ववहारियस्स खेत्त सागरोवमस्स. एगस्स भवेपरिमाणं ॥ एएहिं ववहारिएहिं खेत्त पलिओवम सागरोवमेहिं किं पओयणं ? एएहिं ववहारिए नत्थि किंचिवी पओयणं, केवलं पण्णवणाविज्जंति, सेत्तं ववहारिए खेत्त पलिओवमे ॥ ४३ ॥ से किं तं सुहुम खेत्त पलिओवमे ? सुहुम खेत्ते

अर्थ

नहीं. उन वालाग्र को जितने आकाश प्रदेश स्पर्श रहे हैं (एकेक बालाग्र को असंख्यात २ आकाश स्पर्श रहे हैं) उतने समय २ में निकाले. अर्थात् उस पाले में समय २ में एकेक आकाश प्रदेश निकाले. यों निकालते२ यह सब पाला खाली होजावे रज रहित यावत् साफ खाली होजावे सब बालाग्र रहित होवे उसे व्यवहार क्षेत्र पल्योपम कहना. और ऐसे दश क्रोडाक्रोड पाले खाली होवे उतने काल के समुह को एक क्षेत्र सागरोपम कहना. अहो भगवन् ! इस व्यवहार क्षेत्र पल्योपम सागरोपम कर क्या प्रयोजन है ? अहो शिष्य ! इस से कुछ भी प्रयोजन नहीं है फक्त प्रज्ञपना रूप प्रमाण बताया है. यह व्यवहार क्षेत्र पल्योपम हुवा ॥ ४३ ॥ अहो भगवन् ! सूक्ष्म व्यवहार पल्योपम किसे कहते हैं ? अहो

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir





सूत्र

पलिओवमे से जहा णामए पल्लेसिया जोयण आयम विक्खंभेणं जाव परिखेवेणं सेणं पल्ले एगाहिय बेयाहिय तेयाहिय जाव भरिते वालग्ग कोडीणं, तत्थणं एगमेग वालग्गा असंखेज्जाइ खंडाइं कज्जति तेणं वालग्ग दिट्ठीणं उगाहणाओ असंखेज्जाति भाग मेता सुहुम पणगजीवस्स सरीरोगहणाओ असंखेज्जगुणा, तेणं वालग्ग णोअग्गिडहेज्जा जाव नो पूइत्ताए हव्व मागच्छेज्जा, तेणं तस्स पलस्स आगास पदेसा तेहिं वालग्गेहिं अपन्नावा अणपुन्नावा तत्तोणं समए २ एगमेगं आगासपएसं अवहाय, जाय ईएणं कालेणं से पल्लेखीणे जाव णिट्ठेतिं भवती, से तं सुहुमे खेत्त पलिओवमे॥ तत्थणं चोयए पण्णवगं एवं

अर्थ

शिष्य ! सूक्ष्म व्यवहार पल्योपम सो यथा दृष्टांत—उक्त प्रकार से ही पाला एक योजन का लम्बा एक योजन का चौडा गोलाकार और एक योजन का ऊंडा उस पाले को एक दिन के दो दिन के तीन दिन के यावत् सात दिन जन्मे बच्चे के बालाग्र उन एकेक बालाग्र के असंख्यात २ खण्ड करे वे ऐसे सूक्ष्म खण्ड करे कि दृष्टी से देखावे नहीं. क्यों कि उन के असंख्यात भाग हुवे हैं वह एक खण्ड सूक्ष्म फूलन के जीवों की शरीर की अवगाहना से असंख्यातगुने अधिक बडे जानना. ऐसे बालाग्र कर उस पाले को ठसोठस भरे ऐसा भरे की वे अग्नि से जले नहीं वायु से उडे नहीं पानी से गले नहीं उन बालाग्र को स्पर्शे हुवे अथवा नहीं भी स्पर्शे हुवे अर्थात् उस पाला में के सब आकाश प्रदेश क्षेत्र पल्य के दृष्टीवाद के द्रव्य बालाग्र को स्पर्शे जो प्रदेश तैसे ही कितनेक द्रव्य बालाग्र विना स्पर्शे

For Private and Personal Use Only

सूत्र

बयासी—अत्थिणं तस्स पल्लस्स आगास पदेसा जेणं तेहिं वालग्गेहिं अणपुन्ना ? हंता अत्थि, जहा को दिट्ठतो ? से जहा णामए मंचएसिया कोहडाणं भरिते तत्थणं माउलिंगा पक्खित्ता तेविमाया, तत्थणं विल्लापक्खित्ता तेवि माया, तत्थणं आमलगा पखित्ता तेविमाया, तत्थणं वयरा पखित्ता तेवि माया, तत्थणं चणगा-पखित्ता तेवि माया, तत्थणं मुग्गा पखित्त ते विमाया, तत्थणं सरीसवा पखित्ता ते वि माया, तत्थणं गंगावालुया पखित्ता सावि माया, एवमेव एतेणं दिट्ठंतेणं आत्थिणं

अर्थ

भी आकाश प्रदेश रहे हैं. उन सब आकाश प्रदेशों में से एकेक समय में एकेक आकाश प्रदेश निकाले, यों निकालते २ जितने काल में वह पाल खाली होवे यावत् साफ होवे एक भी आकाश प्रदेश उस में न रहे उसे सूक्ष्म क्षेत्र पल्योपम कहना. तब शिष्य शंका का प्रेरा हुवा गुरु से प्रश्न किया कि—अहो भगवन् ! उस पाले में ऐसे भी आकाश प्रदेश रहे हैं कि जिन को बालाग्र का स्पर्श नहीं हुवा ? गुरु बोले—हां शिष्य ! एक बालाग्र से दूसरे बालाग्र के बीच में असंख्यात आकाश प्रदेश ऐसे हैं कि जो बालाग्र को स्पर्श नहीं हैं. अहो भगवन् ! यह कथन किस दृष्टांत कर माना जावे ? अहो शिष्य ! यथा दृष्टांत किसी कोठार में कुष्माणु ( कोला ) फल भरे हों उस में मातुलिंग ( बिजोरा ) का प्रक्षेप करे तो उन का उस में समावेश होजावे. उस में बिल्ल फल का प्रक्षेप करे तो वे भी उस में समाजावे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir





सूत्र

तस्स पल्लस्स आगास पएसा जे णं तेहिं बालग्गेहिं अणप्फुन्ना, एए सिणं पल्लाणं कोडा कोडी भवेज्ज दस गुणिया तं सुहुम खेत्त सागरोवमस्स एगस्स भवपरिमाणं ॥ एएहिं सुहुमेहिं खेत्तपलिओवम सागरोवमेहिं किं पयोयणं ? एतेहिं सुहुम खेत्त पलिओवम सागरोवमेहिं दिट्ठिवादे दव्वामविज्जंति ॥ ४४ ॥ कति विहाणं भंते !

अर्थ

उस में आमले फल का प्रक्षेप करे तो वे भी उस में समाजावे. उस में बोर का प्रक्षेप करे तो वे भी उस में समाजावे. उस में चिने का प्रक्षेप करे तो वे भी उस में समाजावे, उस में मूंग का प्रक्षेप करे तो वे भी उस में समाजावे, उस में सरिसव का प्रक्षेप करे तो वे भी उस में समाजावे, उस में गंगा नदी की बालुका प्रक्षेप करे तो वह भी उस में समाजावे. इस ही दृष्टान्त कर अर्थात् बडे पदार्थ ठसोठस भरे हों तो भी उस में उस से छोटे पदार्थों का समावेश होजाता है; ऐसे ही बालाग्र कर भरे हुवे पाले में भी असंख्यात आकाश प्रदेश उन बालाग्र को बिना स्पर्शे रहे जानना. ऐसे दश क्रोडाक्रोड पाले खाली होवे उसे सूक्ष्म क्षेत्र सागरोपम का परिमाण जानना. अहो भगवन् ! इस सूक्ष्म क्षेत्र पल्योपम सागरोपम से क्या प्रयोजन है ? अहो शिष्य ! इस सूक्ष्म क्षेत्र पल्योपम सागरोपम से दृष्टीवाद के द्रव्य की मपती की जाती है ॥ ४४ ॥ अहो भगवन् ! दृष्टीवाद में द्रव्य कितने प्रकार के कहे हैं ? अहो

For Private and Personal Use Only

सूत्र

दव्वा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा—जीव दव्वाय अजीव दव्वाय ॥ ४५ ॥ अजीव दव्वाणं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा—रूवी अजीव दव्वाय, अरूवी अजीव दव्वाय ॥ ४६ ॥ अरूवी दव्वाणं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दस विह पण्णत्ते तंजहा—धम्मात्थिकाए, धम्मात्थिकायस्स देसा, धम्मतिथ कायस पदेसा; अधम्मात्थिकाय, अधम्मतिथ कायस्स देसा, अधम्मतिथ कायस्स पदेसा, आगसात्थिकाए. आगासात्थिकायस्स देसा. आगासात्थिका-यस्स पएसा, अद्धा समए ॥ ४७ ॥ रूवी अजीव दव्वाणं भंते! कतिविहा पण्णत्ता गोयमा!

अर्थ

शिष्य ! दृष्टीवाद में द्रव्य दो प्रकार के कहे हैं तद्यथा—१ जीव द्रव्य और २ अजीव द्रव्य ॥ ४५ ॥ अहो भगवन् ! अजीव द्रव्य कितने प्रकार के कहे हैं. अहो शिष्य ! अजीव द्रव्य दो प्रकार के कहे हैं तद्यथा—रूपी अजीव द्रव्य और अरूपी अजीव द्रव्य ॥ ४६ ॥ अहो भगवन् ! अरूपी अजीव द्रव्य कितने प्रकार के कहे हैं ? अहो शिष्य ! अरूपी अजीव द्रव्य दश प्रकार के कहे हैं. तद्यथा—१ धर्मास्ति काया, २ धर्मास्ति काया के देश, ३ धर्मास्ति काया के प्रदेश ४ अधर्मास्ति काया, ५ अधर्मास्ति काय के देश, ६ अधर्मास्ति काया के प्रदेश, ७ आकास्ति काया, ८ आकास्ति काया के देश, ९ आकास्ति काया के प्रदेश. और १० अद्धासमयकाल ॥ ४७ ॥ अहो भगवन् ! रूपी अजीव द्रव्य के कितने प्रकार कहे हैं ?

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सूत्र

चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा—खंधा, खंधदेसा, खंधप्पएसा, परमाणु पोग्गला॥तेणं भंते! किं संखेज्जा असंखेज्जा अणंता ? गोयमा ! नो असंखेज्जा, नो असंखेज्जा अणंता से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ नो संखेज्जा नो असंखेज्जा अणंता ? गोयमा ! परमाणु पोग्गला अणंता, दुपएसियाखंधा अणंता, जाव अणंत पएसिया खंधा अणंता से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति नो संखेज्जा नो असंखेज्ज अणंता ॥

अर्थ

अहो गौतम ! रूपी अजीव द्रव्य चार प्रकार के कहे हैं. तद्यथा-१ पुद्गलों का स्कन्ध, २ पुद्गलों का देश, ३ पुद्गलों के प्रदेश, और ४ परमाणु पुद्गल. अहो भगवन् ! यह स्कंध देश प्रदेश परमाणु रूप पुद्गलों हैं सो संख्यात हैं कि असंख्यात हैं कि अनन्त हैं ? अहो शिष्य ! संख्यात असंख्यात नहीं है परंतु अनन्ते हैं. अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा कि संख्यात असंख्यात नहीं है परंतु अनंत हैं ? अहो शिष्य ! परमाणु पुद्गल भी अनन्त हैं, द्विप्रदेशिक स्कन्ध [ जो दो परमाणु पुद्गल के संयोग से बना वह ] भी अनन्त हैं यावत् संख्यात प्रदेशी स्कन्ध भी अनन्त हैं, असंख्यात प्रदेशी स्कन्ध भी अनन्त है और अनन्त प्रदेशीक स्कन्ध भी अनन्त हैं. अहो शिष्य ! इस लिये ऐसा कहा है कि पुद्गलों संख्यात असंख्यात नहीं है परंतु अनन्त हैं, अहो भगवन् ! जीव द्रव्य कितने हैं क्या संख्यात हैं कि असंख्यात हैं कि अनंत हैं ? अहो शिष्य ! संख्यात असंख्यात नहीं हैं परंतु अनन्त हैं. अहो भगवन् !

For Private and Personal Use Only

सूत्र

जीव दव्वाणं भंते! किं संखेज असंखेज्जा अणंता ? गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता, से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ नो संखेज्जा णो असंखेज्जा अणंता ? गोयमा ! असंखेज्जा नेरइया, असंखेज्जा असुरकुमारा, जाव असंखेज्जा थणिय कुमारा, असंखेज्जा पुढवी काइया जाव असंखेज्जा वाउकाइया, अणंता वणसइ काइया, असंखेज्जा बेइंदिया जाव असंखेज्जा चउरिंदिया, असंखेज्जा पंचिंदिया तिरिक्खजोणिया, असंखेज्जा मणुसा, असंखेज्जा वाणमंतरा, असंखेज्जा जोतसिया, असंखेज्जा वेमाणिया, अणंता सिद्धा, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चती जीव दव्वा नो संखेज्जा नो असंखेज्जा अणंता॥ ४८ ॥ कतिणं

अर्थ

किस कारन ऐसा कहा कि जीव द्रव्य अनन्त हैं ? अहो शिष्य ! असंख्यात नरक के नेरीये हैं, असंख्यात असुर कुमार देव हैं यावत् असंख्यात स्थनित कुमार देव है. असंख्यात पृथ्वी काया यावत् असंख्यात वायुकाया के जीव हैं. अनंत वनस्पति काया के जीव हैं, असंख्यात बेइन्द्रिय यावत् असंख्यात चौरिन्द्रिय जीव हैं. असंख्यात तिर्यंच पंचेन्द्रिय, असंख्यात मनुष्य [ संमूर्च्छिम आश्रिय ] असंख्यात वाणव्यन्तर, असंख्यात ज्योतिषी देव, असंख्यात वैमानिक देव और अनन्त सिद्ध भगवंत के जीव हैं. अहो शिष्य ! इसलिये ऐसा कहा कि जीव द्रव्य संख्यात असंख्यात नहीं हैं. परंतु अनन्त हैं ॥४८॥ अहो

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

भंते! सरीरा पण्णत्ता? गोयमा! पंचसरीरा पण्णत्ता-उरालए, वेउव्वए, आहारए, तेअए कम्मए नेरइयाणं भंते! कति सरीरा पण्णत्ता? गोयमा! तओ सरीरा पण्णत्ता तंजहा-वेउव्विए तेयए कम्मए, असुरकुमाराणं भंते! कति सरीरा पण्णत्ता? गोयमा! तओ सरीरा पण्णत्ता तंजहा-विउव्वए तेयए कम्मए, एवं तिण्णि तं चेव सरीरा जाव थणियकुमारा। पुढवि काइयाणं भंते! कति सरीरा पण्णत्ता? गोयमा! तओ सरीरा पण्णत्ता तंजहा ओरालिए तेयए कम्मए एवं आउ. तेउवणस्सइ काइयाणवि, एते चेव तिण्णि सरीरा भाणियव्वा, वाउकाइयाणं? गोयमा! चत्तारि सरीरा पण्णत्ता तंजहा-उरालिए, वेउव्विए, तेयए,

अर्थ

भगवन्! शरीर कितने कहे हैं? अहो शिष्य! शरीर पांच प्रकार के कहे हैं. तद्यथा—१ औदारिक २ वैक्रेय. ३ आहारक, ४ तेजस, और ५ कार्माण. अहो भगवन्! नेरीये के कितने शरीर हैं? अहो गौतम! तीन शरीर कहे हैं तद्यथा—१ वैक्रेय, २ तेजस. और ३ कार्माण (ऐसे ही प्रश्नोत्तर आगे भी सर्व स्थान जानना) असुर कुमारादि दशों ही भुवनपति देव के ३ शरीर—१ वैक्रेय, २ तेजस, ३ कार्माण. पृथ्वी पानी तेउ और वनस्पति इन चारों स्थावरों के तीन ३ शरीर—१ औदारिक, २ तेजस और ३ कार्माण. वायुकाया के चार शरीर—१ औदारिक, २ वैक्रेय, ३ तेजस, ४ कार्माण. बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरिन्द्रिय के तीन शरीर—१ औदारिक, २ तेजस, ३ कार्माण. तिर्यंच पंचेन्द्रिय के वायुकाया

For Private and Personal Use Only

सूत्र

कम्मए बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदियाणं जहा पुढविकाइयाणं पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं जहा वाउकाइयाणं, मणुस्साणं जाव गोयमा ! पंच सरीरा पण्णत्ता तंजहा-उरालिए वेउव्विए, आहारए, तेयए, कम्मए, वाणमंतरा जोतिसिया वेमाणियाणं जहा नेरइयाणं, ॥ ४९ ॥ केवइयाणं भंते ! ओरालिय सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा—बंधेलगाय, मुक्केलगाय. तत्थणं जे ते बंधेलगा ते असंखेज्जाहि उसप्पिणी उसप्पिणीहिं अवहीरिंती, कालओ, खेत्तओ असंखेज्जा लोगा.

अर्थ

जैसे चार शरीर. मनुष्य के पांचों शरीर. वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और बैमानिक के नेरीये के जैसे ही तीन शरीर पाते हैं ॥ ४९ ॥ अहो भगवन् ! औदारिक शरीर कितने प्रकार के कहे हैं ? अहो शिष्य ! औदारिक शरीर दो प्रकार के कहे हैं तद्यथा—जो शरीर बन्धन कर जीव बैठा है वह बन्धलक शरीर और जो शरीर गये जन्म में कर २ छोड आया है वह मुकेलक. इस में बंधेलक औदारिक शरीर हैं वे असंख्यात हैं. × एकेक समय में एकेक औदारिक शरीर [illegible] करते हुवे असंख्यात उत्सर्पिणी [illegible] व्यतीत होजावे. यह काल से कहा, और क्षेत्र से एकेक शरीर के साथ एकेक आकाश प्रदेश स्थापन करते असंख्यात लोक के आकाश प्रदेश स्थापन होजावे. और मुकेलक (छोडे हुवे)

× निगोद में जीव अनन्त है परंतु शरीर तो असंख्यात ही है. एकेक शरीर में अनन्त२ जवि रहे हैं.

सूत्र

तत्थणं जेते मुक्केलगा तेणं अणंता अणंताहिं उसप्पिणी ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ खेत्तओ अणंता लोगा अभवासिद्धिएहिं अणंतगुणा सिद्धाणं अणंत भागो ॥ ५० ॥ केवइयाणं भंते ! वेउव्विय सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा—बंधेलगाय मुक्केलगाय तत्थणं जेते बद्धेलगा तेणं असंखेज्जा असंखिज्जाइ उसप्पिणी ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ खेत्तओ असंखेज्जा सेढीओ पयरस्स असंखेज्जातिभागे तत्थणं जेते मुक्केलगा तेणं अणंता अणंताहिं उस्सप्पिणी ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ सेसं जहा उरालिया मुक्केलगा

अर्थ

शरीर अनन्त हैं, एकेक समय में एकेक शरीर का हरण करते अनंत सर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतिक्रान्त हो जावे यह काल से कहा और क्षेत्र से एकेक आकाश प्रदेश से एकेक शरीर स्थापन करते अनंत लोक के आकाश प्रदेश भरा जावे. क्यों कि इस संसार में परिभ्रमण करते इस जीव को अनन्तान्त काल व्यतिक्रान्त होगया हैं. अभव्य जीवों से अनन्तगुना अधिक और सिद्ध भगवंत के अनन्तवे भाग कमी हैं ॥ ५० ॥ अहो भगवन् ! वैक्रेय शरीर कितने हैं ? अहो शिष्य ! वैक्रेय शरीर दो प्रकार के कहे हैं. तद्यथा—१ बंधेलक और २ मूकेलक. इस में जो बंधेलक हैं वे असंख्यात हैं. समय २ में एकेक हरण करते असंख्यात सर्पिणी उत्सर्पिणी काल व्यतीत होजावे यह काल से और क्षेत्र से असंख्यात

सूत्र

तहा एतेबि भाणियव्वा ॥ ५१ ॥ केवतियाणं भंते ! आहारग सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! आहारक सरीरा दुविहा पण्णत्ता तंजहा बद्धेलगाय मुक्केलगाय तत्थणं जे ते बद्धेलगा तेणं सिअ अत्थि, सिअ नात्थि जइ अत्थि जहन्नेणं एगोवा, दोवा तिण्णिवा,उक्कोसेणं सहस्सं पुहुत्तं,मुक्केलगा जहा ओरालिया सरीरा तहा भाणियव्वा ॥ ५२ ॥ केवतियाणं भंते ! तेयग सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता

अर्थ

श्रेणि प्रतर के असंख्यातवे भाग में आवे उस के जितने आकाश प्रदेश होते हैं उतने हैं. और जो मुकेलक हैं वे अनन्ते हैं. समय २ में एकेक का हरण करते अनन्त सर्पिणी उत्सर्पिणी काल व्यतीत होजावे और सब औदारिक मुकेलक का कहा तैसा कहना ॥ ५१ ॥ अहो भगवन् ! आहारक शरीर कितने हैं ? अहो शिष्य ! आहारक शरीर दो प्रकार के कहे हैं तद्यथा-बंधेलक और मूकेलक. इस में जो बंधेलक है वह किसी वक्त मिलता है किसी वक्त नहीं भी मिलता है क्यों कि जो पूर्व के पाठी आहारक लब्धि के धारक पृच्छा के समय ही यह बनाते हैं जो कभी मिले तो जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट पृथक्त्व [ २ से ९ ] हजार. और मूकेलक शरीर अनंत हैं जैसा औदारिक मूकेलक का कहा तैसा आहारक का भी कहना. क्यों कि चौदह पूर्व के पाठी पडवार होकर आधा पुद्गल परावर्तन संसार परिभ्रमण करते हैं ॥ ५२ ॥ अहो भगवन् ! तेजस शरीर कितने हैं ? अहो शिष्य ! तेजस शरीर दो

सूत्र

तंजहा–बंधेलगाय मुक्केलगाय. तत्थणं जे ते बंधेलगा तेणं अणंता, अणंताहिं उसप्पिणी उसप्पिणीहिं अवहीरंती कालओ खेत्तओ अणंता लोगा. सिद्धेहिं अणंतगुणा, सव्व जीवाणं अणंतभागूणं, तत्थणं जे ते मुक्केलगा तेणं अणंता अणंताहिं उसप्पिणीहिं उसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेत्तओ अणंतालोगा सव्व जीवेहिं अणंतगुणा, जीव वग्गस्स अणंतभागो ॥ ५३ ॥ केवतियाणं भंते ! कम्मग सरीरा पण्णत्ता ?

अर्थ

प्रकार के कहे हैं. तद्यथा-बंधेलक और मुकेलक (तेजस शरीर छूटे बाद आत्मा का साथ ही मोक्ष होता है) इस में बंधेलक हैं वे अनन्ते हैं (क्यों कि निगोद के अनन्त जीवों के तेजस शरीर अलग २ है) समय २ में एकेक हरण करते अनंत सर्पिणी अवसर्पिणी काल बीत जावे. सिद्ध भगवंत से अनंत गुन अधिक हैं क्यों कि सिद्ध से अनंत गुन अधिक निगोद के जीवों हैं वे सब तेजस शरीर के धारक हैं. और सब जीवों के अनंतवे भाग हीन. क्यों कि सब जीवों में सिद्ध के जीव भी समागये. इस लिये जितने सिद्ध हुवे उतने तेजस शरीर कमी होगये. और जो मुकेलक तेजस शरीर हैं वे अनंत हैं. समय २ में एकेक हरण करते अनंत उत्सर्पिणी अवसर्पिणी व्यतिक्रान्त होजावे. यह काल से और क्षेत्र से अनन्त लोकाकाश प्रदेश जितने. सब जीवों से अनंतगुने अधिक, और जीव वर्ग के अनंतवे भाग. अर्थात् जितने सब जीवों हैं उन को उतने गुना करना. उस में का एक भाग कमी करना [सिद्ध का] इतने

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







मूल

गोयमा दुविहा पण्णत्ता तंजहा—बद्धेलगाय मुक्केलगाय, जहा तेयग सरीरा तहा कम्मग सरीरावि भाणियव्वा ॥ ५४ ॥ णेरइयाणं भंते ! केवतिया ओरालिया सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा—बंद्धेलगाय मुक्केलगाय तत्थणं जे बंद्धेलगा तेणं णत्थी तत्थणं जे ते मुक्केलगा तेणं जहा ओहिया ओरालिया सरीरा तहा भाणियव्वा ॥ नेरइयाणं भंते ! केवतिया वेउव्विया सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा—बंद्धेलगाय मुक्केलगाय तत्थणं

अर्थ

हैं ॥ ५३ ॥ अहो भगवन् ! कार्माण शरीर कितने कहे हैं ? अहो शिष्य ! कार्माण शरीर दो प्रकार के कहे हैं. तद्यथा-१ बंधेलक और २ मूकेलक. जैसा तेजस शरीर का कहा तैसा ही कार्माण शरीर का कहना ॥ ५४ ॥ अहो भगवन् ! नेरिये के औदारिक शरीर कितने प्रकार के हैं ? अहो शिष्य ! दो प्रकार के हैं. तद्यथा-१ बंधेलक और २ मूकेलक. इस में जो बंधेलक हैं वह तो वर्तमान काल में नहीं हैं क्यों कि नेरीये वैक्रेय शरीर धारी हैं. और मूकेलक तो औघिक औदारिक शरीर का कहा तैसा कहना. अहो भगवन्! नेरीये के वैक्रेय शरीर कितने प्रकार का कहा है? अहो शिष्य दो प्रकार के हैं तद्यथा-बंधेलक और मूकेलक. इस में से बंधेलक तो असंख्यात हैं एकेक समय में एकेक करने से असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी बीत जाय यह काल से और क्षेत्र से असंख्यात श्रेणिक प्रतर के असंख्यात भाग में वह

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

जे ते बंधेलगा तेणं असंखेज्जा असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणी ओसप्पिणीहिं अवहीरंती कालओ, खेत्तओ असंखेज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखेज्जति भागो तासिणं सेढीणं विक्खंभ सूई अंगुल पढम वग्गमूलंबितिय वग्गमूल पडुपन्न अहवणं अंगुलं बितीय वग्गमूल घणप्पमाण मेत्ताओ सेढीओ, तत्थणं जेते मुक्केलया तंजहा ओहिया ओरालिय सरीरा तहा भाणियव्वा आहारग बंधेलगा नत्थि, मुक्केलगा जहा ओरालिया तेयग कम्म सरीरा तंजहा–एतेसिं चेव विउव्विय सरीरा तहा भाणियव्वा ॥ ५५ ॥ असुर कुमाराणं भंते! केवातिया ओरालिया सरीरा पण्णत्ता? गोयमा ! तंजहा–नेरइयाणं

अर्थ

श्रेणि जितने असंख्यात आवे पूर्व से पश्चिम तक लांबी एक अंगुल प्रमाण चौडी इतने में जितने असंख्यात आवे उतने नरक के वैक्रेय शरीर हैं. असतकल्पना से २५६ श्रेणि. उस का प्रथम वर्ग मूल सोले, क्यों कि १६×१६=२५६, इसलिये सोले श्रेणि आई. उस को दूसरा वर्ग मूल ४ क्यों कि ४×४=१६, १६×४=६४ श्रेणि असतकल्पना से आई. परंतु परमार्थ से तो असंख्यात श्रेणि जानना. उस के जितने आकाश प्रदेश उतने नरक के उत्कृष्ट शरीर जानना. और जो मूकेलक शरीर हैं वे जैसे औघिक औदारिक शरीर का कहा तैसा कहना. नरक में आहारक शरीर बंधेलक तो नहीं हैं और नरक के जीवोंने प्रथम छोडे हुवे आहारक शरीर औदारिक शरीर के जैसे असंख्यात कहना. नरक के तेजस और कार्माण शरीर का जैसे वैक्रय शरीर का कहा तैसा ही कहना

For Private and Personal Use Only

सूत्र

उरालिय सरीरा तहा भाणियव्वा । असुरकुमाराणं भंते ! केवतिया वेउव्विया सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा—बंद्धेलगाय मुक्केलगाय, तत्थणं जे ते बंद्धेलगा तेणं असंखेज्जा, असंखेज्जाहि उसप्पिणी ओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ खेत्तओ, असंखेज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखेज्जइ भागे, तासिणं सेढीणं विक्खंभसूईअंगुल पढम वग्गमूलस्स असंखेज्जति भागो॥मुक्केलगाजहा ओहिया ओरालिय सरीरा तहा भाणियव्वा, असुरकुमाराणं भंते ! केवतिया आहारग सरीरा पण्णत्ता?

अर्थ

॥ ५५ ॥ अहो भगवन् ! असुर कुमार देव के औदारिक शरीर कितने प्रकार का कहा है ? अहो शिष्य ! जैसा नरक के औदारिक शरीर का कहा तैसा ही कहना. अहो भगवन् ! असुरकुमार देवता के वैक्रेय शरीर कितने हैं ? अहो गौतम ! वैक्रेय शरीर दो प्रकार के हैं. तद्यथा—१ बंधेलक और २ मूकेलक. इस में बंधेलक हैं वे असंख्यात हैं वे समय२ पर हरण करते असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी हरण करते बीत जावे यह काल से. और क्षेत्र से असंख्यात श्रेणि प्रतर के असंख्यातवे भाग में आवे उस श्रेणि की लम्बी सूची अंगुल प्रमाण क्षेत्र की प्रथम श्रेणि उस का प्रथम वर्ग मूल १६ का, असंख्यात श्रेणि के असंख्यात आकाश प्रदेश जितने इतने असुरकुमार देव के वैक्रेय शरीर जानना. नरक से असंख्यात भाग कमी होती है. और मुकेलक शरीर तो जैसा औधिक औदारिक शरीर का कहा तैसा कहना. अहो भगवन् ! असुर कुमार देव के आहारिक शरीर कितने प्रकार कहा है ? अहो शिष्य ! दो प्रकार

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







**मूल** गोयमा! दुविहा पण्णत्ता तंजहा–बंद्धेलगाय मुक्केलगाय, जहा एतेसिं चेव ओरालिय सरीरा तहा भाणियव्वा, तेयग कम्मस्स सरीरा जहा एतेसिं चेव वेउव्विय सरीरा तहा भाणियव्वा, जहा असुरकुमाराणं तहा जाव थणियकुमाराणं ताव भाणियव्वा ॥ ५६ ॥ पुढवी काइयाणं भंते ! केवतिया ओरालिय सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा–बंद्धेलगाय मुक्केलगाय, एवं जहा ओहिया ओरालिया सरीरा तहा भाणियव्वा, पुढवीकाइयाणं भंते ! केवातिया वेउव्विया सरीरा पण्णत्ता गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा–बद्धेलगाय मुक्केलगाय, तत्थणं जे ते बंद्धेलगा

**अर्थ** का कहा है. तद्यथा—१ बंधेलक और २ मुकेलक. जिस प्रकार असुर कुमार के औदारिक शरीर का कहा तैसे ही आहारक शरीर का भी कहना. और तेजस कार्मान शरीर का इन के वैक्रय शरीर जैसा कहना, यह पांचों शरीर का जिस प्रकार असुर कुमार देव का कथन कहा तैसा ही यावत् स्तनित कुमार पर्यंत कहना. ॥ ५६ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया के औदारिक शरीर कितने प्रकार का कहा है ? अहो शिष्य ! पृथ्वीकाय के औदारिक शरीर दो प्रकार का कहा है. तद्यथा–बंधेलक और मुकेलक. इस में जैसा औधिक औदारिक शरीर का कहा वैसा ही पृथ्वीकाय के औदारिक शरीर का कहना. अहो भगवन् ! पृथ्वीकाय के वैक्रय शरीर कितने प्रकार का कहा है ? अहो शिष्य !

For Private and Personal Use Only

सूत्र

तेणं नत्थि, मुक्केलया जहा उहिया ओरालिया सरीरा तहा भाणियव्वा, आहारग सरीरावि एवं चेव भाणियव्वा, तेयग कम्म सरीरा जहा एतेसिं चेव ओरालिय सरीरा तहा भाणियव्वा जहा पुढवी काइयाणं, एवं आउकाइयाणं, तेउकाइयाणयसव्व सरीरा भाणियव्वा, वाउकाइयाणं भंते! केवतिया ओरालिया सरीरा पण्णत्ता? गोयमा! दुविहा पण्णत्ता तंजहा-बंद्धेलगाय मुक्केलगाय, जहा पुढवि काइयाणं ओरालिय सरीरा तहा भाणियव्वा, वाउकाइयाणं भंते! केवतीया वेउव्विय सरीरा पण्णत्ता?

अर्थ

दो प्रकार का कहा है. तद्यथा—बंधेलक और मूकेलक. इस में बंधेलक तो नहीं है. और मूकेलक सो जैसा औधिक औदारिक शरीर का कहा तैसा कहना. आहारिक शरीर का भी ऐसा ही कहना तेजस और कार्मान शरीर का जैसा इस के औदारिक शरीर का कहा तैसा कहना. यह जिस प्रकार पृथ्वीकाया में पांचों शरीर का कथन किया, तैसा ही अप्काय और तेजस्काय का कहना. अहो भगवन्! वायु काया के औदारिक शरीर कितने प्रकार का है? अहो शिष्य! दो प्रकार का कहा है तद्यथा-१ बंधेलक और २ मूकेलक. वायु का भी पृथ्वी काया के औदारिक शरीर जैसा कहना अहो भगवन्! वायु काया के वैक्रेय शरीर कितने प्रकार के कहे हैं? अहो शिष्य! दो प्रकार के कहे हैं तद्यथा—

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा—बंद्धेलगाय, मुक्केलगाय, तत्थणं जे ते बंद्धेलगा तेणं असंखेज्जा समए २ अवहीरमाणा २ खेत्त पलिओवमस्स असंखिज्जइ भाग-मेत्तेणं कालेणं अवहीरम्मि णो चेवणं अवहिरियासिया, मुक्केलथा वेउव्विय सरीराय आहारक सरीराय जहा पुढवीकाइयाणं तहा भाणियव्वा, तेयग कम्म सरीराय पुढवी काइयाण तहा भाणियव्वा वणस्सइ काइयाणं ओरालियवेउव्विय आहारग सरीरा जहा पुढवी काइयाणं तहा भाणियव्वा, वणस्सइ काइयाणं भंते! केवइया तेयग कम्म सरीरा पण्णत्ता? गोयमा दुविहा पण्णत्ता तंजहा-बंद्धेलगाय मुक्केलगाय, जहा ओहिया तेयग कम्म सरीरा तहा वणस्सति काइयाणवि, तेयग कम्म सरीरा भाणियव्वा ॥ ५७ ॥

अर्थ

बंधेलक और मकेलक. उस में जो बंधेलक हैं वे असंख्यात हैं एकेक समय में एकेक हरण करते पल्योपम के असंख्यातवे भाग में जितने आकाश प्रदेश आवे इतने काल में हरण करे तो भी होवे नहीं. और मूकेलक वैक्रेय शरीर आहारक शरीर जैसे पृथ्वी काया का कहा तैसा कहना. तैसे ही तेजस कार्माण शरीर का भी पृथ्वी काया के जैसा ही कहना. वनस्पति काया में औदारिक शरीर वैक्रेय शरीर आहारक शरीर जैसा पृथ्वीकाया का कहा तैसा कहना. और तैजस कार्माण शरीर दो प्रकार के हैं बंधेलक और मूकेलक. इस का कथन जैसा औधिक तेजस कार्माण का कहा तैसा ही कहना ॥५७॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सूत्र

बेइंदियाणं भंते ! केवतिया ओरालिया सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा दुविहा पण्णत्ता, तंजहा–बंद्धेलगाय मुक्केलगाय, तत्थणं जे ते बंद्धेलगा ते [illegible] उसप्पिणी उसप्पिणीहिं अवहीरंति कालउ खे [illegible] ओ असंखे[illegible] ज्जति भागो, तासिणं सेढीणं विक्खभसूई असंखेज्जाओ जोयण कोडाकोडीओ असंखेज्जाइ सेढीवग्गमूलाइं बेइंदियाणं ओरालिया बंद्धेलएहि पयरं अवहीरइ असं-

अर्थ

अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय के औदारिक शरीर कितने प्रकार का कहा है ? अहो शिष्य ! दो प्रकार के कहा है तद्यथा—१ बंधेलक और २ मुक्केलक. इस में बंधेलक [illegible] असंख्यात हैं समय २ में एकेक हरण करते असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी बीत जावे यह काल से और क्षेत्र असंख्यात श्रेणि प्रतर के असंख्यात भाग में हैं. असत्कल्पना से ६४ ५३६ उस के असंख्यात वर्ग मूल करे. तहां प्रथम वर्ग मूल २५६, दूसरा वर्ग मूल १६, तीसरा वर्ग मूल ४, चौथा [illegible] को एकत्र कर परस्पर गुनाकार करे तब २५८ आवे परंतु परमार्थ से असंख्यात वर्ग मू. के अंश होवे. उन के भी ले कर जितने जितनी श्रेणि आवे उस के जितने आकाश प्रदेश होवें उतने बेइन्द्रिय के औदारिक शरीर जानना. और भी प्रकारान्तर से कहते हैं—वह श्रेणि असंख्यात कोडाकोड योजन चौडी उस श्रेणि [illegible] चौडापना असंख्यात विष्कम्भ सूची योजन की क्रोडाक्रोड जानना. उस असंख्यात श्रेणि के वर्ग मूल में





For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

खेज्जाइ उस्सप्पिणीउ ओसप्पिणिओ कालओ खेत्तओ अंगुलपयरस्स आवलियाएय असंखेज्जइ, भाग पलिभागेण,मुक्केलया जहा ओहिया ओरालिया सरीरा तहा भाणियव्वा, बेउव्विय आहारग सरीरा बंद्धेलगा नत्थी, मुक्केलया जहा ओरालिया सरीरा तहा भाणियव्वा, तेयग कम्मग सरीरा जहा एतेसिं चेव ओरालिय सरीरा तहा

अर्थ

जितनी श्रेणि के आकाश प्रदेश हों. अब दूसरा पक्ष कहते हैं—बेइन्द्रिय के बंधेलक औदारिक शरीर कहना. संपूर्ण प्रतर में अंगुल के असंख्यातवे भाग में जितने प्रदेश आवे उतने खंड ऊपर आवलिकाके असंख्यातवे भाग जितने पावे उतने समय २ पूर्वोक्त खंड के ऊपर एकेक बेइन्द्रिय जीव रखते जितने प्रतर पूर्ण होवे उतने खंड आवलिका के असंख्यात समय में रखते २ असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी व्यतीत होजावे इतने बेइन्द्रिय जीव हैं. यह काल से, और क्षेत्र से अंगुल प्रतर रूप क्षेत्र का असंख्यातवा भाग उस पर आवलिका रूप जो काल उस का असंख्यातवा भाग (अंग) उस पर एकेक बेइन्द्रिय पूर्वोक्त खंड पर रखते जावे तो असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी बीत जावे इतने बेइन्द्रिय हैं. और मुकेलक जैसा औघिक औदारिक का कहा तैसा कहना. बेइन्द्रिय वैक्रेय और आहारक शरीर बंधलक नहीं है, और मुकेलक औदारिक शरीर जैसा कहना. तेजस कार्माण शरीर का जैसा इन के औदारिक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

भाणियव्वा, जहा बेइंदियाणं तहा तेइंदियाणं चउरिंदियाणंवि भाणियव्वा ॥ ५८ ॥ पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणंवि ओरालिय सरीरा एवं चेव भाणियव्वा ॥ पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं भंते ! केवतिया वेउव्विय सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा—बंधेलगाय मुक्केलगाय. तत्थणं जे बंधेलया तेणं असंखिज्जाहिं उसप्पिणी ओसप्पिणीहिं अवहीरंती कालतो खेत्तओ असंखेज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखेज्जइ भागे, तासिणं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुल पढम वग्गमूलस्स असंखेज्जति भागो, मुक्केलया जहा ओहिया, ओरालिया आहारय सरीरा जहा बेइंदियाणं,

अर्थ

शरीर का कहा तैसा कहना. जैसा यह बेइन्द्रिय का कथन कहा तैसा ही तेइन्द्रिय का और चौरिन्द्रिय का भी कहना ॥ ५८ ॥ पंचेन्द्रिय तिर्यंच के औदारिक शरीर भी पूर्वोक्त काया की प्रकार कहना. तिर्यंच पंचेन्द्रिय के वैक्रेय शरीर दो प्रकार का है—१ बंधेलक और मूकेलक. इस में बंधेलक शरीर सो एकेक समय में एकेक का हरण करते असंख्यात सर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत होजावे काल से, और क्षेत्र से असंख्यात श्रेणि प्रतर के असंख्यात भाग उस श्रेणि की विकंभ सूची अंगुल प्रथम वर्ग मूल क्षेत्र के असंख्यातवे भाग जितनी श्रेणि के आकाश प्रदेश उतने वैक्रेय शरीर हैं असुरकुमार से असंख्यातगुने अधिक जानना. और मूकेलक का जैसा औधिक औदारिक का कहा तैसा कहना. आहारक शरीर का

For Private and Personal Use Only

सूत्र

तेयगकम्म सरीरा जहा ओरालिया॥ ५९ ॥ मणुस्साणं भंते । केवतिया ओरालिय सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा-बद्धेलगाय मुक्केलगाय, तत्थणं जे ते बद्धेलया तेणं सिय संखेज्जा सिय असंखेज्जा, जहन्न पदे संखेज्जा कोडाकोडीओ तिजमलपयस्स उवरि चउजमल पयस्स हेट्ठा एगूणतीसं ठाणाइ

अर्थ

जैसा बेइन्द्रिय का कहा तैसा कहना. तेजस कार्माण शरीर का औदारिक शरीर जैसा कहना ॥ ५९ ॥ अहो भगवन् ! मनुष्य के कितने औदारिक शरीर कहे हैं ? अहो गौतम ! दो प्रकार के औदारिक शरीर कहे हैं. तद्यथा—१ बंधेलक और २ मूकेलक. इस में बंधेलक शरीर स्यात् असंख्यात हैं (संमूर्च्छिम मनुष्य आश्रिय) और स्यात् संख्यात हैं, (गर्भज मनुष्य आश्रिय) मनुष्य जघन्य पद में संख्यात क्रोडाक्रोड होवे. वे तीन जमल पद के ऊपर आठ अंक जितने जानना. और चौथे जमल पद से २९ अंक कम गुनतीस अंक में क्रोडाक्रोड आवे उतने हैं. अथवा छट्ठे वर्ग मूल को पांचवे वर्ग मूल साथ गुनाकार करे उतने हैं. वे इस प्रकार-एक से गिनती नहीं चलने से दो से लेते हैं. २×२=४ यह प्रथम वर्ग मूल, ४×४=१६ यह दूसरा वर्ग मूल, १६×१६=२५६ यह तीसरा वर्ग मूल, २५६×२५६=६५५३६ यह चौथा वर्ग मूल, ६५५३६×६५५३६=४२९४९६७२९६ यह पांचवा वर्ग

सूत्र अहवणं छट्ठावग्गो पंचमवग्ग पडपन्न अहवणं छणउइछे अणगहायरासी उक्कोस-पदे असंखेज्जा असंखेज्जाहिं उसप्पिणी ओसाप्पिणीहिं अवहीरांति कालतो, खेत्तओ उक्कोसेणं रूवं पक्खित्तेहिं मणुस्सेणं सेढी अवहीरइ तीसे सेढीए कालखेत्तेहिं अवहीरोममगिज्जइ कालतो असंखिज्जाहि उसप्पिणी ओसप्पिणीहिं खेत्तओ अंगुल

अर्थ मूल. ४२९४९६७२९६×४२९४९६७२९६=१८४४६७६२८१४२६४३३७५९३५४३९५०३३६ यह छठा वर्ग मूल. उक्त पांचवे वर्ग मूलसे छठे वर्ग मूलका गुनाकार करे तब २९ अंक आते हैं. अब ९६ वक्त उसका छेद होता है वह कहते हैं—प्रथम ४ के वर्ग में दो छेदांक, दूसरे १६ वर्ग में ४ छेदांक, तीसरे वर्ग में, ८ छेदांक, चौथे वर्ग में १६ छेदांक, पांचवे वर्ग में ३२ छेदांक, छठे वर्ग में ६४ छेदांक, पांचवे वर्ग को छठे वर्ग के साथ गुने इस लिये पांचवे वर्ग में छठे वर्ग के छेदांक समा गये. तब ९६ छेदांक होवे. (राशी के अंक का छेदन करते अन्त में प्रतिपूर्ण अंक आवे उसे छेदांक कहते हैं, यह २९ अंक होते हैं. यह २९ अंक जितने जघन्य पद में मनुष्य हैं.) उत्कृष्ट पद में असंख्यात मनुष्य हैं. उन्हे एकेक समय में एकेक हरण करते असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी वीत जावे यह काल से, और क्षेत्र से उत्कृष्ट रूप प्रक्षिप्त उन मनुष्य करके एक आकाश श्रेणि का अपहरण करे काल से असंख्यात उत्सर्पिणी

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

पढम वग्गमूल तइयवग्गमूल पडुपन्ने, मुक्केलया जहा ओहिया ओरालिया ॥ मणुस्साणं भंते ! केवइया वेउव्विय सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा—बंधेलय मुक्केलयाय, तत्थणं जे ते बंधेलया तेणं संखिज्जा समए २ अवहीरमाणा २ संखेज्जेणं कालेणं अवहीरंति नो चेवणं अवहिआ सिआ, मुकेलयाय जहा ओहिया ॥ मणुस्साणं भंते! केवतिया आहारय सरीरा पण्णत्ता गोयमा! दुविहा पण्णत्ता तंजहा-बद्धेलयाय मुक्केलयाय तत्थेणं जे ते बद्धेलया तेणं सिय अत्थि सिय णात्थि, जइ अत्थि जहन्नेणं एकोवा

अर्थ

अंक अपहरावे. अर्थात् श्रेणि के अंगुल प्रमाण क्षेत्र में जो प्रदेश राशी होवे उसे प्रथम वर्ग मूल तीसरा वर्ग मूल के प्रदेश राशी के साथ गुने तब जो प्रदेश राशी होवे उतने प्रमाण का क्षेत्र खंड जो एकेक मनुष्य का शरीर अनुक्रम से अपहरते असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी कर सब श्रेणि अपहरावे. तब मं मूर्च्छिम गर्भज मनुष्य के शरीर होवे. और मूकेलक मनुष्य के शरीर जैसा औधेक में औदारिक शरीर का कहा तैसा कहना. अहो भगवन् ! मनुष्य के वैक्रेय शरीर किस प्रकार का कहा है ? अहो गौतम ! दो प्रकार का कहा है तद्यथा—१ बंधेलक और २ मुकेलक. इस में जो बंधेलक वैक्रेय शरीर है वे संख्यात हैं ( क्यों कि यह लब्धि प्रत्यय गर्भज मनुष्य के ही होता है ) वह एकेक समय में हरन करते संख्यात काल में खुटजावे. परंतु किसीने अपहरन किया नहीं और न कोइ अपहरन करेगा. और मूकेलक का जैसा औधिक का कहा तैसा कहना. अहो भगवन् ! मनुष्य के आहारक शरीरा

For Private and Personal Use Only

सूत्र

दोवा तिण्णिवा, उक्कोसेणं सहस्स पुहुत्तं, मुक्केलया जहा ओहिया। ओरालियाणं तेयग कम्मग सरीरा जहा एतेसिं चेव ओहिया ओरालियो तहा भाणियव्वा ॥ ६० ॥ वाणमंतराणं ओरालिया सरिरा जहा नेरइयाणं, वाणमंतराणं भंते ! केवतिया वेउव्विय सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा—बंद्धेलगाय मुक्केलगाय, तत्थणं जे ते बंद्धेलया तेणं असंखेज्जा, असंखेज्जाहि उसप्पिणी ओसप्पिणीहिं अवहीरंती कालतो, खेत्तओ असंखेज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखेज्जति

अर्थ

कितने प्रकार का कहा है ? अहो गौतम ! दो प्रकार का कहा है तद्यथा-१ बंधेलक और २ मूकेलक. इस में बंधेलक शरीर किसी वक्त होवे किसी वक्त नहीं भी होवे. जब होवे तब जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट हजार पृथक्त्व और मूकेलक का जैसा औधिक औदारिक का कहा तैसा कहना. ॥ ६० ॥ वाणव्यन्तर औदारिक शरीर का कथन जैसा नेरीया के औदारिक शरीर का कहा तैसा कहना. अहो भगवन्! वाणव्यन्तर के वैक्रय शरीर कितने प्रकार के हैं? अहो गौतम! दो प्रकार कहे हैं? तद्यथा-बंधेलक और मूकेलक. इसमें से जो बंधेलक है वे असंख्यात है. एकेक समय में एकेक हरन करने असंख्यात उत्सर्पनी अवसर्पनी काल व्यतीत होजावे यह काल से कहा और क्षेत्र से प्रतर के असंख्यातवे भाग जितने आकाश प्रदेश की श्रेणि आवे विलम्बपने संख्यात सहस्र योजन उस का वर्ग करना उस के एकेक भाग में एकेक

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

भागो, तासिणं सेढीणं विक्खंभसूई सखेज्ज जोयण सयवग्ग, पलिभागो पयरस्स, मुक्केलया जहा उहिया ओरालिया आहारग सरीरा दुविहावि जहा असुरकुमाराणं, वाणमंतराणं भंते ! केवतिया तेअग कम्मग सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहा एएसिं चेव वेउव्विया सरीरा तहा तेयग कम्मग सरीरावि भाणियव्वा, ॥ ६१ ॥ जोइसियाणं भंते ! केवइया ओरालिय सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता

अर्थ

व्यन्तर का शरीर स्थापन करे तो वह सब प्रतर भरा जावे इतने असंख्यात वाणव्यन्तर के वैक्रेय बंधेलक शरीर हैं. तिर्यंच पंचेन्द्रिय से असंख्यातगुने हैं, और मूकेलक का जैसा औधिक औदारिक का कहा तैसा कहना. वाणव्यन्तर के आहारक शरीर का जैसा असुरकुमार का कहा तैसा कहना. अहो भगवन् ! वाणव्यन्तर के तेजस और कार्मान शरीर कितने प्रकार के कहे हैं? अहो गौतम! जैसा वाणव्यन्तर के वैक्रेय शरीर का कहा तैसा कहना ॥ ६१ ॥ अहो भगवन् ! ज्योतिषी के औदारिक शरीर कितने प्रकार के कहे हैं ? अहो शिष्य ! दो प्रकार के कहते हैं. तद्यथा—१ बंधेलक और २ मूकेलक, इन दोनों का जैसा नेरिये का कहा तैसा कहना. अहो भगवन् ! ज्योतिषी के वैक्रेय शरीर कितने कहे हैं? अहो गौतम ! दो प्रकार के कहे हैं. तद्यथा—१ बंधेलक और २ मूकेलक, इस में जो बंधेलक कहे हैं वे एकेक समय में एकेक हरण करते असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी बीत जावे यह काल से, और

For Private and Personal Use Only

सूत्र

तंजहा—बंद्धेलयाय मुक्केलगाय, तत्थणं जे ते बंद्धेलया, जाव तासिणं सेढीणं विक्खंभसूइ छेछप्पन्नंगुलसय वग्गपलिभागो, पयरस्स, मुक्केलया जहा ओहियाणं, ओरालियाणं आहारय सरीरा जहा नेरइयाणं तहा भाणियव्वा, तेयग कम्म सरीरा जहा एएसिं चेव वेउव्विया तहा भाणियव्वा ॥ ६२ ॥ वेमाणियाणं भंते ! केवइया ओरालिय सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहा नेरइयाणं तहा भाणि-

अर्थ

क्षेत्र से असंख्यात श्रेणि प्रतर का भाग आवे वह श्रेणि चौडा पाने सूची की उतनी २५६ अंगुल का वर्ग उस रूप जो प्रथम भाग वे प्रतर के पर्याय में मुकेलक इत्यादि जैसा औघिक औदारिक शरीर का कहा तैसा कहना. व्यन्तर से ज्योतिषी असंख्यात गुने अधिक जानना. आहारक शरीर का जैसा नेरीये का कहा तैसा ज्योतिषी का भी कहना और तेजस कार्माण शरीर का जैसा इन के वैक्रेय शरीर का कहा तैसा कहना ॥ ६२ ॥ अहो भगवन् ! वैमानिक के औदारिक शरीर कितने प्रकार के कहे हैं ? अहो शिष्य ! दो प्रकार के कहे हैं तद्यथा—१ बंधेलक और २ मुकेलक. इन दोनों का नेरीये जैसा कहना. अहो भगवन् ! वैमानिक के वैक्रेय शरीर कितने प्रकार का कहा हैं ? अहो गौतम ! दो प्रकार से कहा हैं बंधेलक और मुकेलक इस में से जो बंधेलक है वे असंख्यात हैं. एकेक हरण करते

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



 

सूत्र

यव्वा, वेमाणियाणं भंते ! केवतिया वेउव्विय सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा—बंद्धेलयाय मुक्केलयाय, तत्थेणं जे ते बंद्धेलया तेणं असंखेज्जा, असंखेज्जाहिं उसप्पिणी ओसप्पिणीहिं अवहीरंती कालतो, खेत्ततो असंखेज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखेज्जति भागो, तासिणं सेढीणं विक्खभंसूई अंगुलबितीय वग्गमूलं तत्तिय वग्गमूलं पडुपन्न अहवणं अंगुल ततीय वग्गमूल घणप्पमाणमेत्ताओ सेढीओ, मूक्केलया जहा ओहिया आहारग सरीरा जहा नेरइयाणं, तेयग कम्मग सरीरा

अर्थ

असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी बीत जावे यह कालसे, क्षेत्रसे प्रतरके असंख्यातवे भाग जितने आवे वह विषमपने अंगुलपने दूसरा वर्ग मूल तीसरे वर्ग मूल साथ गिनने से जितने आकाश प्रदेश आवे उतने हुवे. २५६ का वर्ग मूल को चार २ दो साथ गिने ८ होवे. उस के खंड में वैमानिक का एकेक शरीर स्थापन करे तो वह भरा जावे. अर्थात् असंख्यात श्रेणि प्रतर के असंख्यात भाग. उस श्रेणि की विष्कम्भ श्रेणि के सूची अंगूल प्रमाण क्षेत्र का विष्कम्भ असंख्यात है परंतु असत्कल्पना से २५६ का दूसरा वर्ग मूल ४ का तीसरा वर्ग मूल ८ होवे. अथवा अंगुल प्रमाण क्षेत्र तीसरा वर्ग मूल दूसरा रूप का जो घन प्रमाण वह ८ रूप का होवे, उस श्रेणि की विष्कम्भ सूची कहना. और मुकेळकका जैसा औधिक का कहा तैसा कहना. आहारक शरीर का जैसा नेरीये का कहा तैसा कहना. और तेजस

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

जहा एतेसिं चेव, वेउव्विय सरीरा तहा भाणियव्वा, से तं सुहुम खेत्त पलिओवमे ॥ सेत्तं पलिओवमे॥से तं विभाग निप्फन्ने ॥ सेत्तं कालप्पमाणे॥ ६३ ॥सेकिंतं भावप्पमाणे ? भावप्पमाणे तिविहा पण्णत्ता तंजहा—गुणप्पमाणे, नयप्पमाणे, संखप्पमाणे ॥ ६४ ॥ से किं तं गुणप्पमाणे ? गुणप्पमाणे दुविहे पण्णत्ते तंजहा—जीव गुणप्पमाणे अजीवगुणप्पमाणे । से किंतं अजीवगुणप्पमाणे ? अजीवगुणप्पमाणे पंचविहे पण्णत्ते तंजहा—वण्णगुणप्पमाणे, गंधगुणप्पमाणे, रसगुणप्पमाणे, फासगुणप्पमाणे, संठाण गुणप्पमाणं सेकिंतं वण्ण गुणप्पमाणे? वण्णगुणप्पमाणे पंचविहा पण्णत्ता तंजहा कालगुणप्पमाणे

अर्थ

कार्माण शरीरका जैसा इन का वैक्रेय शरीरका कहा तैसा कहना. यह सूक्ष्म क्षेत्र पल्योपम का कथन हुवा. यह क्षेत्र पल्योपम और पल्योपम का कथन पूर्ण हुवा. तैसे ही विभाग निष्पन्न का और काल प्रमाण का भी कथन हुवा ॥ ६३ ॥ अहो भगवन् ! भाव प्रमाण किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! भाव प्रमाण के तीन प्रकार कहे हैं तद्यथा-१ गुन प्रमाण, २ नय प्रमाण, और ३ संख्या प्रमाण॥ ६४॥ अहो भगवन् ! गुनप्रमाण किसे कहते हैं? अहो गौतम! गुन प्रमाण के दो भेद कहे हैं तद्यथा-जीवगुन प्रमान और अजीव गुनप्रमाण. अहो भगवन् ! अजीव गुन प्रमाण किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! अजीव गुन प्रमाण के पांच प्रकार कहे हैं. तद्यथा—१ वर्ण गुन प्रमाण, २ गंध गुन प्रमाण, ३ रस गुन प्रमाण, ४ स्पर्श गुन प्रमाण. और

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

जाव सुकिल्ल गुणप्पमाणे, सेतं वण्णगुणप्पमाणे॥ से किं तं गंधगुणप्पमाणे? गंधगुणप्पमाणे दुविहे पण्णत्ते तंजहा—सुरभिगंध गुणप्पमाणे, दुरभिगंधगुणप्पमाणे, सेतं गंधगुणप्पमाणे। से किं तं रसगुणप्पमाणे? रसगुणप्पमाणे पंचविहे पण्णत्ते तंजहा—तित्त-रसगुणप्पमाणे जाव महुर रसगुणप्पमाणे, से तं रसगुणप्पमाणे॥ से किं तं फासगुणप्पमाणे? फासगुणप्पमाणे अट्ठविहे पण्णत्ते तंजहा—कक्खड फासगुणप्पमाणे, जाव लुक्खफासगुणप्पमाणे, से तं फासगुणप्पमाणे॥ से किं तं संठाण गुणप्पमाणे? संठाण गुणप्पमाणे पंचविहे पण्णत्ते तंजहा—परिमंडल

अर्थ

५ संस्थान गुन प्रमाण. अहो भगवन्! वर्ण गुन प्रमाण कितने प्रकार कहे हैं? अहो शिष्य! वर्ण गुन प्रमाण के पांच प्रकार कहे हैं. तद्यथा—१ कृष्ण वर्ण गुन प्रमाण, यावत् शुक्ल वर्ण गुन प्रमाण. अहो भगवन्! गंध गुन प्रमाण के कितने प्रकार कहे हैं? अहो शिष्य! दो प्रकार कहे हैं. सुरभिगन्धगुण प्रमाण २ दुर्भिगंध प्रमान. अहो भगवन्! रस गुन प्रमान कितने प्रकार कहे हैं? अहो शिष्य! पांच प्रकार कहे हैं. तद्यथा—१ तिक्त रस गुन प्रमान यावत् मधुर रस गुन प्रमान. अहो भगवन्! स्पर्श गुन प्रमान के कितने प्रकार कहे हैं? अहो शिष्य! स्पर्श गुन प्रमान के आठ प्रकार कहे हैं. तद्यथा कर्कश स्पर्श गुन प्रमान. यावत् रूक्ष स्पर्श गुन प्रमान. अहो भगवन्! संस्थान गुन प्रमान कितने

For Private and Personal Use Only

सूत्र

संट्ठाण गुणप्पमाणे, जाव आयय संट्ठाण गुणप्पमाणे से तं संट्ठाण गुणप्पमाणे ॥ से तं अजीव गुणप्पमाणे ॥ ६५ ॥ से किं तं जीवगुणप्पमाणे ? जीवगुणप्पमाणे तिविहे पण्णत्ते तंजहा–णाणगुणप्पमाणे, दंसण गुणप्पमाणे, चरित्तगुणप्पमाणे ॥ से किं तं णाणगुणप्पमाणे णाणगुणप्पमाणे चउविहे पण्णत्ता तंजहा–पच्चक्खे अणुमाणे, उवमे, आगमे ॥ से किं तं पच्चक्खे ? पच्चक्खे दुविहे पण्णत्ते तंजहा–इंदिय पच्चक्खेय, णोइंदिय पच्चक्खेय ॥ से किं तं इंदिय पच्चक्खे ? इंदिय पच्चक्खे

अर्थ

प्रकार कहे हैं ? अहो शिष्य ! संस्थान गुन प्रमान के पांच प्रकार कहे हैं. परिमंडल संस्थान यावत् आयतन संस्थान यह संस्थान गुन प्रमान हुवा और यह अजीव गुन प्रमान भी हुवा. ॥ ६५ ॥ अहो भगवन् ! जीव गुन प्रमान किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! जीव गुन प्रमान तीन प्रकार का कहा है. तद्यथा–१ ज्ञान गुन प्रमान २ दर्शन गुन प्रमान, और ३ चारित्र गुन प्रमान, अहो भगवन् ! ज्ञान गुन प्रमान कितने प्रकार का कहा हैं ? अहो शिष्य ! चार प्रकार का कहा है. तद्यथा—१ प्रत्यक्ष प्रमान २ अनुमान प्रमान, ३ उपमा प्रमान, और ४ आगम प्रमान. अहो भगवन् ! प्रत्यक्ष प्रमान किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! प्रत्यक्ष प्रमान के दो भेद कहे हैं तद्यथा—१ इन्द्रिय प्रत्यक्ष प्रमान और २ नो इन्द्रिय प्रत्यक्ष प्रमान. अहो भगवन् ! इन्द्रिय प्रत्यक्ष प्रमान किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! इन्द्रिय

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

पंचविहे पण्णत्ते तंजहा-सोइंदिय पच्चक्खे चक्खू इंदिय पच्चक्खे, घाणिंदिय पच्चक्खे जिब्भिंदिय पच्चक्खे, फासिंदिय पच्चक्खे, से तं इंदिय पच्चक्खे ॥ से किं तं नो इंदिय पच्चक्खे ? नो इंदिय पच्चक्खे तिविहे पण्णत्ते तंजहा-ओहिणाण पच्चक्खे मणपज्जव णाण पच्चक्खे, केवलणाण पच्चक्खे, से तं नो इंदिय पच्चक्खे सेतं पच्चक्खे॥ ६६॥से किं तं अणुमाणे ?अणुमाणे तिविहे पण्णत्ते तंजहा-पुव्ववं,सेसवं,दिट्ठिसाहम्मवं ॥ ६७ ॥ से किं तं पुव्ववं ? पुव्ववं!माता पुत्तं जहा नवए जुवाणं पुणरागतं काइ पच्चभिजाणेज्जा

अर्थ

प्रत्यक्ष प्रमान के पांच प्रकार कहे हैं. तद्यथा—१ श्रोत्रेन्द्रिय प्रत्यक्ष, २ चक्षुरेन्द्रिय प्रत्यक्ष, ३ घ्राणेन्द्रिय प्रत्यक्ष, ४ रसेन्द्रिय प्रत्यक्ष और ५ स्पर्शेन्द्रिय प्रत्यक्ष, यह इन्द्रिय प्रत्यक्ष प्रमान हुवा. अहो शिष्य नो इन्द्रिय प्रत्यक्ष प्रमान किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! नो इन्द्रिय प्रत्यक्ष प्रमाण के तीन प्रकार कहे हैं. तद्यथा—१ अवधिज्ञान प्रत्यक्ष, २ मनः पर्यव ज्ञान प्रत्यक्ष, और ३ केवल ज्ञान प्रत्यक्ष. यह नो इन्द्रिय प्रत्यक्ष प्रमान हुवा और यह प्रत्यक्ष प्रमान भी हुवा ॥ ६६ ॥ अहो भगवन् ! अनुमान प्रमान किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! अनुमान प्रमान के तीन प्रकार कहे हैं तद्यथा-१ पूर्ववत्, २ शेषवत् और ३ दृष्टिसाधर्मिकवत् ॥ ६७ ॥ अहो भगवन् ! पूर्ववत् किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! किसी माता का पुत्र बचपने में परदेश गया और युवान होकर पीछा आया तो फिर माता अपने पुत्र को किस प्रकार

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

पुव्वलिंगेण केणइ तं खत्तेणवा वण्णेणवा लच्छणेणवा, मसेणवा, तिलएणवा, सेत्तं पुव्ववं ॥ ६८ ॥ से किं तं सेसवं ? सेसवं-पंचविहं पण्णत्तं तंजहा-कज्जेणं, कारणेणं गुणेणं, अवयवेणं, आसएणं ॥ से किं तं कज्जेणं ? कज्जेणं-मोरं किंकाइएणं, हयं हेसिएणं, गयं गुलगुलाइएणं, रहं घणघणाइएणं, से तं कज्जेणं ॥ से किं तं कारणेणं ? कारणेणं-तंतवो पडस्स कारणं, ण पडोत्तंतुकारणं, वीरणा कडरस

अर्थ

पहचाने तो कि-प्रथम के देखे हुवे चिन्ह कर पहचाने. तद्यथा-१ खत करके-शरीर के लम्बे ठिगने आकार कर, वर्णकार-गौर कृष्णादिवर्ण कर, लक्षण कर स्वस्तिकादि लक्षण कर मस्सकर तिलकर इत्यादि पूर्व के अनुमान कर पहिचाने उसे पूर्ववत् कहना ॥ ६८ ॥ अहो भगवन् ! शेषवत् किसे कहते है ? अहो शिष्य ! शेषवत् के पांच प्रकार कहे है. तद्यथा—१ कार्यकर, २ कारण कर, ३ अवयव कर, और ४ आश्रयकर ॥ अहो भगवन् ? कार्यकर अनुमान किस प्रकार होता है ? अहो शिष्य ! १ मयूर को कोकारव शब्द कर पहचाने, २ घोडे को हैंकार शब्द कर पहचाने, ३ हस्ति को गुलगुलाट शब्द कर पहचाने, ४ रथ को घणघणाट शब्द कर पहचाने. इत्यादि कार्य कर पहचाने वह कार्यवत् कहना. यह कार्यवत् हुवा. अहो भगवन् ! कारण किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! सूत है वह वस्त्र रूप कार्य साधने का कारण है. परंतु वस्त्र तंतु का कारण नहीं है. शरकट [ तुलाइ ]

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

कारणं, णकडो वीरणाकारणं, पिंडो घडस्स कारणं नघडोपिंडस्स कारणं, से तं कारणे॥ से किं तं गुणेणं ? गुणेणं—सुवण्णाति कसेणं, पुप्फगंधेणं, लवणं रसेणं, मदिरं आसादएणं, वत्थं फासेणं, से तं गुणेणं ॥ से किं तं अवयवेणं ? अवयवेणं—महिसं सिंगेणं, कुकुडसिहाए, हात्थिविसाणेणं, वराहदाढए, मोरपिच्छेणं, आसंखुरेणं, वघंनहेणं, चमरी वालगेणं, दुप्पय मणुस्स मादी, चउप्पय गवादि, बहुप्पयं गोमिया

अर्थ

वह कडा तट्टा का कारण है परंतु कडा शरकट का कारण नहीं है. मृत्तिका का पिंड घडे का कारण है परंतु घडा मृत्तिका के पिंड का कारण नहीं है. इत्यादि कारण कर जो कार्य निपजे उस कार्य को कारण कर पहचाने वह कारणेणं. यह कारणवत् हुवा. अहो भगवन् ! गुणवत् किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! सुवर्ण का गुन कसोटी कर जाना जावे, पुष्प का गुन गंध कर जाना जावे, निमक का गुन रस कर जाना जावे, मदिरा का गुन आस्वाद कर जाना जावे, वस्त्र का गुन स्पर्श कर जाना जावे इत्यादि गुन कर जाना जावे सो गुणवत्. अहो भगवन् ! अवयववत् किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! अवयव सो शरीर के किसी एक अवयव (उपांग कर) जाना जावे जैसे-शृंग से महिष शिखा कर कुर्कट (मूर्गे) को जाने, दांतों कर हस्ति को जाने, दाढ कर शूकर [ सुवर ] को जाने, पांखों कर मयूर को जाने, खुर कर घोडे को जाने, नखों कर वाघ को जाने, चमर रूप बालों कर चमरी गाय को जाने, द्विपांव कर मनुष्य को

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

मादि. सीह केसरेणं, वसह ककुहेणं महिलं वलयबाहाए परिअरबंधेण भडं जाणिज्जा, महिलिंयं निवसणेणं, सित्थेणं दोण पागं, कविंच एगाए गाहाए से तं अवयवेणं॥ से किं तं आसएणं ? आसएणं—अग्गिधूमेणं, सलिलं बलागेणं, वुट्ठि अब्भविगारेणं, कुलपुत्तसीलसमायारेणं, से तं आसएणं से तं सेसवं ॥ ६९ ॥ से किं तं दिट्ठिसाहम्मवं ? दिट्ठिसाहम्मवं दुविहं पण्णत्तं तंजहा—सामन्नदिट्ठंच, विसेसदिट्ठंच

अर्थ

जाने. चतुष्पद कर चतुष्पद [ पशु ] को जाने, बहुत पांव कर ओमज [ कान खजूरे ] को जाने, केसरा कर सिंह को जाने, स्कन्ध कर वृषभ को जाने, बलिये [ चूडीयों ] कर स्त्री को जाने, हथियारों के बन्धन कर सुभड को जाने, कंचूकी कर विवाहित स्त्री को जाने, एक सीजे हुवे धान्य के कन कर सब धान को जाने, काव्य कर कवि को जाने. इत्यादि अवयव कर जाने उसे अवयव कहना. यह अवयव हुवा. अहो भगवन् ! आश्रयवत् किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! एक के आश्रय कर अन्य को जाने सो आश्रयवत् जैसे-धूम्र के आश्रय कर अग्नि को जाने, मेघ ( बद्दल ) कर वर्षाद को जाने. बगल कर सरोवर को जाने, कुलवंत कर शीलवंत जाने, यह आश्रय जानना. यह सेसवं के भेदानुभेद हुवे ॥ ६९ ॥ अहो भगवन् ! दृष्टी साधर्मिकवत् किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! दृष्टी साधर्मिकवत् के दो प्रकार कहे हैं, तद्यथा—१ सामान्य और २ विशेष ॥ ७० ॥ अहो भगवन् सामान्य दृष्टी साधर्मिक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



॥ ७० ॥ से किं तं सामन्नदिट्ठं ? सामन्नदिट्ठं जहा एगो पुरिसो तहा० बहवे पुरिसा, जहा बहवे पुरिसा तहा एगो पुरिसो, जहा एगो कारिसावणो, तहा बहवे करिसावणा, जहा बहवे करिसावणा, तहा एगो करिसावणो, से तं सामन्नदिट्ठं ॥ ७१ ॥ से किं तं विसेसदिट्ठं ? विसेसदिट्ठं से जहा नामए केइ पुरिसे. कंचि पुरिसं बहुणं पुरिसाणमज्झे पुव्व दिट्ठं पच्चाभिजाणेज्जा अयं से पुरिसे बहु करिसावणाणं मज्झे पुव्व दिट्ठं करिसावणं पच्चभिज्जाणिज्जा. अयं से करिसावणे

किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! जो एक जैसा अन्य अनेक को देखकर जाने सोद्दृष्टी सामान्य जैसे-१ किसी एक देश के पुरुष को देखकर उस जैसे अनेक पुरुषों को जाने,तैसे ही अनेक पुरुषों को देखकर एक पुरुषों को जाने, एक सोनैये को देखकर अनेक सोनैये को जाने अनेक सोनैये से एक सोनैये को जाने, इत्यादि एक से अनेक को और अनेक से एक को जाने सो सामन्य दृष्टी साधर्मिक कहना ॥ ७१ ॥ अहो भगवन् ! विशेष दृष्टी साधर्मिक किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! विशेष दृष्टि साधर्मिक यथा दृष्टान्त कोइ अनुमान का करने वाला पुरुष किसी एक पुरुष को बहुत पुरुषों की परिषद में बैठा हुवा देख कर जाने कि मैंने इस पुरुष को पहिलें कहीं देखा है ऐसे ही बहुत से सोनैये के अन्दर किसी एक सोनैये को देखकर जाने की यह सोनैया पहिले देखा है. यह सामान विशेष दोनों का भेद कहा ऐसे अनुमान

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir





सूत्र

तं समासओ तिविहं गहणं भवंति तंजहा—अतीत काल गहणं, पडुपन्नकाल गहणं, अणागयकाल गहणं ॥ ७२ ॥ से किं तं अतीत काल गहणं? अतीत काल गहणंउत्त-णाणि वणाणि, निप्फन्न सव्व सस्संवा मेदिणी पुण्णाणि, कुंड सरणदीहिया. तलागाणि पासित्ता तेणं साहिज्जइ जहा सुबुट्ठी आसी से तं अतीत काल गहणं ॥ से किं तं पडुपन्न काल गहणं? पडुपन्न काल गहणं साहु गोयरग्गगयं विछंडिय पउर भत्तपाण पासित्ता तेणं साहिज्जइ जहा सुभिक्खं वट्टइ,

अर्थ

प्रमान कर तीनों काल की बात को जानने का कहते हैं ॥ वह अनुमान प्रमान से निर्णय तीन प्रकार से होता हैं. तद्यथा—१ अतीत ( भूत ) कालका ग्रहण, २ प्रत्युपन्न ( वर्तमान ) काल का ग्रहण और ३ अनागत ( भविष्य ) काल का ग्रहण ॥ ७२ ॥ अहो भगवन् ! अतीत काल का ग्रहण किस प्रकार होता है ? अहो शिष्य ! जैसे कोइ विचक्षण मनुष्य रास्ते में गमन करता बहुत हरित तृणोकर अच्छादित पृथ्वी को देखे फलफूल पत्रों के भार से भरे वृक्षों को देखे, धान्यकर फलित खेतो को देखे. नदी तलावादि जलाशयो पानी से पूर्ण भरे देखे तब उक्त अनुमान से प्रमान करे कि अतीत काल में जल वृष्टी अच्छी हुई. यह अतीत कालका ग्रहण कहा ॥ अहो भगवन् ! प्रत्युत्पन्न काल का ग्रहण किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! जैसे कोइ विचक्षण साधु गोचरी को गये उनोंने ग्रहस्थ के घरों में बहुत प्रचूर



For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir





सूत्र

से तं पडुपन्न काल गहणं. से किं तं अणागत काल गहणं ? अणागत काल गहणं—अब्भस्स निम्मलत्तं, कासिणाय गिरिसाविज्जुया मेहा, थणियवाउब्भामो, सब्भारत्ता पणिद्धाय. वाहणं वा महिंद वा अन्नयरं वा पसत्थं उप्पायं पासित्ता तेणं साहिज्जइ जहा सुवुट्ठी भविस्सती. से तं अणागत काल गहणं, एहसिं चेव विवच्चा से तिविहं गहणं भवति तंजहा—अतीत काल गहणं, पडुप्पन्न काल गहणं, अणागय काल गहणं, से किं तं अतीत काल गहणं ? अतीत काल

अर्थ

निपजता हुवा अन्य उदार भाव से दिलाता हुवा आहार पानी को देखकर जाने की यहां वर्तमान काल में सुभिक्ष वर्तता देखाता है. यह प्रत्युत्पन्न काल हुवा. अहो भगवन् ! अनागत काल ग्रहण किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! कृष्ण वर्ण अच्छादित विजली सहित मेघ को देखे, पानी से भरा हुवा ऊंडा गर्जारव करता हुवा मेघ देखे, रक्त वर्ण संध्या फुली हुई देखे. आर्द्रा मूलादि नक्षत्रों के योग के जो वायु का उत्पात उत्पन्न हुवा और भी इस प्रकार के प्रशस्त लक्षणों को देख कर उस से अनुमान करे कि आगमिक काल में यहां वृष्टी होगी. यह अनागत काल कहा. अब इस के विपरीत चिन्ह कहते हैं, वह भी तीन प्रकार से ग्रहण किये जाते हैं. तद्यथा—१ अतीत काल ग्रहण, २ प्रत्युत्पन्न

For Private and Personal Use Only

सूत्र

गहणं निक्तणाइं अनिष्फन्नस्स च मेदणी सुक्काणिय कुंड सर णदी दह तलागाइं पासित्ता तेणं साहिज्जइ जहा कुवुट्ठी आसी. से तं अतीत काल गहणं ॥ से किं तं पडुपन्न काल गहणं ? पडुपन्न काल गहणं-साहु गोयरग्गगयं भिक्खं अलभमाणं पासित्ता तेणं साहिज्जइ जहा दुभिक्खं वट्टइ, से तं पडुपन्न काल गहणं ॥ से किं तं अणागय काल गहणं ? अणागय काल गहणं—धुमायंति दिसाउ संज्झाविमेइणी, अपाडिबुद्धा वाया, नेरइया खलु कुवुट्ठामेयानिवेयंती ॥ अग्गेयं वा

अर्थ

काल ग्रहण, ३ और अनागत काल ग्रहण. अहो भगवन्! अतीत काल ग्रहण किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! कोई विचक्षण पुरुष रास्ते में गमन करता तृण रहित पृथ्वी को देखे, सुके हुवे कुंड नदी तलावादि जला शय को देखे, इत्यादि देख अनुमान करे कि यहां गत काल में वृष्टि अच्छी नहीं हुई है. यह अतीत काल का ग्रहण कहा. अहो भगवन् ! प्रत्युत्पन्न काल का ग्रहण किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! प्रत्युत्पन्न काल का ग्रहण सो—कोई विचक्षण साधु गोचरी गये बहुत परिभ्रमण करते ही भीक्षा की प्रतिपूर्ण प्राप्ति नहीं हुई, उस से अनुमान करे किं वर्तमान में यहां दुर्भिक्ष होता देखाता है. अहो भगवन्! अनागत काल का ग्रहण किस को कहते हैं ? अहो शिष्य ! दिशाओं में धूंधलता देखे. सन्ध्या तेज रहित देखे, अप्रमाण

मूल

वायव्वं वा अन्नयरं अप्पसत्थं उप्पायं पासित्ता तेणं साहिज्जइ जहा कुवुट्ठी भाविस्सति, से तं अणागयकाल गहणं, से तं विसेस दिट्ठं। से तं दिट्ठि साहम्मवं ॥ से तं अणुमाणे ॥ ७३ ॥ से किं तं उवम्मे ? उवम्मे दुविहे पण्णत्ते तंजहा—साहम्मोवणी, एय, वेहम्मोवणीएय ॥ ७४ ॥ से कि तं साहम्मोवणीए ? साहम्मोवणीए तिविहा पण्णत्ता तंजहा—किंचि साहम्मोवणीए, पायसाहम्मोवणीए, सव्वसाहम्मोवणीए ॥ ७५ ॥ से किं तं किंचि साहम्मे ? किंचि साहम्मे-जहा मंदरो तहा सरिसवो,

अर्थ

बायु चले, नैऋत्यकूण का वायु हो जिस से कुवृष्टी जाने अग्नेय मंडल वायु मंडल और भी इस प्रकार का अप्रशस्त उत्पातादि देख कर जाने कि आगमिक काल में यहां कुवृष्टी होगा. यह अनागत काल का ग्रहण किया. यह विशेष दृष्टी सधर्मिकपना कहा. और यह अनुमान प्रमाण कहा ॥ ७३ ॥ अहो भगवन् ! उपमा परिमाण किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! उपमा प्रमाण के दो प्रकार कहे हैं तद्यथा—१ साधर्मोपनित और २ वैधर्मो पनित ॥ ७४ ॥ अहो भगवन् ! साधर्मोपनित किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! साधर्मोपनित तीन प्रकार कहा है, तद्यथा—१ किंचित साधर्मोपनित, २ प्राय साधर्मोपनित, और ३ सर्व साधर्मोपनित ॥ ७५ ॥ अहो भगवन् ! किंचित साधर्मोपनित किसे कहते हैं ? अहो शिष्य

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

जहा सरिसवो तहा मंदरो, जहा समुद्दो तहा गोप्पय जहा गाप्पेयं तहा समुद्दो. जहा आइच्चो तहा खज्जोतो, जहा खज्जोतो तहा आइच्चो, जहा चंदो तहा कुमुदो, जहा कुमुदो तहा चंदो, से तं किंचि साहम्मो ॥ ७६ ॥ से किं तं पाय-साहम्मो ? पायसाहम्मो जहागो तहागवओ, जहा गवओ तहागो, से तं पायसाहम्मे ॥ ७७ ॥ से किं तं सव्व साहम्मे ? सव्व साहम्मे उवमे नत्थि तहावि तेणेव तस्स उवमं कीरति, जहा अरिहंतेहि अरिहंत सरिस कयं, चक्कवट्टिणा चक्कवट्टि सरिसं

अर्थ

किंचित साधर्मोपनित सो जैसा मेरु पर्वत तैसा सरिसव, और जैसा सरिसव तैसा मेरु. जैसा समुद्र तैसा गोपय-गाय के खुर स्थान रहा पानी. और जैसा गौपद तैसा समुद्र. जैसा सूर्य तैसा खद्योत-आगीया. जैसा खद्योत तैसा सूर्य, जैसा चन्द्र तैसी कुमुदनी जैसी कुमुदनी तैसा चन्द्र. यह किंचित साधर्मिकपना कहा ॥ ७६ ॥ अहो भगवन ! विशेष साधर्मिकपना किसे कहते हैं? अहो शिष्य! जैसा बैल तैसा रोझ. जैसा रोझ तैसा बैल, यह विशेष साधर्मिक पना कहा ॥७७॥ अहो भगवन् ! सर्व साधर्मिक पना किसे कहते हैं? अहो शिष्य ! जहां औपमा नहीं उस का उस की औपमा कहना. जैसे वे अरिहंतने उन अरिहंत सरिखे हैं. अरिहंत के समान तीर्थ स्थापन अतिशयादि कार्य अन्य के नहीं होता है. इसलिये सर्व साधर्मिकपना जानना. तैसे ही

For Private and Personal Use Only

कयं, बलदेवेण बलदेव सरिसंकयं, वासुदेवेणं वासुदेव सरिसकयं साहुणा साहु सरिसकयं,से तं सव्व साहम्मे। सेतं साहम्मोवणीते ॥ ७८ ॥ से किं तं वेहम्मोयणीते वेहम्मोवणीते-तिविहा पण्णत्ता तंजहा–किंचिवेहम्मे, पायवेहम्मे, सव्ववेहम्मे॥७९॥ से किं तं किंचि वेहम्मे? किंचि वेहम्मे जहा सावलेयो न तहा बाहुलेयो,जहा बाहुलेयो नतहा सावलेउ सेत्तं किंचि वेहम्मे ॥ ८० ॥ से किं तं पायवेहम्मे ? पायवेहम्मे

चक्रवर्ती चक्रवर्ती समान, बलदेव बलदेव समान, वासुदेव वासुदेव समान, साधु साधु समान, इत्यादि सर्व साधर्मिक पना जानना. यह सर्व साधर्मिक उपनित हुवा. ॥७८॥ अहो भगवन् ! वैधर्मोपनित किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! वैधर्मोपनित तीन प्रकार कहे है. तद्यथा—१ किंचित वैधर्मोपनित, २ प्रायः वैधर्मोपनित, ३ और सर्व वैधर्मोपनित ॥ ७९ ॥ अहो भगवन् ! किंचित् वैधर्मोनित किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! किंचित वैधर्मोपनित सो जैसा श्यामगाय का बच्छा तैसा श्वेत गाय का बच्छा नहीं, और जैसा श्वेत गाय का बच्छा तैसा श्याम गाय का नहीं. यह किंचित वैधर्मोपनित हुवा. ॥ ८० ॥ अहो भगवन् ! प्रायः ( बहुत ) वैधर्मोपनित किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! जैसा वायस ( काग ) होता है तैसा पायस ( गाडी का चक्र ) नहीं. वह सजीव परिभ्रमण करता है और वह

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

जहावायसो न तहा पायसो, जहा पायसो नतहा वायसो से तं पायवेहम्मो॥ ८१ ॥ से किं तं सव्व वेहम्मे ? सव्व वेहम्मेउवमे नत्थी तहावि तेणे तस्स उवमं कीरती जहाणीएणणीय सारिसंकयं दासेण दास सरिसंकयं, कागेण काग सरिसं कयं, साणेणसाण सरिसंकयं, पाणेण पाण सारिसंकयं, से तं सव्व वेहम्मे ॥ से तं बेहम्मोवणीते ॥ से तं उवमे ॥ ८२ ॥ से किं तं आगमे ? आगमे—दुविहे पण्णत्ते तंजहा लोइएय, लोगुत्तरिएय ॥ ८३ ॥ से किं तं लोईए ? लोईए जण्णं इमं अण्णाणिएहिं

अर्थ

निर्जीव परिभ्रमण करता है. ऐसे ही जैसे पायस तैसा वायस नहीं. यह प्रायः वैधर्मोपनित हुवा. ॥ ८१ ॥ अहो भगवन् ! सर्व वैधर्मोपनितपना किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! सर्व विपरीत औपमा नहीं है तथापि उस कर उस की औपमा कहते हैं. जैसे नीच मनुष्य को नीच जैसा कहा. दास को दास जैसा कहा. काग को काग जैसा, कुत्ते को कुत्ते जैसा. जीव को जीव जैसा कहा यह सर्व वैधर्म उपनित और औपमा प्रमाण हुवा ॥ ८२ ॥ अहो भगवन् ! आगम प्रमाण किसे कहते हैं ? अहो शिष्य जो गुरुओं की परम्परा से चला आता हुवा तथा जीवादि पदार्थों का गम्य करानेवाला हो उसे आगम प्रमाण कहना. जिस के दो प्रकार कहे हैं. तद्यथा १ लोकिक और २ लोकोत्तर ॥ ८३ ॥ अहो भगवन् ! लोकिक आगम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य !

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

मिच्छादिट्ठीएहिं, सच्छंद बुद्धिमति विगप्पियं तंजहा—रामायणं जाव चत्तारिवेया, संगोवंगा से तं लोइए ॥ ८४ ॥ से किं तं लोगुत्तरिए ? लोगुत्तरिए जण्णं इमं-अरिहंते भगवंतेहिं उप्पन्न नाण दंसण धरेहिं तीत पच्चुपन्न मणागत जाणएहिं तेलुक्कवहिय महिय पूईएहिं सव्वणूहिं सव्वदरिसीहिं पणिय दुवालसंगं गणिपिडगं तंजहा—आयारो जाव दिट्ठिवाउ ॥ ८५ ॥ अहवा आगमे तिविहे पण्णत्ते तंजहा—सुत्तागमे, अत्थागमे, तदुभयागमे ॥ अहवा आगमे

अर्थ

जो यह अज्ञानी मिथ्यात्व दृष्टी स्वच्छन्द बुद्धिवाले जिन के बताये शास्त्र तद्यथा—१ रामायन यावत् चारों वेदों अंगोपांग सहित उन कि लौकिक आगम कहना ॥ ८४ ॥ अहो भगवन् ! लोकोत्तर आगम किसे कहना ? अहो शिष्य ! लोकोत्तर आगम सो जो यह अरिहंत भगवंत केवल ज्ञान केवल दर्शन के धारक अतीत वर्तमान अनागत तीनों काल की बात के जानने तीनों लोक के जीवों के हितकर वंदनीक पूज्यनीक सर्वज्ञ सव दर्शी उन के बनाये द्वादशांग आचार्य की पेटी समान तद्यथा—आचारांग यावत् दृष्टीवाद् ॥ ८४ ॥ अथवा आगम तीन प्रकार के कहे हैं तद्यथा—१ सूत्रागम, २ अर्थागम, और ३ उभयागम. अथवा आगम तीन प्रकार के कहे तद्यथा—१ अत्तागम—स्वयं के बनाये, २ अनन्तरागम—

For Private and Personal Use Only

सूत्र

तिविहे पण्णत्ते तंजहा—अत्तागमे, अणंतरागमे, परंपरागमे ॥ तित्थगराण अत्थस्स अत्तागमे, गणहराणं सुत्तस्स अत्तागमे अत्थस्स अणंतरागमे, गणहर सीसाणं सुत्तस्स अणंतरागमे, अत्थस्स परंपरागमे. तेणं परं सुत्तस्सवि अत्थस्सवि नो अत्तागमे णो अणंतरागमे परंपरागमे. से त्तं लोगुत्तरिए ॥ से त्तं आगमे. से तं णाणगुणप्पमाणे ॥ ८६ ॥ किं तं दंसणगुण प्पमाणे ? दंसणगुण प्पमाणे—चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा—चक्खूदंसण गुणप्पमाणे, अचक्खू दंसण गुणप्पमाणे, ओहि दंसण गुणप्पमाणे, केवल दंसण गुणप्पमाणे, ॥ चक्खू दंसण

अर्थ

गुरु आदि के बनाये, ३ परम्परागम—परम्परा से चले आते सो, जैसे—तीर्थंकरने अर्थ कहा वह अत्तागम, गणधरने उसे सूत्र रूप कहा वह सूत्तागम से अत्तागम, अर्थ से अन्तरागम, गणधरों के शिष्यों को सूत्र से अनन्तरागम, अर्थ से परम्परागम, उस के उपरांत सूत्र से भी और अर्थ से भी अत्तागम भी नहीं, अनन्तरागम भी नहीं. केवल परम्परागम जानना. यह लोकोत्तर और आगमका कथन हुवा. और यह ज्ञान गुन का प्रमाण हुवा ॥ ८६ ॥ अहो भगवन् ! दर्शन गुन प्रमाण किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! दर्शन गुन प्रमाण के चार भेद कहे हैं तद्यथा—१ चक्षु दर्शन गुन प्रमाण, २ अचक्षु दर्शन गुन प्रमाण, ३ अवधि दर्शन गुन प्रमाण, और ४ केवल दर्शन गुन प्रमाण, यह जैसे—चक्षु दर्शनी चक्षु से घट पट

सूत्र

चक्खुदंसणस्स घड पड कड रहादिएसु दव्वेसु अचक्खू दंसणिस्स आय भावे, ओहि दंसणिस्स सव्वरूवी दव्वेहिं, न पुण सव्वपज्जवेहिं, केवल दंसण केवल दंसणस्स सव्वदव्वेहिय सव्वपज्जवेहिय, से तं दंसणगुणप्पमाणं ॥ ८७ ॥ से किं तं चरित्त गुणप्पमाणे ? चरित्तगुणप्पमाणे पंचविहा पण्णत्ता तंजहा--सामाइय चरित्त गुणप्पमाणे, छेदोवट्ठावण चरित्त गुणप्पमाणे, परिहार विसुद्धिय चरित्त गुणप्पमाणे, सुहुम संपराय चरित्त गुणप्पमाणे, अहक्खाय चरित्त गुणप्पमाणे ॥ सामाइय चरित्त

अर्थ

कर आदि द्रव्य को देखता है. अचक्षु दर्शनी अचक्षु दर्शन से शब्द गंध रस स्पर्श को देखता है. अवधि दर्शनी अवधि दर्शन से रूपी द्रव्य को देश से देखता है परंतु सर्व से नहीं, केवल दर्शनी केवल दर्शन से सर्व द्रव्य सर्व पर्याय को देखता है यह द्रव्य गुण प्रमाण कहा और यह दर्शन गुन प्रमाण कहा ॥ ८७ ॥ अहो भगवन् ! चारित्र गुण प्रमाण किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! चारित्र गुण प्रमाण पांच प्रकार कहा है. तद्यथा—१ सामायिक चारित्र गुण प्रमाण, २ छेदोपस्थापनीय चारित्र गुण प्रमाण, ३ परिहार विशुद्ध चारित्र गुण प्रमाण, ४ सूक्ष्म सम्पराय चारित्र गुण प्रमाण. और ५ यथाख्यात चारित्र गुण प्रमाण. इस में सामायिक चारित्र गुण प्रमाण दो प्रकार का कहा है तद्यथा—१ इत्वर-थोडे काल का सो प्रथम अन्तिम तीर्थंकरों के बारे में सामायिक चारित्र का परिवर्तन कर छेदोपस्थापनी

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



गुणप्पमाणे दुविहे पण्णत्ते तंजहा-इत्तरिएय, आवकहिए. छेदोवट्ठावण चरित्त गुणप्पमाणे दुविहे पण्णत्ते तंजहा साइयारेय, निरइयारेय. परिहार विसुद्धिय चरित्त गुणप्पमाणं दुविहे पण्णत्ते तंजहा—णिविसमणाए अणिविट्ठकाईएय॥ सुहुम संपराय चरित्त गुणप्पमाणे दुविहे पण्णत्ते तंजहा—पडिवाइय, अपडिवाइय. अहक्खाय चरित्त गुणप्पमाणे दुविहे पण्णत्ते तंजहा—छउमत्थएय, केवलिएय, से तं चरित्त

दिया जावे सो और आवकाहिक बीच के बाईस तीर्थंकर के बारे तथा महा विदेह क्षेत्र में सब उम्मर सामायिक चारित्र ही रहे. २ छेदोपस्थापनीय चारित्र गुण प्रमाण दो प्रकार का कहा. तद्यथा—सातिचार सो किसी प्रकार कर बडा दोष सेवन किये दिया जावे सो. और निरातिचार सो—सामायिक चारित्र ग्रहण किये बाद सातवे दिन, चार महिने, तथा छ महिने में छेदोपस्थापनीय दिया जावे सो तथा तेवीसवे तीर्थंकर के साधु चौवीसबे तीर्थंकर के शासन में आते छेदोपस्थापनीय चारित्र ग्रहण करे. ३ परिहार विशुद्ध चारित्र गुण प्रमाण दो प्रकार कहा है तद्यथा—निर्विश्राम—जो तपश्चर्या करे सो, और विश्राम—वैयावच्च करे सो, ४ सूक्ष्म सम्पराय चारित्र गुण प्रमाण के दो भेद—१ प्रतिपाती-उपशम श्रेणिवाला और अप्रतिपाती-क्षपक श्रेणिवाला. ५ यथाख्यात चारित्र गुण प्रमाण दो प्रकार का कहा है. तद्यथा—१ छद्मस्त, और २ केवल ज्ञानी. यह चारित्र गुण प्रमाण हुवा. और यह जीव गुण





For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



गुणप्पमाणे ॥ से तं जीव गुणप्पमाणे ॥ से तं गुणप्पमाणे ॥ ८८ ॥ से किं तं नयप्पमाणे? नयप्पमाणे तिविहे पण्णत्ते तंजहा-पत्थग दिट्ठंतेणं विसहे दिट्ठंतेणं, पदेस दिट्ठंतेणं ॥८९॥ से किं तं पत्थग दिट्ठंतेणं पत्थग दिट्ठंतेणं से जहा नामए केइपुरिसे परसुंगहाय अडविंहुंतो गच्छेज्जा तं पासित्ता केइ वदेज्जा कहिं भवं गच्छासि? अविसुद्धो णेगमो भणति-पत्थयगस्स गच्छामि, तंच केइछिंदमाण पासित्ता बदेज्जा किं भवंछिंदसि?

अर्थ प्रमाण हुवा. और गुण प्रमाण भी हुवा ॥ ८८ ॥ अहो भगवन्! नय प्रमाण किसे कहते हैं? अहो शिष्य! अनन्त स्वरूप वस्तु को एक अंश कर जाने उसे नय कहते हैं. उस का स्वरूप तीनों दृष्टांतों कर समझाते हैं. १ पाथा के दृष्टान्त से, २ वसति के दृष्टान्त से. और ३ प्रदेश के दृष्टान्त से ॥ ८९ ॥ अहो भगवन्! पाथे का दृष्टान्त किसे कहते हैं? अहो शिष्य! पाथे का दृष्टान्त सो—यथा दृष्टान्त कोई पुरुष फरसी हाथ में ग्रहण करके अटवी में जाता है. उसे देख कर कोई कहे तू कहां जाता है? तब अशुद्ध नैगम नय वाला बोला कि—मैं पाथा के लिये जाता हूं. वह जाता तो है काष्ट ग्रहण करने परंतु उस काष्ट का पाथा बनावेगा इस लिये यहां कारण में कार्य का उपचार किया है. उस काष्ट को कोई छेदता हुवा देख पूछा तू क्या छेदता है? ! विशुद्ध नैगम नय वाला बोला—मैं पाथा छेदता हूं,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

वेसुद्धो णेगमो भणइ पत्थय छिंदामि. तंच केइ तत्थलणं पासित्ता वदेज्जा किं भवं तच्छासि ? विसुद्धंतरागो णेगमो भणाति, पत्थयं तच्छेमि, तंच केइ उक्कीरमाणं पासित्ता बदेज्जा-किं भवं कीरसि ? विसुद्धतरागो णेगमो भणाति, पत्थयओकीरामि. तंच केई लीहमाणं पासित्ता वएज्जा-किं भवं लिहासि ? विसुद्धतरागो णेगमो भणति. पत्थयलिहामि. एवं विसुद्धतर णेगमस्स नामाउतियउपत्थउ, एवमेव ववहारस्सवि.

अर्थ

उस लकड को छीलता हुवा देख कोई पूछे क्या छीलता है ? तब विशुद्धतर नैगम नय वाला बोला पाथा छीलता हूं. उस लकड को कोरता हुवा देख कर पूछा तू क्या कोरता है ? तब मिशुद्धतरागम नैगम नय वाला बोला—पाथा कोरता हूं, उसे लिखता हुआ देख किसीने पूछा—तू क्या लिखता है ? तब विशुद्धतरागम नैगम नय वाला बोला—पाथा लिखता हूं, इस प्रकार विशुद्धतरागम नैगम नय की अपेक्षा से पाथा हुवा. जैसा यह नैगम नय का कहा तैसा व्यवहार नय का भी कहना. ३ संग्रह नय के मत से सर्व प्रकार का धान का संग्रह किया पाथा में भर मपाति करने के लिये रक्खा, धान से भरा पाथा माने, ४ ऋजु सूत्र नयके मतसे धान्य मापतेको पाथा माने, क्यों कि यह वर्तमान कालका ही मानने वाला है, और ऊपरकी तीनों शब्द नय समभीरुढनय और एवंभूत नय यह तीनों पाथाके जानने वालेको ही

For Private and Personal Use Only

सूत्र

संगहस्सवि उभिय नेयसमारूढो पत्थउ, उज्जुसुय पत्थउवि, पत्थउ मिज्जतिपत्थउ, तिण्हं सद्दनयाणं पत्थयस्स अत्थाहिगार जाणउ पत्थउ, जस्सवा वसेणं पत्थउ निप्पज्जइ से तं पत्थयदिट्ठंतेणं ॥ ९० ॥ से किं तं वसहिदिट्ठंतेणं ? वसहि दिट्ठंतेणं से जहा नामए केइ पुरिसे किंचि पुरिसं वदेज्जा कहिं भवं वससि ? अविसुद्धो णेगमो भणइ—लोगेवसामि, लोगे तिविहे पण्णत्ते तंजहा—उड्ढलोए, अहेलोए, तिरियलोय तेसु सव्वेसु भवं वससि? विसुद्ध णेगमो भणइ—तिरियलोए वसामि,

अर्थ

पाथा माने क्यों कि इन नयोंवाले के उपयोग ही प्रमान है, वह पाथा में नहीं है; इस लिये पाथे के जान को ही पाथा मानते हैं, जैसे "नमो बंभीए लिवीए" इस में लिपी के ज्ञायक ऋषभ देवजी को नमस्कार किया है परंतु लिपी को नहीं, क्यों कि लिपी में उपयोग नहीं होता है. यह प्रथम पाथा का दृष्टान्त हुवा ॥ ९० ॥ अहो भगवन् ! वसति का दृष्टान्त किस प्रकार है ? अहो शिष्य ! यथा दृष्टान्त कोई पुरुष किसी पुरुष से कहे कि तू कहां रहता है ? उसे अशुद्ध नैगम नयवाले ने उत्तर दिया. मैं लोक में रहता हूं. प्रश्न—लोक तो तीन हैं ऊर्ध्व अधो त्रिक. तू उन तीनों में रहता है क्या ? उत्तर—विशुद्ध नैगम नयवाला बोला—मैं तिर्च्छे लोक में रहता हूं. प्रश्न—तिर्च्छे लोक में जंबूद्वीप से स्वयंभूरमण समुद्र पर्यंत असंख्यात द्वीप समुद्र हैं उन सब में तू रहता है क्या? उत्तर-विशुद्धतर नैगम नयवाला बोला-

सूत्र

तिरियलोए जंबूदीवादिया सयंभूरमण पज्जवसाणा असंखिज्जा दीव समुद्दा पण्णत्ता तेसु सव्वेसु भवं वससि ? विसुद्धतराउ णेगमो भणइ–जंबूदीवे वसामि, जंबूदीवे दसखेत्ता पण्णत्ता भरहे, एरवते, हेमवते, हेरणवते, हरिवासे, रम्मगवासे, देवकुरा, उत्तरकुरा पुव्वविदेह, अवरविदेह तेसु सव्वेसु भवं वससि ?विसुद्ध तरागो णेगमो भणाति-भरहेवासे वसामि, भरहेवासे दुविहे पण्णत्ते तंजहा–दाहिणड्ढ भरहेय, उत्तरड्ढ भरहेय, तेसु सव्वेसु भवं वससि ? विसुद्ध तरागो णेगमो भणइ–दाहिणड्ढ

अर्थ

मैं जंबूद्वीप में रहता हूं. प्रश्न—जंबूद्वीप में दश क्षेत्र हैं. तद्यथा—१ भरत, २ ऐरावत, ३ हेमवय, ४ हेरण्यवय, हरीवास, ६ रम्यकवास, ७ देवकुरु, ८ उत्तरकुरु, ९ पूर्व विदेह और १० अवर विदेह. इन सब में तू रहता है क्या ? उत्तर—विशुद्धतर नैगम नयवाला बोला-मैं भरत क्षेत्र में रहता हूं. प्रश्न–भरत क्षेत्र के तो दो विभाग हैं तद्यथा—१ दक्षिणार्ध और २ उत्तरार्ध. उन दोनों में रहता है क्या ? उत्तर—विशुद्धतर नैगम नयवाला बोला–मैं दक्षिणार्ध भरत में रहता हूं. प्रश्न–दक्षिणार्ध भरत में तो अनेक ग्राम आगर नगर खेड कबड मडंब द्रोणमुख पाटण आश्रम संवाह संनिवेस हैं उन सब में तू रहता है क्या? उत्तर–विशुद्धतराग नैगम नयवाला बोला-मैं पाटली पुत्र नगर में रहता हूं प्रश्न–पाटलीपुर नगर में तो अनेक घर हैं तो उन सब तू में रहता है क्या ? उत्तर–विशुद्धतराग नैगम नयवाला बोला–

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

भरहेवसामि, दाहिणड्ढ भरहे अणेगाइं गामागरणगर खेड कव्वड मंडब दोण-
मुह पट्टणा सम संबह सन्निवेसाइं तेसु सव्वेसु भवं वसासि ? विसुद्ध तरागो णेगमो
भणति-पाडलिपुत्ते वसामि, पाडलिपुत्ते अणेगाइं गिहाइं तेसु सव्वे भवं वससि ?
विसुद्धतरागो णेगमो भणाति देवदत्तस्सघरे वसामि, देवदत्तस्सघरे अणेगा कोट्ठगा
तेसु सव्वेसु भवं वससि ? विसुद्ध तरागो णेगमो भणति—गब्भघरे वसामि, एवं
विसुद्ध णेगमस्स वसमाणोवसइ।एवमेव ववहारस्सवि, संगहस्स संथार समारूढो वसति,

अर्थ

देवदत्त के घर में रहता हूं. प्रश्न—देवदत्त के घर में तो कोठे बहुत हैं उन सब में तू रहता है क्या ? उत्तर—विशुद्ध तराग नैगम नयवाला बोला—मध्य के घर में रहता हूं. इस प्रकार विशुद्ध नैगम नय के मत से बसाति है. जैसा यह नैगम नय का कहा तैसा ही व्यवहार नय का भी कहना. संग्रह नयवाला बोलता है कि मैं संथारक में जहा बैठता हूं शयन करता हूं तहां रहता हूं. ऋजु सूत्र नयवाला कहता है जितने आकाश प्रदेश मैंने अवगाहे हैं उसमें रहता हूं. और तीनों शब्द नयवाले कहते हैं कि मैं आत्म भावमें रहता हूं यह वसति का दृष्टान्त हुवा ॥ ९१ ॥ अहो भगवन् ! प्रदेशका दृष्टान्त किस प्रकार है ? अहो शिष्य ! प्रदेश के दृष्टान्त में नैगम नय के मत से छ के प्रदेश वह देश का प्रदेश अलग गवेषना. यह विशेषार्थ बताया, दूसरा संग्रह नय पांच का प्रदेश स्कन्ध में गवेषे. यह भी सत्य नैगम झूठा ऐसा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

उज्जुसुयस्स आगासपएसेसु उगाढो तेसु वसाति, तिण्हं सद्दनयाणं आयभावे वसेमि, से तं वसहि दिट्ठंतेणं ॥ ११ ॥ से किं तं पएसदिट्ठंतेणं ? पदेस दिट्ठंते—णेगमो भणति छण्हंपएसो तंजहा—धम्मपएसो, अधम्मपएसो, आगासपएसो, जीवपएसो, खंध पएसो, देसपएसो, एवं वयंतं णेगमं संगहो भणइ-जं भणसि छण्हंपएसो तं न भवति, कम्हा ? जम्हा देसपएसो सो तस्सेव दव्वस्स जहा को दिट्ठंतो ? दासेण मेखरोकीओ सो यदासोवि मे खरोविमे तेमाभणाहि, छण्हं पएसो भणाहि पचण्हं पएसो

अर्थ

समझाया, और संग्रह नय का यह अभिप्राय; थोडे बोल में बहुत का समावेश हुवा इस लिये छ के परमार्थ पांच में आया. ३ व्यवहार नय के मत छ का पांच का यों कहते षष्ठी विभक्ति का बहु वचन उस कर एक प्रदेश संघात को एक पांच का सम्बन्ध समझना, इस लिये पीछे की नय षष्ठी तत्पुरुष समास से वह यहां नहीं. ४ ऋजु सूत्र कहता है तुम पांच भेद कहते हो वह सत्य हैं परंतु किसी को संदेह हो कि एकेक प्रदेश वह पांच २ प्रकार का यों २५ भेद होवे. इस सन्देह की निवृत्ति के लिये ऐसा कहा स्यात् धर्मास्ति का प्रदेश, यों ऋजु सूत्र नय के मत से ऐसा बोले. पांचवा शब्द नयवाला बोला—तुमारा मत सत्य परंतु स्यात् धर्मास्ति का प्रदेश, स्यात् अधर्मास्ति का प्रदेश, यों करते धर्म का जो प्रदेश वह अधर्म का प्रदेश और अधर्म का प्रदेश वह धर्म का प्रदेश. यों परस्पर एक भाव का

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

  

सूत्र

तंजहा-धम्मपएसो अधम्मपएसो आगासपएसो जीवपएसो खंधपएसो, एवं वयंतं संगहस्स ववहारो भणइ—जं भणासि पंचण्हं पएसो तं न भवति, कम्हा? जम्हा जइ पंचण्हं गोट्ठियाणं पुरिसाणं केइ दव्वजाइ सामन्ने भवति तंजहा हिरण्णेवा, सुवण्णेवा धणेवा धन्नेवा तहा पंचण्हं पएसो तं मा भणाहि पंचण्हं पएसो भणाहि, पंचविहो पएसो तंजहा-धम्मपएसो, अधम्मपएसो, आगास पएसो, जीवपएसो, खंधपएसो. एवं वदंते ववहारस्स उज्जुसुतो भणइ,जं भणसि पंचविहो पएसो तं ण

अर्थ

सन्देह एक २को उत्पन्न होवे उसे टालने के लिये हमारे मत में धर्म प्रदेश वह प्रदेश धर्म इत्यादि कहा. समभिरूढ नय तुमने तुमारा अभिप्राय कहा यह सत्य परंतु यहां समास होने आवे यह संदेह निवृत्तिको कर्म धारय से समास सहित ऐसा कहा धर्म ही वह प्रदेश वह प्रदेश धर्म इत्यादि पांचों बोल-१ एवंभूत नय-धर्मास्ति कायादि पांचों अखंड कहे खंड नाम कहते देश प्रदेश सब खंड वस्तु में आये, यह सातों नय के अलग २ मत कहे. परमार्थ से सब एक ही जानना. इस ही अधिकार को आगे सूत्र द्वारा कहते हैं—नैगम नय कहता है कि छे का प्रदेश-१ धर्मास्ति का प्रदेश, २ अधर्मास्ति का प्रदेश, ३ आकाशास्ति का प्रदेश, ४ जीवास्ति का प्रदेश, ५ पुद्गल स्कन्ध का प्रदेश, और ६ देश का प्रदेश. यों बोलते को नैगम से संग्रह कहने लगा कि जो तुम कहते हो छ का प्रदेश तैसा नहीं होता है. क्यों कि जो देश

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir





सूत्र

ण भवति. कम्हा ? जइते पंचविहो पएसो. एवं ते एकेक्को पएसो पंचविहो एवं तेण पणवीसतिविहो पदेसो भवंति, तंमाभणाहिं पंचविहो पदेसो भणाहिं, भइयव्यो पदेसो, सिय धम्मपएसो, सिय अधम्मपएसो, सिय आगासपएसो, सिय जीव पएसो, सिय खंधपएसो, एवं वदंतं उज्जुसुत्तं संपतिसद्दनउ भणइ जं भणसि भइयव्वो पदेसो तं ण भवंति, कम्हा ? जइ भइयव्वोपएसो एवते धम्मपएसोवि

अर्थ

जो देश का प्रदेश कहते हैं वह उस ही द्रव्य का प्रदेश है. इस लिये छठा भेद नहीं हुवा. यथा दृष्टान्त कर-किसी दासने मालक के वास्ते खर मो लिया. तब मालक बोला-यह दास भी मेरा और खर भी मेरा, यह दोनों मालक की वस्तु होवे, तैसे खन्ध प्रदेश और देश प्रदेश कहना. छ का प्रदेश तुमने कहा यह. पांच प्रदेश तद्यथा-धर्मास्ति काया का प्रदेश, अधर्मास्ति काया का प्रदेश, आकाशास्ति काया का प्रदेश, जीव का प्रदेश, और स्कन्ध का प्रदेश. ऐसा बोलते हुवे संग्रह नय से व्यवहार नयवाला बोला जो तू कहता है कि पाच प्रदेश. यह नहीं होता है क्यों कि जिस लिये जैसे पांच गोष्ठिले ( मित्र ) पुरुष का किसी के द्रव्य की जाति सामान्य होवे. तद्यथा—१ चांदी, २ सुवर्ण, ३ धन, ४ धान्य, तैसे पांच के प्रदेश, समावे एकत्र होवे इस लिये ना कहे. पांच प्रदेश कहा. पांच प्रकार के प्रदेश को पांचों का प्रदेश ऐसा कहते तद्यथा—धर्मास्ति का प्रदेश,

For Private and Personal Use Only

**सूत्र** सिय धम्मपएसो, सिय अधम्मपएसो, सिय आगासपएसो, सिय जीवपएसो, सिय खंधपएसो, अधम्मपएसोवि, सिय धम्मपएसो सिय अधम्मपएसो जाव सिय खंधपएसो । आगासपएसोवि सिय धम्मपएसोवि जाव सिय खंधपएसोवि. जीव पएसोवि, सिय अधम्मपएसो जाव सिय खंधपएसो, खंधपएसोवि, सिय धम्मपएसो

**अर्थ** आकाशास्ति का प्रदेश, जीव का प्रदेश और स्कन्ध का प्रदेश. यों व्यवहार नय बोलते हुवे ऋजु सूत्र नयवाला बोला जो तू कहता है पांच प्रकार प्रदेश तैसा नहीं होता है क्यों कि यद्यपि वे पांच प्रकार के प्रदेश में से एकेक प्रदेश पांच प्रकार होवे तो यों २५ प्रकार होजावे. इस लिये पांच प्रकार प्रदेश कहो. प्रदेशों को अलग २ कठोर विकल्पनीय विजातीय पांच भाग से यों स्यात् है धर्मास्ति प्रदेश, वे प्रदेश अपने २ हैं यह सम्बन्ध की आस्ति नहीं, क्यों कि वे अपने काम नहीं आवे इस लिये वे इस के मत में नहीं, इस के मत से त्रिकाल और पर सम्बन्धी वस्तु सर्वथा नहीं है. यह ऋजु सूत्र के भाव कहे. इस प्रकार ऋजु सूत्र नयवाले बोलते हुवे को शब्द नयवाला कहने लगा. जो तूने कहा प्रदेश का भेद कहना तैसा नहीं होता है. क्यों कि यदि प्रदेश के भेद जो तुमारे मत से होते धर्मास्ति काया के प्रदेश भी कदाचित धर्मास्ति काया के प्रदेश हो स्यात् अधर्मास्ति के प्रदेश. स्यात् आकाशास्ति के प्रदेश. स्यात् अजीव के प्रदेश. स्यात् स्कन्ध के प्रदेश, ५. अधर्मास्ति काया के प्रदेश भी स्यात् धर्मास्ति का प्रदेश

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

जाव सिय खंधपएसो एवं ते अणवत्था भविस्सति तमा भणइ, भइयव्वो पदेसो भणाहि, धम्मे पदेसे से पदेसे धम्मे. अहम्मे पदेसे से पदेसे अहम्मे, अगासे पएसे से पएसे आगासे, जीव पदेसे से पदेसे नो जीवे, खंधे पदेसे से पदेसे नो खंधे, एवं वयं तं सद्द नयं, समभिरूढो भणति, जं भणसि धम्मेपदेसे से पदेसे धम्मे जाव जीव-

अर्थ

यावत् स्यात् स्कन्ध प्रदेश आकाशास्ति काया के प्रदेश भी-स्यात् धर्मास्ति काया प्रदेश भी जान स्यात् स्कन्ध प्रदेश. जीव पएसोवि-स्यात् अधर्मास्ति काया के प्रदेश भी, यावत् स्यात् स्कन्ध प्रदेश भी. स्कन्ध प्रदेश भी-स्यात् धर्मास्ति प्रदेश यावत् स्यात् स्कन्ध प्रदेश. यों यह मर्याद के अभाव से अनवस्थ दोषोत्पन्न होते हैं उन को नहीं कहना. परंतु प्रदेश के भेद कहना ऐसा कहना. धर्मास्ति के प्रदेश को धर्म का प्रदेश कहना, अधर्मास्ति के प्रदेश को अधर्म का प्रदेश कहना. आकाशास्ति के प्रदेश को आकाशका प्रदेश कहना, जीवास्ति के प्रदेश को जीव का प्रदेश कहना. और पद्गल के स्कन्ध के प्रदेश को पुद्गल के स्कन्ध का प्रदेश कहना. परंतु जीव के प्रदेश को सम्पूर्ण जीव और स्कन्ध के प्रदेश को स्कन्ध नहीं कहना. इस प्रकार जो प्रदेश जिस से सम्बन्ध कर रहा हो जिस कार्य कर्म रूप प्रवर्त रहा हो उसे उस ही का प्रदेश कहना. यों तो धर्मास्ति आदि के प्रदेश पर अनन्त जीव के तथा पुद्गल के स्कन्ध है वे अपने २ भाव में प्रवर्तते हैं इस लिये उन को इस में सामिल नहीं करना. यों बोलते हुवे शब्द नय



For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir





सूत्र

पएसे से पदेसे नो जीवे खंधे पदेसे से पदेसे नो खंधे तं ण भवति, कम्हा ? इत्थ खलु दो समासा भवंति तंजहा-तप्पुरिसे य कम्मधारएय तं ण णज्जति, कतरेणं समासेण भणाति किं तप्पुरिसेण कम्म धारएणं जइ तप्पुरिसेणं भणासि

अर्थ

को समभिरूढी नय बोला तूने जो कहा कि धर्मास्ति का प्रदेश वह धर्मास्त का प्रदेश है यावत् जीव का प्रदेश है वह जीव का प्रदेश कहना और स्कन्ध के प्रदेश को स्कन्ध प्रदेश कहना परंतु प्रदेश को आर स्कन्ध नहीं कहना. परंत यह बात मिलती नहीं है. क्यों कि यहा निश्चय से दो समास होते हैं. तद्यथा– तत्पुरुष समास, कर्म धारय समास. धम्मा यह सप्त धर्मी में प्रदेश हुवा जैसे बने हस्ति इस में वन अलग और हस्ति अलग, वहां नो-नहीं वन में हाथी ऐसे तत्परुष समास है. तथा कर्म धारय धर्म प्रथमाधर्म जो वह प्रदेश हुवा, तब तो हंसो ऐसे कर्म धारय में धम्मे सप्तमी तत्पुरुष प्रथमातो कर्म धारय में सन्देह होवे इस लिये नहीं मालुम किस समासी धर्म प्रदेश ऐसा कहते हैं. कि तत्परुष अथवा कर्म धारय समझ पडती नहीं है धम्म शब्द में २ विभक्ति १.७-११ जानाती सप्तमी नहीं कही इस लिये वह तत्पुरुष कहता है वह ऐसे यहां तत्पुरुष नहीं. और जो कर्म धारय से समास कहे तो वह भी विशेष से कहे धर्म जो प्रदेश यहां जो विशेषण कहना चाहिये ते धर्म प्रदेश धर्म श्वासौ प्रदेशस्य इति समानाधिकरण कर्म धारय यों करते सप्तमी की शंका के अभाव से तत्पुरुष का संभव न होवे यह भाव. अधर्म जो प्रदेश

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

तोमा एवं भणाहि अहकम्मभागएणं भणासि तो विसेसेउ भणाहि धम्मेअसे पदेसेय से पदेसे धम्मे, अहम्मेय से पदेसेय, से पएसे अहम्मे, आगासे अ सेपदेसेय से पदेसे आगासे, जीवेअ सेपदेसेय, से पएसे नो जीवे, खंधेअ से पएसेय, से पएसे

अर्थ

वह अधर्म प्रदेश. आकाश जो प्रदेश ते प्रदेश आकाश, जीव जो प्रदेश वे प्रदेश नो जीव. स्कन्ध जो प्रदेश वे प्रदेश नो स्कन्ध ऐसा कहा. इस प्रकार बोलते हुवे समभिरूढ को एवंभूत नय इस प्रकार बोला कि तू जो २ धर्मास्ति कायादि वस्तु कहता है वो २ सब देश प्रदेश कल्पना रहित आत्म स्वरूपी संयुक्त उस के एकपने से अवयव रहित एक नाम बोलाती वस्तु परंतु अनेक नाम बोलती हुई नहीं, इस लिये एसे धर्मास्तिकायादिक वस्तु कहो परंतु प्रदेशादिक रूपपना मत कहो, क्यों कि देश प्रदेश मेरी अवस्तु रूप है. अखंड ही वस्तु के आस्तिकता मानने से वह किस प्रकार है सो कहते हैं—'पएसो वियवत्थं' प्रदेश और प्रदेश का भेद है यहां जो प्रथम पक्ष ग्रहण करे तो भी नय अलग २ भेद रूप देखना होवे वह भेद रूप तो देखाता नहीं है. और दूसरा अभेद रूप पक्ष ग्रहण करे तो धर्म शब्द और प्रदेश शब्द के पर्याय शब्दपना प्राप्त हुवा इस लिये दोनों शब्द कर पर्याय शब्द दोनों का तो बोलना सम काल में मिले नहीं क्यों कि एक ही अर्थ के बोलने से दूसरे शब्द का निरर्थकपना होवे इस लिये एक नाम से बोलाती वस्तु एक ही युक्ती से मिले. यह प्रदेश का दृष्टान्त संक्षेप में—पएसदिट्ठं. नैगमत्थणं पएसे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

नो खंधे, एवं वयंतं समभिरूढं, संपति एवंभूत भणानि जं जं भणसि, तं तं सव्वं कसिणं पडिपुन्नं निरवसेसं एगं गहणं गहितं देसेविसे अवत्थू पएसेविसेय वत्थू, से तं पएसदिट्ठंतेणं ॥ से तं नयप्पमाणे ॥ ९२ ॥ से किं तं संखप्पमाणे ? संखप्पमाणे अट्ठविहे पण्णत्ता तंजहा-नामसंखा, ठवसंखा, दव्वसंखा उवमसंखा, परिणामसंखा, जाणणसंखा, गणणासंखा, भावसंखा, ॥ णाम ठवणाउ पुव्व-भणियाओ, जावसेतं भवियसरीर दव्वसंखा ॥ ९३ ॥ से किं तं जाणयसरीर

अर्थ

धम्मपएसो, यों छ ही अत्र षष्ठी तत्पुरुष संग्रह पंचण्हं पएसे-धम्मपएसे एवं पंच, सत्त षष्ठी तत्पुरुष. ववहार पंचविहो धम्मपएसो एवं ५ प्रथम ऋजु सूत्र भइयव्वो पएसो सिय धम्मपएसो एवं ५ पंच कदाचित् संदेह, शब्द नय धम्मपएसे से पएस धम्मे, समभिरूढ धम्मेय से पएसेय पएस धम्मे. एवंभूत धम्मत्थीकाया अखंड नाम. यह सातों नय का संक्षेप में परमार्थ जानना. इति प्रदेश दृष्टान्त. और यह तीनों दृष्टान्त से सातों नय का प्रमाण हुवा ॥ ९२ ॥ अहो भगवन् ! संख्या प्रमाण किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! संख्या प्रमाण के आठ भेद कहे हैं. तद्यथा—१ नाम संख्या, २ स्थापना संख्या, ३ द्रव्य संख्या, ४ औपमा संख्या, ५ प्रमाण संख्या, ६ जानने की संख्या ७ गिनने की संख्या, और ८ भाव संख्या. इस में से नाम और स्थापना तो प्रथम आवश्यक में कही तैसे ही कहना. यावत् जानके भविय शरीर और भविय शरीर की उत्तर पृच्छा तहां तक कहना ॥ ९३ ॥ अहो भगवन्

For Private and Personal Use Only

सूत्र

भवियसरीर वतिरित्त दव्वसंखा ? जाणयसरीर भवियसरीर वतिरित्त दव्वसंखा ! तिविहा पण्णत्ता तंजहा-एगभाविए, बद्धाउए, अभिमुह नामगोत्तेय ॥ १४ ॥ एग भवएणं भंते! एगभविएत्ति कालओ केवचिरं होइ, ? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी॥बद्धाउएणं भंते! बद्धाउएत्ति कालओ केवचिरंहोइ ? गोयमा! जहन्नेणं अंतो-मुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी तिभागं अभिमुह नामगोत्तेणं भंते ! अभिमुहनामगोत्तेत्ति

अर्थ

ज्ञेय शरीर भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य संख्या किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! ज्ञेय और भव्य व्यतिरिक्त संख्या तीन प्रकार कही है तद्यथा-१ एक भव शंख का पूर्ण कर संख्या में उत्पन्न होवे वह एक भविक, २ शंख के आयुष्य का बन्ध किया वह बन्ध आयु संख्या. और ३ शंख का भव प्राप्त करने सन्मुख हुवा समुद्घात वक्त अभिमुख नाम गोत्र संख्या ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! एक भविका एक भविक की आयु स्थिति कितनी होती है ? अहो शिष्य ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट क्रोड पूर्व. तिर्यंचवत् तथा मनुष्य में भी आवे सो. अहो भगवन् ! बन्ध आयुष्य की बन्ध आयुष्य में काल स्थिति कितनी कही ? अहो शिष्य ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट क्रोटी पूर्व का तीसरा भाग. अहो भगवन् ! अभिमुख नाम गौत्र की अभिमुख नाम गोत्रपने काल स्थिति कितनी कही ? अहो शिष्य ! जघन्य एक समय सो भव का अन्तिम समय जानना और उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त वह मारणान्तिक समुद्धात का पीछे

सूत्र

कालओ केवचिरं होइ, जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥ ९५ ॥ इयाणि कोणउकि संखं इच्छाति, तत्थ णेगमं संगह, ववहारा, तिविहं संखं इच्छंति, तं एगभवयं बद्धा यं, अभिमुहनाम गोत्तंच उज्जुसुउ दुविहं संखं इच्छाति तं जहा-बद्धाउयंच, अभिमुह नाम गोत्तंच, तिण्णि सद्दनया अभिमुह नामगोत्तंच संख इच्छाति से तं जाणय सरीर भविय सरीर, वइरित्त दव्वसंखा। से तं नो आगमउ दव्वसंखा, से तं दव्वसंखा ॥ ९६ ॥ से किं तं उवमसंखा ? उवमसंखा ! चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा-अत्थि संतयं संतएण

अर्थ

शरीर में जीव के प्रदेश आने फिर दूसरी वक्त मारणान्तिक समुद्धात करे उस आश्रिय अन्तर्मुहूर्त जानना ॥ ९५ ॥ अब यहाँ कौन नय शंख को माने सो कहते हैं—तहां १ नैगम, २ संग्रह, और ३ व्यवहार तीनों शंख को मानती है. तद्यथा—१ एक भविक. २ बंधायु, और ३ नाम गोत्र अभिमुख ४ ऋजु सूत्र नय दो प्रकार शंख को माने—१ बन्धायु और २ अभिमुख नाद गोत्र. और ऊपर की शब्दादि तीनों नय एक अभिमुख नाम गोत्र को ही मानती है, परन्तु यहां द्रव्य संख को मानती हैं, जघन्य एक समय अतः नजीक रहा इसलिये यह ज्ञेय शरीर भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्यसंख्या कही. और वह तो आगम से द्रव्य संख्या हुई. तैसे ही द्रव्य संख्या भी पूरी हुई ॥ ९६ ॥ अहो भगवन् ! औपमा संख्या किसे कहते हैं ? हे शिष्य ! औपमा संख्या चार प्रकार की कही है. तद्यथा १ होते पदार्थ को होते पदार्थ की औपमा दे, २ होते पदार्थ को अन होते पदार्थ की औपमा

सूत्र

उवमिज्जइ, अत्थिसंतयं असंतएण उवमिज्जइ ? अत्थि असंतयं संतएण उवमिज्जइ, अत्थिअसंतयं असंतएण उवमिज्जंति ॥ तत्थ संतयं संतएणं उवमिज्जंति, जहा संता- अरिहंता संतएहिं पुरवरेहिं, संतएहिं कवाडेहिं संतएहिं वत्थेहिं उवमिज्जइ तंजहा- पुरयरकवाड वत्था, फलियभूया दुंदुभि थणिय घोसा सिरिवच्छं किअवत्थाँ, सव्वेवि जिणा चउवीसं ॥ ११ ॥ संतयं असंतएण उवमिज्जइ, जहा संताइ नेरइय

अर्थ

दे, ३ अन होते पदार्थ को होते पदार्थ की औपमा दे, और ४ अन होते पदार्थ को अन होते पदार्थ की औपमा दे, इन में होते को होती औपमा सो जैसे महावीर स्वामी जैसे ही पद्मनाभ तीर्थंकर होवेंगे. नगर की भागल समान तीर्थंकर की बाहां होती है, नगर के कुवाड समान तीर्थंकर का हृदय, इस प्रकार औपमा की गाथार्थ-नगर कमाड समान विस्तीर्ण हृदय, भागल समान भुजा. दुंदभी समान या गर्जारव समान गंभीर निर्घोष, श्रीवत्स स्वास्तिक से अंकित हृदय, सब चौवीस ही तीर्थंकरों का होता है यह सब होती वस्तु को होती वस्तु की औपमा जानना. २ अब होती वस्तु को अन होती वस्तु की औपमा कहते हैं. जैसे नरक का, तिर्यंच का, मनुष्य का, देवता का पल्योपम सागरोपम का जो आयुष्य है यह सत्य परन्तु जो चार कोश कूवे में बालग्र भरने की ओपमा दी है वह असत्य है क्यों कि ऐसा कूवा किसीने भी बालाग्र कर भरा नहीं कोइ भरेगा भी नहीं इसलिये यह ओपमा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



**मूल**

तिरिक्ख जोणियमणुस्स देवाणं आउयाइं असंतएहिं पलिउवम सागरोवमेहिं उवमिज्जइ असंतयं संतएणं उवमिज्जइ तं परिजुरिय पेरंतंचलंत वेंढ पडंत निच्छिरं पत्तंवसणपत्तं काल-पत्तं भणइ गाहं—जह तुब्भेतह अम्हे, तुब्भेवि अहोहिआ जहा॥ अम्हे अप्पाहेइ, पडंतं पंडुपत्तं किसलायाणं॥ २॥णवि अत्थि णवि य होही,उल्लाहोकिसलय पंडुपत्ताणं उवमा खलु एसकया,भवियजणविवोहणठाए ॥३॥ असंतयं असंतएहिं, उवमिज्जइ जहा खराविसाणं

**अर्थ**

अन होती है, १ अब अन होती वस्तु को होती वस्तु की ओपमा कहते है-पिंपलादि वृक्ष का पत्ता अत्यन्त जीर्ण अवस्था को प्राप्त हुआ अन्त अवस्था आकर रहा हलता हुआ वींट से खिरने को आया हलता हुआ अस्तिरबना स्वस्थान त्यागने लगा मृत्यु के अवसर को पाया नवीन आई हुई कुंपलों को खिलती हुई हंसती हुई देख कर कहने लगा कि जैसी तुम नवी हो ऐसे हम भी नवे थे. और जैसे हम ज्यूने हुअे वैसे तुम भी होगी. हमारे जैसे ही टूट कर नीचे पडोगी, इस प्रकार पंडुरपत्तने किसलिये कुपलको कहा. परंतु ऐसा कभी हुवा नहीं और होवेगाभी नहीं जो पत्र कूंपल से बोले. इसलिये यह औपमा अनहोती है. और बातसच्ची है कि संसार की पुद्गल पर्याय नवीन उत्पन्न जीर्णअवस्थाको प्राप्त होती है. यह दृष्टांत फक्त भव्य जीवों को प्रति बोधने के लिये ही कहा जाता हैं ३ अब अन होती वस्तु,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir





तहा ससाविसाणं॥४॥से तं उवमसंखा ॥१७॥ से किं तं परमाणसंखा ? परमाणसंखा! दुविहा पण्णत्ता तंजहा कालिय सुय परिमाण संखाइं, दिट्ठिवाय सुय परिमाणसंखाय॥ से किं तं कालियसुय परिमाणसंखा? कालियसुयपरिमाण संखा अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा—पज्जवसंखा, अक्खरसंखा, संघायसंखा, पदसंखा, पादसंखा गाहासंखा, सिलोगसंखा, वेढसंखा, निज्जतिसंखा, अणुउगदारसंखा, उद्देसगसंखा, अज्झयण-संखा, सुयखंधसंखा, अंगसंखा, सेतं कालियसुत परिमाणसंखा ॥ १८ ॥ से किं तं

अर्थ

को अन होती ओपमा कहते हैं,—गद्धे के शृंग समान शृंगाल के शृंग, इत्यादि यह ओपमा संख्या प्रमाण हुआ ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! प्रमाण संख्या किसे कहते है? हैं शिष्य ! प्रमाण संख्या दो प्रकार की कही है. तद्यथा—कालीक सूत्र प्रमाण संख्या और द्रष्टी वाद सूत्र प्रमाण संख्या ॥ कालिक सूत्र प्रमाण संख्या किसे कहते है ? कालिक सूत्र प्रमाण संख्या अनेक प्रकार से कही है ? तद्यथा-१ अक्षर पर्याय की संख्या. २ अक्षर की संख्या. ३ अक्षर के मिलाप से संघात हो उस की संख्या, ४ पदकी संख्या, ५ गाथा की संख्या, ६ श्लोक की संख्या, ७ वेढा-छन्द की संख्या. ८ निक्षे उपोद्घात निर्युक्ति की संख्या, ९ चारों अनुयोग द्वार की संख्या. १० उद्देशे की संख्या, ११ अध्ययनों की संख्या, १२ श्रुतस्कन्ध की संख्या, १४ अंग की संख्या. यह कालिक सूत्र प्रमाण हुवा ॥ १८ ॥ अहो





For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

दिट्ठिवाय सुत परिमाणसंखा ? दिट्ठिवाय सुत परिमाणसंखा अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा—पज्जवसंखा जाव अणुओगदारसंखा पाहुडसंखा, पाहुडिसंखा, पाहुडपाहुडियासंखा वत्थुसंखा, से तं दिट्ठिवायसुय परिमाणसंखा से तं परिमाणसंखा ॥ ९९ ॥ से किं तं जाणणासंखा ? जाणणासंखा जो जणइ तंजहा—सद्दंसाद्दिउ गणितंगणिउ, निमित्तं नेमित्तिउ कालंकालणाणी वेज्जयंवेज्जो से तं जाणणासंखा ॥ १०० ॥ से किं तं गणणासंखा ? गणणासंखा ! एकोगणणं ण उवेइ दुप्पभितिसंखा तंजहा—संखेज्जाए असंखेज्जाए अणंतए ॥ १०१ ॥

अर्थ

भगवन् ! दृष्टिवाद परिमाण संख्या किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! दृष्टिवाद परिमाण संख्या भी अनेक प्रकार कही है. तद्यथा—१-१० पर्यव संख्या यावत् अनुयोगद्वार संख्या, ११ पाहुड संख्या, १२ पाहुडीया संख्या. १३ पाहुड पाहुडीया संख्या, १४ वस्तु संख्या यह दृष्टीवाद सूत्र परिमाण हुवा. और परिमाण संख्या हुई ॥ ९९ ॥ अहो भगवन् ! जाणणा संख्या किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! जो यथार्थ जाने तद्यथा—शब्द को शब्द वेदी जाने. गणित को गणित वेदी जाने. निमित्त ज्ञान को निमंतिक जाने. काल को काल ज्ञानी जाने. वैद्य को वैद्य जाने, यह जाणक संख्या ॥ १०० ॥ अहो भगवन् ! गणणा संख्या प्रमाण किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! एक दो यावत् संख्याते असंख्याते

For Private and Personal Use Only

सूत्र

से किं तं सखज्जो ? संखेज्ज। तिविहा पण्णत्ता तंजहा–जहन्नए उक्कोसए अजहन्नमणुक्कोसए ॥ से किं तं असंखेज्जा ? असंखेज्जा तिविहे पण्णत्ते तंजहा–परिता संखेज्जा, जुत्तासंखेज्जाअ असंखेज्जासंखेज्जाए ॥ से किं तं परित्ता संखेज्जाति? परित्तासंखेज्जति तिविहा पण्णत्ता तंजहा–जहन्नए, उक्कोसए, अजहन्नमणुक्कोसए ॥ से किं तं जुत्तासंखेज्जए ? जुत्तासंखेज्जए तिविहे पण्णत्ते तंजहा–जहन्नए उक्कोसए

अर्थ

अनन्ते ॥ ५०१ ॥ अहो भगवन् ! संख्याव किस को कहते हैं ? अहो शिष्य ! संख्याते तीन प्रकार के होते हैं तद्यथा—१ जघन्य संख्याते, २ उत्कृष्ट संख्याते और ३ अजघन्य अउत्कृष्ट (मध्यम) संख्याते अहो भगवन् ! असंख्याते किस को कहते हैं ? अहो शिष्य ! असंख्यात के तीन प्रकार कहे हैं. तद्यथा–१ परिता असंख्याते. २ जुक्ता असंख्याते. ३ असंख्यात असंख्यात॥अहो भगवन्! परिता असंख्यात किसे कहते है? अहो शिष्य परिता असंख्यात के तीन प्रकार कहे है तद्यथा-१ जघन्य, २ उत्कृष्ट और ३ अजघन्योत्कृष्ट ॥ अहो भगवन् ! जुक्ता असंख्यात किसे कहते ? अहो शिष्य! जुक्ता असंख्यात तीन प्रकार के कहे हैं. तद्यथा-१ जघन्य, २ उत्कृष्ट ३ अजघन्योत्कृष्ट जुक्ता असंख्यात. असंख्यात किसे कहते है ? असंख्यात के तीन प्रकार १ जघन्य २ उत्कृष्ट, ३ अजघन्योत्कृष्ट. अहो भगवन् ! अनंत किसे कहते ? अहो शिष्य अनन्त के तीन प्रकार कहे हैं,

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

अजहन्नमणुक्कोसए ॥ से किं तं असंखेज्जए २ तिविहे पण्णत्ते तंजहा—जहन्नए, उक्कोसए, अजहन्नमणुक्कोसए ॥ से किं तं अणंतए? अणंतए तिविहे पण्णत्ते तंजहा—परितार्णतए, जुत्ताणंतए, अणंताणंतए ॥ से किं तं परित्ताणंतए? परिताणंतए, तिविहे पण्णत्ते तंजहा—जहन्नए उक्कोसए अजहन्नमणुक्कोसए ॥ से किं तं जुत्ताणतए? जुत्ताणंतए तिविहे पण्णत्ते तंजहा—जहन्नए उक्कोसए अजहन्नमणुक्कोसए ॥ से किं तं अणंताअणंतए? अणंताअणंतए दुविहा पण्णत्ता तंजहा—जहन्नएय' अजहन्नमणुक्कोसए ॥ १०२ ॥ जहन्नयं संखेज्जइ कित्तियं होइ, दो रूवयं

अर्थ

तद्यथा—१ परिता अनंता, २ युक्ता अनंता, ३ अनन्ता अनन्ता. अहो भगवन्! परिता अनन्ता किसे कहते हैं? परिता अनंता तीन प्रकार के कहते हैं तद्यथा—१ जघन्य परिता अनंता, २ मध्यम परिता अनंता, और ३ उत्कृष्ट परिता अनंता. अहो भगवन्! युक्ता अनंता किसे कहते हैं? अहो शिष्य! युक्ता अनंता तीन प्रकार के कहे हैं? तद्यथा—जघन्य युक्ता अनंता २ उत्कृष्ट युक्ता अनंता, ३ अजघन्यो-त्कृष्ट युक्ता अनंता. अहो भगवन्! अनंतानन्त किसे कहते हैं? अहो शिष्य! अनंता अनंत दो प्रकार के कहे हैं, तद्यथा—जघन्य अनंतानंत, और अजघन्योत्कृष्ट अनंतानंत ॥ १०२ ॥ जघन्य संख्याते कितने होते

For Private and Personal Use Only

सूत्र

तेणं परं अजहन्नमणुक्कोसयाइं ठाणाइं जाव उक्कोसयं संखेज्जइ, नो पावइ, उक्कोसयं संखेज्जइ कित्तियं होइ, उक्कोसयस्स संखेज्जयस्स परूवणं करिस्सामि-से जहा नामए पल्ले-सिया, एगं जोयण सयसहस्सं आयामविक्खंभेणं, तिण्णिय जोयण सयसहस्साइं सोलसय सहस्साइं दोण्णिय सत्तावीसं जोयणसते तिण्णियकोसे अट्ठावीसं च धणुयसय तेरसय अंगुलाइं अद्धअंगुलंच किंचि विसेसाहिया परिक्खेवेणं पण्णत्ता जंबूद्दीवप्पमाणं सेणंपल्ले सिद्धत्थयाणं भरति, तत्तणं तेहिं सिद्धत्थएहिं दीवसमुद्दाणं उद्धारो घेप्पति. एगेदीवे एगेसमुद्दे एवं पक्खिप्पमाणेणं जावइआणं दीवसमुद्दा तेहिं सिद्धत्थएहिं

अर्थ

हैं? अहो शिष्य! जघन्य सख्यात के दो रूप होते हैं उस के उपरान्त अजघन्योत्कृष्ट स्थानक यावत् उत्कृष्ट संख्यात तक होते हैं. अहो भगवन्! उत्कृष्ट संख्यात कितने होते हैं? अहो शिष्य! उत्कृष्ट संख्यात की मैं प्ररूपना करता हूं—यथा दृष्टान्त एक लाख योजन का लम्बा चौडा, तीन लाख सोला हजार दो सो सत्तावीस योजन, तीन कोस एक सो अठावीस धनुष्य और साढी तेरे अंगुल किंचित् विशेष परधीवाला, जंबूद्वीप के बराबर आठ योजन का ऊंडे, पाले को सरसव कर भरे. उन सरसव कर द्वीप समुद्र का उद्धार करे अथात् उस पाले में का सरसव का दाना एक द्वीप में डाले. एक समुद्र में डाले, यों डालता २ यावत् जितने द्वीप समुद्र में वह सरसव सब खाली होवे उतना

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

अफुन्ना एसणं एवइए खेत्तपल्ले आइठे पढमासलागा एवइयाणं सलागाणं असंलप्पा-लोगा भरित्ता तहावि उक्कोसयं संखेज्जयं न पावति, जहा को दिट्ठंतो ? से जहा नाम॰ मंचेसिया, आमलगाणं भरिए तत्थ एगे आमलए पक्खित्ते सेवि माते अन्नेवि पक्खित्ते सेवि माते, एवं पक्खिप्पमाणेणं २ दोहिसेवि आमलए जम्मि पक्खित्ते से मंचए भरिज्जइ, तत्थ आमलए नमाइहिंइ एवमेव उक्कोसए संखेज्जए रूवेपक्खित्ते, जहन्नयं परित्ता संखेज्जयं होइ, तेणंपरं अजहन्नमणुक्कोसयाइत्ताणाइं जाव उक्कोसयं परित्ता संखेज्जयं ण पावति २ उक्कोसयं परित्ता संखेज्जयं कित्तियं होइ जहन्नयं परित्ता

अर्थ

बडा उस द्वीप तथा समुद्र के प्रमाण में उस पाले को बनावे यह प्रथम सलाका. इन सलाकों को बिना गिनति के दाने से भरे तो भी उत्कृष्ट संख्यात होवे नहीं. प्रश्न किस दृष्टान्त से ? तो कि-यथा दृष्टान्त कर मंच पाला होवे, उसे आवले कर पूरा भरे उस पर एक आमला रखे तो वह भी गिरजाय दूसरा प्रक्षेपा वह भी समा गया. यों प्रक्षेपते २ जो आमले प्रक्षेपे उस कर माचा भरावे फिर उस में आमला नहीं पावे. इस प्रकार सब सिलाके के पाले में सरसव भरे फिर सब पाले के सरसव के दाने गिने वह उत्कृष्ट संख्याते होवे. उस में से एक या दो दाने कम करे बाकी दाने रहे सो सब मध्यम संख्याते, और उस उत्कृष्ट संख्याते के ऊपर एक दाना प्रक्षेप करे वह जघन्य परिता असंख्याता होवे.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

संखेज्जइं जहन्नयं परित्ता संखेज्जमेत्ताणं रासीणं अन्नमन्नब्भासो रूवुणो, उक्कोसं परित्ता संखेज्जयं होइ. अहवा-जहन्नयं जुत्ताणं संखेज्जइरूवणं उक्कोसयं परित्ता संखेज्जयं होइ, जहन्नयं जुत्ता संखेज्जयं कित्तियं होइ, जह परित्ता संखेज्जइ मित्ताणं रासीणं अन्नमन्नब्भासो पडिपुन्नो, जहन्नयं जुत्ता संखेज्जइं होइ, अहवा उक्कोस परित्ता संखेज्जइ रूवं पक्खित्ता, जहन्नयं जुत्ता संखेज्जयं होइ, आवलिया वितित्तिया चेव तेणंपरं अजहन्नमणुक्कोसयाइं ठाणाइं जाव उक्कोसयं जुत्ता, संखेज्जइ न पावइ ॥ उक्कोसयं जुत्ता संखेज्जयं कित्तियं होइ, जहन्नएणं जुत्ता

अर्थ

उस के आगे अजघन्यो उत्कृष्ट परिता असंख्यात यावत् उत्कृष्ट परिता नहीं पावे. अहो भगवन् ! उत्कृष्ट परिता असंख्यात कितने होते हैं ? अहो शिष्य ! जघन्य परिता संख्याते की राशी से परस्पर गुनाकार करे जैसे पांच पांच पच्चीस, पच्चीस पांच सवासो, सवासो पांच सवाछसो, सवाछसो पांच सवाइकीससो. इस प्रकार परस्पर गुनाकार करे उस में से दो रूप कमी करे. वे मध्यम परिता असंख्यात होवे और एक रूप ओर उस में डाल देवे वे उत्कृष्ट परिता असंख्याते होवे. अहो भगवन् ! जघन्य युक्ता असंख्यात कितने होते हैं ? अहो शिष्य ! जघन्य परिता की राशी कही उस राशी को राशी गुने करे वह जघन्य युक्ता असंख्याता होवे. अथवा उत्कृष्ट परिता असंख्याता में एक प्रक्षेप करे वे जघन्य युक्ता असंख्याते

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र संखेज्जएणं आवलिया गुणिया, अन्नमन्नभासोरूवूणो, उक्कोसयं जुत्ता संखेजयं होइ, अहवा जहन्नयं असंखेजा संखेज्जइं रूवूणो, उक्कोसयं जुत्ता संखेजइयं होइ ॥ जहन्नयं असंखेज्जा असंखेजइं कित्तियं होइ, जहन्नएणं जुत्ता संखेज्जएणं, आवलियागुणिया अन्नमन्नब्भासो पडिपुन्नो जहन्नयं असंखेजा संखेजयं होइ, अहवा उक्कोसए जुत्ता असंखेज्जएरूवं पखित्तं जहन्नयं असंखेज्जा संखेज्जयं होइ, तेणपरं अजहन्नमणु-क्कोसयाइं ठाणाइं जाव उक्कोसयं असंखेजा संखेज्जइं ण पावति ॥ उक्कोसयं असंखेजा संखेज्जयं कित्तियं होइ. जहन्नयं असंखेजा संखेज्जइं मेत्ताणं रासीणं

अर्थ होवे. इतने एक आवालिका के समय होवे. इस के उपरान्त अजघन्योत्कृष्ट स्थानक यावत् जहां तक उत्कृष्ट युक्ता असंख्यात नहीं पावे तहां तक. उत्कृष्ट युक्ता असंख्याते कितने होते हैं ? जघन्य युक्ता असंख्यात की राशी को परस्पर गुनाकार कर एक कम राशि उत्कृष्ट असंख्याते होवे. जघन्य असंख्यात असंख्याते कितने होते हैं? अहो शिष्य! जघन्य युक्ता असंख्यातेकी राशीको परस्पर गुनाकार करने से जितने रूप होवे वे जघन्य असं-ख्याते असंख्याते होवे. अथवा उत्कृष्ट युक्ता असंख्याते में एक प्रक्षेप करे वह जघन्य असंख्यात असंख्याता होवे. उस के ऊपर अजघन्योत्कृष्ट स्थानक यावत् उत्कृष्ट असंख्यात असंख्याते इस में नहीं पावे. अहो भगवन्! उत्कृष्ट असंख्यात २ कितने होते हैं ? अहो शिष्य ! जघन्य असंख्यात असंख्यात राशी को परस्पर

For Private and Personal Use Only

सूत्र

अन्नमन्नभासो रूवूणो उक्कोसयं असंखेज्जा असंखेज्जयं होइ, अहवा जहन्नयं परित्ताणंतयं रूवूणं उक्कोसयं असंखिज्जा असंखेज्जयं होइ. जहन्नयं परित्ताणंतयं कित्तियं होइ, जहन्नयं असंखेज्जा असंखेज्जयं मेत्ताणं रासीणं अन्नमन्नभासो पडिपुन्नो जहन्नयं परित्ताणंतयं होइ, अहवा उक्कोसए असंखेज्जा असंखेज्जए रूवं पक्खित्तं जहन्नयं परित्ताणंतयं होइ, तेणं परं अजहन्नमणुक्कोसयाइं ठाणाइं जाव उक्कोसयं परित्ताणंतयं ण पावति, उक्कोसयं परित्ताणतयं कित्तियं होइ, जहन्नयं परित्ताणं तयं मेत्ताणं रासीणं अन्नमन्नभासो रूवुणो, उक्कोसं परित्ताणंतयं होइ. अहवा जहन्नयंजुत्ताणंतयं रूवूणं उक्कोसयं परित्ताणंतय होइ, ॥ जहन्नयं जुत्ताणंतयं

अर्थ

गुनाकार करके एक कम करे वह उत्कृष्ट असंख्यात असंख्यात होवे. अथवा जघन्य परिता अनंत में से एक रूप कमी करे वह उत्कृष्ट असंख्यात २ होवे. अहो भगवन्! जघन्य परिता अनंत कितने होते हैं? अहो शिष्य! जघन्य असंख्यात असंख्यात की राशी को परस्पर गुनाकार करके प्रतिपूर्ण जितना रूप होवे से जघन्य परिता अनंत होवे. अथवा उत्कृष्ट असंख्याता असंख्यात में एक रूप प्रक्षेप करे वे जघन्य परिता अनंत होवे. उस के ऊपर अजघन्योत्कृष्ट स्थान यावत् जहां तक तीसरा उत्कृष्ट परिता अनंत न होवे तहां तक दूसरा अनंता उत्कृष्ट परिता अनंत कितने होते हैं ? अहो शिष्य जघन्य परिता अनंत की राशी को

मूल

कित्तियं होइ, जहन्नयं परिताणंतयं मेत्ताणं रासीणं अन्नमन्नभासो पडिपुन्नो जहन्नं जुत्ताणंतय अहवा उक्कोसए परित्ताणंतयंरूवं पखित्त जहन्नयं जुत्ताणंतयं होइ, अभवसिद्धियाणं तत्तिया होइ ॥ तेणंपरं अजहन्नमणुक्कोसयाइ ठाणाइं जाव उक्कोसयं जुत्ताणंतयं ण पावती ॥ उक्कोसयं जुत्ताणंतयं केवइयं होइ,-जहन्नएणं जुत्ताणंतएणं अभवसिद्धिया गुणिया, अन्नमन्नब्भासो रूवुणो, उक्कोसयं जुत्ताणं तयं होइ, अहवा जहन्नयं अणंताणंतयं रूवूण, उक्कोसं जुत्ताणंतयं होइ, ॥ जहन्नयं अणंताणंताइं कित्तियं होइ, जहन्नएणं जुत्ताणंतएणं अभवसिद्धिया

अर्थ

परस्पर गुनाकार करे उस में से एक रूप कमी करे तब उत्कृष्ट परिता अनंत जघन्य परिता अनंत की राशी को परस्पर गुनाकार करे, तब जघन्य युक्ता अनंत होवे अथवा उत्कृष्ट परिता अनंत में एक रूप प्रक्षेप करे, तब जघन्य युक्ता अनंत होवे [ चौथे अनंत जितने अभव्यजीव हैं. ] उस उपरांत यावत् अजघन्योत्कृष्ट [illegible] उत्कृष्ट युक्त नहीं पावे अहो भगवन् ! उत्कृष्ट युक्त अनंत कितना होता है ? अहो शिष्य ! जघन्य युक्ता अनंत को अभव्य (चौथे) अनंत से गुनाकार कर वह उत्कृष्ट युक्त अनंत छठा होवे. अथवा जघन्य अनंतानंत में से एक रूप कमी करे तब उत्कृष्ट युक्ता अनंत होवे. अहो भगवन् ! जघन्य अनंतानंत कितने होते हैं ? अहो शिष्य ! जघन्य युक्ता अनंत को अभव्यजीव

गुणया अन्नमन्नब्भासो पडिपुन्नो जहन्नयं अणंताणंतयं होइ, अहवा उक्कोसए जुत्ताणंतए रूवंपक्खित्तं जहन्नयं अणंता अणंतयं होइ, तेणं परं अजहन्नमणुक्कोसयाइं ठाणाइं ॥ से तं गणणासंखा ॥ १०३ ॥ से किं तं भावसंखा ? भावसंखा-

की राशी से गुना करे परस्पर गुना करने से प्रतिपूर्ण रूप होवे वह सातवा जघन्य अनन्तानन्त होवे, अथवा उत्कृष्ट युक्ता अनंत में एक रूप प्रक्षेपे वह भी जघन्य अनन्तानन्त होवे, उस उपरांत सब आठवा (मध्यम) अनंतानंत का स्थानक जानना. यह जितनी संख्या कही. इस संख्या मान से ग्रंथांतर इस प्रकार कथन है—१ अनवस्थित, २ शलाका, ३ प्रतिशलाका, और ४ महा शलाका इन चारों नाम के चार टोपले जंबूद्वीप प्रमाने एक लक्ष योजन के लम्बे चौडे (गोल) और आठ योजन के ऊंचे. इन चारों टोपले में से पहिले अनवस्थित टोपले में सरसों के दाने शिखाउ भरे. फिर कोई देवता एक तो दाने से भरा हुवा और तीन टोपले बिना भरे उठावे. उस भरे टोपले में से एकदाना जम्बूद्वीप में एक दाना लवण समुद्र यों अनुक्रम से रखता हुवा जावे जब उस अनवस्थित टोपले में एक ही दाना रहजावे तब उसे दूसरे शलाका नामक टोपले में रख जिस द्वीप समुद्र में यह टोपला खाली हुवा था. उस द्वीप व समुद्र प्रमाने उस अनवस्थित टोपले को बनावे फिर उसे दानों शिखाउ भरे. फिर उस में से एक२दाना द्वीपसमुद्र में डालतें जो एक दाना रहा जावे जब यह दाना भी शलाका

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir









नामक दूसरे टोपल में रख दे और जिस द्वीप व समुद्रादिक में वहां टपकता रहा हुवा उतना ही बना फिर उस अनवस्थित टोपले को बना सर सब के दाने से भर एक दोनों द्वीप समुद्रों में रखते जावे. एक दाना रहजावे तब फिर उसे शलाका में रखे यों अनवस्थित के बाचे हुवे एकेक दाने कर शलाका को प्रतिपूर्ण भरे. शलाका भराजावे तब शलाका को उठा कर एक दाना द्वीप में एक समुद्र में यों रखते एक दाना रहजावे वह प्रति शलाका तीसरे टोपले में रखे, टोपल ही अनवस्थित के बचे हुवे एकेक दाने कर शलाका को भरे औरके बचे हुवे एकेक दाने कर प्रति शलाका को भरे और प्रति शलाका के एकेक दाने कर महा शलाका को भरे. यह शलाका चौथा टोपला भराजावे तब उसे एकांत में रख फिर अनवस्थित कर शलाका को और शलाका कर प्रति शलाका यों भरे वह भी एकान्त में रखे फिर अनवस्थित कर शलाका को भरे. भरा जावे तब उसे भी एकान्त में रख और जिस स्थान वह अनवस्थित किया हुवा इस द्वीप समुद्र जितना बडा अनवस्थित टोपले को बना कर उस में शिखाउ सरसव के दाने भरे. चारों टोपलों को उठाकर एकान्त लाकर उस में के दाने का ढग लगावे. फिर उस ढग में से एक दाना निकाल लेवे तब वे दाने उत्कृष्ट संख्यात प्रमाण होते हैं. जिस रूप उपनिधिक कालानुपूर्वी की पूर्वानुपूर्वी में दिया उतना जानना यह तीसरे संख्यात कथन हुवा. एक तो संख्या वाचक होने से गिना नहीं जाते हैं इस लिये दो को जघन्य संख्याते कहना. दो के ऊपर यावत् उत्कृष्ट संख्यात तक के अंक में से एक अंक कमी को मध्यम संख्या कहना आगे को उत्कृष्ट संख्यात कहना. अब असंख्याते के ९ भेद कहते हैं-ऊपर कहे चारों

For Private and Personal Use Only

अर्थ

टोपले में के सब दानों का ढग कर उस में से एक दाना निकाला था वह पीछा डालदे वह १ जघन्य परिता असंख्यात, २ और इस जघन्य परिता असंख्याते को राशगुना करे उस में से एक दाना निकाले वह (३) उत्कृष्ट परिता असंख्याता और जघन्य परिता से १ अधिक तथा उत्कृष्ट परिता असंख्याता से एक कम मध्यम परिता असंख्याता कहना. फिर उस परिता असंख्यात की राशी में से निकाला हुआ दाना पीछा उस राशी में डाल दे वह (४) जघन्य युक्ता असंख्याते. इतने एक आंवलीका के समय होते हैं फिर इस जघन्य युक्ता की राशी को राश गुना करे उस में से एक दाना कम करे वह (६) उत्कृष्ट युक्ता असंख्याता. और जघन्य युक्ता असंख्यात से एक अधिक उत्कृष्ट युक्ता असंख्यात से एक कम वह (५) मध्यम युक्ता असंख्याता. (७) फिर उत्कृष्ट युक्ता की राशी में से निकाला हुआ दाना उस में डाल दे सो जघन्य असंख्यात असंख्याता. और इस जघन्य असंख्यात २ राशी को राश गुना कर एक दाना कम करे वह (९) उत्कृष्ट असंख्यात असंख्याता इतने धर्मास्ति अधर्मास्ति जीवास्ति और लोकाकाशादिक के प्रदेश हैं। जघन्य असंख्यात असंख्यात से एक ज्यादा उत्कृष्ट असंख्यात असंख्यात से एक कमी वह (८) मध्यम असंख्यात असंख्याता यह ९ भेद असंख्यात के हुवे. अब अनंत के ८ भेद कहते हैं—उत्कृष्ट असंख्यात २ की राशी में से निकाला हुआ दाना पीछा उस में डाल दे वह (१) जघन्य परिता अनन्ता. इस जघन्य परिता की राशी को राश गुना करे उस में से एक दाना निकाल ले वह (३) उत्कृष्ट परिता अनन्ता, जघन्य परिता अनन्ता से एक

सूत्र

जे इमे जीवा संखागइ नामगोत्ताइं कम्माइं वेदंति, से तं भावसंखा ॥ सेतं संखप्प-
माणे ॥ सेतंप्पमाणे प्पमाणेत्तिपय सम्मत्तं ॥ १०४ ॥ * ॥ से किं तं वत्तव्वया ?
वत्तव्वया तिविहा पण्णत्ता तंजहा-ससमय वत्तव्वया, परसमय वत्तव्वया, ससमय परसमय
वत्तव्वया १ से किं तं ससमयवत्तव्वया ? ससमय वत्तवया जत्थणं ससमय

अर्थ

अधिक उत्कृष्ट परिता अनंता से १ कम सो (२) मध्यम परिता अनंता उत्कृष्ट परिता अनता में का निकाला हुवा दाना पीछा उस में डाल दे वह (४) जघन्य युक्ता अनंता, जघन्य युक्ता की राशी को राश गुनाकर उस में से एक दाना निकाल लेवे सो (६) उत्कृष्ट युक्ता अनंता. जघन्य युक्ता अनंता से एक अधिक उत्कृष्ट युक्ता अनंता से एक कम वह (५) मध्यम युक्ता अनंता उस में वह दाना डालदे वह (७) जघन्य अनंतानंत. जघन्य युक्ता अनंताअनंत की राशी को राश गुना करने से जो राशी होवे वह (८) मध्यम अनंतानत है यह गणना संख्या का कथन हुवा ॥ १०३ ॥ अहो भगवन् ! भाव संख्या प्रमाण किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! जो प्रत्यक्ष शंख नाम का जीव बेइन्द्रिय गति नाम कर्मके उदय कर कर्म को वेदता है वह भव संख्या प्रमाण. यह शंख प्रमाण और प्रमाण हुवा, यह प्रमाण पद संपूर्ण हुवा ॥ १०४ ॥ * ॥ अहो भगवन् ! वक्तव्यता किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! वक्तव्यता के तीन भेद कहे हैं. तद्यथा—स्व समय की वक्तव्यता, २ पर समय की वक्तव्यता, ३ स्व समय पर समय दोनों की वक्तव्यता ॥ १ ॥ इस में से स्वसमय की वक्तव्यता उसे कहते हैं जो स्व मत जिन प्रणित

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति, दंसइ निदंसिज्जइ, उवदासज्जइ, से तं ससमय वत्तव्वया ते किं तं परसमय वत्तव्वया? परसमय वत्तव्वया जत्थणं परसमय आघविज्जंति जाव उवदंसिज्जंति से तं परसमय वत्तव्वया ॥ से किं तं ससमय परसमय वत्तव्वया ? ससमय परसमय वत्तव्वया—जत्थणं ससमय परसमए आघविज्जंति जाव उवदंसिज्जंति, सेतं ससमय परसमय वत्तव्वया ॥ २ ॥ इयाणिकोनउ कं वत्त-

अर्थ

सूत्रों का संक्षेप मे कहे. प्रज्ञपे विस्तार से प्ररूपना करे, दृष्टान्तादि कर दर्शावे. विशेष कर दर्शावे. परिषद् में उपदेशे. जैसे धर्मास्ति काया ऐसा कहना सो आघाविजाति. गति लक्षण कहना सो प्रज्ञप्ता, असंख्यात प्रदेश कहना वह प्ररूपना. जल मच्छ का दृष्टान्त वह दर्शना, तैसीं धर्मास्ति काया ऐसा उपनय मिलाना वह निदर्शना. यथार्थ विस्तार व्याख्या वह उपदर्शना. यह स्वतःके समय की वक्तव्यता कहीं. ॥ अहो भगवन् ! पर समय वक्तव्यता किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! जो अन्यमत के शास्त्र उक्त प्रकार सामान्य प्रकार कहे प्रज्ञपे, विस्तार से कहे, दृष्टान्त से सिद्ध करे, विशेष दर्शाने और उपदेशे. वह पर समय वक्तव्यता ॥ अहो भगवन् ! स्व समय पर लक्ष्य वक्तव्यता किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! जहां स्वतः के मत का और पर के मत का दोनों के मत का सामिल कथन कर प्रज्ञपे विस्तार से कहे दृष्टान्त से दर्शाने, उपनय मिलावे. उपदेश दे वह स्व समय पर समय वक्तव्यता.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



मूल

व्वयं इच्छंति तत्थ—णेगम संगह ववहारो तिविहं वत्तव्वयं इच्छंति तंजहा—ससमय वत्त-
व्वयं, परसमय वत्तव्वयं, ससमय परसमय वत्तव्वयं उज्जुसुउ दुविहं वत्तव्वयं इच्छइ
तंजहा ससमय वत्तव्वयं, परसमयवत्तव्वयं, तत्थणं जासा ससमय वत्तव्वया सा ससमयं परिट्ठा
जा सा परसमय वत्तव्वया सा परसमय परिट्ठा, तम्हा दुविहा वत्तव्वया, नत्थितिविहा
वत्तव्वया, तिण्णिसद्दाणया एग ससमय वत्तव्वयं इच्छंति, नात्थि परसमय वत्तव्वया. कम्हा?
जम्हा परसमए अणट्ठे अहेउ असब्भावे अकिरिए उमग्गो अणुवएसे मिच्छादंसण

अर्थ

॥ २ ॥ अब आगे नय का कथन कहते हैं—यहां कौनसी नय कौनसी वक्तव्यता को मानती है सो कहते हैं—१ तहां नेगम नय, २ संग्रहनय, ३ व्यवहार नय, यह तीनों वस्तु वक्तव्यता माने यथा—१ ससमय वक्तव्यता, २ पर समय वक्तव्यता, ३ ससमय पर समय वक्तव्यता, ऋजुसूत्र नय दो प्रकार की वक्तव्यता माने ससमय और पर समय परन्तु दोनों की मिश्र वक्तव्यता नहीं माने. इस में जो ससमय की वक्तव्यता है वह स्व समय में स्थापन करे और पर समय की वक्तव्यता वह पर समय में समावे. इस लिये दो प्रकार की वक्तव्यता ही है परंतु तीन प्रकार की नहीं है. ऊपर की तीनों शब्द नयवाले एक स्वतःके समय की वक्तव्यता को इच्छते हैं परंतु पर समय की वक्तव्यता इच्छते नहीं है. क्यों कि जो पर समय है वह अनर्थ है अहेतु है, अस-

For Private and Personal Use Only

सूत्र

मितिकट्टु, तम्हासव्व ससमय वत्तव्वया, णत्थि परसमय वत्तव्वया से तं वत्तव्वया ॥ ३ ॥ से किं तं अत्थाहिगारे ? अत्थाहिगारे जो जस्स अज्झयणस्स अत्थाहिगारे तंजहा-सावज्जजोग विरइ,गाहा से तं अत्थाहिगारे॥ ४ ॥से किं तं समोआरे ? समोआरे छव्विहे पण्णत्ते तंजहा-नामसमोआरे, ठवणासमोआरे, दव्वसमोआरे, खेत्तसमोआरे कालसमोआरे, भावसमोआरे, ॥ नामठवणाओ पुव्ववण्णियाओ जाव से तं भविय-

अर्थ

द्भाव प्ररूपक है, अक्षुद्र वर्तमानवाला है, उन्मार्ग है, कू उपदेशक है, मिथ्यात्व दर्शन है, इस लिये ससमय की वक्तव्यता को माने पर समय की वक्तव्यता को नहीं माने. यह वक्तव्यता हुई ॥ ३ ॥ अब उपक्रम के पांचवे भेद की व्यक्तव्यता कहते हैं-अहो भगवन्! अर्थाधिकार किसे कहते हैं?अहो शिष्य!अर्थाधिकार सो जो जिस प्रकार सामायिकादि अध्ययनों का जाना अर्थ होता है वह अर्थ रूप कर्तव्य को अर्थाधिकार कहना, तद्यथा—सामायिक सो सावद्य योग की विरति रूप वृत का ग्रहण करना, यह अर्थाधिकार हुवा ॥ ४ ॥ अब उपक्रम का छठा भेद समवतार की पृच्छा- अहो भगवन्! समवतार किसे कहते हैं? अहो शिष्य! स्वतः के या पर के अन्तर भाव का जो विचार करना उस समवतार के छ प्रकार कहे हैं तद्यथा—१ नाम समवतार, २ स्थापना समवतार, ३ द्रव्य समवतार, ४ क्षेत्र समवतार, ५ काल समवतार और ६ भाव समवतार. इन छ में से नाम का और स्थापना का तो जैसा आवश्यक में कहा तैसा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



 

सूत्र

सरीर दव्वसमोयारे ॥ ५ ॥ से किं तं जाणगसरीर भवियसरीर वइरित्त दव्वसमोआरे ? जाणगसरीर भवियसरीर वइरित्त दव्वसमोआरे तिविहे पण्णत्ते तंजहा-आयसमोआरे, परसमोआरे, तदुभयसमोआरे ॥ सव्वदव्वाविणं आयसमोआरेणं आयभाविसमोअरंति, परसमोआरेणं जहा कुंडे वदराणि, तदुभयसमोआरेणं जहा घरे थंभो आयभावेय, जहा घडे गीवा आयभावेय ॥ अहवा जाणगसरीर भविय-सरीर वइरित्ते दव्वसमोआरे दुविहे पण्णत्ते तंजहा-आयसमोआरेय, तदुभय-

अर्थ

यहां ही कहना. यावत् भविय शरीर द्रव्य समवतार तक कहना ॥५॥ अहो भगवन् ! ज्ञेय शरीर भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य समवतार किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! ज्ञेय भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य समवतार के तीन प्रकार कहे हैं तद्यथा-१ आत्म समवतार, २ पर समवतार, और ३ उभय समवतार इस में आत्म समवतार द्रव्यात्म के समवतार कर विचारता हुवा स्वतः के स्वरूप में समवतारे क्यों कि सब जीव द्रव्य अपने स्वरूप से अलग नहीं है. ऐसे विचार से अपने २ स्वरूप में प्रवृत्ति करे उसे आत्म समवतार कहना. २ अन्य वस्तु में अन्य वस्तु प्रवर्ते जैसे कूंडे में बोर हैं परंतु बोरों में कूंडा नहीं. इस पर समवतार कहीये. ३ तदुभय समवतार-सो जैसे घर में स्थम्भ और स्थम्भ पर घर रहा है. इस में स्थम्भ पर घर रहा है यह पर समवतार, स्थम्भ स्वयं स्वतः के स्वरूप में रहा है यह आत्म समवतार, पुनः दोनों के

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

समोआरेय चउसट्ठिया आयसमोतारेणं आयभावेसमोतरांति, तदुभयसमोतारेण बत्तीसियाए समोतरइ आयभावेय, बत्तीसियायसमोतारेणं आयभावे समोतरंति, तदुभयसमोतारेणं सोलसियाए समोतरेइ आयभावेय, सोलसियाय समोआरेणं आयभावेसमोतरेइ, तदुभयसमोतारेणं अट्ठभाइयाए समोतरेइ आयभावेय, अट्ठभाइया आयसमोतारेणं आयभावसमोतरेइ, तदुभयसमोआरेणं चउभाइयाए समोअरेइ, आयभावेय, चउभाइया आयसमोतारेणं आयभावेसमोतरइ, तदुभयसमोतारेणं अद्धमाणीए

अर्थ

एकत्र लिखे वह तदुभय समवतार, तथा जैसे घडा में ग्रीवा नालव नालव घडे पर है और घडा घडे के भाव में है आत्म भाव है. अथवा ज्ञय शरीर भव्य शरीर व्यतिरिक्त जो द्रव्य समवतार दो प्रकार कहा है तद्यथा—आत्म समवतार, और उभय समवतार. चउसठीये चार पल के मान में आत्म भाव समव॰ तार आत्म भाव में समवतरे. बत्तीसीये आत्म पल्य के मान में आत्म भाव में समवतरे. आठ पल के बत्तीसीये आत्म स्वरूप में समवतरे वे उभय समवतार प्रवर्ते सोलह पल में समवतरे वह सोलह सिया आत्म भाव समवतार तदुभय समवतार. अठभाइया वे बत्तीस पल में समवतरे आत्म भाव तेई आठ भाईये स्वयं अपने स्वरूप में प्रवर्ते यह तदुभय समवतार. चउभाइये चौसठ पल में समवतरे वह दोनों के आत्म भाव चउभागिक आत्म समवतार, आत्म समवतरे वह तदुभय में समवतरे. १२८ पल्य अर्धमानी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

समोतरंति आयभावेय अद्धमाणी आयसमोतारेणं आयभावे समोतरंति, तदुभयसमोतारेणं माणिएसमोतरंति, आयभावेअ. से तं जाणग भविय-सरीर वइरित्तं दव्वसमोआरे ॥ से तं नो आगमओ दव्वसमोयारे ॥ से तं दव्वसमोआरे ॥ ६ ॥ से किं तं खेत्त समोयारे ? खेत्तसमोयारे दुविहे पण्णत्ते तंजहा-आयसमोआरेय. तदुभयसमोआरेय, भरहेवासे आयसमोआरेणं, आयभावे समोतरइ, तदुभयसमोतारेणं जंबुद्दीवेसमोतरेइ, आयभावेय. जंबूद्दीवे आयसमो-

अर्थ

में समवतरे यह दोनों आत्म भाव में प्रवर्ते. आधीमानी स्वयं स्वयं के स्वरूप में प्रवर्ते. यह उभय समवतार. २५६ पल मानी में समवतरे यह दोनों के आत्म भाव प्रवर्ते. अर्थात् चार पल के चौसठीये ८ पल के बत्तीसीये में समावे, बत्तीसीये सोलसीयेमें समावे ऐसे ही सब जानना. यह ज्ञेय शरीर भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य समवतार हुवा.यह नो आगमसे द्रव्य समवतार हुवा.और यह द्रव्य समवतार हुआ॥६॥अहो भगवन् ! क्षेत्र समवतार किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! क्षेत्र समवतार दो प्रकार का कहा है तद्यथा— आत्म समावे सो समवतार जानना. सोलसीये अठ विभागी में समावे, चौसठीये विभागी में समावे. सोचउभागी १२८ पलीये में ( आधी माणी ) में समाये, २५६ वे माणी में समाये. यों स्वयं स्वयं में समवतार, तदुभय समवतार. जैसे भरत क्षेत्र स्वयं स्वयं के स्वरूप में प्रवर्ते यह आत्म भाव समवतार,



For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

आरेणं आयभावे समोतरेइ, तदुभयसमोतारेणं तिरिएलोएसमोतरेइ, आयभावेय, तिरियलोए आयसमोतारेणं आयभावेसमोतरइ, तदुभयसमोतारेणं लोएसमोतरेइ आयभावेय, से तं खेत्तसमोयारेय॥७॥ से किं तं कालसमोयारेय ? कालसमोयारे दुविहे पण्णत्ते तंजहा-आयसमोआरेय, तदुभयसमोआरेय, समयआयसमोतारेणं, तदुभयसमो आरेणं आवलियाए समोतरंति, आयभावेय, एवं आवलिया, आणापाणु, थोवे, लवे, मुहुत्ते, अहोरत्ते, पक्खे, मासे. ऊऊ, अयणे, संवच्छरे, जुगेवा, वाससते,

अर्थ

और उभय समवतार सो भरतक्षेत्र जंबूद्वीपमें समावे यह दोनोंको स्वयं भावमें प्रवर्ते. जंबूद्वीप अपने भावमें प्रवर्ते वह आत्म समवतार और उभय समवतार तिरछे लोक में समवतरे. और दोनों अपने २ स्वरूप में प्रवर्ते. ३ तिरछा लोक अपने स्वरूप में प्रवर्ते वह आत्म समवतार और उभय समवतार लोक में प्रवर्ते. यह दोनों अपने २ स्वरूप में प्रवर्ते. यह क्षेत्र समवतार हुवा ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! काल समवतार किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! काल समवतार दो प्रकार कहे हैं तद्यथा—आत्म समवतार और २ उभय समवतार एक समय सो एक समय के काल मान स्वयं स्वयं के आत्मा में प्रवर्ते उभय समवतार आवलिका में समावे क्यों कि आवलिका में असंख्यात समय होते हैं, दोनों अपने २ भावमें आत्म भावमें हैं. यों आवलिका आत्म भाव तदुभय सो आणुपाणु में समावे, दोनों स्वयं २ आत्म भावमें हैं. ऐसे ही





For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

वाससहस्से, वाससतसहस्से, पुव्वंगे, पुव्वे, तुडिअंगे, तुडिए, अडडंगे, अडडे, अववंगे, अववे, हुहुअंगे हुहुए, उप्पलंगे, उप्पले, पउमंगे, पउमे, णलिणंगे, नालिणे, अत्थिनेपुरंगे, अत्थिनिपुरे, आउअंगे, आउए, नउअंगे, नउए, पउमंगे, पउए चूलिअंगे, चूलिया, सीसपहेलिअंगे सीसपहेलिया, पलिओवमे, सागरोवमे, आयसमोआरेणं, आयभावेसमोतरइ, ॥ तदुभय समोतारेणं उसप्पिसुउसप्पिणीसु समोतारेइ आयभावे उसप्पिणुसप्पिणीओ आयसमोआरेणं आयभावे समोतरेइ आयभावे, तदुभयसमो

अर्थ

दो दो बोल आगे भी जानना. ४ संख्यात आंवलिका का स्तोक, ५ लव, ६ मुहूर्त, ७ अहोरात्रि, ८ पक्ष. ९ महिने, १० ऋतु, ११ अयन, १२ संवत्सर, १३ युग, १४ सो वर्ष, १५ हजार वर्ष. १६ लाख वर्ष, १७ पूर्वांग १८ पूर्व, १९ तुटितांग २० तुटित, २१ अडडांग, २२ अडड, २३ अववंग, २४ अवव. २५ हुहुअंग. २६ हुह. २७ उत्पलंग. २८ उत्पल, २९ पद्मांग, ३० पद्म. ३१ नलिनांग, ३२ नलीन. ३३ अत्थीनेपुरांग, ३४ आस्तनेपुर. ३५ आउअंग, ३६ आउ, ३७ नउअंग, ३८ नउए, ३९ पउमांग, ४० पउम. ४१ चूलीतांग, ४२ चूलिय, ४३ शीर्ष पहेलिकांग, ४४ शीर्ष प्रहेलिक, ४५ पल्योपम, ४६ सागरोपम, सागरोपम आत्म समवतार और ४७ तदुभय समवतार सो सर्पनी उत्स-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

तारेणं पोग्गलपरियट्टे समोअरइ, आयभावेय पोग्गलपरियट्टे आयसमोआरेणं आयभावे समोतरइ, तदुभयसमोआरेणं तीतद्धा अणागतद्धा सुसमोअरंति, आयभावे, तीतद्धा अणागतद्धा आयसमोआरेणं आयभावे समोअरंति, तदुभय समोतारेणं सव्वद्धाए समोअरंति आयभावेय, से तं कालसमोआरे ॥ ८ ॥ से किं तं भावसमोआरे ? भावसमोआरे दुविहे पण्णत्ते तंजहा-आयसमोआरेय, तदुभयसमोआरेय, कोहे आयसमोआरेणं, आयभावे समोअरइ; तदुभय समोआरेणं माणेसमोअरइ. आयभावेय, एवं माण माया लोभ रागे मोहणिज्जे अट्ठकम्मपगडीओ आयसमोआरेणं

अर्थ

पॅनी यह स्वयं से दोनों आत्म भाव, ४८ उत्सर्पनी अवसर्पनी आत्म भाव समवतार, तदुभय समवतार पुद्गल परियट में समवतरे, स्वयं से आत्म भाव. ४९ पुद्गल प्रवर्तने आत्म समवतार आत्म समवतार में अवतरे, तदुभय समवतार सो गत काल दोनों अपने २ स्वभाव में आत्म समवतार. ५० अतीत अद्धा अनागतद्धा आत्म समवतार आत्म भाव में अवतार तदुभय समवतार सो सर्वद्धा. दोनों अपना २ आत्म भाव में प्रवर्ते यह काल समवतार का कथन हुवा ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! भाव समवतार किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! भाव समवतार के दो प्रकार कहे हैं, तद्यथा—आत्म समवतार और उभय समवतार. क्रोध आत्म समवतार आत्म भाव में समवतरे. और तदुभय समवतार सो मान विना क्रोध होवे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

आयभावेसमोयरंति, तदुभयसमोआरेणं छव्विहे भावे समोतरेइ आयभावेय. एवं छव्विहेभावे जीवे जीवत्थिकाए आयसमोयारेणं आयसमोअरंति, तवुभयसमोआरेणं तदुभयसमोअरंति सव्वदव्वेसुसमोतरंति आयभावे ॥ एत्थसंगहणीगाहा-कोहे माणे मायालोभे, रोगेय मोहणिज्जेय ॥ पगडीभावेजीवे, जीवत्थिकाय दव्वाय भासेयव्वा ॥ १ ॥ से तं भावसमोयारे ॥ से तं समोतारे ॥ से तं उवक्कमे ॥ ९ ॥ इति पढमं दारं सम्मत्तं ॥ १ ॥ * *

अर्थ

नहीं इस लिये क्रोध मान में समवतार. दोनों आप २ के गुन में आत्म समवतार, २ ऐसे ही मान का, ३ माया का, ४ लोभ का, ५ राग का, ६ द्वेष का, ७ मोह का, ८ आठों कर्मों की प्रकृति का आत्म समवतार आत्मा में समवतरे, तदुभय समवतार उक्त छ ही भावों में समवतरे. यह आठों आप२के गुण में रहे सो आत्म समवतार. यह छ प्रकार के भाव जीव जीवास्ति काया में आत्म समवतार आत्म समवतरे. उभय समवतार सब द्रव्य में समवतरे, आत्म भाव में भी, यहां संग्रहणी गाथा—१ क्रोध, २ मान, ३ माया. ४ लोभ, ५ राग, ६ मोहनीय, ७ प्रकृति. ८ भाव, ९ जीव. और १० द्रव्य, का कहना. यह भाव समवतार हुवा. यह उपक्रम, ॥ ९ ॥ इति प्रथम द्वार संपूर्ण. ॥१॥ अहो भगवन् ! निक्षेप किसे कहते हैं?

सूत्र

से किं तं निक्खेवे ? निक्खेवे तिविहे पण्णत्ते तंजहा-ओहनिप्फन्ने नामनिप्फन्ने सुत्तालावगनिप्फन्ने ॥ १ ॥ से किं तं ओहनिप्फन्ने ? ओहनिप्फन्ने चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा-अज्झयणे, अज्झीणे, आए, झवणा ॥ २ ॥ से किं तं अज्झयणे ? अज्झयणे चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा- नामज्झयणे, ठवणाज्झयणे, दव्वज्झयणे,

अर्थ

अहो शिष्य ! निक्षेप तीन प्रकार के कहे हैं. तद्यथा—१ ओघनिष्पन्न, २ नाम निष्पन्न, और ३ सूत्री व्यापक निष्पन्न ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! ओघनिष्पन्न किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! सामान्य समुच्चय अध्यायन यों निष्पन्न हुवा नाम वह सामायिकादिक अध्ययन नाम लेकर विशेष कहना उस कर जो निष्पन्न हुवा. सूत्र-सामायिक अध्ययन नाम कहे उस का आलापक. 'करेमि भंते' यों सूत्र कहकर उस से निष्पन्न हुवा वह सूत्रालापक निष्पन्न कहना. अर्थात् ओघनिष्पन्न में समुच्चय ६ अध्ययन जानने. नाम निष्पन्न में सामायिकादि छ अध्ययन कहना. सूत्रालापक में छ अध्ययन में अलग २ पाठ सूत्र कहना. इस में छठा आवश्यक का उपक्रम वर्तन् आउ छ ही आवश्य करने योग्य इस लिये निश्चय से छ अध्ययन प्रवर्तते देख अध्ययन के सूत्र पाठ शुद्ध वर्तते हैं, तद्यथा—१ अध्ययन करने (पढने) योग्य सो अध्ययन, २ शिष्यादि को पढाते सूत्र ज्ञान क्षीण न होवे इस लिये अक्षीण, ३ लाभ के दाता इस लिये आय, ४ कर्म को क्षय करे इस लिये झवण ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! अध्ययन किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! अध्ययन चार प्रकार के कहे हैं तद्यथा-१ नाम अध्ययन, २ स्थापना अध्ययन, ३ द्रव्य

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

भावज्झयणे, नामठवणाओ पुव्ववण्णियाओ ॥ ३ ॥ से किं तं दव्वज्झयणे ? दव्वज्झयणे दुविहे पण्णत्ते तंजहा-आगमओ, नो आगमओ ॥ ४ ॥ से किं तं आगमओय दव्वज्झयणे ? आगमओ दव्वज्झयणं जस्सणं अज्झयणति पदंसिक्खित्तं जितं मितं परिजितं जाव एवं जावइया अणुवउत्ता आगमतो तावइयाइं नाइं दव्वज्झयणाइं ॥ एवमेवववहारस्सवि ॥ संगहस्सणं एगोवा अणेगोवा जाव से तं आगमतो दव्वज्झयणे ॥ ५ ॥ से किं तं नो आगमतो दव्वज्झयणे ? नो आगमतो दव्वज्झयणे तिविहे पण्णत्ते तंजहा-जाणगसरीर

अर्थ

अध्ययन, और ४ भाव अध्ययन. नाम और स्थापना का तो पहिले आवश्यक में कहा तैसा कहना. ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! द्रव्य अध्ययन किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! द्रव्य अध्ययन के दो भेद कहे हैं तद्यथा—१ आगम से और २ नो आगम से ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! आगम से द्रव्य अध्ययन किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! जिस अध्ययन का पद पढा हृदय में जचा, परमित हुवा विशेष धारा यावत् इस प्रकार उपयोग विना किया हुवा आगम द्रव्य अध्ययन यह नैगम नय आश्रिय जानना. ऐसा ही व्यवहार नय आश्रिय कहना. संग्रह नय से, एक अथवा अनेक आवश्यक करे सो. यावत् यह आगम से द्रव्य अध्ययन हुवा ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! आगम से द्रव्य अध्ययन किसे कहते हैं ? अहो शिष्य !




For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

दव्वज्झयणे भवियसरीरदव्वज्झयणे जाणगसरीर भवियसरीर वतिरित्ते दव्वज्झयणे ॥ ६ ॥ से किं तं जाणगसरीर दव्वज्झयणे? जाणगसरीर दव्वज्झयणे-पदत्थाहिगारा जाणयस्स जं सरीरं ववगतचुतचावित चत्तदेहं जीवविपजढं; जाव अहोणं इमेणं सरीर समुस्सएणं जिणदिट्ठेणं भावेणं अज्झयणेत्तिपदं आघवित्तं जाव उवदंसितं जहा को दिट्टंतो ? अयं घयकुंभे आसी, अयंमहुकुंभे आसी, से तं जाणगसरीर दव्वज्झयणे ॥ ७ ॥ से किं तं भवियसरीर दव्वज्झयणे ? भवियसरीर दव्वज्झयणे जे जीवे जोणिजमण निक्खंते इमेणंचेव आदत्तएणं सरीरं समुस्सएणं जिणदिट्ठेणं

अर्थ

आगम से द्रव्य अध्ययन तीन प्रकार से कहे हैं, तद्यथा—१ ज्ञेय शरीर द्रव्य अध्ययन, २ भविय शरीर द्रव्य अध्ययन, ३ ज्ञेय भविय व्यतिरिक्त शरीर द्रव्य अध्ययन ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! ज्ञेय शरीर द्रव्य अध्ययन किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! अध्ययन का पद अर्थ अधिकार जिस का जान था उस का शरीर पडा हैं और उस में से जीव चलगया वह शरीर जीव रहित हुवा. उसे देख कर कोई कहे कि अहो यह इस शरीर से जिनेन्द्र प्रणित भाव का अध्ययन ऐसा पद कहा था यावत् उपदेश था. यथा दृष्टांत यह घृत का घडा था. यह मधु का घडा था. इसे ज्ञेय शरीर द्रव्य अध्ययन कहना. ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! भव्य शरीर द्रव्य अध्ययन किसे कहना ? अहो शिष्य ! जो जीव का योनी से

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

भावेणं अज्झयणेत्तिपयं सेयकाले सिक्खिस्संति न तावसिक्खंति जहा को दिट्ठंतो अयं महुकुंभे भविस्संति, अयं घयकुंभे भविस्संति से तं भवियसरीर दव्वज्झयणं ॥ ८ ॥ से किं तं जाणगसरीर भवियसरीर वइरित्ते दव्वज्झयणे ? जाणयसरीर भवियसरीर वइरित्ते दव्वज्झयणे पत्तय पोत्थय लिहियं से तं जाणगसरीर भवियसरीर वइरित्त दव्वज्झयणे ॥ से तं नो आगमतो दव्वज्झयणे ॥ से तं दव्वज्झयणे ॥ ९ ॥ से किं तं भावज्झयणे ? भावज्झयणे दुविहे पण्णत्ते तंजहा-आगमतोय, णो आगमतोय ॥ १० ॥ से किं

अर्थ

जन्म हुवा [ श्रावक के घर पुत्र हुवा ] उसे देख कर कहे यह जीव जिनेन्द्र प्रणित भाव को आगमिक काल में पढेगा. अथवा नहीं पढेगा, यथा दृष्टांत यह घृत का तथा मधु का घडा होगा. यह भव्य शरीर द्रव्य अध्ययन हुवा. ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! ज्ञेय और भव्य शरीर से व्यातिरिक्त द्रव्य अध्ययन किसे कहना ? अहो शिष्य ! पत्र [ पाने ] पुस्तक लिखे हुवे वे ज्ञेय और भव्य शरीर से व्यतिरिक्त द्रव्य अध्ययन जानना. यह नो आगम से द्रव्य अध्ययन हुवा और द्रव्य अध्ययन का भी कथन हुवा ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! भाव किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! भाव अध्ययन दो प्रकार कहे हैं, तद्यथा-१ आगम से और नो आगम से. ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! आगम से भाव अध्ययन किसे





For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

तं आगमतोय भावज्झयणे ? आगमतोय भावज्झयणे जाणए उवउत्त से तं आगमतोय भावज्झयणे ॥११॥ से किं त णो आगमतोय भावज्झयणे? नो आगमतो भावज्झयणे अज्झप्पस्साणयाणं कम्माणं अवचयो उवचियाणं अणुवचउयनवाणं तम्हा अज्झयणमिच्छंति, से तं नो आगमओ भावज्झयणे, से तं अज्झयणे ॥ १२ ॥ से किं तं अज्झीणे ? अज्झीणे चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा-नामज्झिणे, ठवणाज्झिणे, दव्वज्झिणे, भावज्झिणे ॥ नामठवणाओ पुव्ववण्णियाओ ॥ से किं तं

अर्थ

कहते हैं ? अहो शिष्य ! अध्ययन का जान और उपयोग सहित पढना है वह आगम से भाव अध्ययन जानना. ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! नो आगम से भाव अध्ययन किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! नो आगम से भाव अध्ययन सो अध्यात्मचित्त शुभ उपयोग स्थिर कर आठों कर्मों का अपत्य पुष्ट करना उपत्यय विशेष पुष्ट करना उस का क्षय करना और नये कर्मों का बन्ध नहीं करना ऐसा जिस से हो इसलिये उसे अध्ययन कहना. यह गणधरादि के अवश्य पढने योग्य हैं. यह आगम से भाव अध्ययन हुवा. और यह अध्ययन का कथन हुवा ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! अक्षीण किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! अक्षीण चार प्रकार के कहे हैं तद्यथा—१ नाम अक्षीण, २ स्थापना अक्षीण, ३ द्रव्य अक्षीण, और ४ भाव अक्षीण, इस में नाम स्थापना वा तो पूर्ववत् जानना. अहो भगवन् !

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

दव्वज्झिणे? दव्वज्झिणे दुविहे पण्णत्ते तंजहा-आगमोय णो आगमोय ॥ से किं तं आगमतोय दव्वज्झीणे ? आगमतो दव्वज्झीणे जस्सणं अज्झीणेत्तिपदं सिक्खित्तं ठियंजितं मितं परिजितं जाव से तं आगमतो दव्वज्झीणे ॥ से किं तं नो आगमतो दव्वज्झीणे ? नो आगमतो दव्वज्झीणे तिविहे पण्णत्ते तंजहा-जाणगसरीर दव्वज्झीणे, भवियसरीर दव्वज्झीणे, जाणगसरीर भवियसरीर वतिरित्त दव्वज्झीणे ॥ से किं तं जाणगसरीर दव्वज्झीणे ? जाणगसरीर दव्वज्झीणे अज्झीण

अर्थ

द्रव्य अक्षीण किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! द्रव्य अक्षीण दो प्रकार कहा है. तद्यथा—१ आगम से और २ नो आगम से. अहो भगवन् ! आगम से द्रव्य अक्षीण किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! आगम से द्रव्य अक्षीण जिसने अक्षीण ऐसा पद पढा हृदय में स्थिर किया अक्षरों के प्रमाण से पढा, विशेष पढा यावत् उसे आगम से द्रव्य अक्षीण कहना नो आगम से द्रव्य अक्षीण किसे कहते हैं ? नो आगम से द्रव्य अक्षीण के तीन प्रकार किये हैं तद्यथा—१ ज्ञेय शरीर द्रव्य क्षीण, २ भव्य शरीर द्रव्य क्षीण, और ३ ज्ञेय भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य क्षीण. अहो भगवन् ! ज्ञेय शरीर द्रव्य क्षीण किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! अक्षीण पद का अर्थ अधिकार

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir





सूत्र

पयत्थाहिगार जाणयस्स जं सरीरयं ववगय चुतचवित चत्तदेहं जहा दव्वज्झयणे तहा भाणियव्वा, जाव से तं जाणगसरीर दव्वज्झीणे ॥ से किं तं भवियसरीर दव्वज्झीणे ? भवियसरीर दव्वज्झीणे जे जीवे जोणि जम्मणनिक्खंते जहा दव्वज्झयणे जाव से तं भवियसरीर दव्वझीणे ॥ से किं तं जाणग सरीर भवियसरीर वइरित्त दव्वझीणे ? जाणगसरीर भवियसरीर वइरित्त दव्वज्झीणे सव्वागाससेढी से तं जाणगसरीर भवियसरीर वइरित्त दव्वज्झीणे ॥ से तं नो

अर्थ

का जान जो शरीर उस में से जीव निकल गया इत्यादि जैसे द्रव्य अध्ययन का कहा तैसा अक्षीण का भी कहना. यावत् यह ज्ञेय शरीर द्रव्य अध्ययन हुवा. अहो भगवन् ! भव्य शरीर द्रव्य अक्षीण किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! जो जीव योनी से बाहिर निकला जन्म लिया इत्यादि द्रव्य अध्ययन के जैसा कहना यावत् यह भव्य शरीर द्रव्य अक्षीण हुवा. अहो भगवन् ! ज्ञेय भव्य व्यतिरिक्त द्रव्य क्षीण किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! सर्व लोक अलोक की अनंत आकाश की श्रेणि उस में का समय २ एकेक आकाश प्रदेश अपहरण करते भी खुटे नहीं. इस लिये अक्षीण. यह ज्ञेय शरीर भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य क्षीण. और नो आगम से द्रव्य क्षीण हुवा और द्रव्य क्षीण भी समाप्त हुआ अहो भगवन् ! भाव क्षीण किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! भाव क्षीण दो प्रकार कहा है तद्यथा—



For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir





सूत्र

आगमत्तो दव्वज्झिणे ॥ से तं दव्वज्झीणे ॥ से किं तं भावज्झीणे ? भावज्झीणे ! दुविहे पण्णत्ते तंजहा-आगमतोय, नो आगमतोय ॥ से किं तं आगमतो भावज्झीणे? आगमतो भावज्झीणे! जाणए उवउत्ते सेत्तं आगमओ भावज्झीणे॥ से किं तं नो आगमओ भावज्झीणे ? नो आगमओ भावज्झीणे ! जहा दीवा दीवसतं पइप्पए दीप्पएय सोदीवोदीवं समायरिय दिप्पंति एरच दीवंति, से तं नो आगमतो भावज्झीणे ॥ से तं भावज्झीणे. सेतं अज्झीणे ॥ १३ ॥ से किं तं आए ? आए ! चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा—नामए,

अर्थ

१ आगम से और २ नो आगम से. अहो भगवन् ! नो आगम से भाव क्षीण किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! आगम से भाव क्षीण सो आगम का ज्ञान उपयोग सहित आगम का अभ्यास करे. अर्थात् उपयोग के पर्याय अनंत हैं उन में समय २ एकेक अपहरते अनंत उत्सर्पनी बीत जावे. तो भी क्षय नहीं होवे यह आगम से भाव क्षीण कहा. अहो भगवन् ! नो आगम से भाव क्षीण किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! नो आगम से भाव क्षीण सो जैसे एक दीपक से सहस्रों दीपक करे तो भी मूलगा दीपक क्षीण नहीं होवे. तैसे ही आचार्य शिष्य को सूत्राभ्यास करावे अपना ज्ञान देवे अन्य का ज्ञान दीपावे तो भी आचार्य का ज्ञान क्षीण नहीं होवे. यहां ज्ञान प्रवर्ता मन योग वचन जोग की प्रवृत्ति सो नो आगम से जानना. यह भाव क्षीण हुवा. और अक्षीण भी हुवा ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! आय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







मूल

ठवणाए, दव्वाए, भावाए ॥ नामठवणाओ पुव्वभणियाओ॥ से किं तं दव्वाए? दव्वाए दुव्विहे पण्णत्ते तंजहा—आगमओ, नो आगमओ ॥ से किं तं आगमओ? आगमओ! जस्सणं अणत्तिपयंसिक्खित्तं हितं जितं मितं परिजितं जाव कम्हा ? अणुउवओगे दव्वामातिकट्टु ॥ नेगमस्सणं जावइया अणुवउत्ता आगमतो तावइया ते दव्वाया, जाव सेतं आगमतोदव्वाए ॥ से किं तं नो आगमतो दव्वाए ? नो अगामतो दव्वाए तिव्विहे पण्णत्ते तंजहा——जाणग सरीर दव्वाए, भविय सरीर दव्वाए,

अर्थ

(लाभ) किस को कहना ? अहो शिष्य ! आय चार प्रकार कहे हैं तद्यथा—१ नाम आय, २ स्थापना आय, ३ द्रव्य आय, और ४ भाव आय, इस में नाम स्थापना का तो पूर्वोक्त प्रकार कहना. अहो भगवन् ! द्रव्य आए किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! द्रव्य आय दो प्रकार कहे है तद्यथा—१ आगम से और २ नो आगम से. अहो भगवन् ! आगम से द्रव्य आय किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! आगम से द्रव्य आय सो जिसने आय ऐसा पद पढा हृदय में स्थित किया यावत् किस लिये द्रव्य कहा? अहो शिष्य ! अनुपयोग के कारण से, नैगम नय की अपेक्षा यावत् जितने उपयोग रहित आगम पढे उतने ही द्रव्य आय कहना. इत्यादि सर्व आवश्यक मुजब कहना, यह आगम से द्रव्य आवश्यक हुवा, अहो भगवन् ! नो आगम से द्रव्य आवश्यक किसे कहते हैं ! अहो शिष्य ! नो आगम से द्रव्य

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir





सूत्र

जाणग सरीर भविय सरीर वइरित्त दव्वाए ॥ से किं तं जाणग सरीर दव्वाए ? जाणग सरीर दव्वाए आयपयत्थाहिगारे जाणयस्स जं सरीरयं ववगयचुत्त चविय चत्तदेहं जहादव्वज्झयणे जाव से तं जाणग सरीर दव्वाए ॥ से किं तं भविय सरीर दव्वाए ? भविय सरीर दव्वाए जे जीवे जोणीजम्मण निक्खते जहा दव्वज्झयणे से तं भविय सरीर दव्वाए॥से किं तं जाणग सरीर भविय सरीर वइरित्त दव्वाए?जाणग सरीर दव्व सरिर वइरित्त दव्वाए तिविहे पण्णत्ते तंजहा—लोइए, कुप्पावणिए,

अर्थ

आय के तीन प्रकार किये हैं तद्यथा—१ ज्ञेय शरीर द्रव्य आय, २ भव्य शरीर द्रव्य आए. और ३ ज्ञेय भव्य व्यतिरिक्त शरीर द्रव्य आय. अहो भगवन् ! ज्ञेय शरीर द्रव्य आय किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! आय इस पद का अर्थ अधिकार का जान था उस का शरीर जीव प्राण रहित पड़ा है इत्यादि सब द्रव्य अध्ययन जैसा कहना यावत् यह भव्य शरीर द्रव्य आय हुवा. अहो भगवन् ! ज्ञेय और भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य आय किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! तीन प्रकार से कहा है तद्यथा—१ लौकिक, २ कुप्रावचनिक और ३ लोकोत्तर. अहो भगवन् ! लौकिक किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! तीन प्रकार कहे हैं. तद्यथा—सचित्त लाभ, २ अचित्त लाभ, और ३ मिश्र लाभ. अहो भगवन् ! सचित्त लाभ किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! सचित्त लाभ तीन प्रकार कहे हैं तद्यथा—

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

लोगुत्तरिए ॥ से किं तं लोइए ? लोइए तिविहे पण्णत्ते तंजहा—सचित्ते अचित्ते मीसएय ॥ से किं तं सचित्ते ? सचित्ते तिविहे पण्णत्ते तंजहा—दुप्पयाणं, चउप्पयाणं, अप्पयाणं। दुप्पयाणं दासाणं, चउप्पयाणं आसाणं, हत्थीणं; अप्पयाणं अंबाणं अबाडगाणं,आए॥से तं सचित्ते॥से किं तं अचित्ते?अचित्त सुवण्ण रयण मणि मोत्तिय संख सिलप्पवाल रयणाणंयाए सेतं अचित्ते ॥ से किं तं मीसए ? मीसए दासाणं दासीणं आसाणं हत्थीणं समाभरिया उज्जालंकियाणं आए से तं मीसए लोइए ॥

अर्थ

१ द्विपद, २ चतुष्पद, और ३ अपद. इस में द्विपद में तो दासादि, चतुष्पद में हस्ति आदि, अपद में अम्ब अम्बाडगादि, यह सचित्त हुवा. अहो भगवन् ! अचित्त लाभ किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! अचित्त सो सुवर्ण, रत्न, मणि, मोती, दाक्षिणायत शंख, सिलप, प्रवाल, रत्नादि का लाभ. यह अचित्त लाभ हुवा. अहो भगवन् ! मिश्र लाभ किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! मिश्र लाभ सो दास, दासी, अश्व, हस्ति, इत्यादि वस्त्र भूषणादि कर विभूषित किया उस का लाभ सो मिश्र लाभ. और यह लौकिक लाभ हुवा अहो भगवन् ! कुप्रावचनिक लाभ किसे कहते हैं? अहो शिष्य! कुप्रावचनिक लाभ तीन प्रकार का कहा है. तद्यथा-१ सचित, २ अचित्त और ३ मिश्र. इन का कथन जैसा लौकिक का कहा तैसा कहना यावत् यह मिश्र का कहा और यह कुप्रावचनी कहा अहो भगवन् ! लोकोत्तर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

से किं तं कुप्पावयणीए ? कुप्पावयणीए ! तिविहे पण्णत्ते तंजहा—सचित्ते, अचित्ते, मीसए्य, तिण्णिवि जहा लोइए ॥ जाव से तं मिसए ॥ से तं कुप्पावणिए ॥ से किं तं लोगुत्तरिए ? लोगुत्तरिए तिविहे पण्णत्ते तंजहा—संचित्ते अचित्ते मिसए ॥ से किं तं सचित्ते ? सचित्ते ! सीसाणं सीसणीणं आए से तं सचित्ते ॥ से किं तं अचित्ते ? अचित्ते पडिगाहाणं वत्थाणं कंबलाणं पायपुच्छणाणं आए से तं अचित्ते ॥ से किं तं मीसए ? मीसए सीसाणं सीस्सणीणं सभंडोवगरणाण आए से तं

अर्थ

द्रव्यलाभ किसे कहते हैं? अहो शिष्य ! लोकोत्तर द्रव्य लाभ तीन प्रकार कहे हैं तद्यथा—सचित्त अचित्त और मिश्र. अहो भगवन् !सचित्त लाभ किसे कहते हैं? अहो शिष्य ! सचित्त सो शिष्य शिष्यणी का लाभ होवे सो. अहो भगवन् ! अचित्त लाभ किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! अचित्त पात्र वस्त्र कम्बल रजोहरण प्रमुख निर्दोष वस्तु साधु को मिले सो यह अचित्त हुआ. अहो भगवन् ! मिश्र लाभ किसे कहते है ? अहो शिष्य ! शिष्य शिष्यनी का भंडोपकरणादि सहित लाभ होवे सो. यह मिश्र लाभ और लोकोत्तर लाभ हुवा और ज्ञेय भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य लाभ हुवा और नो आगम से द्रव्य भी हुवा. अहो भगवन् ! भाव लाभ किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! भाव लाभ के दो प्रकार कहे हैं तद्यथा—१ आगम से और २ नो आगम से. अहो भगवन् ! आगम से भाव लाभ किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! आगम से भाव लाभ दो प्रकार

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

मीसए ॥ से तं लोगुत्तरिए ॥ से तं जाणग सरीर भविय सरीर वइरित्त दव्वाए ॥ से तं णो आगमो दव्वाए ॥ से किं तं भावाए ? भावाए! दुविहे पण्णत्ते तंजहा—आगमओय, नो आगमओय ॥ से किं तं आगमतो भावाए ? आगमतो भावाए ! जाणएउवउत्ते से तं आगमतो भावाए॥ से किं तं नो आगमतो भावाए ? नो आगमतो भावाए दुविहे पण्णत्ते तंजहा—पसत्थे, अप्पसत्थे ॥ से किं तं पसत्थे? पसत्थे तिविहे पण्णत्ते तंजहा—णाणए, दंसणए, चरित्ताए, से तं पसत्थे ॥ से किं तं अपसत्थे ? अपसत्थे चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा—कोहाए माणाए मायाए

अर्थ

का कहा है. तद्यथा—१ आगम से और २ नो आगम से. अहो भगवन् ! आगम से भाव लाभ किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! जो जीव जानकार हो उपयोग युक्त सूत्र पढे, यह आगम से भाव लाभ हुवा. अहो भगवन् ! नो आगम से भाव लाभ किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! नो आगम से भाव लाभके दो प्रकार कहे हैं तद्यथा—१ प्रशस्त ( अच्छा ) और २ अप्रशस्त ( बुरा ). अहो भगवन् ! प्रशस्त लाभ किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! प्रशस्त लाभ तीन प्रकार का कहा हैं. तद्यथा—१ ज्ञान का लाभ, २ दर्शन का लाभ, और ३ चारित्र का लाभ. यह प्रशस्त हुवा. अहो भगवन् ! अप्रशस्त किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! अप्रशस्त के चार प्रकार कहे हैं. तद्यथा—१ क्रोध का, २ मान का, ३ माया का और

For Private and Personal Use Only

सूत्र

लोभाए से तं अप्पसत्थे ॥ से तं आगमतो भावाए ॥ से तं भावाए ॥ से ते आए ॥ १४ ॥ से किं तं ज्झवणा ? ज्झवणा चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा—नाम ज्झवणा, ठवणा ज्झवणा, दव्व ज्झवणा, भाव ज्झवणा, नाम ठवणा पुव्व भणिताओ ॥ से किं तं दव्व ज्झवणा ? दव्व ज्झवणा दुविहा पण्णत्ता तंजहा—आगमोय नो आगमोय ॥ से किं तं आगमोय? आगमोय! जस्सणं ज्झयणाइत्ति पदंसिखियं ठियं जियं मियं परिजियं जाव से तं आगमतो दव्व ज्झवणा ॥ से किं तं नो आगमतो

अर्थ

लोभ का लाभ. यह नो आगम से भाव लाभ हुवा. भाव लाभ और लाभ का कथन हुवा ॥१४॥ अहो भगवन् ! झवणा [ क्षय करना ] किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! झवणा चार प्रकार की कही है. तद्यथा—१ आगम से और २ नो आगम से. अहो भगवन् ! आगम से द्रव्य झवणा किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! आगम से द्रव्य झवणा सो 'झवणा' ऐसा पद पढा हृदय में स्थापन किया, अजित किया, अक्षरों की संख्या सहित धारण किया आद्यन्त पठन किया यावत् आगम से द्रव्य झवणा कही. अहो भगवन् ! नो आगम से द्रव्य झवणा किसे कहते हैं! अहो शिष्य! नो आगम से द्रव्य झवणा के तीन प्रकार कहे हैं तद्यथा—१ ज्ञेय शरीर द्रव्य झवणा, २ भव्य शरीर द्रव्य झवणा, और ३ ज्ञय भव्यव्यतिरिक्त

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







मूल

दव्व ज्झवणा ? नो आगमतो दव्व ज्झवणा तिविहा पण्णत्ता तंजहा-जणग सरीर दव्वज्झवणा, भविय दव्व ज्झवणा, जाणग भविय सरीर वइरित्ता दव्व ज्झवणा ॥ किं तं जाणग सरीर दव्वज्झवणा? जाणग सरीर दव्व ज्झवणा! ज्झवणा पदत्थाहिगार जाणगस्स जं सरीरगं ववगत चुतचावित चत्तदेहं सेसं जहा दव्वज्झयणे जाव से तं जाणगसरीर दव्वज्झवणे ॥ से किं तं भवियसरीर दव्वज्झवणे ? भवियसरीर दव्वज्झवणे-जे जीव जोणि जम्मण निक्खंते से सं जहा दव्वज्झयणे जाव से तं भवियसरीर

अर्थ

शरीर द्रव्य झवणा. अहो भगवन् ! ज्ञेय शरीर द्रव्य झवणा किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! ज्ञेय शरीर द्रव्य झवणा सो झवणा ऐसा पद का अर्थ अधिकार जाननेवाले का शरीर प्राण रहित पडा है. शेष द्रव्याध्ययन जैसा कहना. यह ज्ञेय शरीर द्रव्य झवणा हुई. अहो भगवन् ! भव्य शरीर द्रव्य झवणा किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! जो जीव योनी से जन्म हो बाहिर निकला शेष द्रव्याध्ययन जैसा कहना यावत् यह भव्य शरीर द्रव्य झवणा हुई. अहो भगवन् ! ज्ञेय भव्य व्यतिरिक्त द्रव्य झवणा किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! जैसे ज्ञेय भव्य व्यतिरिक्त शरीर द्रव्य लाभ कहा तैसा ही कहना. यह ज्ञेय भव्य व्यतिरिक्त शरीर द्रव्य झवणा हुवा. यह नो आगम से द्रव्य झवणा का कथन पूर्ण हुवा. अहो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

दव्वज्झवणा ॥ से किं तं जाणगसरीर भवियसरीर वइरित्ता दव्वज्झवणा ? जाणगसरीर भवियसरीर वइरित्त दव्वज्झवणा जहा जाणगसरीर भवियसरीर वइरित्त दव्वज्झवणा भणिया तहा भाणियव्वा, से तं जाणग भवियसरीर वइरित्ता दव्वज्झवणा ॥ से तं नो आगमओ दव्वज्झवणा ! से तं दव्वज्झवणा ॥ से किं तं भावज्झवणा ? भावज्झवणा ! दुविहा पंण्णत्ता तंजहा-आगमओ नो आगमओ ॥ से किं तं आगमओ भाव ज्झवणा! आगमओ भाव ज्झवणा जाणए उवउत्ते से तं आगमो भाव ज्झवणा ॥ से किं तं नो आगमो भाव ज्झवणा ? नो आगमो

अर्थ

भगवन् ! भाव झवणा किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! भाव झवणा के दो भेद-१ आगम से और २ नो आगम से. अहो भगवन् ! आगम से भाव झवणा किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! आगम से भाव झवणा सो झवणा इस सूत्र का ज्ञान उपयोग युक्त पढे सो आगम से भाव झवणा. अहो भगवन् ! नो आगम से भाव झवणा किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! नो आगम से भाव झवणा के दो प्रकार कहे हैं, तद्यथा—१ प्रशस्त और २ अप्रशस्त, अहो भगवन् ! प्रशस्त किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! प्रशस्त के चार प्रकार कहे हैं तद्यथा—१ क्रोध का क्षय करे, २ मान का क्षय करे, ३ माया का क्षय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







**सूल** भाव ज्झवणा दुविहा पण्णत्ता तंजहा—पसत्थाय, अपसत्थाय ॥ से किं तं पसत्था ? पसत्था चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा—कोह ज्झवणा, माणज्झवणा, मायाज्झवणा, लोभज्झवणा, से तं पसत्था ॥ से किं तं अपसत्था ? अपसत्था तिविहा पण्णत्ता तंजहा—णाणज्झवणा, दंसणज्झवणा, चरित्तज्झवणा, से तं अपसत्था ॥ से तं नो आगओ भाव ज्झवणा ॥ से तं भाव ज्झवणा ॥ से तं उहनिप्फन्ने ॥ १५ ॥ से किं तं नाम निप्फन्ने निक्खेवे ? नाम निप्फन्ने निक्खेवे सामाइए से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा—नाम सामाइए, ठवणा सामाइए

**अर्थ** करे, और ४ लोभ का क्षय करे. यह प्रशस्त झवणा हुई. अहो भगवन् ! अप्रशस्त झवणा किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! अप्रशस्त झवणा तीन प्रकार की कही, तद्यथा—१ ज्ञान का नाश करे, २ सम्यक्त्व का नाश करे, और ३ चारित्र का नाश करे. यह अप्रशस्त झवणा हुवा. यह नो आगम से भाव झवणा हुवा, यह भाव झवणा भी हुवा, और यह दूसरा अनुद्धार का औघ निष्पन्न नामक षष्ठम भेद हुवा ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! नाम निष्पन्न निक्षेप किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! नाम निष्पन्न निक्षेप से यहां अन्यनय का नाम ग्रहण किया इस लिये सामायिक अध्ययन. इस का संक्षेप में चार प्रकार से कहा है. तद्यथा—१ नाम सामायिक, २ स्थापना सामायिक, ३ द्रव्य सामायिक और

For Private and Personal Use Only

सूत्र दव्व सामाइए, भाव सामाइए ॥ नाम ठवणाओ पुव्व भणियाओ ॥ दव्व सामाइएवि तहेव जाव से तं भविय सरीर दव्व सामाइए ॥ से किं तं जाणग सरीर भविय सरीर वइरित्ते दव्व सामाइए ? जाणग सरीर भविय सरीर वइरित्ते दव्व सामाइए पत्ताय पोत्थय लिहिय से तं जाणग सरीर वइरित्त दव्व सामाइए ॥ से तं नो आगमउ दव्व सामाइए ॥ से तं दव्व सामाइए ॥ से किं तं भाव सामाइए? भाव सामाइए दुविहे पण्णत्ते तंजहा-आगमोय नो आगमोय ॥ से किं तं आगमोय

अर्थ ४ भाव सामायिक. इस में से नाम सामायिक और स्थापना सामायिक का कथन तो जैसा आवश्यक का कहा तैसा ही कहना. और द्रव्य सामायिक तैसे ही द्रव्य आवश्यकवत् विना उपयोग से करे सो जानना. यह भव्य शरीर द्रव्य सामायिक हुई. अहो भगवन्! ज्ञेय शरीर और भव्य शरीर व्यतिरिक्त द्रव्य सामायिक किसे कहना? अहो शिष्य! ज्ञेय भव्य व्यतिरिक्त द्रव्य सामायिक सो पत्र (पाने) पुस्तको सामायिक की पुस्तको लिखी सो. यह ज्ञेय भव्य व्यतिरिक्त सामायिक हुई. नो आगम से भी द्रव्य सामायिक हुई और द्रव्य सामायिक भी हुई. अहो भगवन्! भाव सामायिक किसे कहते हैं? अहो शिष्य! भाव सामायिक दो प्रकार की कही हैं तद्यथा-आगम से और नो

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

भावसामाइए ? आगमोय भावसामाईए जाणए उवउत्ते से तं आगमओ भावसामाइए ॥ से किं तं नो आगमओ भावसमाइए ? नो आगमओ भावसामाइए (गाथा) जस्स सामाणिउ अप्पा संजमे णियमे तवे ॥ तस्स सामाइयं होइ इइ केवलि भासियं ॥१॥ जो समो सव्व भूएसु, तसे सु थावरे सु य ॥ तस्स सामाइयं होइ; इति केवलि भासियं ॥ २ ॥ जह ममणपियदुखं, जाणिय एवमेव सव्वजीवाणं न हणइ न हणावइय, समणतितेण सो समणो ॥ ३ ॥ णत्थिसे कोइ वेसोपिओय, सव्वेसु चेव जीवेसु ॥ एएणहोइ समणो, एसो अन्नोवि पज्जाओ ॥ ४ ॥ उरग, गिरि

अर्थ

आगम से. अहो भगवन् ! आगम से भाव सामायिक किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! आगम से भाव सामायिक सो सामायिक सूत्रार्थ का जानकार उपयोग युक्त सामायिक का पाठ पढे यह आगम से भाव सामायिक हुई. अहो भगवन् ! नो आगम से भाव सामायिक किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! नो आगम से भाव सामायिक सो जिसने आत्मा स्थापन किया है संयम में नियम में तप में उस के सामायिक होवे ऐसा केवलीने कहा है ॥ १ ॥ जो त्रस स्थावर सब जीवों पर सम भाव धारन करे उसे सामायिक होवे ऐसा केवलीने कहा है ॥ २ ॥ जिस प्रकार मुझे दुःख होता है ऐसा ही सब जीवों को दुःख होता है ऐसा जानकर किसी भी जीव की घात आप करे नहीं अन्य के पास करावे नहीं,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



जलण सागर नहतल, तरुगणे, समो य जो होइ ॥ भमर, मिय, धराणि, जलरुह, रवि, पवण, समोय सो समणो ॥ ५ ॥ ते समणो जइसमणो, भावेणय जइए होइ पावमणो ॥ समणेय जणेयसमो, समोय माणावमाणे सु ॥ ६ ॥ से तं नो आगमतो

आत्म समान सब जीवों को गिने उसे ही श्रमण–साधु कहना ॥ ३ ॥ किसी भी जीव के ऊपर जिस को राग द्वेष न हो इस लक्षण से साधु होवे ऐसी अन्य भी पर्याय जानना ॥४॥ अब साधु की ८४ औपमा कहते हैं—१ सर्प समान, २ पर्वत समान, ३ अग्नि समान, ४ समुद्र समान, ५ आकाश समान, ६ वृक्ष समान, ७ भ्रमर समान, ८ मृग समान, ९ पृथ्वी समान, १० कमल समान, ११ सूर्य समान, और १२ पवन समान. इन के समान जो गुन के धारक होवे वे ही निश्चय से श्रमण (साधु) जानना. * उक्त बारा ओपमा की ग्रन्थ कारने चौरासी ओपमा वर्णवी है वह इस प्रकार—[ १ ] 'उरग'–सर्प जैसे साधु होवे—१ सर्प समान अन्य के लिये निष्पन्न किये मकान में रहे, २ अगंधन कुल के सर्प समान वमन किये विषय [ भोग ] को पीछा ग्रहण नहीं करे, ३ सर्प के समान मोक्ष पंथ में सीधा जावे. ४ सर्प बिल में सीधा जावे त्यों साधु आहार का ग्रास सीधा पेट में उतारे, ५ सर्प के समान संसार रूप कांचुली उतारी हुई पीछी धारण करे नहीं, ६ सर्प के समान साधु दोष रूपी कंकर कांटे से डरे, ७ सर्प समान. लब्धिवंत साधु से देवादि भी डरते हैं. [ २ ] १ गिरी-पर्वत समान साधु होवे— १ पर्वत





For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







अर्थ

अक्षीण मानसिया आदि लब्धि रूप औषधी के धारण करनेवाले होते हैं, २ पर्वत समान साधु परिषह रूपी वायु से कम्पायमान नहीं होवे. ३ पर्वत समान साधु पशु पक्षी गरीब श्रीमान सब जीवों को आधारभूत होवे, ४ पर्वत समान साधु ज्ञानादि गुन रूप नदी को प्रगट करे. ५ मेरु पर्वत समान साधु सब जीवों में ऊंच गुण के धारक होते हैं, ६ पर्वत समान साधु ज्ञानादि रत्नों की खान होते हैं, और ७ पर्वत समान साधु शिष्य श्रावकादि मेखला कुंटों कर शोभते हैं. [ ३ ] जलण-अग्नि समान साधु होवे—१ अग्नि समान साधु ज्ञानादि गुन रूप इंधन कर तृप्त नहीं होवे, २ अग्नि समान साधु तप तेज रूप लब्धि कर दीपे, ३ अग्नि समान साधु कर्म रूप कचरे को जलावे, ४ अग्नि समान साधु मिथ्यात्व अन्धकार का नाश करे, ५ अग्नि समान साधु भव्य जीवों रूप सुबर्ण को उपदेश ताप कर निर्मल करे, ६ अग्नि समान साधु, जीव और कर्म रूप धातु और मट्टी को अलग २ करे, और ७ अग्नि समान शिष्य श्रावक रूप कच्चे वर्तन को पक्के करे. ( ४ ) सागर-समुद्र समान साधु होवे. १ समुद्र समान साधु गंभीर होवें, २ समुद्र समान साधु ज्ञानादि गुन रूप रत्नों के आगर होवे, ३ समुद्र समान साधु तीर्थंकर की बन्धी मर्यादा का उल्लंघन नहीं करे, ४ समुद्र समान साधु उत्पातियादि बुद्धि रूपी नदीयों को अपने में समावे, ५ समुद्र समान साधु पाखंडीआदि रूप मच्छों के खलबलाट से क्षोभ नहीं पावे, ६ समुद्र समान साधु कभी झलके नहीं, और ७ समुद्र समान साधु का हृदय सदैव निर्मल रहे. [ ५ ] नभतळ-आकाश समान साधु होवे.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



अर्थ

१ आकाश समान साधु का मन सदैव निर्मल रहे. २ आकाश समान साधु गृहस्थादि के अश्रय रहित रहे, ३ आकाश समान साधु ज्ञानादि सब गुनों के भाजन होवे, ४ आकाश समाज साधु अपमान निन्दा रूप शीत ताप कर कुमलावे नहीं, ५ आकाश समान साधु वंदना परशंसाय रूप वृष्टी कर प्रफुलित (खुशी) नहीं होवे, ६ आकाश समान साधु दोष रूप शस्त्रकर चरित्रादि गुनका छेदन नहीं करे, और ७ आकाश समान साधु पंचाचारादि अनंत गुन के धारक होवे. ( ६ ) तरुगण-वृक्ष के समान साधु होवे—१ वृक्ष समान साधु स्वयं शीत तापादि परिषह सहनकर आश्रितों को छ ही काय जीवों को आश्रय भूत होवे. २ वृक्ष समान साधु सेवा भक्ति पोषना करनें वाले को ज्ञानादि गुन रूप फल देवे. ३ वृक्ष समान साधु चतुरगति में परिभ्रमण करने वाले जीव रूप पंथी को आधार भूत होवे. ४ वृक्ष समान साधु दुःख निन्दा रूप वसूले से छेदन करने से रुष्ट होवे नहीं, ५ वृक्ष समान साधु प्रशंसा रूप चंदन चरचने से सतुष्ट होवे नहीं, ६ वृक्ष समान साधु ज्ञानादि गुन रूप देकर बदला लेना वांछे नहीं, और ७ वृक्ष समान शीत तापादि प्राणांत कष्ट को प्राप्त होते भी संयम रूप स्वस्थान छोडे नहीं [ ७ ] भ्रमर-भ्रमर समान साधु होवे—१ भ्रमर समान साधु आहार आदि ग्रहण करते दातार रूप फूल को दुःख देवे नहीं, २ भ्रमर समान साधु गृहस्थ के घर रूप पुष्पों से अप्रतिबन्ध आहार आदि ग्रहण करे, ३ भ्रमर समान साधु बहुत घरों से थोडा २ आहार आदि कर तृप्त होवे, ४ भ्रमर समान साधु आहार आदि अधिक प्राप्त हुवे संग्रह करे नहीं, ५ भ्रमर सामान साधु विनाबुलाये

For Private and Personal Use Only

आचिन्थ भिक्षार्थ गृहस्थके यहां जावे. ६ भ्रमर सामान साधु निर्दोष आहार रूप केतकी के पुष्प पर संतुष्ट रहे. और ७ भ्रमर समान साधु गृहस्थने अपने निमित बनाया आहार पानी को ग्रहण नहीं. [८] मिय-मृग समान साधु होवे—१ मृग समान साधु पाप रूप सिंह से डरता रहे, २ मृग समान साधु पाप रूप सिंघ का उल्लंघन किया सदोष आहार नहीं भोगवे, ३ मृग समान साधु प्रतिबन्ध रूप सिंह से डरता एक स्थान नहीं रहे. ४ मृग समान साधु रोगादि उत्पन्न हुवे एक स्थान रहे. ५ मृग समान साधु रोगादि उत्पन्न हुवे औषधी नहीं करे (यह उत्सर्ग पंथ) ६ मृग समान साधु रोगादि उत्पन्न हुवे स्वजनादि का शरण नहीं वांछे और ७ मृग समान साधु रोगादि कारण की निवृत्ति हुवे अप्रतिबन्ध विहारी बने. [९] धरणि-पृथ्वी समान साधु होवे—१ पृथ्वी समान साधु शीत ताप छेदन भेदन मलादि सम भाव सहे. २ पृथ्वी समान साधु संवेग वैराग्यादि धन धान्य कर प्रतिपूर्ण भरे हैं, ३ पृथ्वी समान साधु धर्म ज्ञान रूप बीजोत्पत्ति के कारणभूत, ४ पृथ्वी समान साधु शरीर की संभार व ममत्व नहीं करे, ५ पृथ्वी समान साधु परिषह दाता की किसी पास पुकार नहीं करे, ६ पृथ्वी समान साधु क्लेश रूप कादव जो अन्य के संयोग से उत्पन्न हुवा. उस का नाश करे, और ७ पृथ्वी समान साधु सब प्राण भूत जीव सत्य को आधार भूत होवे ॥ (१०) जल रूव—कमल के सामान साधु होवे–१ कमल सामान साधु काम रूप कादव भोग रूप पानी कर लिप्त नहीं होवे, २ कमल सामान साधु उपदेश रूप शीतल सुगंध कर

अर्थ

भव्य पथिक को सुख उत्पन्न करे, ३ पोंडारिक कमल सामान साधु वेष कर और यश रूप सुगंध कर शोभित होवे, ४ कमल समान साधु उत्तम पुरुष रूप सूर्य चन्द्र कर विकसित होवे, ५ कमल समान साधु सदैव विकसित ( खुशी ) रहे, ६ कमल सामान साधु तीर्थंकर की आज्ञा रूप सूर्य के सन्मुख रहे और ७ कमल समान साधु धर्म ध्यान शुक्ल ध्यान कर हृदय को पवित्र रखे ॥ ( ११ ) रवि-सूर्य समान साधु होवे —१ सूर्य सामान साधु अपने ज्ञान रूप प्रकाश कर सम्यक्त्व ज्ञान को प्रकाशे २ सूर्य सामान साधु भव्योजनों रूप कमल के वन को विकसित करे, ३ सूर्य सामान साधु अनादि मिथ्या रूप रात्री के अन्धकार को क्षीण में नाश करे. ४ सूर्य सामान साधु तपतेज कर प्रदीप्त रहे. ५ सूर्य सामान साधु अपने गुनों के तेज कर पांखडीयों रूप ग्रह नक्षत्र तारा के तेज को छिपावे, ६ सूर्य सामान साधु-क्रोध रूपी अग्नि के तेज का नाश करे और ७ सूर्य सामान साधु त्रीरत्न के सहश्र गुणों रूपी किरणों कर चारों तीर्थ रूप परिवार में शोभित रहे ॥ ( १२ ) पवन-वायु समान साधु होवे—१ वायु समान साधु सर्व स्थान स्वेच्छाचारी होवे, २ वायु समान साधु अप्रतिबन्ध विहारी होवे. ३ वायु समान साधु द्रव्ये उपाधी से, भावे कषाय से हलका रहे, ४ वायु समान साधु अनेक देशों में विहार करे. ५ वायु के समान साधु पुण्य पाप रूप सुरभिगंध दुरभिगंध को दूसरे को दर्शावे. ६ वायु समान साधु किस के रोके रहे नहीं और ७ वायु समान साधु संवेग वैराग्य रूप शीतलता की लहर कर विषय कषाय रूप ताप को निवारे शाम्ति शान्ति बरतावे. इति ८४ औपमा *

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

भावसामाइए ॥ से तं भावसामाइए ॥ से तं सामाइए ॥ से तं नामनिप्फणे ॥ १६ ॥ से किं तं सुत्तालावग निप्फन्ने ? इयाणि सुत्तालावग निप्फन्ने निक्खेवे इच्छावेए सेअपत्तलक्खणेवि ण णिखप्पइ, कम्हाइ ? लाघवत्थं अत्थिइउ अग्गेततीए

अर्थ

श्रमण उन ही को कहते हैं जो द्रव्य से तो समनिर्विकल्प सदा मर्यादित वेष के धारण करनेवाले हो और भाव से आर्तध्यान रौद्र ध्यान का त्याग कर धर्मध्यान शुक्ल ध्यान के ध्याता हो स्वजन—सांसारिक सम्बन्धी परजन अन्य लोगों दोनों में समवृत्तिवाले तथा सत्कार सन्मान में व अपमान में समवृत्ति रखने वाले हों. सामायिक के भाजन साधु होने से इस लिये साधु के गुन कथन किये तथा यहां ज्ञान क्रिया रूप अध्ययन को आगम से भाव सामायिक तथा आगम से एक देश वृत्तिपने से और नो शब्द के देशवृत्तीपने से यहां सामायिकवंत साधु को नो आगम से भाव सामायिकपने ग्रहण किये हैं. क्यों कि सामायिक गुन है और जो गुन धारक हो सो गुनी. गुन और गुनी के अभेदोपचार युक्ति मिलती है ॥ यह भाव सामायिक हुई और सामायिक का कथन हुआ तैसे ही नाम निष्पन्न सामायिक हुइ. ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! सूत्रालापक निक्षेपक किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! सूत्रालापक निष्पन्न निक्षेपे का अवसर प्राप्त हुआ आत्मा को कहने की इच्छा उत्पन्न होवे वह निक्षेप प्राप्त लक्षण उस का स्वरूप का आना परन्तु वह निक्षेपा निक्षेपे नहीं क्यों कि लाघवता का अर्थ अथवा वारम्वार

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

अणउगदारे अणुगमिति तत्थ णिखित्ते इहाणिखेत्ते भवइ, इहवा णिखित्ते तत्थ णिखित्ते भवइ, तम्हा इहं ननिाखिप्पइ तहिं चेव निखिप्फइ से तं निक्खेवे ॥ १७ ॥ से किं तं अणुगमे ? अणुगमे दुविहे पण्णत्ते तंजहा-सुत्ताणुगमेय, निज्जुति अणुगमेय ॥ से किं तं निज्जुत्ति अणुगमे ? निज्जुति अणुगमे तिविहे

अर्थ

हां अर्थ कहते लघुतापना होवे इस लिये इस के आगे तीसरा अनुयोगद्वार अनुगम इस नाम का तहां निक्षेपा हुआ यहां निक्षेपा बोलना अथवा यहां निक्षेपा था जिस लिये निक्षेपा बोलना इस लिये यहा निक्षेपना नहीं. तहां ही तीसरा अनुयोगद्वार अनुगम को नक्षेपेंगे यह निक्षेप हुआ. ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! अनुगम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! अनुगम दो प्रकार का कहा है तद्यथा—१ सूत्र की व्याख्या करना सो सूत्रानुगम ओर २ सूत्र के साथ लोली भूत भाव सम्बन्ध होवे उसे निर्युक्ति कहीये उस नियुक्ति की युक्ति का प्रगट रस पने का कहना, नाम स्थापनादि प्रकार कर सूत्र को विभक्त कर सूत्र की व्याख्या करना सो निर्युक्ति. अहो भगवन् ! निर्युक्ति अनुगम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! निर्युक्ति अनुगम तीन प्रकार के कहे हैं तद्यथा—निक्षेप निर्युक्ति अनुगम, उपोदघात निर्युक्ति अनुगम और ३ सूत्र फास निर्युक्ति अनुगम. अहो भगवन्. निक्षेप निर्युक्ति अनुगम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! पहिले आवश्यक तथा सामायिकादि पद का नाम स्थापनादि चार निक्षेप द्वार कर व्याख्यान किये हैं वह

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

पण्णत्ते तंजहा—मिक्खेव निज्जुति अणुगमे, उवुग्घाय निज्जुति अणुगमे, सुत्त फासिय निज्जुत्ति अणुगमे ॥ से किं तं निक्खेवे निज्जुत्ति अनुगमे ? निक्खेव निज्जुत्ति अनुगमे अणुगमे, से तं निक्खेव निज्जुति अनुगमे ॥ से किं तं उवुग्घाय निज्जुति अणुगमे ? उवुग्घाय निज्जुति अणुगमे इमाहिं दोइं गाहाहिं अणुगंतवे तंजहा—

अर्थ

व्याख्यान सव इस स्थान जानना उसे निक्षेप निर्युक्ति अनुगम कहना. अहो भगवन् ! उपोद्घात निर्युक्ति अनुगम किसे कहते हैं ? अहो शिष्य ! व्याख्या करने योग्य सूत्र की व्याख्या विधी समीप कहना अर्थात् उद्देशादि सूत्र कर प्रथम उस की व्याख्या करना फिर सूत्र की व्याख्या करना उस का कथन आगे कही दो गाथा कर जानना तद्यथा—१ उद्देश सो सामान्य नाम रूप, २ निर्देश—नाम कहना सामायिकादि अध्ययन, ३ निर्गम—सामायिक कहां से निकली ? श्रुत समुद्र से निकली, ४ क्षेत्र कौनसा ? सिद्धार्थ राजा के पुत्र महावीर स्वामीने अंगीकार किया, ५ किस काल ? वैशाख शुक्र एकादशीको ६ कौन पुरुष से पुरुष—इस काल में ऋषभ देव से प्रगट हुवा, ७ किस कारण से सुना ! अहो शिष्य ! गौतम स्वामी आदिने भगवंत के पास से सुना, ८ कौन प्रतीत—केवल ज्ञानी की प्रतीत, ९ वय लण-सम्यकत्व सामायिकका लक्षण, श्रद्धना प्ररूपना शुद्ध सो श्रुत सामामिक, चारित्र सामायिक का निवृत्तिरूप लक्षण, १० कौनसी नय ? यहां सामायिकपर सात नय उतारना, ११ किसमें



For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir





सूत्र

(गाहा) उद्देसे, निद्देसेय, निगमे; खित्त काल, पुरिसेय, कारण ॥ पच्चय, लक्खण णए; समुआरणा, अणुमए, किं कितिविहं ॥ १ ॥ कस्स, कहिं, केसु, कह, किंचिरं हवइ अंकालं ॥ कति, मंतर, मविरहियं; भावा, गरिसं, फासेण, निरुत्ती ॥२॥ सेतं उवग्घाय निजुत्ति अनुगमे ॥ से किं तं सुत्तफासिय निज्जुत्ति अनुगमे ? सुत्तं

अर्थ

समावतारी ? चौवीसस्तवादि अध्ययन में समावतारी, १२ किस नय से सामायिकमाने-नेगम व्यवहार संग्रह यह तीन नय तपसंयम निग्रन्थ प्रवचन रूप सामायिक माने और ऋजुसूत्रादिचारों नय समता रूप-सामायिक को माने, क्यों कि वही निर्वाणप्राप्ति रूप है, १३ क्या सामायिक ? समभावी गुनवंत में सामायिक, १३प्रश्न-कितने प्रकारकी सामायिक? उत्तर-तीन प्रकारकी सामायिक-१सम्यकत्व सामायिक, २ श्रुत सामायिक, ३ चारित्र सामायिक,१४प्रश्न-कौन पुरुष के सामायिक? उत्तर-जिस की समाधिमें आत्मा है उस ही पुरुष के सामायिक,१५प्रश्न-किस स्थानमें सामायिक? उत्तर-आर्य क्षेत्रमें तीसरे चौथे पांचवे आरे मनुष्य गति आदि बहुत बोल संयोगमें सामायिक,१६प्रश्न-किसमें सामायिक ? उत्तर-सर्व द्रव्यमें समता रस रूप सामायिक, १७प्रश्न-किस प्रकार सामायिक ? उत्तर-अव्याप्ति मनुष्य चित्त जाति कुल बल आरोग्य सूत्र श्रवण विनयोपचार के स्थान सामायिक, १८ सामायिक का कितना दीर्घ काल ? सम्यक्त्व सामायिक का और श्रुत सामायिक का ६६ सागर कुछ अधिक, चारित्र सामायिक देसूना क्रोड पूर्व, १९प्रश्न कितनी

For Private and Personal Use Only

सूत्र

उच्चारेयव्वं, अखलियं, अमलियं, अवच्चामेलियं , पडिपुन्नं, पडिपुन्नघोसं, कंट्ठोट्ठविप्प मुक्कं, गुरुवायणोवगयं तउतत्थणिज्जिहिंति, ससमय पयंवा, परसमय पयंवा, बंधमोक्ख पयंवा, सामाइयं पयंवा, नो सामाइय पयंवा, तउतंमि उवरित्ते समाणे किसिचणं भगवंताणं केइ अच्छाहिगारा अहिगया भवंति, केइअच्छाहिगारा अणहिगया

अर्थ

सामायिक ? सम्यक्त्व के श्रुत के असंख्यात लाभ कर. प्रतिवर्जमान आश्रिय पृथक्त्व सहस्र. कोडी देश वृत्ति आश्रिय असंख्यात, २० प्रश्न-अन्तर कितना पडे? उत्तर-एक जीव आश्रिय जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल आधा पुद्गल परावर्तन, २१ प्रश्न-अविरह-सब जीवों आश्रिय विरह कदापि नहीं. २२ सामायिक के कितने भव ? जघन्य आराधक आश्रिय दो भव उत्कृष्ट आठ भव पर्यंत लगोलगा सामायिक आवे, २३ प्रश्न-आकर्ष-एक भव में तथा बहुत भव में वारम्बार आवे तो सम्यक्त्व असंख्यात वक्त एक भव आश्रिय सामायिक चारित्र पृथक्त्व सो वक्त, बहुत भव आश्रिय पथक्त्व हजार वक्त, २४ प्रश्न-सामायिक कितना क्षेत्र स्पर्शे ? उत्तर-जघन्य असंख्यातवा भाग एक जीव आश्रिय. और, केवली समुद्घात आश्रिय संपूर्ण लोक, और २ पतिरुक्ति सम्यक प्रकार युक्ति पद रूप लाभ की प्राप्ति हो वह सामायिक की निरुक्ति-अर्थोत्पत्ति. यह उपोद् घात निर्युक्ति अनुगम हुवा. अहो भगवन् ! सूत्र फासिय निर्युक्ति अनुगम किसे कहते हैं ? सूत्र फासिय निर्युक्ति अनुगम सो. सूत्र का शुद्धोच्चार करना. सूत्र पढते स्खलना न होना, अन्य सूत्र के शब्द नहीं

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



सूत्र

भवंति, ततो तेसिं अणहिगयाणं अहिगमणट्ठाए पदंपदेणं वतवइस्सामि (गाहा) पंहिताय पदंचेव, पयत्थो पयाविग्गहो, चालणाय पसिद्धीय, छव्विहं विधिलक्खणं ॥ १ ॥ से तं सुत्तफासिय निज्जुत्ति अणुगमे ॥ से तं निज्जुत्ति अणुगमे ॥ से तं अणुगमे

अर्थ

मिलाना, उपयोग रहित बीच में छोडकर नहीं पढना, ह्रस्व दीर्घ पूर्ण पढना, पूलित उदात्तादि पूर्णोच्चार करे के ओष्ठ आदि जिस का जो उत्पत्ति स्थान हो वहां से पूर्णोच्चार करे. गुरुगम से उसे धारन करे, तब फिर जानकर होवे शुद्ध जीवादि का पद स्वरूप, पर समय अन्य मत का पद स्वरूप, कर्मबन्ध का और कर्म से मुक्ति का पद स्वरूप, सामायिक का पद स्वरूप, सामायिक रहित का पद स्वरूप, इसलिये शुद्ध सूत्र उच्चारने से कितनेक साधु भगवंत को कितनेक अर्थ के अधिकार ग्रहण होते हैं. कितनेक अर्थ के जान और कितनेक दुर्गम अर्थ का अनजान भी रहते हैं. इसलिये उन अनजाने पद को जानने के लिये एकेक पद की अलग २ व्याख्या करूंगा. सूत्र अस्खलित कर फिर पद अलग २ करना, फिर पदका अर्थ, फिर पदका समास. फिर चालनाकर पूछे. फिर योग्य स्थान स्थापन करे. यों छ प्रकार से अर्थ कहने का लाभ जाने. यह अर्थ कथक लक्षण कहे. यह सूत्र अर्थ स्पर्श नियुक्ति अनुगम हुआ और निर्युक्ति अनुगम हुआ और अनुगम का कथन पूर्ण हुआ ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! नय किसे





For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







मूल

॥ १८ ॥ से किं तं नए ? सत्त मल नया पण्णत्ता तंजहा—णेगमे, संगहे, ववहारे, उज्जुसुए, सद्दे, समभिरुढे, एवंभूत ॥ (गाहा) तत्थणेगमेहिं माणेहिं मिणइ, इति णेगमस्सय निरुत्ती, सेसाणंपि नयाणं लक्खणंमिणमो सुणह वोच्छं ॥ १ ॥ संगहिंअ पडिअत्थं, संगहवयण समासओविंत्ति ॥ वच्चइ विणित्थिअत्थं, ववहारो सव्व दव्वेसु ॥ २ ॥

अर्थ

कहते है ? हे शिष्य ! मूल नय सात कही है. जिन के नाम-१ नैगमनय, २ संग्रहनय, ३ व्यवहारनय, ४ ऋजुसूत्रनय, ५ शब्दनय, ६ समभिरुढ नय, और ७ एवंभूतनय. इन सात नय मे से प्रथम नेगम नय सो- सामान्य विशेष शब्द में विशेपन कर वस्तु को जाने वस्तु का निर्णय करे. लोक में रहता हुं इत्यादि प्रश्नोत्तर पूर्वोक्त प्रकार जानना. और भी जीव द्रव्य जीव द्रव्य के दो प्रकार-संसारी और असंसारी इत्यादि बोल जानना. इत्यादि आगें छही नय का उदाहरण लक्षण सुनो ॥ १ ॥ संग्रह नय सम्यक प्रकार से ग्रहण किया एक जाति रूप अर्थ वह संग्रहित पंडितार्थ बचन कहना ऐसा संग्रह नय का बचन संक्षेप से तीर्थकरने कहा. अर्थात् संग्रह नय वाला सामान्य रूप को ही मानता है जैसे 'एगे आया' सर्व आत्मा को एक ही रूप जाने. ३ व्यवहार नय विशेष निश्चय अर्थ लोक व्यवहार प्रसिद्ध पांचो वर्ण के वस्त्र मे रक्तवर्ण अधिक होतो लोक व्यवहार में रक्त वस्त्र ही कहे.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir



मूल

पच्चुपण्णगाहिउज्जु–सुउणय विहीमुणेयव्वो ॥ इच्छेइ विसेसीअंतरं पच्चुपन्न उसद्दो ॥ ३ ॥ वत्थुउ सकमणं होइ, अवत्थुनए समाभिरूढे ॥ वंजण अत्थ तदुभयं, एवं भूउ विसेसेइ ॥ ४ ॥ एगयमिगिण्हियव्वे अगीण्हियंमि चेव अत्थंमि ॥ जइ अव्व- मेवइ इज्जो, उवएसो सो नउनाम ॥ ५ ॥ सव्वेसिंपि नयाणं, वत्तव्वं बहुविहं निसामित्ता॥तं सव्वनय विसुद्धं,जं चरणगुणाट्ठिओ साहु ॥६॥ अणुउगदारा सम्मत्ता ॥

अर्थ

व्यवहार नय से सब जीव अजीव में प्रवर्ते ४ ऋजुसूत्रनय-वर्तमान काल वस्तु में प्रवर्ते ग्रहणहार ऋजुसूत्र नय जानना. ऋजु-सरल वर्तमान काल में माने. अतीत अनागत को नहीं माने ५ शब्दनय ऋजुसूत्र से माने द्रव्य भी माने. वर्तमान में भाव निक्षेप माने. ६ समाभि रुढनय. जो संक्रम काष्ट करे, शब्द का अर्थ जिस वक्त उस में पावे उसवक्त उसे माने, इन्द्र के रूप कर इन्द्र कहा शक्र के रूप शक्र कहे. शब्द नय में इस में इतना फरक जानना. ७ एवंभूत नय वाला घट जो मस्तकारुढ हुवा घट २ शब्द करे, तब घट कहे ॥ ४ ॥ इन नयोंकर ग्रहन करने योग्य ज्ञान दर्शन युक्त क्रिया अनुष्ठान. अनादरणिय मिथ्यात्वादि हेतू इत्यादि का जान होवे. ज्ञानादि की यथाविधी यत्ना करे, मिथ्यात्वादि छोडने का उपाय करे शुद्ध उपदेश में प्रवर्ते. अहो शिष्य ! उसे नय कहना ॥ ५ ॥ सर्व नय की

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir







सूत्र

उपसंहार—( गाथा ) सोलस सयाणि, चउरूत्तराणि होइउ इमंमि गाहाणं ॥ दुसहस्स मणुट्ठभ छंदं,सुत्तपरिमाणउ भणिउ॥१॥नगर महा दाराइव, उवक्कम दाराणुउग्गवर-दारा ॥ अक्खर विंदु मत्ता, लिहिया दुक्खे खयट्ठाएं ॥ इति श्री अनुयोगद्वार सूत्र समाप्तम्. ॥ १३ ॥ * * * * * *

अर्थ

विस्तारित वक्तव्यता कहने में बहुत समय चाहीये. सक्षेप में सातों नय का निश्चय व्यवहार में समावेश हो जाता है, ४ निक्षेप, ४ द्रव्यादि, इन पर्याय अर्थ नय में सुनकर उन सब नय को निर्दोष नय रूप प्ररूपे, जाननें योग्य जाने, छोडने योग्य छोडे, आदरने योग्य आदरे इस प्रकार जो चारित्र में स्थिर रहा साधु ज्ञानादि युक्त विशुद्ध नय को समाचरे॥यह अनुयोग का स्वरूप दर्शाने वाला अनुयोगद्वार सूत्र संपूर्ण हुआ॥ उपसंहार इस अनुयोगद्वार की १६०४ गाथा २००० श्लोक सूत्र का प्रमान कहा है. टबाका प्रमान ६००० सब ग्रन्थाग्रन्थ ८००० ॥ १ ॥ यह अनुयोग द्वार सूत्र बडे नगर के द्वार समान इस में प्रवेश करने से उपशम ज्ञान नय महापदार्थ की प्राप्ति होवे. इस की अक्षर विन्दू मात्रा शुद्ध लिखने से सर्व दुःख का क्षय होवे ॥ यह दोनो गाथा प्रकरण की जानना ॥ अनुयोग द्वार सूत्र अर्थागमणे चितीयं साहुण धम्मसिंहेण साता सुहस्सहेतवे ॥ इति अनुयोग द्वार सूत्र समाप्तम् ॥ ३१ ॥ + ÷ +

For Private and Personal Use Only

# ॥ इति एकत्रिंशत्तम ॥

# ॥ अनुयोगद्वार-सूत्र चतुर्थ मूल ॥

* वीर संवत् २४४६ श्रावण वदी ६ बुधवार. *

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शास्त्रोद्धार प्रारंभ वीराब्द २४४२ ज्ञान पंचमी

# इति

# अनुयोगद्वार सूत्र

# समाप्तम्

शास्त्रोद्धार समाप्ति वीराब्द २४४६ विजयादशमी

प्रकाशक ज्वाला

For Private and Personal Use Only